'सावधान, यह तेज़-तर्रार, एड्रेनालाईन-पंपिंग
एडवेंचर आपकी नींद छीन लेगा' आनंद नीलकांतन

सिनबाद सीरीज़ की पहली किताब।

सिनबाद और इसराफिल

का तुरही

केविन मिसल

Table of Contents

□□□□□□□□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□

ग्यारह
बारह
तेरह
चौदह
पंद्रह
सोलह
सत्रह
अठारह
उन्नीस
बीस
इक्कीस
बाईस
तेईस
चौबीस
पच्चीस
छब्बीस
सत्ताईस
अट्ठाईस
उनतीस
तीस
इकतीस
बत्तीस
तैंतीस
चौंतीस
पैंतीस
छत्तीस
सैंतीस
अड़तीस
उनतीस
चालीस
इकतालीस

□□□□□□□
□□□□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□□□□□
□□□□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□
□□□□□□□
□□□□□
□□□□□
□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□
□□□
□□□□□
□□□□□
□□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□□
□□□□□□□□□□□□□

केविन मिसल

सिंदबाद और इसराफिल का तुरही

पेंगुइन बुक्स

□□□□□□□□□□

□□

□□

□□□

□□□

□□□□

□□

□□□

□□

□□

□□

□□□□□□

□□□□

□□□□

□□□□

□□□□□□

□□□□

□□□□□

□□□□□

□□□□□□

□□□

□□□□□□

□□□□

□□□□

□□□□□

□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□□

□□□□□□□

□□□□□

□□□
□□□□□
□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□
□□□□□
□□□□□
□□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□□□
□□□□
□□□□□□□
□□□□
□□□□□
□□□□
□□□□
□□□□□
□□□□□□□
□□□□□□□
□□□□
□□□

□□□□
□□□□
□□□□□□
□□□□□
□□□□□
□□□□□□
□□□□□□□□□□
□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□
□□□□□□□□

पेंगुइन बुक्स

सिंदबाद और इसराफिल का तुरही केविन मिसल राष्ट्रीय बेस्टसेलर कल्कि त्रयी के लेखक हैं। उन्होंने नरसिम्हा त्रयी और रावणपुत्र मेघनाद भी लिखी हैं, साथ ही लेखकों के लिए मार्केटिंग एजेंसी हबहॉक्स की स्थापना भी की है। जब लोगों को पता चलता है कि उन्होंने महज चौबीस साल की उम्र में ये सब हासिल कर लिया है, तो उनके चेहरे पर जो खुशी झलकती है, उसे देखकर उन्हें बेहद आनंद आता है। वो भी बिना एमबीए किए। केविन गुरुग्राम में एक पुस्तकालय में रहते हैं, जिसे वो प्यार से 'मेरा कमरा' कहते हैं। जब वो पढ़ने या लिखने में व्यस्त नहीं होते, तो अपने सोशल मीडिया हैंडल (इंस्टाग्राम: kevin_9695 और ट्विटर: kevin_missal) पर पाठकों से बातचीत करना उन्हें बहुत पसंद है।

पुस्तक की अग्रिम प्रशंसा ‘केविन मिसल ने सिंदबाद की सदियों पुरानी कहानी को एक नया और मनोरंजक रूप दिया है। सावधान रहें, यह तेज़ रफ़्तार, रोमांच से भरपूर साहसिक कहानी आपकी नींद उड़ा देगी।’ —आनंद नीलकांतन

[illegible]...

[illegible]

आठवीं शताब्दी के दौरान किसी समय...
जब अरब की भूमि में अब्बासिद खिलाफत का शासन था... राक्षस धरती और सातों समुद्रों में विचरण करते थे... कुछ छिपे हुए, कुछ आँखों से दिखाई देने वाले...
और जो लोग उनका शिकार करते थे, उन्हें सेइड कहा जाता था।

एक

वे शापितों के द्वीप पर पहुँच गए।
सिंदबाद अपने गुरु की ज़ख्मी उंगलियों को छूना चाहता था, लेकिन उसे डांट का डर था। उसे कमज़ोर कहा जाएगा। दुर्बल। बच्चा। डरने और घबरा जाने के लिए डांट पड़ेगी। बारह साल के उसके दुबले-पतले शरीर को अपने सामने घने और धुंध भरे परिदृश्य को देखकर कंपकंपी छूट गई।
उस जीव को यहीं देखा गया था।
भय से भरी एक गांठ को निगलते हुए, सिंदबाद ने अपने स्वामी की ओर देखा। अधेड़ उम्र के, सफ़ेद बालों वाले, माथे पर एक निशान लिए, वे वहाँ स्थिर खड़े थे। उनकी नाक बाज जैसी नुकीली थी। उनकी आँखें, हिम तेंदुए की तरह पीली और पत्थर की तरह ठंडी, सामने के द्वीप को घातक दृष्टि से देख रही थीं, मानो हर चीज़ का अध्ययन कर रही हों—चलती हुई और स्थिर दोनों। द्वीप कोहरे में छिपा हुआ था, लंबे पेड़ों से भरा हुआ था जिनकी टहनियाँ किसी बूढ़ी औरत के हाथों जैसी लग रही थीं। गिद्ध शिकारी की तरह मंडरा रहे थे, हमला करने के लिए तैयार। किसी कारणवश वहाँ गंधक की गंध आ रही थी, और अगर कोई आवाज़ थी भी तो वह सन्नाटे की थी।
सिंदबाद अपने स्वामी के मन की बात जानने के लिए कुछ भी करने को तैयार
था, उन गहरी आँखों के पीछे छिपे रहस्य को जानने के लिए। वह उन्हें जानना चाहता था। आख़िरकार, वही व्यक्ति उसका एकमात्र करीबी रिश्तेदार था। जन्म से लेकर अब तक, उसने केवल उसी का चेहरा देखा था और उसी चेहरे से वह परिचित हो चुका था। बाकी जिनसे वह मिला था, वे उससे दूर थे और उसे अजनबी लगते थे। उनका जहाज झटके से रुक गया। सिंदबाद ने हैरानी से चारों ओर देखा। वे अभी भी द्वीप के किनारे से पचास गज दूर थे। इतनी दूर क्यों रुके?

‘मास्टर रीस?’ कप्तान ने सिंदबाद के प्रश्न का उत्तर देते हुए निचले डेक से निकलते हुए कहा। वह कर्कश आवाज और घनी दाढ़ी वाला एक फारसी था। उसकी कोयले जैसी काली आँखें सिंदबाद के मास्टर को घूर रही थीं।
लेकिन उसके स्वामी ने अपनी निगाहें नहीं हटाईं। न ही कुछ बोला।
‘हम आगे नहीं बढ़ सकते...’ कप्तान सन्नाटे के बीच अटकते हुए बोला। ‘यह हमारे लिए बहुत, उम्म, खतरनाक है। वह जीव... हम पर हमला कर सकता है।’
मास्टर रीस अब भी अविचलित प्रतीत हो रहे थे। वातावरण में तनाव स्पष्ट रूप से व्याप्त था। सिंदबाद को दूर कहीं से कई समुद्री पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। समुद्री शैवाल की गंध उसकी नाक में समा गई।
हम आपके लिए एक नाव का इंतजाम कर देंगे। हमारा एक आदमी आपको वहाँ छोड़ देगा और काम पूरा होने पर आप हमें संकेत भेज देना। फिर हम आपको लेने आ जाएँगे। हमारे पास इतने सामान हैं कि हम हफ़्तों तक गुज़ारा कर सकते हैं।
लेकिन हम आगे नहीं बढ़ सकते। यहीं पर हमें रुकना होगा।
तभी मास्टर रीस ने आखिरकार बोलना शुरू किया।
'क्या अंदर कोई गांव नहीं है?' उसने टूटी हुई आवाज़ में फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आवाज़ बहुत पतली थी, अदृश्य हवा में रेंगती हुई सी लग रही थी।
'जी हां, मास्टर रीस,' कप्तान ने उत्तर दिया।
और तुम्हारे कुछ आदमी भी?
‘हाँ। हमले होने से पहले गाँव में एक सैन्य टुकड़ी तैनात थी। हमने पहले ही एक कौआ भेज दिया था ताकि उन्हें पता चल जाए कि आप सब आ रहे हैं। खैर, कम से कम जो ज़िंदा हैं उन्हें तो पता चल ही जाए। हालाँकि हमें नहीं पता था कि सिर्फ़ एक आदमी और एक...’ उसने सिंदबाद की ओर देखते हुए कहा, ‘एक बच्चा।’
‘और फिर भी,’ मास्टर रीस ने कप्तान पर अपनी ठंडी निगाहें टिकाते हुए कहा, ‘तुम और तुम्हारे आदमी जाना नहीं चाहते?’ उनकी भावहीन आँखें कप्तान की आँखों में गड़ी रहीं, मानो उसकी आत्मा को भेद रही हों। ‘अपने आदमियों को बचाने के लिए भी नहीं। क्यों?’
उन्होंने सफाई देते हुए कहा, ‘हम बस... खैर, मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मेरे आदमियों को लगता है कि हमें... अगर आपकी तरफ कुछ गड़बड़ हो जाए तो हमें बैकअप के तौर पर काम करना चाहिए, न कि शुरू से ही खुद को खतरे में

डालना चाहिए।’ उन्होंने आगे कहा, ‘उन्हें... उन्हें बस लगता है कि... हम उस जीव से लड़ नहीं सकते।’
लेकिन वहाँ एक गाँव है जो आम नागरिकों से भरा हुआ है—निर्दोष नागरिक,’ उसकी ठंडी आवाज़ ऊँची हुई, ‘तुम्हारे विपरीत, उनके पास हथियार बहुत कम हैं। क्या वे अपनी जान जोखिम में नहीं डाल रहे हैं?’
‘वे भाग्यशाली हैं, मालिक!’ कप्तान ने घबराते हुए और बेचैनी से कहा।
‘कि उस जीव ने उन्हें नहीं पकड़ा। उन्हें नहीं पता कि अगला शिकार कब और कौन होगा। यह ठीक वैसे ही है जैसे अपनी मौत के दिन गिनना, जब आपको पता हो कि वह कहीं बाहर है और आपका इंतज़ार कर रहा है।’
मास्टर रीस ने सिर हिलाया। सिंदबाद समझ गया कि वह निराश है और वह वजह
भी जानता था। उसे कायर और भगोड़े बिल्कुल पसंद नहीं थे। उसके लिए तो वे पहले ही मर चुके थे।
‘नाव लाओ, हम खुद चप्पू चला लेंगे,’ उसने उंगलियां चटकाते हुए कहा। ‘अपने किसी भी आदमी को खतरे में डालने की कोई जरूरत नहीं है,’ मास्टर रीस ने कर्कश स्वर में कहा।
कप्तान घबरा गया था, लेकिन उसने सिर हिलाया और चला गया।
सिंदबाद का खून तेजी से दौड़ने लगा जब उसने देखा कि मास्टर रीस की निगाहें घूमकर उस पर केंद्रित हो गई हैं।
‘क्या तुम्हें नाव चलाना आता है, लड़के?’ उसने पूछा। ‘या तुम भी खिलाफत
के इन शाही, महान, भव्य सैनिकों की तरह भयभीत हो गए हो?’
सिंदबाद ने अपनी निगाहें नीचे कर लीं। जवाब देते समय उसे लगा जैसे उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा हो।
'हां। मैं... मैं... नाव चलाना जानता हूं।'

दो

आज का दिन
बसरा, अरब का बंदरगाह
अंधेरा छाने के बीच शव वहीं पड़ा रहा।
और सिंदबाद झाड़ियों में छिपकर चुपचाप यह सब देखता रहा।
उसे अपनी साँसें सुनाई दे रही थीं, उसके कानों में खून की धड़कन गूंज रही थी। शाम ढल रही थी। उसकी बादामी आँखें समुद्र तट पर टिकी हुई थीं, मानो बाज की नज़र हो। उल्लू बोल रहे थे। लहरें उठ रही थीं और धुंधला आसमान गहराता जा रहा था।
अब किसी भी समय...
‘उम्मीद है वो दुष्ट पिशाच जाल में फंस जाएगा,’ हुसैन ने अपनी नीली आँखों से चारों ओर देखते हुए कहा। उसने अपने घुंघराले बालों को पीछे किया और अपने दोस्त की ओर देखा जो उसके बगल में बैठा था। ‘इससे हमें बहुत सारा पैसा मिलने वाला है, ही-ही,’ उसने उस सराय मालिक की ओर इशारा करते हुए कहा जिसने कुत्रब के आतंक को खत्म करने के लिए सिंदबाद को काम पर रखा था। सिंदबाद ने अपना सिर घुमाया और ऊपर देखा, उसके काले बाल उसके माथे पर गिर रहे थे। 'सौवीं बार कह रहा हूँ, यह कोई पिशाच नहीं है। यह जिन्नों की एक उपश्रेणी है।'
‘सच कहूँ तो, ये तो सेब और संतरे की तुलना करने जैसा है।’ हुसैन ने निराशा से सिर हिलाया। ‘इसे कैसे मारते हैं?’
‘तुम ऐसा नहीं कर सकते।’ सिंदबाद ने आह भरी। ‘तुम उन्हें फंसाकर वापस भेज दो। या फिर उन्हें किसी घेरे में बंद करके रखो। और ऐसा करने का सबसे आसान तरीका है उनका असली नाम जानना।’
‘खैर, जो भी हो, आपको अंदाज़ा भी नहीं है कि इसे हासिल करना कितना मुश्किल था,’ हुसैन ने उस काले टीले की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर उनकी नज़र थी। ‘देखते हैं: कब्र खोदने वाले को पैसे दिए; उसके साथ ज़मीन खोदी;

कीचड़ में लथपथ हो गए; और फिर आखिरकार इसे अपने दोस्त कुतरूब के लिए यहाँ ले आए, क्योंकि आपने कहा था कि यह एक बढ़िया चारा होगा।’
‘खैर, कम से कम इस बार तो तुमने मदद की।’ सिंदबाद ने अपनी आँखें घुमाईं
और स्थिर तारों को देखने का फैसला किया, जिससे उसका ध्यान समुद्र तट से हट गया। अपने जीवन में उसने कुछ ही बार तारों को टिमटिमाते देखा था।
‘मैं हमेशा मददगार होता हूँ, ठीक है?’ हुसैन ने विरोध में अपनी आवाज तेज करते हुए कहा।
सिंदबाद ने अपनी निगाहें वापस समुद्र तट और लाश पर टिका दीं। 'नहीं, कृपया और जोर से चिल्लाइए और पूरी दुनिया को बता दीजिए कि हम क्या कर रहे हैं।'
‘माफ़ कीजिए!’ हुसैन ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘और दुनिया को पहले ही पता
चल चुका है। उस चीज़ ने हमारे बीस यात्रियों को मार डाला है। अगर और भी लोग उसके शिकार बन गए, तो बेहतर होगा कि सराय बंद ही हो जाएँ।’
‘मुझे पता है।’ सिंदबाद ने आह भरी।
‘आपने कहा था कि यह एक जिन्न है, है ना?’ हुसैन ने पूछा। ‘लेकिन क्या जिन्न इच्छा पूरी करने वाले बंदरों की तरह नहीं होते?’
‘सभी नहीं,’ सिन्बाद ने कहा और अपना सिर हल्के से हिलाया। ‘केवल मारिद। जबकि जिसका हम अभी इंतज़ार कर रहे हैं, उसे कुत्रब कहते हैं। अजीब प्राणी। वे बरज़ख के जिन्न लोक से आते हैं। लेकिन जो बात मुझे समझ नहीं आती, वह यह है कि कुत्रब मृतकों को खाते हैं, इसलिए कब्रिस्तानों के आसपास देखे जाते हैं। तो फिर यह जीवितों पर हमला क्यों कर रहा है?’ उसने सोचते हुए अपनी आँखें सिकोड़ीं।
लेकिन इससे पहले कि वह इस पर विचार कर पाता, सिंदबाद ने एक अप्रत्याशित दृश्य देखा: एक जोड़ा किनारे पर टहल रहा था, अपने चारे से कुछ ही गज की दूरी पर, उससे बेखबर और उस भयावह उपस्थिति से अनजान जो वह आमंत्रित कर सकता था।
वे बातें करने और हंसने में व्यस्त थे। नंगे पैर। लड़की ने अपना घूंघट ओढ़ा हुआ था और पुरुष ने नाविक की कमीज पहनी हुई थी।
‘इंसान। हमेशा बेवजह दखल देते हैं।’ सिंदबाद ने दांत पीसते हुए कहा।
‘क्या तुम खुद भी इंसान नहीं हो, मेरे प्यारे दोस्त?’ हुसैन ने शरारती लहजे में पूछा।

‘अच्छा...’ सिंदबाद ने कहा, ‘तब तो कुतरूब उन पर हमला कर देंगे। ताजा खून।’
‘उम, सिंदबाद?’ हुसैन ने उसके कंधे पर थपथपाया।
‘क्या?’ उसने झल्लाकर कहा, उसकी निगाहें उस जोड़े के कदमों का पीछा कर रही थीं, इस उम्मीद में कि वे समुद्र तट पर बिछाए गए जाल को न देख पाएं। लेकिन गंध से तो सब कुछ साफ पता चल ही जाएगा!
और वे करीब आ रहे थे... और करीब आ रहे थे...
‘उम, सिंदबाद? क्या आप कृपया पीछे मुड़ेंगे?’ हुसैन की आवाज लगभग एक तीखी चीख में बदल गई थी।
‘क्या?’ सिंदबाद चिढ़कर चीखा और हुसैन की ओर मुड़ा। तभी उसने उसे देखा। एक भयानक आठ फुट लंबा प्राणी—कंकाल जैसा, गहरा लाल, चिथड़ों में लिपटा हुआ। उसका लंबा मुँह और नाक की जगह बनी दरारें काँप रही थीं। उसके लगभग गंजे सिर पर एक लंबी, काली चोटी थी, बस वही उसके शरीर पर बाल थे। उसकी पसलियाँ उसके डायफ्राम से साफ़ बाहर निकली हुई थीं। यहाँ तक कि रीढ़ की हड्डी भी दिखाई दे रही थी, जो बिना चमड़ी वाले कंकाल से निकली हुई थी। लेकिन आँखें—वे एकदम काली थीं, मानो उस प्राणी में पुतलियाँ ही न हों। वह उसके बहुत करीब था, ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था। तभी उनकी नज़रें मिलीं।
मानो इतना ही काफी नहीं था, तभी एक दिल दहला देने वाली चीख सुनाई दी।
समुद्र तट के उस किनारे से जहाँ वह अनजान जोड़ा खड़ा था।
बहुत खूब। उन्हें शव मिल गया।

तीन

चार वर्ष पहले
'तुम तो बच्चे की तरह नाव चलाते हो,' मास्टर रीस ने कहा।
मैं बारह साल का हूँ। मैं एक बच्चा हूँ।
लेकिन सिंदबाद ने अपनी ये बातें मन में ही रखीं, वरना उसे उद्दंड समझा जाता। वह पूरी ताकत से चप्पू चलाता रहा, जबकि उसका स्वामी पीछे झुककर द्वीप का अवलोकन करता रहा।
‘हम आतंक और पागलपन की गहराइयों में उतरते हैं। यह अलौकिक शक्तियों
और विकरालता का द्वार है,’ मास्टर रीस ने कहा। ‘क्या तुम्हें इस मिशन की गंभीरता का एहसास है, लड़के?’
सिन्बाद ने सिर हिलाया, उसके काले घने बाल उसकी आँखों पर लहरा रहे थे। उसका जबड़ा सुस्पष्ट था, जिससे वह अपनी उम्र से अधिक परिपक्व दिखता था। उस पर असंख्य प्राचीन प्रतीकों से खुदा हुआ एक कुर्ता ढीला-ढाला लटका हुआ था और उसकी छोटी सी कमरबंद से तलवार की म्यान लटक रही थी।
‘तुम उलझन में लग रहे हो। क्या बात है?’
सिंदबाद के मन में एक बेतुका सवाल उठा, लेकिन उसने शायद उस पर विचार करना उचित नहीं समझा। इसलिए उसने सवाल को अनसुना करते हुए नाव चलाना जारी रखा।
‘बोलो,’ उसके मालिक ने ठंडे स्वर में कहा।
सिंदबाद हिचकिचाया। ‘बात यह है कि खलीफा ने हमें आदेश दिया है, हमसे अनुरोध किया है कि हम उस चीज़ से लड़ें जो इस द्वीप पर आतंक मचा रही है, उसकी सेना और द्वीपवासियों को नुकसान पहुंचा रही है... लेकिन क्या वह यहाँ सेना भेजकर उससे लड़ नहीं सकता?’
‘लड़के, तुम ऐसे सवाल कर रहे हो जैसे तुम्हें हमारे संगठन का मकसद ही
समझ नहीं आता। हम वो करते हैं जो दूसरे नहीं कर सकते। हम वो खोजते हैं

जिससे दूसरे डरते हैं। खलीफा के लिए राक्षस जगत से कोई भी वास्ता रखना बहुत बड़ी मुसीबत है। इसलिए उसने विशेषज्ञों को काम पर रखा है। उसके हज़ार आदमी भी वो नहीं कर सकते जो हम कर सकते हैं। हम जादू-टोना जानते हैं और हमें पता है कि किन चीज़ों से उन जीवों को तकलीफ होती है। और हम ये सब बिना कुछ मांगे करते हैं,’ मास्टर रीस ने समझाया।
सिन्बाद ने सिर हिलाया और तेज़ी से चप्पू चलाने लगा। 'लेकिन उसके आदमी, जिन्होंने हमें यहाँ तक पहुँचाया, क्या उन्हें हमारी मदद नहीं करनी चाहिए?'
‘डर ने उनकी बुद्धि पर अंकुश लगा दिया है, लड़के। मनुष्यों की बातों
से परेशान मत हो। अगर खलीफा ने हमें द्वीप पर छोड़ने का आदेश न दिया होता, तो वे स्वेच्छा से भी नहीं आते,’ मास्टर रीस ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘उन्हें द्वीपवासियों और यहाँ मौजूद उनके आदमियों की कोई परवाह नहीं है। उनके लिए तो यह पहले ही एक हारी हुई लड़ाई है। वे तो पहले ही मर चुके हैं। लेकिन हम, सेइड, लोगों का साथ नहीं छोड़ते। हम अंधकार के आगे नहीं झुकते।
हम आशा के लिए संघर्ष करते हैं। हम न्याय के लिए लड़ते हैं। हम बुराई के खिलाफ लड़ते हैं।’
मास्टर रीस ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। 'तेज़ नाव चलाओ।' उन्होंने इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि यह चिल्लाने से भी ज़्यादा बुरा लगा।
अपनी बची हुई ऊर्जा से सिंदबाद नाव चलाकर किनारे तक पहुँचा। जब ज़मीन
का नज़ारा नज़र आया, तो सिंदबाद नाव से बाहर निकला और उसे एक चट्टान से बाँध दिया।
मास्टर रीस नीचे उतरे और सिंदबाद को थपथपाकर काम शुरू करने का इशारा किया। और सिंदबाद ने द्वीप के नज़ारों को निहारते हुए अपना काम शुरू किया — घने पेड़ों की छतरी, हरी लताएँ और घने कोहरे को चीरती हुई हल्की रोशनी की किरण।
सिन्बाद ने देखा कि उनके जहाज के किनारे से कुछ मीटर दूर ज़मीन में एक झंडा गड़ा हुआ था। गौर से देखने पर उसने पाया कि वह अब्बासिद साम्राज्य का झंडा था—काले रंग की पृष्ठभूमि पर बना अर्धचंद्र स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। और वह झंडा फटा हुआ था, मानो किसी अलौकिक शक्ति ने उसे खरोंचकर जला दिया हो।
‘अरे, वहाँ!’ एक आवाज़ आई।

कमर में धातु की तलवार बांधे एक बौना आदमी उनकी ओर दौड़ता हुआ आ रहा
था। उसने एक लंबा कुर्ता, तंग पजामा और एक पगड़ी पहन रखी थी जिससे उसका आधा चेहरा ढका हुआ था।
‘क्या तुम सेइड्स हो?’ सैनिक हांफते हुए बोला। ‘बिस्मिल्लाह!’ उसने सिंदबाद की ओर देखा। ‘तुम तो बच्चे हो। मैंने अफवाहें सुनी थीं। यकीन नहीं होता कि वे सच हैं। तुम्हारा गिरोह उन्हें बहुत कम उम्र में ही पकड़ लेता है, एकदम छोटी उम्र में।’
सिन्बाद ने अपनी नाक फुला ली। उसे 'युवा' कहलाना पसंद नहीं था। वह छह साल की उम्र से ही सेइड बनने का प्रशिक्षण ले रहा था।
‘मैं हमेशा से इस बात को लेकर उत्सुक रहा हूँ कि सेइड्स इंसान होते
हुए भी राक्षसों से कैसे लड़ते हैं? कैसे?’ सैनिक ने पूछा।
मास्टर रीस ने शांत स्वर में उनके पास आते हुए कहा, 'ज्ञान ही हमारा हथियार है। सही ज्ञान से हम सबसे शक्तिशाली राक्षसों का भी शिकार कर सकते हैं। अब बताओ, अगर तुम्हारी बातचीत खत्म हो गई है, तो इस द्वीप पर क्या हो रहा है?'
सिपाही का चेहरा गंभीर हो गया। 'बाकी आदमी कहाँ हैं? मुझे लगा था... मुझे लगा था कि वे आ जाएँगे।'
वे चाहते हैं कि हम पहले काम खत्म कर लें।
‘कायरों!’ सैनिक गुर्राया। ‘चलो मैं तुम्हें अपने कमांडर के पास ले चलता हूँ।’ वह जंगल की ओर चलने लगा और सिंदबाद अपने गुरु के साथ उसके पीछे- पीछे चल पड़ा। ‘यह सब एक लाश से शुरू हुआ जो हमें मिली... उसे नोंच-नोच कर खाया गया था; हालाँकि, उसका जो कुछ बचा था, वह शायद उसके सिर का एक हिस्सा और उसके अंग ही थे। और फिर बाद में, हमें बाकी के हिस्से मिले।’
सिंदबाद को उल्टी आने जैसा महसूस हुआ, लेकिन अपने स्वामी को शांति से चलते हुए देखकर उसने जानकारी को आत्मसात कर लिया।
‘जब भी यह दिखाई देता है, हम छिपना ही बेहतर समझते हैं... वरना हमारा भी
वही हाल हो सकता है जो दूसरों का हुआ। हमें नहीं पता कि यह क्या है और यही बात हमें और भी डराती है।’ फिर सिपाही कंकड़-पत्थर से भरे रास्ते की ओर मुड़ा, जहाँ एक पेड़ की शाखाओं से लालटेन लटक रही थीं और ज़मीन पर सूखे, काले खून की बूँदें बिखरी हुई थीं। ‘यह इतना रहस्यमय है कि हम इसके बारे

में तरह-तरह की कहानियाँ गढ़ लेते हैं, खासकर हाल ही में जो हमें मिला है - इसका खोल।’
‘इसका खोल?’
“ओह हाँ, कमांडर आपको दिखा देंगे।” सैनिक कांप उठा। “कमांडर सभी ग्रामीणों को छावनी परिसर में ले आए हैं। अब ज़्यादा सुरक्षित है, आप समझ रहे हैं ना।”
वे उस सुनसान गाँव से गुज़रे। सिंदबाद ने जहाँ भी देखा, उसे वीरान झोपड़ियाँ, टूटी-फूटी छतें और टूटे-फूटे बर्तन ही नज़र आए। बाहर धनुष लिए पहरेदार खड़े थे, जबकि दूसरे पहरेदार झोपड़ियों में बर्तन और बुनियादी सामान लूट रहे थे। तीनों जब वहाँ से गुज़रे तो उन्होंने सिंदबाद और उसके गुरु को उम्मीद और थोड़ी घबराहट भरी निगाहों से देखा।
मास्टर रीस ने कहना शुरू किया, 'जहाज पर मौजूद आपके दोस्तों के विपरीत, आप और आपके साथी खुले में खड़े होने के लिए काफी बहादुर हैं।'
‘यह सुबह नहीं आता,’ सैनिक ने कहा। ‘यह रात में निकलने वाला जीव है, इसलिए हम वास्तव में बहादुर नहीं हैं, बस समझदार हैं।’ वे एक सुनसान रास्ते पर थे, जो छावनी परिसर की ओर जाता था, जो बाँस से बना एक ढाँचा था और बाकी पेड़ों से कहीं ऊँचा था। वह आदमी चलना बंद करके उन दोनों के करीब झुक गया। ‘कमांडर से मिलने से पहले, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि...’ उसने मास्टर रीस से फुसफुसाते हुए कहा, ‘मेरे पास एक सिद्धांत है... और यह वह सिद्धांत है जिस पर सभी ग्रामीण विश्वास करते हैं। लेकिन सैनिक नहीं। वे सोचते हैं... उम... वे सोचते हैं कि हम गलत हैं। लेकिन
मुझे लगता है कि इस प्राणी को किसी ने बुलाया है।'
‘बुलाया गया?’ मास्टर रीस की आंखें ऊपर उठ गईं।
‘हाँ... एक चुड़ैल ने। एक जादूगरनी ने। वो जंगल में घूमती है। हमने उसे दिन में कभी नहीं देखा, लेकिन वो रात में आती है।’ सिपाही अपनी तलवार की मूठ से खेलने लगा। ‘मुझे लगता है कि अगर तुम उसे जला दोगे, जैसे किसी चुड़ैल को जलाते हो, तो सब कुछ सामान्य हो जाएगा। वो प्राणी मर जाएगा। तुम्हें मेरी बात माननी होगी... प्लीज़।’
मास्टर रीस भावहीन बने रहे। 'नाम।'
‘सफीना उमैर,’ उस आदमी ने थोड़ा कांपते हुए कहना शुरू किया, ‘और यकीन मानिए, वह सिर्फ चौदह साल की है।’

चार

आज
पीछे से आ रही चीखों और विलापों के बीच, सिंदबाद को जो आवाजें सुनाई दे रही थीं, उनमें से कोई भी आवाज उस सन्नाटे से मेल नहीं खाती थी जो उसके और उस मांसभक्षी जिन्न के बीच गूंज रहा था जिसे वह देख रहा था।
हुसैन, जो सिंदबाद के सामने आए सबसे बातूनी लोगों में से एक था, भय से अपनी जगह पर जम गया, उसकी पुतलियाँ डर से फैल गईं।
सिन्बाद ने खुद को संभाला और यह याद करने की कोशिश की कि मास्टर रीस
ने उसे कुत्रब के बारे में क्या सिखाया था।
क्या तुम मेरे बारे में सोच रहे हो? अचानक उसके दिमाग के गलियारों में एक भयानक आवाज गूंज उठी।
बिल्कुल। कुत्रब बोल नहीं सकते, लेकिन वे जिससे चाहें उससे टेलीपैथी
के ज़रिए बात कर सकते हैं। पलक झपकते ही सिंदबाद ने अपने मन की बात कह दी।
अगर कुत्रब को पता चल गया कि वह क्या सोच रहा था, तो उसे उसकी कमज़ोरी का पता चल जाएगा। और यह खतरनाक हो सकता है।
जिन्न धीरे-धीरे करीब आया और झुक गया। उसने अपना मुंह खोला, जिससे उसके अंदर की मांसपेशियां हिलती हुई दिखाई देने लगीं।
जैसे ही सिंदबाद ने सबसे बुरे के लिए खुद को तैयार किया, उसने अपने बगल में एक हलचल सुनी जिसके साथ ही दांतों के जोर से किटकिटाने की आवाज भी आई। हुसैन।
काले धुएं के बादल ने उनके शरीर को घेर लिया। बहुत खूब। कुत्रब ने अपना मुंह खोल दिया है।
सिंदबाद ने कुत्रब की ओर देखा और तभी, धुएं के घने बवंडर वातावरण में
भर गए, जो बिना किसी आवाज के एक सर्प के आकार के रास्ते पर उसकी ओर बढ़ने लगे।
अंत में आपको मिला।

तुम क्या चाहते हो? सिंदबाद ने मन ही मन कुतुब से पूछा, उसकी निगाहें कुतुब पर टिकी हुई थीं।
मैं वापस जाना चाहता हूँ।
कहाँ?
मेरी दुनिया में।
सिंदबाद इसका मतलब जानता था।
मनुष्यों की हत्या। यह मुझे वहां से बाहर निकालने के लिए किया गया था।
बिल्कुल। और क्यों?
हालाँकि उस प्राणी का चेहरा भावहीन रहा, फिर भी उसने कर्कश स्वर में कहा, "जब मैं गलती से नश्वर संसार में आया, तो मैं निराश था। मैं मृतकों का मांस खाता था। मैं घर जाना चाहता था। लेकिन फिर... फिर... मैंने तुम्हारे बारे में सुना। अल-नुहराद के कबीले वाले के बारे में। आशा ने मुझे जकड़ लिया और मैंने तुम्हें खोजने की कोशिश की, लेकिन तुम गायब हो गए थे। एक दिन, मैंने तुम्हें ढूंढ लिया। एक छद्म नाम से काम करते हुए। तुम नहीं चाहते थे कि किसी को तुम्हारे अस्तित्व के बारे में पता चले।"
मेरे पास यहाँ के लोगों को आतंकित करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। मुझे किसी भी तरह तुम्हें ढूंढना ही था।
सिन्बाद चुप रहा। वह खुद को मूर्ख और बेबस महसूस कर रहा था। गुप्त रहकर और खुद को सेइड के रूप में प्रकट न करके उसने जो स्वार्थी फैसला लिया था, उसकी वजह से उसने निर्दोष लोगों को कष्ट सहने दिया। उन दिनों, जब पैसे अच्छे होते थे, तो वह अक्सर खाली समय में जानवरों का शिकार किया करता था। उसकी शक्तियों ने उसे जल्दी अमीर बनने का रास्ता दिखाया था, इसलिए जाहिर है कि वह दिरहम के लिए ही यह सब कर रहा था। अगर उसके संघ को इसके बारे में पता चलता, तो वे इसे मंजूर नहीं करते। लेकिन फिर, कौन बताएगा?
आप गलती से टेलीपोर्ट कैसे हो गए?
खैर... मैं अपने एक दोस्त के साथ मजाक कर रहा था और अंत में मेरे साथ ही मजाक हो गया।
आपकी आयु कितनी है?
छह सौ वर्ष।
सिंदबाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। तुम बच्चे हो? वो भी समाज विरोधी।

बच्चे? सिंदबाद को धुएं के घने बादल ने घेर लिया। तुम तो अच्छी तरह जानते हो कि जिन्न इंसानों की जान की परवाह नहीं करते। हमारे लिए तो इंसान चींटियों के समान हैं।
सिन्बाद ने दांत पीसते हुए कहा, "हाँ, मानो या न मानो, मेरे हिसाब से
यह एक बड़ी तारीफ़ है। मैंने अक्सर इनकी तुलना प्रोटोज़ोआ से की है। खैर, मुझे नहीं पता कि बरज़ख का पोर्टल कैसे खोला जाए।"
झूठ! जिन्न करीब आया, खून की दुर्गंध सिंदबाद की नाक में घुस गई। मैं तुम्हारा कुर्ता देख रहा हूँ। तुमने इस पर अपनी सुरक्षा के लिए सेल्टिक प्रतीक चिन्ह बनवाए हैं। एक ढाल! तुमने दोनों हाथों की अनामिका उंगलियों में पुखराज और नीलम की अंगूठियां पहनी हैं। मैं जानता हूँ कि तुम जादू- टोना जानते हो। इसलिए झूठ मत बोलो। मुझे... अपनी दुनिया में वापस जाना है। सिंदबाद अचंभित रह गया। कुत्रब उसे अच्छी तरह जानता था।
क्यों?
मेरी मां... मेरी मां को मेरी चिंता होती।
सिंदबाद ने उसकी आवाज में घोर हताशा को महसूस किया।
‘यह सब क्या हो रहा है?’ हुसैन ने आखिरकार कहा, उसके दांत अभी भी किटकिटा रहे थे।
‘चुप रहो!’ सिंदबाद ने अचानक अपना सिर घुमाया। हुसैन ने अपने होंठ बंद
कर लिए, लेकिन वह कांपता रहा।
वह प्राणी भी शांत हो गया। उनके पीछे, सिंदबाद को लड़की की चीख-पुकार सुनाई दे रही थी, क्योंकि तटरक्षक अधिकारी उससे शव के बारे में पूछताछ कर रहे थे। सिंदबाद की बनाई योजना ने पूरी तरह से नया मोड़ ले लिया था।
आह भरते हुए उसने अपनी सफेद कमीज़ पर नज़र डाली, जिससे उसकी पहचान ज़ाहिर हो गई। उसने खुद को कोसते हुए कहा कि आज रात उसने अपना मैरून ओवरकोट क्यों नहीं पहना, जो उसकी ढाल को अच्छी तरह छुपाता। इस नन्हे जिन्न के सामने अपनी पहचान ज़ाहिर करना उसकी कितनी बड़ी नादानी थी। सेइड्स कवच या ढाल नहीं पहनते थे। उनके कपड़ों पर बने चिन्ह उन्हें राक्षसों और अलौकिक शक्तियों से बचाते थे। इससे वे अजेय तो नहीं हो जाते थे, लेकिन उन तीव्र अलौकिक हमलों को रोकते थे, जो किसी आम इंसान पर होने पर तुरंत मौत का कारण बन सकते थे। सिंदबाद ने झुंझलाहट में अपनी उंगलियां चटकाईं। धिक्कार है इन अंगूठियों पर! नीलमणि का टिमटिमाता नीला रंग धुंध में चमक रहा था।

तुम जानते हो कि यह हमारे संघ के नियमों के विरुद्ध है। मैं अब तुम्हारी मदद नहीं कर सकता। तुमने बीस मनुष्यों को मार डाला है। सिंदबाद ने आह भरी। वह जिन्न को भगाना चाहता था, लेकिन संघ के सर्वोच्च नियमों को तोड़ना, जो उसके जैसे सभी सेइड्स को बांधे रखते थे, भयानक परिणाम भुगतने पड़ते। मैं बस इतना कर सकता हूँ कि संघ के वकीलों से बातचीत करके तुम्हें जेल में कम सज़ा दिलवाऊँ और जल्दी रिहा करवा दूँ। देखो, अगर तुमने किसी मनुष्य की जान न ली होती, तो मैं...
और तभी कुत्रब ने अपने पंजे बढ़ाए—सिनबाद की ओर नहीं, बल्कि हुसैन
की ओर—और उसका गला पकड़ लिया, उसे हवा में तब तक ऊपर उठाया जब तक कि उसके पैर जमीन से कुछ इंच ऊपर बेतहाशा लटकने लगे।
जी? आपका मतलब क्या था? कुत्रब ने व्यंग्यपूर्वक सोचा।
हुसैन, जो सदमे और भय से पहले ही पीला पड़ चुका था, संघर्ष कर रहा था
और सांस लेने के लिए हांफ रहा था। उसके हाथ जिन्न की उंगलियों को जकड़े हुए थे, उसकी आंखें विनती भरी थीं जब वह अपने दोस्त की ओर मुड़ा।
उसे छोड़ दो। सिंदबाद ने शांत भाव से कुत्रब से विनती की।
क्या आप मेरी मदद करेंगे या नहीं?
सिन्बाद ने आह भरी। अगर वह मान जाता, तो वह सेइड नियमों का उल्लंघन करता और इसके परिणाम उसे गिल्ड के साथ मुसीबत में डाल देते। अभी नहीं, लेकिन एक दिन... उसे अंजाम भुगतना पड़ सकता है। और अगर वह नहीं भी जीता, तो उसका इकलौता दोस्त उसके सामने ही गला घोंटकर मार दिया जाएगा।
ठीक है, ठीक है। सिंदबाद ने मन ही मन संवाद किया। मैं आपके लिए पोर्टल खोल देता हूँ।

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [

‘चिंता मत करो। बस अपने घरों की रक्षा करो, हमने जो लोहा दिया है उसका इस्तेमाल करो।’ ग्रामीणों ने सिर हिलाया और चले गए। कमांडर ने गहरी साँस ली और अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया। तभी मास्टर रीस और सिन्बाद के साथ एक सैनिक अंदर आया।
‘कमांडर कासिम?’ सैनिक ने पूछना शुरू किया।
उच्च पदस्थ अधिकारी ने ऊपर देखा। सिंदबाद ने सोचा कि उसकी आँखें स्नेहपूर्ण और दयालु थीं।
पैदल सैनिक ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे लिए कुछ साथी लाया हूँ। ये... खैर... ये राक्षस शिकारी हैं।'
कासिम ने धीमी आवाज़ में कहा, 'सेइड्स। मुझे नहीं लगता था कि खलीफा जादू-टोने में लिप्त होता है।'
मास्टर रीस ने जवाब दिया, 'हम जादूगर नहीं हैं, लेकिन हम जादूगरी का अभ्यास करते हैं। मैं मास्टर रीस हूं और यह मेरा शिष्य सिंदबाद है।' कासिम ने सिपाही और मास्टर रीस को सिर हिलाकर अभिवादन किया, लेकिन सिंदबाद की बातों पर उसने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। 'कैप्टन अब्दुल, इन्हें यहाँ लाने के लिए आपका धन्यवाद। आपको राहत मिली है।'
सिंदबाद ने उस सिपाही की ओर देखा जिसने सिर हिलाकर जवाब दिया, झुककर अभिवादन किया और जाने से पहले सिंदबाद को आँख मारी।
‘कमांडर कासिम, हम आपकी किस प्रकार सहायता कर सकते हैं?’ रीस ने पूछा।
‘अगर हो सके तो वापस जाओ और खलीफा को मनाओ कि वह सौ जहाज भेजे जो उस भयानक जीव को खा जाएं। वे खुशकिस्मत हैं कि वह सिर्फ यहीं, इस द्वीप पर है, लेकिन अगर वह भाग गया तो दुनिया का अंत निकट है।’ कासिम ने गंभीर स्वर में कहा और उछलकर खड़ा हो गया। उसने मेज से एक पीला कागज उठाया और उसे ऊपर उठाते हुए कहा, ‘मेरे एक सैनिक ने, जिसने उसे देखा था, यह रेखाचित्र बनाया है।’
सिंदबाद की छोटी-छोटी आंखें चौड़ी हो गईं जब उसने अपने छोटे से शरीर
को हिलाया और रीस के साथ कागज को देखने के लिए आगे बढ़ा।
वह सिहर उठा। यह एक पक्षी का रेखाचित्र था। उसकी चोंच लंबी और जली हुई
थी और सिर विकृत था।
कमांडर ने कहा, 'यह तो बाज जैसा दिखता है। अजीब है ना?'

पीले कागज को कसकर पकड़े हुए रीस ने धीरे से खुद से कहा, 'यह चील नहीं है। नहीं। यह कुछ बहुत ही भयावह है।'
सिन्बाद ने मास्टर रीस की आवाज़ में भय सुना और उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। क्योंकि उन्हें हंसते हुए देखना जितना दुर्लभ था, उतना ही दुर्लभ था उन्हें इस डर में देखना।
‘यह क्या है?’ अजीब प्रतिक्रिया को देखकर कासिम ने कांपती आवाज में पूछा।
‘मुझे इसके लिए रिकॉर्ड देखना होगा, लेकिन मुझे लगता है कि मैंने यह तस्वीर पहले भी देखी है। क्या कोई सराय है जहाँ हम ठहर सकते हैं?’ रीस ने पूछा।
'जी हां, हम आपके लिए परिसर में एक झोपड़ी तैयार करवा देंगे।'
रीस ने सिर हिलाया और बोलना शुरू किया, 'मैंने एक लड़की के बारे में एक कहानी सुनी है। अफवाह है कि उसी ने आपके द्वीप पर यह विपत्ति लाई है।' कमांडर ने झल्लाकर कहा, “बकवास! गांव की गपशप है। तुम्हें पता है, डर
से लोग सबसे बुरी हरकतें करने लगते हैं। सच तो यह है कि जंगल में एक जंगली बच्ची है। उसे कभी-कभी देखा गया है। उनका मानना है कि वही यह सब कर रही है और किसी तरह की जादूगरनी है। लेकिन मुझे इन सब बातों पर यकीन नहीं है। भला कौन सी बच्ची इस भयानक जीव को काबू में कर सकती है?” उसने कागज पर, उस विकृत पक्षी के रेखाचित्र पर उंगली से थपथपाया।
'इस तरह का बच्चा जिसका अस्तित्व ही नहीं होना चाहिए,' रीस ने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी निगाहें जल्दबाजी में बनाए गए उस राक्षस से हट नहीं रही थीं।
‘क्या?’ कासिम ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
‘कुछ नहीं।’ रीस ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। ‘वे ऐसा क्यों सोचेंगे कि
यह लड़की है?’
अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुकते हुए, कासिम ठहाका लगाते हुए बोला, 'क्या तुम सच में गपशप जानना चाहते हो?'
'हाँ।'
‘तुम तो बड़े ही माहिर शिकारी हो, है ना?’ कमांडर ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘दरअसल... एक कहानी प्रचलित है कि उसके जन्म के समय उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी। कहते हैं कि यह प्रसव के दौरान होने वाली आम जटिलताओं, जैसे

रक्तस्राव, के कारण नहीं, बल्कि इस डर से हुई थी कि कहीं उसकी माँ ने किसी शैतान को जन्म न दे दिया हो। जैसा कि मैंने कहा, मुझे इस बकवास पर विश्वास नहीं है, लेकिन उसकी देखभाल करने वाली दाई कसम खाकर कहती है कि यह सच है और उसने इसे अपनी आँखों से देखा है।’
क्या दाई अभी भी जीवित है?
‘वह बूढ़ी हो चुकी है और उसे कुछ याद नहीं है। यह सब सुनी-सुनाई बातें हैं, मास्टर रीस। उन लोगों से पता चली हैं जिन पर मुझे भरोसा नहीं है।’ कासिम रुका। ‘खैर, उसके पिता ने उसकी देखभाल की। उसके तीन भाई भी थे, लेकिन धीरे-धीरे, एक-एक करके, वे मरने लगे—एक भेड़िये के हमले में मारा गया, एक दुर्घटना में और एक मलेरिया से। पिता थक गया था, खासकर जब उसने ग्रामीणों द्वारा फैलाई गई लगातार कहानियाँ सुनीं। वे उसे यहाँ या अपने आस-पास कहीं भी नहीं चाहते थे। मुझे लगता है कि वह भी यह मानने लगा था कि उस पर श्राप है या वह शैतान है। इसलिए, वह उसे जंगल में ले गया और गाँव से दूर वहीं छोड़ दिया।’
सिंदबाद के दिल की धड़कन तेज हो गई। वह अपने वजन के कारण बेचैनी से हिलने लगा और उसने अपनी सफेद कमीज को कसकर पकड़ लिया जिस पर मंत्रों के चित्र बने हुए थे।
‘लेकिन अजीब बात है,’ कासिम ने आगे झुकते हुए कहा, ‘कि... इस घटना के बाद
वह प्राणी प्रकट हुआ, मानो उसके साथ हुए अन्याय का बदला ले रहा हो। इसलिए अब लोग सोचते हैं कि वह प्राणी यहाँ सभी को मारने के बाद ही शांति पाएगा।’ ‘उस प्राणी ने सबसे पहले किस पर हमला किया?’ रीस ने पूछा।
'क्या?'
'आपने मुझे सुना।'
कमांडर ने पलकें झपकाईं। 'वह पिता था।'
रीस ने आह भरी, उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। 'मैं समझ गया।'
‘यह महज़ एक संयोग है। मुझे पूरा यकीन है।’
‘मुझे भी पूरा यकीन है,’ रीस ने व्यंग्यपूर्वक कहा। ‘वे उस शंख के बारे में भी बात करते हैं जो आपको मिला था।’
‘शंख? अरे, अब्दुल ने आपको गलत जानकारी दी होगी। यह शंख नहीं है, मास्टर रीस। यह एक अद्भुत वस्तु है।’ उन्होंने झटपट अपनी पगड़ी उठाई और सिर पर रख ली। फिर उन्होंने कहा, ‘आइए, मैं आपको दिखाता हूँ।’

बारह वर्षीय सिंदबाद अपने आगे चल रहे दोनों आदमियों के पीछे-पीछे चलने लगा। उसके मन में भय घर करने लगा था। उसे यह भावना, यह घोर निराशा, बिल्कुल पसंद नहीं थी। चलते-चलते उसने एक बूढ़ी औरत को देखा, जिसकी त्वचा सांवली और झुर्रीदार थी, वह एक झोपड़ी के बाहर बैठी थी और एक युवा नर्स उसकी देखभाल कर रही थी। उसने घूंघट ओढ़ा हुआ था और केवल उसकी आंखें ही दिखाई दे रही थीं।
सहज ही उसने सिंदबाद की ओर देखा। सिंदबाद को अपनी गर्दन पर रोंगटे खड़े होते महसूस हुए। ऐसा लगा जैसे वह उसे घूर रही हो।
उसकी आत्मा की गहराई में।
क्या वह उस शैतानी लड़की की मां की दाई थी?
सिंदबाद ने अपनी निगाहें घुमाईं और आगे चल रहे लोगों तक पहुँचने के लिए अपने कदम तेज़ किए। जल्द ही, उसने महसूस किया कि वे परिसर के बाहरी इलाके में पहुँच रहे थे, और पीछे के उस द्वार से निकल रहे थे जिसकी कड़ी सुरक्षा की जा रही थी। जैसे ही वे निकले और घने जंगल में प्रवेश किया, बीस सैनिकों का एक दल प्रकट हुआ, जिन्होंने अर्धवृत्त बनाकर उनके पीछे चलना शुरू किया। सिंदबाद ने उनकी उपस्थिति में खुद को सुरक्षित महसूस किया। हम सुरक्षित हैं। लेकिन किससे? उसने सोचा। लड़की से या उस जीव से? मज़े की बात तो यह है कि मुझे पक्षी से ज़्यादा लड़की से डर लगता है।
वह पक्षी, भले ही भयानक और विकृत था, लेकिन... खैर... बस एक पक्षी ही था। उसने इससे भी बुरे देखे थे, चाहे वो प्रेत हों या वेयरवोल्फ। लेकिन यह वाकई एक अनोखा पक्षी था। इसकी शक्तियाँ क्या थीं? क्या यह आग उगलता था—जैसे इसने गाँव को तबाह करने के लिए किया था? क्या इसके पंजे बड़े थे और इसीलिए इसने इतने सारे द्वीपवासियों को मार डाला था? जिज्ञासा और अनसुलझे सवालों से भरा सिंदबाद यह महसूस नहीं कर पाया कि वह अब मास्टर रीस और कासिम से आगे निकल चुका है, जो तेज़ी से आगे बढ़ गए थे। घबराकर उसने भी अपनी गति बढ़ा दी और उनकी बातचीत के कुछ अंश सुनने में कामयाब रहा।
‘...हमें थोड़ी देर में निकलना होगा। हम यहाँ ज्यादा देर नहीं रुक सकते, मास्टर रीस। लगभग शाम हो चुकी है,’ कासिम कह रहा था। सिंदबाद ने गौर किया कि उसकी आवाज कर्कश थी—जैसे कोई बहुत ज्यादा पाइप पीता हो।
क्या यह लड़की सिर्फ अंधेरे में ही बाहर निकलती है?

‘अगर वो गई भी है, तो हमें नहीं पता। जैसा कि मैंने आपको बताया, हम अंधेरे में बाहर नहीं निकलते,’ कासिम ने जवाब दिया। ‘लेकिन... हमने उसे दिन में देखा है। मतलब, उसकी झलक देखी है। मेरे कुछ आदमियों ने एक बार उसे पकड़ने की कोशिश की थी, लेकिन वो पलक झपकते ही गायब हो गई।’
'गायब हो गया। मैं समझ गया।'
वे एक खुले मैदान में पहुँचे जहाँ उनके चारों ओर के पेड़ जलकर मर चुके थे। वहाँ न तो घने पेड़ों की छाया थी, न ही ज़मीन पर पतझड़ के पत्तों की चादर बिछी थी। यह किसी परीकथा के जंगल जैसा नहीं था। और इस भयानक जगह के बीचोंबीच वह चीज़ थी जो कासिम उन्हें दिखाना चाहता था।
बिना रुके, रीस और कासिम आगे बढ़ गए।
‘यही वह जगह है,’ कासिम ने अचानक घोषणा की। ‘शिकार करते समय हमें यह मिला था। हमारा मानना है कि यहीं से इसकी उत्पत्ति हुई थी।’
सिंदबाद वहीं जम कर खड़ा रह गया। उसकी आशंकाएँ बढ़ती गईं और उसे समझ में आ गया कि यह पक्षी इतना बड़ा खतरा क्यों था। क्योंकि उसके सामने एक टूटा हुआ अंडा था, जिसके टूटे हुए टुकड़े ज़मीन पर बिखरे पड़े थे। सिंदबाद के हाथों के बाल खड़े हो गए, क्योंकि फूटने वाला अंडा... बीस फीट जितना लंबा था।

छह

आज
"तुम्हें कैसे पता चला कि यह मैं हूँ?" कुत्रब ने बेपरवाही से पूछा, और सिंदबाद के दोस्त को कसकर पकड़ लिया, जो राख के धुएँ के झोंके उसके चेहरे पर लगने से चीख पड़ा। "मेरा मतलब है, मेरे जैसे लोग।"
क्योंकि... सिंदबाद ने बोलना शुरू किया। वह घुटनों के बल बैठ गया और अपनी उंगली से एक वृत्त के अंदर पंचकोण बनाया। समुद्र तट के पास इस सुनसान मैदान में नारियल के पेड़ खामोश खड़े थे। जिस तरह से तुमने मनुष्यों को मारा। तुमने उनके अंग खा लिए, हद हो गई! न आंखें, न जिगर, न दिल। ऐसा तो सिर्फ अजिन ही कर सकते हैं। वो भी बेहद हिंसक। मारिद नहीं। उन्हें हिंसा से नफरत है।
जिन्न ने अपने पैर घसीटे और उसकी लंबी, चिकनी चोटी इधर-उधर लहराई। है
ना? उबाऊ लोग। और पता नहीं क्यों, ये तो ऊँचे दर्जे के जिन्न हैं। क्या मज़ाक है! कुत्रब ने गुर्राते हुए, भयभीत हुसैन को अपनी मुट्ठी में कसकर पकड़ लिया और उसकी कमर से जकड़ लिया।
अपनी आंखों को घुमाने से रोकने की पूरी कोशिश करते हुए, सिंदबाद ने आगे कहा, हां, जैसे कि तुम नहीं हो।
क्या?
जैसा कि मैं कह रहा था... मारिड्स से बिल्कुल अलग हैं आई फ्रिट्स, जो अपने अपराधों का प्रदर्शन करना पसंद करते हैं। वे हिंसक और निर्दयी हैं। लेकिन कुत्रब कहीं बीच में आता है। मुझे तब एहसास हुआ कि कुत्रब ही इन हत्याओं के पीछे है जब मैंने कब्रिस्तान में लाशों को कुतरते हुए देखा। मैंने सोचा कि जो भी मृतकों के साथ ऐसा कर रहा है, वह जीवितों के साथ भी ऐसा ही कर रहा होगा। साथ ही, हवा में जस्ता की गंध थी—शायद तुम्हारी बची हुई दुर्गंध।

कुत्रब हंसी से कांप उठा, उसकी रीढ़ की हड्डियां चटक उठीं। तुम चालाक हो। पर मुझे फंसाने के लिए काफी चालाक नहीं। तुम उसे नहीं फंसा सकते जो अपने फंसाने वाले का पहले से ही अनुमान लगा रहा हो। बताओ, तुम्हारी उम्र कितनी है?
अगर तुम मेरे दोस्त को जाने दोगे तो मैं तुम्हें बता दूंगा। सिंदबाद
ने सीधे-सीधे कहा। पेंटैकल बन चुका है और अगर तुम उसे अपने साथ ले जाने का इरादा रखते हो, तो मैं कहूंगा, मत ले जाओ। वह यात्रा के लिए आदर्श साथी नहीं है। लेकिन रास्ते में कुछ गीत ज़रूर गा सकता है।
जिन्न ने आह भरी और धुआँ छोड़ा। उसकी काली चोटी उसके कंधे पर पड़ी थी
— घबराए हुए लेकिन नाराज़ हुसैन के करीब, जो घृणा से उस काले बालों से दूर हट गया। सिंदबाद ने ऊपर देखा और समझ गया कि जिन्न क्या कर रहा है। चोटी में जैसे जान आ गई थी और वह हुसैन की गर्दन के चारों ओर एक चिकने, फिसलन भरे काले सांप की तरह लिपट रही थी।
मेरे जाने से पहले, कुत्रब ने संदेश दिया, मुझे तुम्हारा नाम चाहिए।
क्यों?
तुम जानते हो क्यों।
सिंदबाद जम गया। सिंदबाद।
आपका असली नाम।
सिंदबाद ने मन ही मन बड़बड़ाते हुए कहा, "मेरे पास तो है ही नहीं। और उसे जाने दो।"
फिर कुत्रब की आवाज़ सिंदबाद के दिमाग में गूंज उठी। झूठ मत बोलो!
मैं जानता हूँ कि तुम धोखेबाज़ क्या करते हो। और ऊपर से तुम चाहते हो कि मैं अपना इकलौता सहारा, तुम्हारा यह मूर्ख दोस्त, छोड़ दूँ और फिर मुझे अपने बनाए इस पंचकोण में फँसा दूँ। तुम्हें क्या लगता है कि मैं डिज़ाइन की बारीकियों को नहीं समझ सकता? दरअसल, मैं डिज़ाइन में माहिर हूँ! यह मेरा शौक है! उसने घना काला धुआँ उगला। अगर मुझे तुम्हारा नाम पता चल गया, तो तुम मुझे नुकसान नहीं पहुँचा पाओगे और तुम्हें मुझे छोड़ना ही पड़ेगा। तो... तुम्हारा नाम? प्लीज़।
सिन्बाद ने देखा कि सांप जैसी नुकीली चोटी लगभग बेजान पड़े हुसैन के चारों ओर कसती जा रही है। असहनीय दर्द के कारण उसकी आँखों में आँसू भर आए थे।

ठीक है! ये सुलेमान अल-ताजिर हैं।
अगर ऐसा प्राणी मुस्कुरा सकता है, तो शायद कुत्रब ने भी मुस्कुराया होगा, जब उसने अपने होंठविहीन मुंह को अजीबोगरीब ढंग से पीछे खींचकर, विजय के भाव से अपने नुकीले दांत दिखाए। धन्यवाद, सुलेमान अल-ताजिर।
कुत्रब ने एक मिनट तक पंचकोण का अध्ययन किया और फिर हुसैन को हवा में उछालकर सिंदबाद की ओर फेंक दिया। सिंदबाद ने हाथ बढ़ाकर उन्हें पकड़ लिया। "क्या तुम ठीक हो? बस एक पेड़ से टिक जाओ और गहरी सांसें लो," सिंदबाद ने निर्देश दिया।
हुसैन ने अपनी गर्दन के आसपास उभरे लाल निशानों पर उंगलियां फेरते हुए जवाब दिया, 'मैं ठीक हूं।'
‘अगर तुम न होते तो मैं उसे वहीं मार डालता।’ सिंदबाद ने दांत पीसते
हुए कुत्रब की ओर मुड़ा। ‘मैं सोलह साल का हूँ। तुम्हारे जैसा ही बच्चा।’ क्या?
आपने मुझसे मेरी उम्र पूछी थी।
कुत्रब चारों पैरों पर बैठा था—लगभग कुत्ते जैसा दिखता था, बस उसकी मासूमियत और रोएँदार शरीर का फर्क था। उसने अपना मुँह खोला और अपने नुकीले दाँत दिखाए, मानो कोई खूंखार कुत्ता हमले के लिए तैयार हो। मुझे वापस भेज दो।
आपने कहा कि आपने अपने दोस्त पर शरारत की। आप तो बड़े शरारती हैं, है
ना?
क्या? नहीं। किसने कहा ऐसा?
तुम्हें अपनी माँ को परेशान करना अच्छा लगता है। सिंदबाद पंचकोण के चारों ओर घूमा, उसकी थोकचा तलवार अंधेरे में चमक रही थी।
मुझे मेरी मां से बहुत प्यार है।
फिर भी, मुझे ढूंढने के लिए तुमने इतनी मेहनत की। तुम किसी और सेइड के पास भी जा सकते थे।
कुत्रब ने अपना निचला होंठ बाहर निकालते हुए और अपने पैरों की ओर देखते हुए कहा, "मुझे यहाँ एक भी नहीं मिला," मानो उसे कोई शिक्षक डांट रहा हो।
नहीं। मुझे लगता है कि आपको यहाँ रहना तब तक अच्छा लगता था जब तक कि आपको उसकी याद नहीं आने लगी...।

कुत्रब ने कहा, क्या तुम्हें पता है कि मैं इस पंचकोण से कूदकर तुम्हारे दोस्त को फिर से चोट पहुंचा सकता हूँ?
मुझे पता है, मुझे पता है। लेकिन मुझे यह भी पता है कि तुम झूठ बोल रही हो। तुम स्वतंत्र होना चाहती थी, अपनी माँ से दूर, लेकिन जब तुम ऐसा करने में कामयाब हो गई, तो तुम्हें एहसास हुआ कि तुम उसे कितना याद करती हो, यहाँ तक कि उसकी सारी चिंताएँ और कमरा साफ करने की ज़िद भी। क्या मैं सही कह रही हूँ? वो शरारत... वो वजह जिसकी वजह से तुम यहाँ फँसी हो... आखिर शरारत तो थी नहीं? किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जो
सेइड्स और जिन्नों को बेवकूफ बनाने के तरीकों के बारे में इतना कुछ जानने के बाद, मैं कहूंगा कि आप काफी ज्ञानी हैं। वास्तव में, आपका दिमाग बहुत तेज है। आप मेहनती हैं। और मुझे एक और बात पता है। सिंदबाद मुस्कुराया।
क्या? कुत्रब ने कांपती हुई आवाज में गुर्राया।
मेहनती और बुद्धिमान लोग शरारतें नहीं करते।
ठीक है। ठीक है! कुत्रब खड़ा हुआ और मुंह फुलाने की कोशिश करने लगा, मानो डरा हुआ हो— अगर कभी कोई इतना डरा हुआ दिखने वाला दानव था तो वो यही था। तुम सही कह रहे हो। मैं यहाँ इंसानों पर शोध करने आया था। मैं एक शोधकर्ता हूँ—बस यही बात है! और यही मेरा प्रोजेक्ट था। लेकिन फिर मैं अटक गया और मुझे वापस जाना पड़ा। कोई शरारत नहीं थी... ये बस मेरी माँ की बात है... वो नहीं चाहती थी कि मैं घर से बाहर जाऊँ। कभी नहीं! उन्हें डर था कि मुझे चोट लग जाएगी।
खैर, यह एक जायज़ डर है क्योंकि तुम बच्चे हो, सिंदबाद ने कहना शुरू किया। मैं समझता हूँ, ग़ुल। मैं समझता हूँ कि तुम किस दौर से गुज़रे हो। तुम हमेशा एक ही जगह बैठकर पढ़ाई नहीं कर सकते। तुम्हें पता है, मुझे भी पहले ऐसा ही डर लगता था—
घुल कौन है?
आप। आपका नाम।
जिन्न ने अपना सिर हिलाया और गंभीरता से कहा, नहीं। मैं ज़ोर हूँ... अचानक, वह रुक गया। उसकी काली आँखें चौड़ी हो गईं और उसका शरीर काँपने लगा। नहीं!
सिंदबाद मुस्कुराया और अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाल ली।

तुमने मुझे धोखा दिया! तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी! ज़ोर दहाड़ते हुए पंचकोण के बाहर अपने पैरों पर खड़ा हो गया। उसके नुकीले तलवारों जैसे पंजे फटे-पुराने सफेद कुर्ते में लिपटे घुंघराले बालों वाले लड़के की ओर बढ़े।
‘सिंदबाद! सिंदबाद... मेरा इकलौता दोस्त...’ हुसैन पीछे से चिल्लाया, जब उसने उस घिनौने राक्षस को अपने दोस्त की ओर हवा में उछलते देखा, लेकिन एक अदृश्य शक्ति ने उसे वापस धकेल दिया। ‘रुको, ये क्या?’
रुको, क्या हुआ? ज़ोर अपनी ही हड्डियों के ढेर में उलझकर चिल्लाया। सिन्बाद ने शांत भाव से कुत्रुब की ओर देखा, उसकी उंगलियाँ अपनी थोकचा तलवार की मूठ पर हल्के से थपथपा रही थीं। शोधकर्ता जिन्नी, आप सुलेमान की उस दोहरी मुहर पर खड़े हैं जो जिन्नी का नाम प्रकट होते ही उसे कैद कर लेती है। आपका नाम सक्रियण कुंजी के रूप में काम करता है।
‘हाँ! यहीं रहो, बड़े बदमाश!’ उसके पीछे खड़ा हुसैन खुशी से ताली बजाने
और उछलने लगा। सिंदबाद हल्की सी हंसी हंस पड़ा। वह जानता था कि हुसैन उनकी टेलीपैथिक बातचीत नहीं सुन सकता, लेकिन वह देख सकता था कि जिन्न फंस गया है।
मुझे रिहा कर दो, सुलेमान अल-ताजिर। मैं तुम्हारा नाम जानता हूँ और तुम्हें मेरे आदेश का पालन करना होगा।
कौन सा सुलेमान?
सुलेमान तुम।
सिन्बाद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। उह, यह मेरा असली नाम नहीं है। यह मेरे कई उपनामों में से एक है।
जिन्न भय से चीख उठा और उसने अपने चारों ओर मौजूद अदृश्य कवच पर मुक्के मारे और खरोंचें मारीं।
‘उम्म... सिंदबाद। तुम्हें उसे मार डालना चाहिए इससे पहले कि आम नागरिकों को पता चले कि यहाँ एक जिन्न है,’ हुसैन ने पीछे से चहकते हुए कहा।
‘सचमुच!’ सिंदबाद ने अपना सिर हिलाया। वह जानता था कि उसे क्या करना है—घेरे में प्रवेश करना है।
योजना समझकर ज़ोर ने धमकी भरे अंदाज़ में हँसते हुए कहा, "सुलेमान हो
या न हो, तुम गलती करोगे। शिकारी, तुम मेरे साथ फँस जाओगे।"

सिन्बाद ने मानो यह सुना ही नहीं, जैसे ही वह बाहरी घेरे के भीतर दाखिल हुआ, आकाश-लोहे से बनी उसकी थोकचा तलवार चांदी जैसी चमकती रोशनी में नहा उठी। नहीं। मेरे साथ यहाँ रहकर तुम गलती कर रहे हो।
कुत्रब ने अपने नुकीले दांत दिखाए और सिंदबाद की ओर झपटा, मानो उस छोटी सी जगह में उड़ रहा हो। उसके लंबे पंजे सीधे सिंदबाद की गर्दन पर लगने वाले थे, तभी सिंदबाद ने फुर्ती से एक तरफ पलटी मार ली। पुराने दांव! सिंदबाद मुस्कुराया। ज़ोर ज़ोर से गुर्राया और अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया, उसकी रीढ़ सीधी हो गई और उसकी लाल मांसपेशियां फड़कने लगीं। वह सिंदबाद की ओर दौड़ा, जो अपनी तलवार के साथ तैयार खड़ा था। जैसे ही वह आगे बढ़ा, सिंदबाद ने बस अपने पैर को थोड़ा सा हिलाया और बड़ी फुर्ती से दूसरी तरफ कूद गया, इस तरह वह उससे बच गया। एक हल्की सी भिनभिनाहट की आवाज़ आई। ज़ोर ने नीचे देखा, उस आवाज़ से भ्रमित होकर, और फिर सिंदबाद की ओर देखा। तलवार से एक गाढ़ा तरल पदार्थ टपक रहा था—उस पर वार किया गया था।
ऊपर देखते ही जिन्न दहाड़ा, उसकी आँखें पहले से कहीं ज़्यादा काली हो गईं। वह घेरे के किनारों पर चक्कर लगाने लगा, गुस्से से उसका चेहरा बिगड़ गया। सिंदबाद ने उस प्राणी पर अपनी नज़रें गड़ाए रखीं और आक्रमण की मुद्रा में बना रहा। उसे याद आया कि गुरु रेइस ने उसे तलवार चलाना कैसे सिखाया था। वह हमेशा कहते थे कि इसे एक सुंदर नर्तक की तरह चलाना चाहिए। तलवार से ज़्यादा पैरों का महत्व है... सिंदबाद मुस्कुराया, विचारों में खोया हुआ था — और तभी, सिंदबाद को प्रतिक्रिया करने का एक पल भी दिए बिना, कुत्रब ने उसके पैरों पर प्रहार किया और उसे हवा में उछाल दिया। सिंदबाद अपने पैरों पर उतरा, लेकिन जैसे ही उसने अपने दाहिने पैर को एक अजीब कोण पर मुड़ते हुए महसूस किया, उसके अंदर दर्द की लहर दौड़ गई।
‘सिंदबाद!’ हुसैन ने घेरे के बाहर से चीखते हुए कहा और अदृश्य ढाल के बहुत करीब पहुँच गया।
सिन्बाद ने उसे हस्तक्षेप न करने और दूर रहने का इशारा किया। उसने देखा कि कुत्रब उस पर मुस्कुरा रहा है।
आपने एक विचार रखा। और मैंने उसे सुना।
सिंदबाद ने विलाप किया और महसूस किया कि उसे ऐसे विचारों को अपने मन
पर हावी नहीं होने देना चाहिए—ये विचार प्राणी को अपनी कमजोरी पहचानने

में मदद करते हैं। उसने अपना सारा ध्यान अपने टूटे हुए पैर के असहनीय दर्द पर केंद्रित किया और अपने मन को शांत किया।
चलो, सिंदबाद ने चुनौती दी।
कुत्रब पागल कुत्ते की तरह सिंदबाद की ओर दौड़ा, जिसने लंगड़ाते हुए बचने की कोशिश की। लेकिन इस बार ज़ोर बहुत गुस्से में और शक्तिशाली था। सिंदबाद ने महसूस किया कि जिन्न का सिर उसकी छाती से टकराया और उसे घेरे के बिल्कुल किनारे तक धकेल दिया। सिंदबाद ने अपनी छाती पकड़ते हुए ज़ोर-ज़ोर से साँस ली। अगर सुरक्षात्मक चिन्हों वाला चोगा न होता, तो शायद इस हमले के बाद उसकी मौत हो जाती। वह वहीं खड़ा रहा, क्योंकि वह जानता था कि टूटे हुए अंग के साथ कोई भी हरकत तुरंत मौत का कारण बन सकती है, खासकर जब बात गुस्से में भरे जिन्नों की हो। चलो इसे अभी खत्म करते हैं। बहुत देर हो चुकी है। कुत्रब हँसा और हमला कर दिया। लेकिन इस बार सिन्बाद नहीं डगमगाया। ज़ोर ने हवा में उछलते हुए उस पर झपट्टा मारा, और सिन्बाद ने एक ही झटके में अपनी थोकचा तलवार कुत्रब की छाती में गहराई तक घुसा दी।
और अचानक, अंधेरा हर तरफ छा गया और पंचकोण के ऊपर एक घना काला धुआं मंडराने लगा।
सिंदबाद ने तुरंत अपनी पुखराज की अंगूठी उतार दी और एक जादूगर की तरह, उसने धुएं के बादलों को अंगूठी के अंदर ले जाने में कामयाबी हासिल की।
जैसे ही पुखराज की अंगूठी ने जिन्न की आत्मा को अपने भीतर समा लिया, वह अंधेरे में चमकने और कांपने लगी।
‘अभी क्या हुआ?’ हुसैन ने घबराकर आगे बढ़ते हुए पूछा।
‘मैंने ज़ोर की आत्मा को उसके पार्थिव शरीर को मारने के बाद पत्थर के अंदर कैद कर लिया। मैं इसे गिल्ड को वापस भेज दूँगा,’ सिन्बाद ने अनियंत्रित अंगूठी को अपने थैले में फेंकते हुए जवाब दिया। वह थककर ज़मीन पर गिर पड़ा, उसके पैर में अभी भी दर्द हो रहा था। ‘यह बहुत कठिन था।’ उसने ऊपर साफ आसमान और तारों की ओर देखा—सुंदर और जगमगाते हुए। और किसी कारण से, इसके बाद
बहुत लंबे समय तक, उसे ऐसा लगा कि वे केवल उसी के लिए पलकें झपका रहे
थे।

सात

चार वर्ष पहले
उनका मानना था कि जब भी तारे टिमटिमाते थे, उनके माता-पिता उनसे संवाद कर रहे होते थे।
उसे धुंधली सी याद थी कि कब उसके मन में आशा की यह किरण जगी थी। शायद
ऐसा तब हुआ होगा जब वह मास्टर रीस के साथ पिशाचों का शिकार करने ओमान गया था और वहाँ उसकी मुलाकात एक ज्योतिषी से हुई थी जिसने सिंदबाद से उसके वंश के बारे में पूछा था। सिंदबाद के पास कोई जवाब नहीं था, इसलिए ज्योतिषी ने कहा था: 'ऐसा माना जाता है कि मरने के बाद लोग तारे बन जाते हैं। जब तारे टिमटिमाते हुए दिखाई देते हैं, तो इसका मतलब है कि आपके प्रियजन आपके लिए, पृथ्वी पर आपके द्वारा किए गए कार्यों के लिए ताली बजा रहे हैं। यही एकमात्र तरीका है जिससे वे आपको बता सकते हैं कि उन्हें आप पर कितना गर्व है।'
अब तक उसने टिमटिमाते तारों के बहुत कम ही नज़ारे देखे थे। उदास मन से सिंदबाद ने अपना सिर नीचे झुकाया और फिर गाँव वालों को आग के चारों ओर बैठकर हंस भूनते हुए देखा। सिंदबाद ने देखा कि हंस की त्वचा का रंग धीरे- धीरे बदल रहा है। धीरे-धीरे, कभी तंदुरुस्त रहे उस हंस की छवि धुंधली पड़ गई।
कमांडर कासिम कैप्टन अब्दुल के साथ एक कोने में खड़े थे। रीस के बुलावे पर सैनिकों का दल कई लट्ठों पर huddled होकर ढाल और भाले पकड़े बैठा था। अब रणनीति बनाने और अपनी कार्ययोजना को लागू करने का समय था। धुंध के बादलों ने उस सुनसान परिसर को घेर लिया था, और जीवन का एकमात्र संकेत आग और उसके आसपास मौजूद लोग थे। अपने चारों ओर शॉल कसकर लपेटे हुए, सिंदबाद ने अपने स्वामी की ओर देखा, जिनकी पीली आँखें आग की रोशनी में चमक रही थीं।

‘मैं मास्टर रीस हूँ, निनुर्ता गिल्ड का सबसे वरिष्ठ सेइड। जो लोग नहीं जानते कि मैं क्या करता हूँ, मैं दूसरी दुनिया के प्राणियों का वध करता हूँ। जैसा कि आप जानते ही होंगे, इन प्राणियों का कोई उद्गम नहीं, कोई इतिहास नहीं। वे अनादि काल से हमारी दुनिया का हिस्सा रहे हैं। हमारे ग्रैंड मास्टर अल-नुहराद ने कार्रवाई करने का निर्णय लिया और दुनिया भर के जादूगरों के साथ मिलकर उन्होंने ऐसे मंत्र बनाए जिनका प्रयोग मनुष्य कर सकता है। उन्होंने ही मनुष्य बनने का मार्ग बनाया।
एक शिकारी। यह कठिन काम है और इसमें बहुत कम लोग सफल होते हैं, लेकिन
जो सफल होते हैं, वे अंधेरे के इन जीवों से लड़ने के लिए ही जीते और सांस लेते हैं।
वह रुका, पलकें झपकाईं। सबकी निगाहें उसी पर टिकी थीं।
‘मुझे आपके धार्मिक नेता, अरब के खलीफा हारून अल-रशीद ने इस द्वीप पर तबाही मचाने वाले इस उत्पात को रोकने के लिए बुलाया था। मैंने बहुत कुछ सुन और देख लिया है। हमारा सामना एक बहुत शक्तिशाली शत्रु से है—एक विशालकाय पक्षी जो हम पर हमला करता है।’
भीड़ में से एक ग्रामीण ने कहा, "अगर हम बाहर ही रहे तो पक्षी के लिए
और भी आसान हो जाएगा। चलो अंदर चलते हैं। तांत्रिक का निरर्थक भाषण सुबह हो सकता है।"
भीड़ दबी आवाज में बात करने लगी।
‘ऐसा नहीं होगा,’ रीस ने शांत भाव से कहा।
‘क्यों?’ एक अन्य ग्रामीण ने पूछा।
मैंने हमारी सुरक्षा के लिए दक्षिणी हवाओं के देवदूत मिखाएल का चिन्ह बनाया है। क्या आपने हमारे चारों ओर फैले घने कोहरे पर ध्यान दिया? भीड़ में हल्की फुसफुसाहट फैल गई। वे विस्मय से इधर-उधर देखने लगे और आपस में कानाफूसी करने लगे।
‘यह चिन्ह की वजह से है,’ रीस ने एक अजीब सी मुस्कान के साथ कहा। उसने
उस सीख को उठाया जिस पर हंस पक रहा था और जलती हुई लपटों की गर्मी की परवाह किए बिना, धातु की छड़ को नंगे हाथों से पकड़ लिया। फिर उसने मांस के टुकड़े तोड़े और उन्हें अपने मुंह में ठूंस लिया। सिंदबाद ने देखा कि उसकी हथेलियों पर जलने के निशान थे, लेकिन उसे कोई दर्द नहीं हो रहा था। ‘यह

हमें अंधेरे में अदृश्य बना देता है। कम से कम कुछ समय के लिए। हमारे पास समय नहीं है। हमें अभी कार्रवाई करनी होगी।’
भीड़ में मौजूद एक महिला ने पूछा, 'हम क्या कर सकते हैं, महोदय?'
मैंने एक जंगली बच्चे के बारे में अफवाहें सुनी थीं।
संपूर्ण शांति।
सिंदबाद ने चारों ओर देखा और पाया कि कुछ लोगों का चेहरा पीला पड़ गया था।
रीस ने आगे कहा, 'अरे, आप जानते हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। सफीना उमैर नाम की बच्ची शैतान की बेटी होने के कारण बहिष्कृत होने से पहले आपके गाँव की निवासी थी, और अब वह इस विशालकाय जीव के माध्यम से बदला ले रही है। क्या यह सच नहीं है?'
किसी ने जवाब नही दिया।
कासिम ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'मुझे नहीं लगता कि आप सचमुच मानते हैं कि यह वही लड़की है, मास्टर रीस। मेरा मतलब है—'
सेइड ने मांस चबाते हुए बीच में ही टोकते हुए कहा, 'उसका कुछ न कुछ हाथ
तो है। मुझे नहीं पता कि वह बुरी है या नहीं।'
मैं उसके बारे में और अधिक जानना चाहता हूँ। और मैं यह केवल आपकी मदद
से ही कर सकता हूँ।'
गाँववाले बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। ‘हम कैसे मदद कर सकते हैं?’ रीस यहूदियों की ओर मुड़ा। ‘क्या आप में से कोई रब्बी है?’ उनमें से एक ने हाथ उठाया। उसकी भूरी आँखें किसी पुराने पेड़ की छाल की तरह तेज़ थीं। ‘आपका नाम क्या है, महोदय?’ रीस ने धीरे से पूछा।
रब्बी ने कहा, 'इश्माएल।'
'क्या आप मेरी मदद करेंगे?'
“हे मेरे सज्जन, इस पागलपन को रोकने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ,” रब्बी ने गंभीरता से उत्तर दिया। उनकी दाढ़ी मोतियों से बंधी हुई थी। “मैं यहाँ बुखार से पीड़ित एक बच्ची के लिए प्रार्थना करने आया था। वह ठीक हो गई, लेकिन मैं गाँव छोड़कर कभी नहीं जा सका।”
‘अच्छा।’ रीस उठ खड़ा हुआ, हंस का बचा हुआ टुकड़ा जल्दी से निगल गया और धातु की छड़ को ज़मीन पर फेंक दिया। ‘सफीना के बारे में जानने के लिए मुझे रब्बी इस्माइल की मदद चाहिए होगी।’

‘लेकिन वह हमें लड़की के बारे में जानकारी कैसे देगा?’ कैप्टन अब्दुल
ने थोड़ा उलझन में पूछा। ‘वह उससे मिला भी नहीं है। हमें दाई से पूछना चाहिए।’
रीस ने अपना सिर हिलाया। 'वह बूढ़ी है और किसी काम की नहीं, वरना वह अब
तक उपयोगी जानकारी दे चुकी होती।'
भीड़ ने सिर हिलाकर सहमति जताई।
‘मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ, महोदय?’ इश्माएल ने पूछा।
रीस रब्बी के पास गया और भीड़ के ध्यान से देखते हुए उनके कंधे पर थपथपाया। 'क्या आपने कभी भूत भगाने का अनुष्ठान किया है?'
‘बिल्कुल!’ रब्बी ने उत्साहपूर्वक कहा।
'दिलचस्प। क्या आप जानते हैं कि अडोरसिज़्म क्या होता है?'
रब्बी की भौंहें तन गईं। 'मैं... उह...'
‘भूत-प्रेत भगाने की प्रक्रिया में किसी मानव शरीर से दानव या आत्मा
को निकाला जाता है। वहीं, उन्हें अपने अंदर आमंत्रित करने की प्रक्रिया को रीस ने समझाया, जिससे सभी के रोंगटे खड़े हो गए—खासकर सिंदबाद के। उसने इस प्रक्रिया के बारे में पढ़ा था और उसे यह एक कष्टदायक क्रिया लगती थी। इससे पहले कि रीस अपनी बात पूरी कर पाता, उन्हें दूर से उस विशालकाय पक्षी की चीख सुनाई दी। यह एक कर्कश चीख थी, मानो उसने कई दिनों से कुछ खाया न हो। हवा की दिशा बदल गई। डर की एक लहर सी दौड़ गई और भीड़ में हलचल मच गई। सब बेचैन होकर आपस में फुसफुसाने लगे। उनके चेहरों पर खौफ के भाव उभर आए। रीस ने उस तेज चीख को अनसुना करते हुए कहा, 'मेरे प्यारे दोस्त इस्माइल, हमारे पास समय नहीं है। मैं तुम्हें अडोरसिज़्म करने की अनुमति चाहता हूँ।'
‘तुम चाहते हो... मेरे अंदर... एक राक्षस?’ इश्माएल की आवाज कांप उठी। ‘क्यों?’
सिन्बाद ने अपनी आँखें बंद कर लीं। वह जानता था कि मास्टर रीस क्या करने वाला है और वह किस तरह के दानव को बुलाने वाला है, क्योंकि उसने एक यहूदी रब्बी को चुना था, जो यहूदी लोककथाओं के अनुसार दानव के लिए एक आदर्श पात्र था। और उसे उसका यह विचार बिल्कुल पसंद नहीं आया। वह जानता था कि इसके केवल भयानक परिणाम ही होंगे।

‘हां,’ रीस ने गर्मजोशी भरी मुस्कान और दयालु, कोमल आंखों से कहा। ‘क्योंकि केवल वही दानव मुझे बता सकता है कि सफीना उमैर वास्तव में कौन है और इस विशाल पक्षी से उसका क्या संबंध है।’
और फिर सिंदबाद ने अपने मालिक को पूरी बनावटी ईमानदारी के साथ झूठ बोलते हुए देखा जब उसने ये शब्द कहे: 'मैं तुमसे वादा करता हूँ, तुम सुरक्षित रहोगे।'

आठ

आज
एक सेइड झूठ बोलता है। वह व्यापक हित के लिए झूठ बोलता है।
सिंदबाद यह बात जानता था। यह उन शुरुआती पाठों में से एक था जो गुरु
रीस ने उसे सिखाए थे।
मुझे उसकी याद आती है।
सिन्बाद ने आह भरी और अपने चेहरे पर पानी के छींटे मारे। उसकी नज़र शीशे के टुकड़ों में अपनी परछाई पर पड़ी। उसके शरीर पर गहरे निशान थे, उसकी मांसपेशियां कसी हुई और मजबूत थीं। उसकी नंगी छाती भारी और मोटी लग रही थी, और बीच में बाज़ के चिन्ह के आकार का एक जला हुआ धब्बा था। यह मेसोपोटामिया के देवता निनुर्ता का प्रतीक था, जिसका अनुसरण पहले सेइड, अल-नुहराद करते थे। संघ में शामिल होने वाला हर शिष्य इस प्रतीक को धारण करता था। सिन्बाद ने अपनी उंगलियों को उस धब्बे पर फेरा और जलने की दर्दनाक याद उसके शरीर के हर हिस्से को दर्द दे रही थी।
शाम ढल चुकी थी और चंद्रमा मनुष्यों के ऊपर मंडरा रहा था, जिसकी तेज रोशनी खुली खिड़कियों से अंदर झाँक रही थी।
‘सिंदबाद! तुम अंदर क्या कर रहे हो? लोग अपने ऑर्डर का इंतज़ार कर रहे हैं!’ सराय के मालिक महमूद ने दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाते हुए कहा। सिंदबाद ने जल्दी से अपनी कमीज़ पहनी और लड़खड़ाते हुए शौचालय से बाहर निकला। उसके पैरों में अभी भी दर्द था, लेकिन उसने महमूद का सामना करने के लिए चेहरे पर खुशी का भाव लाद लिया। दरवाज़े पर खड़े महमूद की नुकीली नाक और वह बड़ी टोपी, जिसे वह हमेशा पहने रहता था और जिससे उसका आधा चेहरा ढका रहता था, नज़र आ गई।
‘कल रात तुम गायब हो गए और अब उस गंदे शौचालय में छिपे हो। ये सब क्या
है, लड़के?’ उसने नीचे देखा। ‘अरे बाप रे, क्या तुम्हें चोट लगी है? पट्टी बांध ली है क्या?’

'जी सर।' सिंदबाद ने हिम्मत भरी मुस्कान बिखेरी।
‘क्या आप उपवास रख पाएंगे?’ महमूद ने चिंता से पूछा।
'जब तक अधिकारी रिश्वत मांगने के लिए जबरदस्ती अंदर नहीं आते, मैं अपना कर्तव्य निभाता रहूंगा,' सिंदबाद ने सराय के छोटे से रसोई गलियारे की ओर चलते हुए कहा।
बसरा में शराबखानों को सराय के रूप में छिपाकर रखा जाता था, क्योंकि खिलाफत में बीयर और शराब को अपवित्र माना जाता था। लेकिन लोग विश्व प्रसिद्ध शराब का भरपूर आनंद लेते थे, जो बसरा के स्थानीय बंदरगाह में उगाए गए ताजे अंगूरों से बनाई जाती थी और तुर्की, रूस और मिस्र को आयात की जाती थी। इस तरह, शराबखानों का कारोबार खूब फल-फूल रहा था। रसोई की मेज पर तरह-तरह के मांस के लज़ीज़ भुने हुए व्यंजनों की थालियाँ सजी रहती थीं। शराबखानों के ग्राहकों को यह जरा भी पता नहीं था कि रसोइया एक तेरह साल की चीनी लड़की थी। वह सिंदबाद के पास से तेज़ी से गुज़र गई।
‘अरे तुम!’ प्रेसा चिल्लाई। ‘तुम कहाँ हो, लड़के?’
सिन्बाद थोड़ा उसकी ओर मुड़ा। उसके बाल बॉब कट में कटे हुए थे और उसका शरीर दुबला-पतला था, लेकिन जिस कुशलता और लय से वह खाना बना रही थी, वह वाकई प्रभावशाली था। सिन्बाद ने सोचा, काश उसे हथियार मिल जाते, तो वह कमाल कर देती। लेकिन उसने तुरंत खुद को फटकारा कि वह अपने खतरनाक दोहरे जीवन को इस जगह से क्यों जोड़ रहा है।
‘उम्म, मैं बस रात के लिए तैयारी कर रहा था।’
‘तो फिर काम में लग जाओ, लड़के!’ वह चीखी। ‘मुझे तुमसे भी कुछ बात करनी है।’
सिंदबाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'यह किस बारे में है?'
‘तुम्हें पता चल जाएगा।’ उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। वह खाना बनाते समय लकड़ी के स्टूल पर खड़ी थी। उसके चिल्लाने पर रसोई में मौजूद सहायक रसोइये इधर-उधर भागने लगे: ‘तुम लोग क्या कर रहे हो?’ ‘यह गलत है।’ ‘प्याज को पतले-पतले काटो वरना मैं तुम्हारा नया पकवान बनाकर तुम्हारे दोस्तों को खिला दूंगी, समझे, आलसी मूर्ख?’
सिन्बाद हल्के से हँसा। वह प्रेसा के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं जानता था, बस इतना जानता था कि वह एक चीनी अप्रवासी थी और उसका असली नाम

पेइझी शियाओपिंग था, लेकिन उसे पता नहीं क्यों प्रेसा कहलाना पसंद था। और वह अपमान करने में माहिर थी।
सिन्बाद रसोई से बाहर निकला और सराय के मुख्य हॉल में चला गया। दीवारों पर लगी कई मोमबत्तियों से हॉल में हल्की रोशनी थी। लकड़ी की बेंचें और मेजें हर वर्ग के लोगों से भरी हुई थीं—चाहे वे धिम्मी हों, सैनिक हों या आम नागरिक, सभी खूब आनंद ले रहे थे। एक कोने में हुसैन बैठे थे, ऊद बजाते हुए यह गीत गा रहे थे:
0, एक महान योद्धा था
न्यायसंगत और सत्य
बुराई और जिन्नों से लड़ाई की सामंजस्य स्थापित किया
कुछ ही लोगों के लिए नहीं
वह हीरो था
यह बात किसी को पता नहीं थी
और फिर भी उसने वही किया जो उसने किया। लोगों के लिए
जिसने कोई कृतज्ञता नहीं दिखाई
केवल रवैया
सिंदबाद ने सिर हिलाया और हुसैन ने उसे आँख मारी। हुसैन उस दिन को नहीं भूल सकता था जब उसे अपने दोस्त के दोहरे जीवन के बारे में पता चला था — वह दिन जब वह बुखार से व्याकुल था और बुरी तरह बीमार था और उसे बताया गया था कि एक दुष्ट आत्मा परछाई की तरह उससे चिपकी हुई है।
सिन्बाद ने हुसैन को इस मुश्किल घड़ी से बाहर निकाला और उनके कमरे में, जहाँ हुसैन बेहोश पड़े थे, उस आत्मा से लड़ाई लड़ी। बाद में, जब लड़ाई खत्म हुई, तो सिन्बाद को एहसास हुआ कि हुसैन होश में थे और पूरी तरह से जाग रहे थे, बस बहुत डरे हुए थे। जब महमूद के साथ तांत्रिक आए और पूछा कि क्या हुआ था, तो सिन्बाद को लगा कि हुसैन अपनी पहचान बता देंगे, लेकिन इसके बजाय हुसैन ने बताया कि सिन्बाद ने उन्हें कुछ जड़ी-बूटियाँ दी थीं और एक कहानी सुनाई थी। उस दिन से हुसैन सिन्बाद का बहुत सम्मान करने लगे, उनके काम और उनके व्यक्तित्व के लिए। और बदले में, सिन्बाद को भी यकीन हो गया कि वह इस फारसी पर भरोसा कर सकते हैं।

हाथ में थाली लिए वह मेजों के चारों ओर घूमता, अंग्रेजों, फ्रांसीसियों और भारतीयों से ऑर्डर लेता और उनसे बातचीत करता। चूंकि बसरा को अरब सागर का प्रवेश द्वार माना जाता था, इसलिए दुनिया भर से विदेशी पर्यटक या व्यापारी बनकर यहाँ आते थे। और इसीलिए वे धिम्मी कहलाते थे। रात बीतती गई और रसोई और मुख्य हॉल के बीच बार-बार आने-जाने के कारण सिंदबाद के माथे से पसीने की बूँदें टपकने लगीं। पृष्ठभूमि में हुसैन का तेज़ संगीत और प्रेसा के लगातार निर्देश सिंदबाद के चेहरे पर साफ़ तौर पर थकावट दिखा रहे थे और उसके कंधे झुक गए थे। और यह किसी भी अन्य रात की तरह ही होती अगर उसने यह बातचीत न सुनी होती:
एक आदमी ने कहा, 'क्या तुमने बगदाद में हुई घटना के बारे में सुना?'
'क्या?'
'खलीफा तनाव में हैं। ऐसा लगता है कि हाल ही में एक बड़ा हमला हुआ है।
कुछ सफेद बालों वाले लोग हाउस ऑफ विजडम में घुस गए।'
सिंदबाद जानता था कि वह आदमी किस जगह की बात कर रहा है।
यह दुनिया का सबसे प्रसिद्ध पुस्तकालय था—जो सातों समुद्रों के पार
से आए ग्रंथों और पांडुलिपियों का भंडार था।
लेकिन सफेद बालों वाले पुरुष...
उसने भी उनके बारे में सुना था। उसके रोंगटे खड़े हो गए। उम्मीद है कि
यह वो न हो जिसके बारे में मैं सोच रहा हूँ।
‘सब लोग कहते हैं कि सब कुछ तहस-नहस हो गया। अब तक की सबसे बड़ी डकैती,’ सिंदबाद के गंदे बर्तन उठाते और मेजें साफ करते समय उनमें से एक आदमी ने कहा। ‘और मज़े की बात यह है कि एक भी किताब चोरी नहीं हुई। कितना घिनौना काम है, है ना?’
सिंदबाद ने अपना सिर हिलाया। सराय की गपशप हमेशा बढ़ा-चढ़ाकर बताई जाती थी और सिंदबाद यह जानता था। इसलिए वह थालियाँ और मग लेकर रसोई में वापस चला गया। तभी, उसने अपने पीछे का दरवाज़ा ज़ोर से खुलने की आवाज़ सुनी। सिंदबाद ने मुड़कर देखा तो तटरक्षक अधिकारी सराय में प्रवेश कर रहे थे। सब लोग जम गए। कुछ ने पकड़े जाने से बचने के लिए अपनी शराब ज़मीन पर गिरा दी, जबकि अन्य ने उसे गटक कर खत्म कर दिया।
मोटी धातु की कमरबंद से सजे लंबे नीले वस्त्र पहने अधिकारी हॉल के केंद्र की ओर बढ़े, और नाविकों और व्यापारियों पर पैनी नजर रखे हुए थे।

महमूद जल्दी से अंदर आया और बोला, “मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ, अधिकारियों? मुझे लगता है कि इस महीने हम आप जानते हैं किस विषय पर पहले ही मिल चुके हैं।” उसने मुस्कुराते हुए आगे कहा, “मैं आपकी और क्या मदद कर सकता हूँ? पीछे आपके लिए विशेष सीटें हैं। क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको वहाँ तक छोड़ दूँ?”
‘महमूद, आपसे इस बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है। हम हुसैन अहमद को ढूंढ रहे हैं,’ अधिकारियों में से एक ने सख्त स्वर में कहा।
संगीत बंद हो गया।
सिन्बाद ने हुसैन को देखा, जिसकी उंगलियां इतनी बुरी तरह कांप रही थीं कि वह ऊद को ठीक से पकड़ भी नहीं पा रहा था और उसकी नीली आंखें डर से चौड़ी हो गई थीं।
अब उसने क्या किया है?
‘हुसैन? मेरा संगीतकार? क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उसने तटरक्षक बल के साथ क्या किया है?’
सब चुप थे। सिंदबाद हुसैन के कोने की ओर भागा। उसने दांत भींचते हुए पूछा, 'तुमने क्या किया?'
“उसने किनारे पर मिली एक लाश चुराई थी,” अधिकारी ने महमूद से कहा। “हमने कब्रिस्तान में पूछताछ की और कब्र खोदने वाले ने हमें घुंघराले बालों और नीली आंखों वाले एक लड़के के बारे में बताया। हमने और छानबीन की और उन्होंने हमें यहाँ भेजा, क्योंकि नीली आंखों वाला इकलौता लड़का वही संगीतकार है जो यहाँ काम करता है।”
महमूद ने हुसैन को तिरस्कार भरी नजर से देखा।
इशारा समझते हुए अधिकारी हुसैन की ओर बढ़े। उन्होंने तुरंत उनका यंत्र छीन लिया और उनकी बांह पकड़ ली। सिंदबाद ने विरोध किया और उनसे तर्क करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने उसे एक तरफ धकेल दिया।
हुसैन चिल्लाया, 'कम से कम एफ़्रोडाइट को तो छोड़ दो।'
अधिकारी ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'एफ़्रोडाइट कौन है?'
‘मेरा वाद्य यंत्र। कृपया इसे मेरे मित्र सिंदबाद को दे दीजिए।’
सिंदबाद हमेशा से यह मानता था कि किसी वस्तु को नाम देना, और वह भी एफ़्रोडाइट जैसा विदेशी नाम, भौतिकवादी और बचकाना है। लेकिन खैर, उसे किसी पर निर्णय लेने का कोई अधिकार नहीं था।

अधिकारी हँस पड़ा और उसे सिन्बाद को दे दिया, जिसने बड़ी मुश्किल से उसे अपने हाथों में पकड़ी प्लेटों और मगों के साथ संभाला।
इतनी देर तक ढोते रहने के बाद। जैसे ही उन्होंने हुसैन को धक्का- मुक्की करते हुए कमरे में घसीटा, सिंदबाद हुसैन के लिए भागने की योजनाएँ बनाने लगा। लेकिन उसे लगा जैसे उसके गले में पित्त अटक गया हो। यह अपराधबोध था। 'ठीक है, गलती मेरी ही थी।'
अधिकारी और हुसैन पीछे मुड़े। 'क्या?'
‘क्या?’ हुसैन ने सिंदबाद को घूरकर देखा और उसे चुप रहने का इशारा किया।
‘मैंने ही उसे लाश चुराने को कहा था,’ सिंदबाद ने आह भरते हुए कहा। उसने एफ़्रोडाइट के साथ प्लेटें और मग साइड टेबल पर रख दिए। ‘यह मेरी गलती है। वह तो बस एक मूर्ख है जिसने मेरी बात मान ली।’
'तो तुम्हें भी दंडित किया जाएगा,' तटरक्षक बल के एक अधिकारी ने आगे बढ़कर उसे पकड़ने के लिए कहा।
‘क्या वो भी? मैंने तो अभी कहा था कि वो—’ सिंदबाद ने बोलना शुरू किया, लेकिन महमूद के चेहरे पर निराशा का भाव देखकर वह चौंक गया। फिर उसने हॉल में बैठे ग्राहकों की उलझन भरी निगाहें देखीं, जो यह सोच रहे थे कि दो बच्चे कब्रें क्यों लूटेंगे।
‘तो फिर,’ अधिकारी ने घृणा से कहा, ‘तुम दोनों सलाखों के पीछे जाओ।’

आधी रात के कुछ घंटे बीत चुके थे। सिंदबाद दीवार से पीठ टिकाकर खड़ा
था, जबकि हुसैन जेल की लोहे की जाली को कसकर पकड़े हुए था। यह साम्राज्य के नौसैनिक रक्षक दल का एक छोटा सा स्टेशन था। बसरा वैसे तो सख्त सजा देने के लिए मशहूर नहीं था, लेकिन जब समुद्र तट के बीचोंबीच एक लाश मिलती है, तो यह शायद बुरी खबर होती है।

'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था,' हुसैन ने सिंदबाद की ओर देखे बिना कहा।
‘मुझे करना पड़ा। मुझे पता है ये मेरी गलती है। चिंता मत करो,’ सिन्बाद ने कहा, वह मास्टर रीस की कही बात भूल गया था। बड़े हित के लिए झूठ बोलो। झूठ बोलो ताकि दूसरे तुम्हारी गलतियों को स्वीकार करें, लेकिन कभी भी दोष खुद पर मत लो। एक सेइड इतना महत्वपूर्ण है कि उसे दंडित नहीं किया जा सकता।
लेकिन सिंदबाद इससे सहमत नहीं था। वह ईमानदारी और दोस्तों की मदद करने में विश्वास रखता था—कुछ ऐसा जो उसे मास्टर रीस को सिखाना चाहिए था। हुसैन ने विनम्रता से पूछा, 'वे हमारे साथ क्या करेंगे?'
मुझे आसपास कोई नजर नहीं आ रहा है।
सिन्बाद ने कमरे में चारों ओर और उस जगह पर नज़र डाली जहाँ किसी अधिकारी को बैठना चाहिए था, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। जाहिरा तौर पर, कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति मिलने आया था और वे सभी उसका स्वागत करने के लिए बाहर चले गए थे।
‘शायद उन्हें तुम्हें उस रोने वाले बच्चे की तरह पीटना चाहिए,’ सिंदबाद ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया। फिर उसने आगे कहा, ‘मैं यहाँ कई बार आ चुका हूँ, इसलिए जब मैं कहता हूँ कि चिंता मत करो...’
चिंता मत करो।'
‘अगर वे हमें फांसी दे दें तो क्या होगा?’ हुसैन ने इस अपमान पर ध्यान
न देने का विकल्प चुना।
अपने दोस्त की बेगुनाही पर सिंदबाद जोर से हँस पड़ा। 'इतने छोटे से अपराध के लिए नहीं।'
‘अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मुझे नहीं लगता कि यह “सरल” होगा। अगर वे ऐसा कर भी दें तो? मैंने कुछ फाँसी देखी हैं, सिंदबाद।’ हुसैन मुड़ा। वह भूत की तरह पीला पड़ गया था। ‘वे तुम्हें एक चट्टान पर रखते हैं और फिर दूसरी चट्टान से तुम्हारा सिर फोड़ देते हैं, जैसे दो खुबानी तोड़ रहे हों। यह देखने में अच्छा नहीं लगता, तुम्हें पता है।’
'हुसैन, फांसी की सजा देखने में अच्छी नहीं होनी चाहिए,' सिन्बाद ने कहा।

हुसैन ने मुंह बनाया। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, उन्हें तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी।
सिन्बाद यह देखने के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ा कि कमरे में कौन प्रवेश
कर रहा है। उसे एक गार्ड की उम्मीद थी, लेकिन वह एक दुबला-पतला आदमी था जिसका चेहरा लंबा, आँखें पतली और मूंछें संकरी थीं। उसके लटके हुए कानों से भारी सोने की बालियाँ लटक रही थीं। उसके बहुरंगी, माणिक जड़े हुए गाउन को देखकर सिन्बाद समझ गया कि वह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति है, कोई शाही शख्सियत। शायद वही व्यक्ति जिससे अधिकारी बाहर मिलने गए थे। लेकिन अजीब बात यह थी कि उसे कोई भी अपनी कोठरी तक नहीं ले गया था।
शायद... उस आदमी की यही इच्छा थी। एक गुप्त बातचीत।
‘हैलो,’ उस व्यक्ति ने कहा, ‘मैं सिंदबाद से बात करना चाहता हूँ।’
सिंदबाद ने कुछ नहीं कहा। वह क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गया।
हुसैन ने जवाब दिया, 'मैं सिंदबाद हूँ। तुम्हें क्या चाहिए, तुम दिखावटी मच्छर?'
सिन्बाद का दम घुट गया। यह अब तक का सबसे अजीब अपमान था जो उसने सुना था। सिन्बाद ने सोचा, हुसैन को प्रेसा से सबक लेना चाहिए।
‘मैं सिंदबाद से बात करना चाहता हूँ,’ उस व्यक्ति ने दोहराया, इस बार सिंदबाद की ओर इशारा करते हुए।
सिन्बाद ने अनिच्छुक हुसैन के कंधे पर थपथपाकर उसे पीछे हटने का इशारा किया और खुद ग्रिल के करीब जाकर उस आदमी से कुछ इंच की दूरी पर खड़ा हो गया। 'तुम क्या चाहते हो?'
‘मुझे विशेष रूप से कुछ नहीं चाहिए। मैं तो बस एक विनम्र दूत हूँ— बरकामिद वंश का जाफ़र, खलीफ़ा का वज़ीर। इस राष्ट्र के शासक को आपकी सहायता की आवश्यकता है।’
‘खलीफा?’ सिंदबाद ने अपनी भौंहें उठाईं।
'हाँ।'
'और उसे किस तरह की मदद की जरूरत है?' सिंदबाद ने पूछा, उसके लंबे, बेचैन कर देने वाले विरामों से वह ऊबने लगा था।
जाफ़र ने सिंदबाद की छाती पर नज़र डाली और पतली दरारों से जले हुए निशान का एक हिस्सा देखा—जो उसका बाज़ का चिन्ह था। सिंदबाद ने तुरंत अपना कुर्ता ठीक किया और वज़ीर की ओर सीधा देखा।

वह जानता है कि मैं कौन हूँ। लेकिन कैसे?
बहुत देर तक चुप्पी रहने के बाद उसने बोलना शुरू किया, 'खलीफा चाहता
है कि तुम दुनिया को बचाओ। और दुर्भाग्य से, तुम्हारे पास ऐसा करने के लिए केवल सात दिन हैं।'

नौ

चार वर्ष पहले
सिंदबाद ने उसे बिस्तर से बांध दिया।
उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा क्योंकि उसे पता था कि वह किसी गलत काम
में शामिल है। उसे यह महसूस हो रहा था। कमरा अंधेरा था और बिस्तर के पास रखी मोमबत्तियों की हल्की रोशनी से जगमगा रहा था। दरवाज़ा और खिड़कियाँ बंद थीं। मास्टर रीस ने कमांडर से परिसर में सबसे एकांत झोपड़ी माँगी थी। इश्माएल को सिर्फ़ अंडरवियर में रखा गया था। बिस्तर पर लेटे हुए वह काँप रहा था, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। जब उसने ऐसा करने के लिए हाँ कहा था, तो गाँव वालों ने उसका एहसान मानते हुए उसे गले लगाया था। इसी नैतिक समर्थन ने इश्माएल को इस बिस्तर पर लेटने और नरक की आत्माओं का पात्र बनने के लिए तैयार होने का फ़ैसला लेने में मदद की थी। सिंदबाद ने सोचा, "वह एक अच्छा आदमी है," और एक गहरी साँस ली।
पलंग के किनारे खड़े होकर, मास्टर रीस इस्माइल की ओर मुख करके बैठे
थे, उनके हाथ में एक किताब थी—अडोरसिज़्म की किताब। उन्होंने सिंदबाद से पूछा, 'क्या तुमने उसे अच्छे से बांधा है, लड़के?'
सिंदबाद ने एक बार फिर उस पलंग के चारों कोनों की जाँच की जहाँ इस्माइल के हाथ और पैर बंधे हुए थे।
और दरवाजा बंद है?
सिंदबाद ने सिर हिलाया।
‘अब, रब्बी इस्माइल,’ मास्टर रीस ने शुरू किया, ‘अगर आपको लगे कि आप बेहोश हो रहे हैं तो घबराएं नहीं। इसका मतलब है कि आपकी आत्मा आपके शरीर को छोड़ रही है और आत्मा उसमें प्रवेश कर रही है।’
इश्माएल ने घबराकर सिर हिलाया। 'यह किस तरह का दानव है?'

‘यह एक इब्बुर है। अपने समकक्ष डिब्बुक के विपरीत, ये काफी शांत और मददगार होते हैं।’
‘आप उससे उस लड़की के बारे में क्या पूछेंगे?’
'यह आपकी चिंता का विषय नहीं होना चाहिए। बस गहरी सांस लें और आराम करें, आप कुछ ही समय में ठीक हो जाएंगे।'
‘क्या मैं... क्या मैं...’ इश्माएल लड़खड़ाती आवाज में बोला, उसकी आवाज कांप रही थी, ‘क्या मुझे थोड़ा पानी मिल सकता है?’
“ज़रूर, रब्बी इस्माइल। अरे वाह!” उन्होंने सिन्बाद की ओर देखा, जिसने झटपट एक घड़ा उठाया और इस्माइल के होठों से गिलास लगाकर उसकी मदद की। थोड़ा पानी उसके मुँह के किनारे से छलक गया और सिन्बाद ने उसे पोंछ दिया।
‘क्या मैं ठीक हो जाऊंगा?’ उसने घबराहट भरी आवाज में फुसफुसाते हुए पूछा।
सिंदबाद अचंभित रह गया; उसने किसी की आँखों में इतना भय कभी नहीं देखा था।
‘क्या तुम्हारा काम हो गया, लड़के?’ मास्टर रीस ने पुकारा। ‘अगर हो गया
है, तो कोने में जाकर देखो।’
सिन्बाद ने ऐसा ही किया, बिस्तर से दूर खड़ा रहा। वह भूत भगाने की रस्मों में शामिल रहा था, लेकिन उसने कभी किसी आत्मा को अंदर लाने की रस्म नहीं निभाई थी। और यह डरावना था, क्योंकि इसका मतलब एक खतरनाक आत्मा का स्वागत करना था। और आत्माएँ, जैसा कि उसने सीखा था, बहुत अप्रत्याशित होती हैं।
मास्टर रीस ने हिब्रू में मंत्रोच्चार शुरू किया। उनका उच्चारण बिल्कुल सटीक था। उनके हाथ में पवित्र जल का कटोरा था, और उन्होंने इश्माएल पर कुछ बूँदें छिड़कीं।
रब्बी कांपते रहे, खुद से कुछ बुदबुदाते रहे, ऐसा लग रहा था मानो वे रोने ही वाले हों...
जब तक वह रुक नहीं गया।
उसका शरीर स्थिर, जम सा गया था।
‘वह समाधि जैसी अवस्था में चला गया है,’ रीस ने कहा।

सिंदबाद ने मन ही मन सिर हिलाया। समाधि एक तरह की अस्थाई अवस्था थी,
एक प्रकार की बेहोशी। इस्माइल उस शरीर को छोड़ चुका था जो पलंग पर पड़ा था। अब समय आ गया था कि उसमें विद्यमान आत्मा को बुलाया जाए।
‘अब,’ रीस ने कहा और सिंदबाद की ओर बढ़ा, ‘मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी तलवार ले लो।’ उसने अपनी कमर से लटकती तलवार को म्यान से निकाला और उसे दे दिया। ‘तुम जानते हो ना कि यह क्या है?’
'तिब्बत में पाए जाने वाले आकाश-लोहे के भंडार से बनी एक थोकचा तलवार,' सिंदबाद ने जवाब दिया, उसे याद आया कि उसे यही सिखाया गया था।
'हाँ, ऐसा हथियार जो किसी भी अलौकिक प्राणी को जानलेवा रूप से घायल कर सकता है। तुम्हें तलवारबाजी के सबक याद हैं?'
'हाँ।'
'अगर डिब्बुक कोई भी घिनौना काम करे—जो वे अक्सर करते हैं—तो उसे
मार डालो।'
‘डिबुक?’ सिंदबाद ने भय से भरी आँखों से अपने स्वामी की ओर देखा। ‘लेकिन मुझे लगा कि हम इब्बुर को बुला रहे हैं।’
रीस ने अपना जबड़ा कस लिया। 'मूर्ख मत बनो। इब्बुर बेकार आत्माएं हैं जिन्हें सिर्फ मौज-मस्ती और खेल-कूद का ज्ञान है। अगर तुम खाने-पीने की बातें करना चाहते हो और मौज-मस्ती में रुचि रखते हो, तो इब्बुर ही वो आत्माएं हैं जिन्हें तुम्हें बुलाना चाहिए। लेकिन अगर तुम शैतान के बच्चे के बारे में पूछना चाहते हो, जो कि एक क्रूर किस्म का दानव है, तो केवल एक डिब्बुक ही तुम्हारी मदद कर सकता है।'
सिन्बाद ने सिर हिलाया। उसे रीस का झूठ बोलना पसंद नहीं आया, लेकिन वह चुप रहा, क्योंकि वह उसका स्वामी था।
‘अगर दानव कुछ गलत करे तो क्या तुम उसे मार पाओगे?’ रीस ने आश्वासन मांगते हुए फिर पूछा। ‘तुम्हें पता है कि दानवों में मनुष्यों के शरीर में छुपकर पृथ्वी पर ज़रूरत से ज़्यादा समय तक रहने की प्रवृत्ति होती है ताकि वे अपने सांसारिक जीवन और अपनी दुनिया से बच सकें?’
‘लेकिन फिर... क्या मुझे इस्माइल को मारना पड़ेगा?’ सिंदबाद ने चिंता
से पूछा।
अगर दिब्बुक उस पर हावी हो गया तो वह अब इस्माइल नहीं रहेगा। हमें ऐसा होने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

‘तुम आवश्यक कार्य क्यों नहीं करते?’ सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम कठिन निर्णय लो, बेटा। तुम मूक दर्शक बनकर नहीं रह सकते। मेरे जाने के बाद, यह तलवार तुम्हारी होगी। यह सेइड परंपरा है।’
सिंदबाद ने सिर हिलाया। उसने खुद को याद दिलाया कि यह उसके प्रशिक्षण
का हिस्सा था। उसने गहरी सांस ली और अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया। फिर उसने तलवार को दीवार के सहारे रख दिया और उसके सामने खड़ा हो गया ताकि राक्षस उसे देख न सके।
मास्टर रीस ने फिर से किताब उठाई और उसे पढ़ना शुरू कर दिया। वे नाम
और मंत्रों का जाप करते रहे, जब तक कि मोमबत्तियाँ टिमटिमाने नहीं लगीं।
खिड़कियाँ चटकने लगीं और दरवाजा हिलने लगा। उनके नीचे की ज़मीन काँप उठी।
फिर एक तेज चीख सुनाई दी।
इश्माएल के मुख से।
सिंदबाद थोड़ा आगे झुका और उसने इस्माइल के चेहरे पर एक दुष्ट मुस्कान देखी। उसकी आँखें बैंगनी हो गई थीं। उसके मुँह से लार टपक रही थी और उसका शरीर काँपने लगा, मानो वह रस्सियों से छूटने की कोशिश कर रहा हो।
'मुझे यहां किसने बुलाया?' इश्माएल ने एक अलग, भूखी और कर्कश आवाज में चिल्लाकर कहा।
'अपनी पहचान बताओ,' मास्टर रीस ने कठोर स्वर में उत्तर दिया।
मुझे यहाँ किसने बुलाया!
मैं निनुर्ता गिल्ड का मास्टर रीस हूं।
‘राक्षसों का संहार करने वाले?’ उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया। ‘यह कितना सुखद दृश्य है।’
'अपना परिचय दीजिए।' रीस ने बातचीत करने से इनकार कर दिया।
‘मैं क्लिफोथ देश का वर्ज़ान हूँ,’ डिब्बुक ने बड़ी विनम्रता से कहा।
‘मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?’
रीस ने जवाब दिया, 'तुम मेरी मदद करोगे, वरना'
मैं तुम्हें पवित्र जल से जला दूंगा।
मुझे दिनचर्या पता है। और मैं मदद करना चाहता हूं।
'क्यों?'

क्लिफोथ से तंग आ गया था। यह बहुत ही निराशाजनक जगह है। मोम की खुशबू वाला यह कमरा, उम्म... यह तो मानो छुट्टी जैसा है। तो, बदले में मुझे स्वर्ग के ये पचास सेकंड मिल जाएं तो क्या बात है।
रीस अचंभित नहीं हुआ। सिंदबाद भी नहीं। राक्षस अक्सर... अनियमित स्वभाव के होते हैं।
मैं एक लड़की के बारे में जानना चाहता हूँ। उसका नाम सफीना उमैर है। डिबुक के चेहरे पर चिंता की जगह द्वेष झलक रहा था, क्योंकि वह चारों कोनों से बंधा होने के बावजूद बिस्तर के पिछले हिस्से पर जितना हो सके पीछे झुकने की कोशिश कर रहा था। 'दिलचस्प।'
‘क्यों?’ रीस ने पूछा।
‘तुम्हें उसके बारे में कैसे पता चला?’
हमें उसका एक पालतू जानवर मिला।
‘वह वाकई में एक अनोखी शख्सियत है, है ना?’ डिबुक हँसा, लेकिन उसकी हँसी गुर्राहट जैसी थी।
क्या वह शैतान की संतान है?
‘अरे! वो तो और भी बुरी है।’ उसने अपना सिर हिलाया। ‘वो शैतान का... हथियार है।’
सिंदबाद की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
‘हम क्लिफोथ में उसके बारे में बात करते हैं, तुम्हें पता है। अफवाह
है कि भोर के देवता या शैतान या जो भी तुम उसे कहते हो, शैतान ने उसे अपने एक अंग से बनाया था। उसने अपना अंग काट दिया और वह उससे उत्पन्न हुई। फिर उसे एक एकांत द्वीप पर रहने वाले मनुष्यों को सौंप दिया गया, ताकि अठारह वर्ष की होने तक उसे तुम्हारे संघ और अन्य दखल देने वाले मनुष्यों से कोई परेशानी न हो।’ वह मुस्कुराया। ‘लेकिन लगता है कि भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया—उसने मुसीबत खड़ी कर दी और वह तुम्हारी नज़र में आ गई। भोर के देवता की योजनाओं का कितना बड़ा मज़ाक!’
मोमबत्तियाँ तेज़ी से टिमटिमा रही थीं। तेज़ हवाओं ने खिड़कियों की दरारों को और गहरा कर दिया, और उनमें से सीटी की आवाज़ आती रही। बेपरवाह होकर रीस ने पूछा, 'उसकी क्या योजनाएँ हैं?'
‘मैं तो बस एक दानव का रूप धारण कर सकता हूँ। मैं पृथ्वी पर नश्वर शरीर धारण करने का जोखिम भी नहीं उठा सकता, क्योंकि आप जानते हैं कि

डिब्बुक आधा दानव होता है; उसका पूरा शरीर भी नहीं होता।’ उसने अपने इस व्यंग्य पर उनकी प्रतिक्रिया देखने के लिए कुछ देर रुककर देखा, लेकिन उनके चेहरे पर एक पल के लिए भी कोई बदलाव नहीं आया। अंत में उसने हार मानकर कहा, ‘मुझे ज्यादा कुछ नहीं पता, ठीक है? असल में, यह सब बस सुनी-सुनाई बातें हैं। अगर आप सच्चाई जानना चाहते हैं, तो किसी महादानव से बात कीजिए। लेकिन अफसोस, आप ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि वे इतने शक्तिशाली हैं कि उन्हें बांधा नहीं जा सकता या उन्हें ढूंढना लगभग नामुमकिन है।’
‘जब वह अठारह साल की हो जाएगी तो क्या होगा?’
‘शैतान ही जाने, उससे पूछ लो।’ डिब्बुक ने कंधे उचकाए और तकिए को ऐसे संवारते हुए बिस्तर पर वापस लेट गया जैसे वह किसी कामुक आनंद में डूबा हो। ‘ओह, और तुम्हारी रस्सियाँ भी... वे ठीक से बंधी नहीं हैं।’ उसके होठों पर एक शैतानी मुस्कान थी। ‘तो मैं सोच रहा हूँ कि मुझे तुम दोनों को मार देना चाहिए और यहाँ से भागकर इस खूबसूरत दुनिया को देखना चाहिए।’
रीस मुड़ा और सिंदबाद को गुस्से से देखा, जिसने डर के मारे अपने गले में अटकी बात को किसी तरह निगल लिया। और उसी पल, डिबुक ने उस पलंग के सिरों को तोड़ दिया जिससे रस्सी बंधी थी और इतनी ज़बरदस्त ताकत से रीस की ओर झपटा कि दोनों ज़मीन पर गिर पड़े। डिबुक ने रीस के चेहरे पर पंजे मारने की कोशिश की, अपना मुंह खोलकर और अपने हाथों और पैरों को बेतहाशा हिलाते हुए।
‘इसे मार डालो, लड़के! इसे मार डालो!’ रीस चिल्लाया।
कमरे के कोने में खड़ा सिन्बाद उनकी लड़ाई देख रहा था और जैसे ही उसने अपने गुरु की चीख सुनी, वह मुड़ा और तलवार उठा ली। अचानक वह भारी लगने लगी। वह डिबुक की ओर बढ़ा, जिसकी मजबूत भुजाओं ने रीस को ज़मीन पर जकड़ रखा था। डिबुक का पलड़ा भारी था, लेकिन उसकी पीठ सिन्बाद की ओर थी। हांफते हुए सिन्बाद ने वार करने के लिए तलवार उठाई, तभी... डिबुक ने अपना सिर घुमाया और ऊपर देखा। उसकी आँखें अब बैंगनी नहीं थीं। उस क्रूर राक्षस के स्थान पर, इश्माएल का भयभीत चेहरा दिखाई दिया। 'नहीं, मेरे बच्चे, कृपया ऐसा मत करो।' सिंदबाद रुक गया। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
यह इस्माइल का इस्तेमाल करके मुझे इसे नुकसान पहुंचाने से रोक रहा है।
‘हे भगवान! दया करो!’ रीस चिल्लाया और डिबुक पर थूका। अचानक, डिबुक का शरीर जलने लगा और बेकाबू हो गया। वह करवटें बदलने लगा, उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर

और फिर, सिंदबाद ने सबसे घिनौना झूठ सुना, और वह कभी समझ नहीं पाया कि ऐसा क्यों कहा गया: 'हाँ,' मास्टर रीस ने जवाब दिया, 'जाहिर तौर पर, लड़की हानिरहित है और उस प्राणी से उसका कोई संबंध नहीं है।'

दस

आज
मैं जो कुछ तुम्हें बताने जा रहा हूँ, उससे तुम्हारे मन में मृत्यु का भय उत्पन्न हो जाएगा,’ वज़ीर ने कहा।
‘तुमने मुझे कैसे ढूंढा?’ सिंदबाद ने उसकी चेतावनी को नजरअंदाज करते हुए पूछा।
वे एक अधिकारी के कमरे में थे, जो एक लैंप से रोशन था। तटरक्षक अधिकारी के लिए यह काफी छोटा और नमी वाला कमरा था। लेकिन फिलहाल यही एकमात्र विकल्प था—क्योंकि यह एकांत में था और जेल के बाकी हिस्सों से अलग-थलग था।
जाफ़र आगे की ओर झुका, उसकी भौहें ऊपर उठी हुई थीं। 'गिल्ड ने मुझे बसरा की इस झुग्गी बस्ती में आपकी मौजूदगी के बारे में बताया। किसी सेइड का यहाँ होना असंभव है।'
सिन्बाद ने धीरे से शाप दिया। 'मैं तुम्हें वही बताऊंगा जो मैंने गिल्ड को बताया था—'
मैं यहाँ इसलिए आया हूँ क्योंकि यहाँ जिन्न बहुतायत में हैं और जब वे उपद्रव करते हैं तो मैं उनका शिकार करता हूँ। मैं विदेशियों द्वारा लाए गए प्रेतों से भी निपटता हूँ।’ उसने झूठ बोला, कम से कम आंशिक रूप से। राक्षस थे, लेकिन बहुत ज़्यादा नहीं। हालाँकि वह यहाँ नीरस सेइड जीवन से बचने और एक सामान्य जीवन जीने के लिए आया था।
चूंकि उसे गिल्ड के सामने इसका औचित्य साबित करना पड़ता, इसलिए उसने मनगढ़ंत कहानियां बना लीं।
एक बार जब आप सेइड बन जाते हैं, तो आप वापस नहीं जा सकते, मास्टर रीस
ने एक बार कहा था।

लेकिन सिंदबाद ने सोचा कि वह छिप सकता है और कम से कम एक सामान्य जीवन जीने का दिखावा कर सकता है। और केवल तभी राक्षस-शिकारी जीवनशैली अपनाएगा जब बिलकुल आवश्यक हो।
‘ठीक है। अगर यही तुम्हारा तरीका है तो।’ जाफ़र ने कंधे उचकाए और उसकी सोने की बालियाँ हिलने लगीं। ‘खैर, मैं यहाँ तुम्हें सराय में ढूंढने की उम्मीद से आया था, लेकिन पता चला कि तुम कब्र खोदने के मामूली अपराध के लिए जेल में हो।’
'मैं कुत्रब पकड़ रहा था,' सिंदबाद ने उत्तेजित होकर कहा, वह हुसैन के बारे में सोच रहा था जो वापस जेल की कोठरी में था।
‘मैं समझ गया,’ जाफ़र ने भावहीनता दिखाते हुए कहा। ‘चूंकि आप इस साम्राज्य के लिए एक संपत्ति हैं, इसलिए आपके खिलाफ आरोप हटा दिए जाएंगे।’ ‘मैं अभी तक इस साम्राज्य के लिए कोई संपत्ति नहीं बना हूँ,’ सिंदबाद
ने उसे सुधारते हुए कहा। ‘मैंने अभी तक आपका अनुबंध स्वीकार नहीं किया है। मुझे इस दुनिया को बचाने के काम के बारे में और जानकारी चाहिए।’
जाफ़र ने गर्दन उठाकर लड़के को गौर से देखा। 'जी हां। बहुत अच्छा।' उसने अपने थैले से दस्तावेजों का एक बंडल निकाला और उसे मंत्रों से सजी एक बड़ी तुरही की तस्वीर दिखाई। 'क्या तुम जानते हो कि यह क्या है?'
‘इसराफिल का तुरही,’ सिन्बाद ने तुरंत कहा। मास्टर रीस ने उसे हिब्रू
की कक्षाओं में यही सिखाया था।
‘यह हमें अल-नुहराद ने दिया था, और यह हमारे पास बहुत लंबे समय से था,’ जाफ़र ने कहा। सिंदबाद के लिए, अल-नुहराद किसी अन्य ऐतिहासिक व्यक्ति की तरह ही थे, इसलिए उन्हें कोई भय नहीं हुआ। जाफ़र ने आगे कहा, ‘बहुत समय पहले, जब उन्होंने क्लिफोथ, अपने राक्षस राज्य से निकले भोर के स्वामी इब्लिस से युद्ध किया, तो अल-नुहराद हार गए। और इसका एकमात्र कारण यह था कि इब्लिस का भाई, जिसे दानव के नाम से जाना जाता था, उसका साथ दे रहा था। फिर घोर अंधकार में, मलक इसराफिल ने अल-नुहराद से मुलाकात की।’
सिंदबाद को याद आया कि मलाइका देवदूत हैं।
जाफ़र स्थिर खड़ा रहा और उसकी निगाहें उस लड़के पर टिकी रहीं। उसने आगे कहा, “इसराफ़िल संगीत का महापुरुष था, इसलिए उसने अल-नुहराद को यह तुरही दी। अगर इसे बजाया जाए, तो यह शैतान को पराजित कर सकती है, क्योंकि इससे वह हमेशा के लिए सो जाएगा। और अल-नुहराद ने इसे बजाया, जिससे शैतान

अपने सपनों में डूब गया और एक अज्ञात स्थान में दफ़न हो गया। शैतान को पराजित देखकर, इब्लिस क्लिफ़ोथ लौट गया और तब से वहीं है। अपनी मृत्युशय्या पर, अल-नुहराद ने गिल्ड और खिलाफत को इस तुरही की रक्षा करने का दायित्व सौंपा, ताकि ज़रूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल किया जा सके। हमने इसे तीन दिन पहले तक ज्ञान के घर में सुरक्षित रखा था, लेकिन किसी ने इसे हमसे चुरा लिया।”
सिन्बाद उठ बैठा क्योंकि उसका ध्यान सराय में हुई लूटपाट के बारे में सुनी गई गपशप की ओर चला गया। 'क्या तुरही की रक्षा के लिए कोई सेइड मौजूद थे?'
'बिल्कुल। उनमें से अधिकतर मर गए। जो बच गया उसने बताया कि कुछ सफेद बालों वाले नेफिलिम तुरही लेने आए थे। लेकिन वे ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचा सके क्योंकि सेइड्स उन्हें हराना जानते थे। समस्या तब शुरू हुई जब वह आई।'
'कौन?'
‘तुम जानते हो कौन।’ पहली बार जाफ़र ने उससे सख्ती से बात की।
सिन्बाद को जैसे पेट में मुक्का लगा हो। 'मैं समझ गया। वे वही हथियार क्यों चाहते थे जिसने उनके देवता को हानि पहुँचाई है?' उसका तात्पर्य नेफिलिम से था, जो आधे देवदूत और आधे मनुष्य थे, जिन्हें आकाश से बहिष्कृत कर दिया गया था लेकिन इब्लिस ने उन्हें क्लिफोथ में शरण दी थी और उनके उद्देश्य के लिए लड़ने के लिए उनका मस्तिष्क धो डाला था।
'हमारा मानना है, संघ, मंत्रीगण और यहाँ तक कि खलीफा भी, कि... वे फिर से
उस शैतान को जीवित करने की योजना बना रहे हैं, और वे नहीं चाहते कि जब वह यहाँ हो तो इस तरह का हथियार मनुष्यों के आसपास मौजूद हो।'
तो आप चाहते हैं कि मैं तुरही वापस चुरा लूँ?
'और हमें दे दो,' जाफ़र ने सिर हिलाते हुए कहा और एक कुशल नौकरशाही अधिकारी की तरह उसे दस्तावेज़ सौंप दिए।
सिन्बाद ने देखा कि सबसे ऊपर रखे दस्तावेज़ पर बाज़ का चिन्ह बना हुआ था। और उस पर ग्रैंड मास्टर नासिर के हस्ताक्षर थे।
‘ग्रैंड मास्टर का आदेश,’ उसने जल्दी से कहा और उसे एक पत्र सौंपते हुए बोला, ‘और खलीफा का लिखित नोटिस। ये सभी आधिकारिक नोटिस हैं ताकि आप

अपने राष्ट्र के प्रति सही व्यवहार करें—और यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया जाएगा।’
सिन्बाद हँसते हुए कागज़ों को पकड़े रहा। 'मुझे इतने सारे सरकारी कागज़ों से डराने का क्या ही तरीका है!' उसने उपहास किया। उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी।
लेकिन वह उसकी परवाह करता था।
‘मैं ही क्यों? वहाँ तो अनुभवी सेइड्स मौजूद हैं,’ सिन्बाद ने जाफ़र
की आँखों में देखते हुए कहा।
‘लेकिन वह तुम पर भरोसा करती है,’ जाफ़र ने अपनी नाक फुलाते हुए कहा।
‘आखिरकार, तुमने उस समय उसके लिए कई कारनामे किए थे। अगर गिल्ड इतना क्षमाशील न होता और खलीफ़ा इतना क्षमाशील न होता, तो तीन साल पहले तुमने जो किया था, उसके लिए तुम्हें मौत की सजा दे दी जाती।’
सिन्बाद ने गहरी सांस ली। वह उस समय के बारे में सोचना नहीं चाहता था। उसने कुछ ऐसे संदिग्ध काम किए थे जिनकी वजह से उसे लगभग छह महीने तक गिल्ड के मंदिर में रहना पड़ा था, ताकि वह अपने पापों का प्रायश्चित कर सके और उन्हें सुधार सके—भले ही उसे लगता था कि उसके काम न्यायसंगत और उचित थे। ‘तुमने कहा कि दुनिया सात दिनों में खत्म हो जाएगी?’ सिंदबाद ने धीमी आवाज़ में कहा। ‘इसका क्या मतलब है?’
‘यह ज़रक़ा अल यमामा की भविष्यवाणी है। और सटीक कहें तो दस। लेकिन यात्रा और निर्णय लेने में तीन दिन बर्बाद हो गए हैं।’
सिंदबाद ज़ारका के बारे में जानता था; वह एक ज्योतिषी और बहुत ही शक्तिशाली भविष्यवक्ता थी। उसकी आँखें नीले रंग की थीं, जैसे नीलम या दुनिया का सबसे साफ पानी। जब उसे कोई पूर्वाभास होता था, तो उसकी आँखें चमक उठती थीं।
उसने क्या कहा?
‘सात दिनों में दुनिया का अंत हो जाएगा जब इसराफिल का बिगुल बजेगा,’ जाफ़र ने कांपती आवाज़ में कहा। ‘बस इतना ही, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, परिस्थितियाँ बदलने पर भविष्यवाणियाँ भी बदल जाती हैं। और आप बिगुल को हमारे पास वापस लाकर ऐसा कर सकते हैं।’
सिंदबाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'ठीक है। मैं कर दूंगा। तुमने मुझे ज्यादा विकल्प नहीं दिए हैं।'

‘अच्छा।’ जाफ़र के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आई। ‘और हाँ... गिल्ड के
एक वरिष्ठ सेइड भी आपकी जाँच में शामिल होंगे।’ इतना कहकर उसने जल्दी से कागज़ समेटे और खड़ा हो गया। ‘उनका नाम इदरीस है।’
'नहीं।'
'क्या?'
मुझे किसी पर्यवेक्षक की जरूरत नहीं है।
‘कौन कहता है?’ जाफ़र ने आँखें घुमाईं। ‘अरे सिंदबाद, तुम तो अभी सोलह साल के हो। तुमने मार्ग पार कर लिया है और तुम एक कुशल शिकारी हो—यह तो तय है—लेकिन तुम्हें अनुभव नहीं है। इदरीस अनुभवी है। इसलिए, इदरीस को विशेष रूप से गुरु ने तुम्हारे साथ भेजा है।’
'एक बेबीसिटर,' सिन्बाद ने कहा।
‘इसे जो चाहो कह लो,’ जाफ़र ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए जवाब दिया। ‘और सिंदबाद,’ उसने मुड़कर कहा, ‘मुझे उम्मीद है कि तुम इस मिशन की गंभीरता को समझते हो। पूरी दुनिया की ज़िम्मेदारी तुम्हारे कंधों पर है।’
ज़ारका अक्सर गलत साबित हुए हैं।
जाफर ने आधिकारिक लहजे में कहा, 'हम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते।'
सिन्बाद मुस्कुराया। 'मुझे पूरा यकीन है कि खलीफा अपने महल की सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास कर रहा होगा।' वह जानता था कि गिल्ड उसके नियंत्रण में है और वे उसके महल से शुरू करके उसके पूरे साम्राज्य में सुरक्षा मंत्रों का जाप कर रहे होंगे।
जाफर जाने ही वाला था कि सिंदबाद ने कहा, 'रुको।'
सिन्बाद मुड़ा नहीं। वह स्थिर बैठा रहा, अपनी बाहों को अपनी छाती पर लपेटे हुए। 'मैं... उह... वह कैसी दिख रही थी?'
'कौन?'
‘सफीना उमैर, वो लड़की जिसने तुरही चुराई।’
'सेइड परिवार में जीवित बचे लोगों ने उसे "खतरनाक और जानलेवा" बताया।' सिंदबाद चुप रहा।
फिर जाने से पहले, जाफ़र ने निष्कर्ष निकाला, 'हालाँकि खलीफ़ा को यह अच्छा लगेगा यदि जब आप तुरही वापस लाएँ, तो उसका सिर भी साथ में लाया जाए।'

ग्यारह

चार वर्ष पहले
हम क्या कर रहे हैं?’ सिंदबाद ने पूछा।
'तुम्हें पता चल जाएगा,' मास्टर रीस ने उदास स्वर में उत्तर दिया।
भोर का प्रकाश सर्वव्यापी था, जिसमें सूर्य की नारंगी चमक झलक रही थी।
और इस तरह, रीस ने तैयारी शुरू कर दी।
सिन्बाद अपने स्वामी की मदद कर रहा था और उनके थैले से अलग-अलग तरल पदार्थ ला रहा था। उसने देखा कि रीस कटे हुए नींबू और सिरके को मिलाकर एक पेस्ट बना रहा था।
रीस चुपचाप अपना काम कर रहा था, जबकि सिन्बाद कमांडर की कृपा से जिस उजाड़ झोपड़ी में ठहरा हुआ था, उसका चारों ओर नज़र घुमा रहा था। सोने के लिए दो पलंग और नाममात्र की ज़रूरत की चीज़ें थीं। इस्माइल की घटना के बाद रीस सोया नहीं था, लेकिन सिन्बाद ने थोड़ी देर झपकी ली थी। रब्बी का सिसकता हुआ चेहरा उसे सता रहा था।
‘भविष्यवाणी करने वाला दर्पण ले आओ।’
सिंदबाद ने इसे अपने थैले से निकाला और सावधानी से पकड़ लिया। यह एक दुर्लभ, जादुई कांच से बना था, जो काफी नाजुक था और इसका उपयोग भविष्य में होने वाली अलौकिक या असाधारण घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता था।
‘गुरुजी, आपने झूठ क्यों बोला?’ सिंदबाद ने नम्रता से अपने उदास गुरु
की विशाल आकृति की ओर देखते हुए पूछा। ‘उसके बारे में। वह भोर के देवता से जुड़ी हुई है।’
‘मुझे दस साल के बच्चे को सफाई देने की ज़रूरत नहीं है, मैं तो एक निराशा हूँ।’ रीस ने सिंदबाद पर तीखी नज़र डाली और उसे अखरोट के आकार का

कटोरा थमा दिया। ‘इस पेस्ट को अपने कपड़ों और छाती पर लगा लो। मैं तुम्हारे बाद लगा लूँगा।’
'यह क्या है?'
‘इससे हमारी गंध खत्म हो जाती है,’ रीस ने जवाब दिया।
सिंदबाद ने कटोरा उठाया और उसमें मौजूद हरे रंग के पेस्ट को देखा, जिससे अजीब सी बदबू आ रही थी। 'लेकिन... हमें इसकी ज़रूरत क्यों है?'
रीस ने गुस्से से कहा, 'क्योंकि हम इस परिसर से बाहर जाकर इस मनहूस पक्षी को ढूंढेंगे... और उसे मार डालेंगे।'

जैसे ही सिंदबाद परिसर से बाहर निकला, उसे अपने भीतर तनाव बढ़ता हुआ महसूस हुआ। वह वहीं जम गया, जबकि मास्टर रीस उससे आगे जंगल में आराम से टहलते हुए चले गए।
वह इतना निडर कैसे हो सकता है?
सिन्बाद अपने गुरु के इस गुण की सराहना करता था। वह असभ्य, निर्दयी, झूठा और धोखेबाज था, लेकिन बहादुर भी था। गिल्ड में वापस आकर, सभी प्रशिक्षु सिन्बाद से ईर्ष्या करते थे, क्योंकि उसे मास्टर रीस ने चुना था, जो अब तक के सबसे शक्तिशाली शिकारियों में से एक थे।
शायद वह मुझे मजबूत बनाने की कोशिश कर रहा है।
सिंदबाद घने कोहरे में उस आदमी के पीछे धीरे-धीरे चलने लगा। उसकी नज़र ऊपर लताओं पर पड़ी जहाँ बंदर बैठे उसे घूर रहे थे। सीगलों का एक झुंड उनके ऊपर मंडरा रहा था। शलजम और गुलाब की खुशबू और जगुआर की दहाड़ हवा में गूंज रही थी। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, उसे एहसास हुआ कि द्वीप उसकी अपेक्षा से कहीं बड़ा था।
और इससे उसकी आशंका सच साबित हो गई। सिंदबाद ने देखा कि वह उन ऊँची पहाड़ियों की ओर बढ़ रहा था जो ज़मीन पर फैले घने पेड़ों के बीच से उठती हुई दिखाई दे रही थीं।

‘हम जिस पक्षी की बात कर रहे हैं, वह हिंदू पौराणिक कथाओं के गरुड़ या फारसी पौराणिक कथाओं के सिमर्ग जैसा एक विशालकाय पक्षी है,’ रीस ने समझाया। ‘और पक्षियों के बारे में मुझे बस इतना पता है कि वे पहाड़ों पर घोंसला बनाते हैं।’
सिंदबाद ने सिर हिलाया और चारों ओर देखा। जंगल से निकलते ही सिंदबाद
को सुंदर मैग्नोलिया के पेड़ों से घिरी घाटियाँ दिखाई देने लगीं। यह द्वीप का सबसे खूबसूरत स्थान था। और इससे पहले कि वह नज़ारे को निहार पाता...
उसने यह सुना।
तेज चीख!
रीस ने सिंदबाद को पकड़कर झाड़ियों में धकेल दिया और अपनी तलवार निकाल ली। सिंदबाद को विशाल पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़ सुनाई दी; गरजती हुई आवाज़ ने उसे बारिश के बादलों की याद दिला दी। ट्यूलिप हवा में कांप रहे थे। उसे ऊपर देखने से डर लग रहा था, लेकिन उसने अपना सिर थोड़ा सा झुकाया और वहाँ वह विशाल गंजा पक्षी उनके ऊपर से उड़ता हुआ दिखाई दिया। उसके पंख बारह कदम लंबे और उतने ही मोटे थे। उसके पंजे इतने बड़े लग रहे थे कि हाथियों को भी आसानी से पकड़ सकते थे। और उसके पंख गहरे भूरे रंग के थे, लगभग बादामी रंग के। अगर वह इतना जानलेवा न होता, तो देखने में वाकई बहुत सुंदर प्राणी होता।
लेकिन मैं इस अजीबोगरीब चीज़ को अपने सिर के ऊपर मंडराते हुए अकेला नहीं रहना चाहता, सिंदबाद ने उस जंगली जीव को निहारते हुए सोचा। और इस समय उसे इस बात की खुशी थी कि मास्टर रीस उसके साथ थे। पक्षी ने अपने पंख फड़फड़ाए और पहाड़ियों की ओर उड़ते हुए उन छोटे-छोटे इंसानों को नज़रअंदाज़ कर दिया।
‘यह अपने घोंसले में वापस जा रहा है,’ रीस ने फुसफुसाते हुए कहा, ‘क्योंकि सूर्योदय हो रहा है।’ उसने उमंग भरे उत्साह से आगे कहा, ‘हालांकि इसके आकार के अलावा इसमें कुछ भी अलौकिक नहीं है। अजीब बात है।’
सिंदबाद को अपने स्वामी का लहजा पसंद नहीं आया, क्योंकि वह खतरनाक दिशा में जाता हुआ प्रतीत हो रहा था। उसने उस पक्षी को देखा जो पहाड़ियों को घेरने वाले कोहरे की ओर उड़ रहा था और फिर आँखों से ओझल हो गया। वह क्षण अत्यंत सुंदर और रहस्यमय था।

‘हमें पहाड़ियों की ओर जाना है,’ रीस ने चलते हुए कहा और सिंदबाद उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। ट्यूलिप के पेड़ों के बाद, उन्हें नाजुक चेरी के फूल और इंद्रधनुषी रंगों की अनोखी लताएँ दिखाई दीं, जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। रीस अपने मिशन में इतना मग्न था कि वह रुककर आसपास के नज़ारों की प्रशंसा करने का समय नहीं निकाल पाया। वह उस रास्ते को खोजने की कोशिश कर रहा था जो उन्हें पहाड़ियों की ओर ले जाएगा।
'मालिक?'
कोई जबाव नहीं।
'मालिक?'
‘क्या?’ रीस ने पीछे मुड़कर देखा।
अपने आस-पास देखो।
रीस ने किया।
और सिंदबाद ने भी अपने दिव्य दर्पण से यही देखा। पूरी धरती रंगों से हरी-भरी थी। पेड़ों पर भूरे खुबानी लगे थे और फूल अनेक रंगों से सजे थे। यह जादुई था।
‘यह क्या है...’ रीस ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाया।
‘यह बहुत ही... अवास्तविक है, मानो इंसानों ने इसे छुआ ही न हो,’ सिंदबाद ने चारों ओर बिखरे साफ पत्तों को देखते हुए कहा। जगह में लैवेंडर की खुशबू फैली हुई थी। द्वीप के बाकी हिस्सों के विपरीत, यहाँ कोई भयानक दुर्गंध नहीं थी। यह अजीब तरह से शांत था। ‘द्वीपवासियों को इस जगह के बारे में क्यों नहीं पता था?’
क्योंकि जो भी इसे अंजाम दे रहा है, वह नहीं चाहता कि यह किसी को दिखाई दे। अगर हमारे पास भविष्य देखने वाला दर्पण न होता, तो हमें भी यह दिखाई नहीं देता।
पहाड़ियों से तेज चीखें सुनाई दे रही थीं। लेकिन वे दूर से आ रही थीं,
और उनसे कोई खतरा नहीं था—कम से कम अभी के लिए तो नहीं।
वे पहाड़ियों की ओर और घने जंगल में चलते रहे, तभी उन्हें एक बड़ी बकरी दिखाई दी जिसके सिर पर हिरण के सींग थे। बकरी चांदी जैसी पत्तियों वाली घास चर रही थी। अचानक, रीस जानवर की ओर दौड़ा, जिसने ऊपर देखा और तुरंत दूसरी दिशा में भाग गया। सिंदबाद भी मुस्कुराया। प्रकृति की ऐसी सुंदरता देखकर वह बेहद खुश था—ऐसा नजारा उसने पहले कभी नहीं देखा था।

जैसे ही वे जंगल की ढलानों से नीचे उतरे और जैतून के पेड़ों के बीच से गुजरे, सिंदबाद ने बकरी को एक ओक की लकड़ी की कुटिया की ओर जाते देखा, जो कई विचित्र, रंग-बिरंगे पौधों से घिरी हुई थी। कुटिया के आगे कुछ पेड़ों के झुरमुट थे।
‘यहाँ द्वीपवासियों के अलावा कोई और रहता है,’ रीस ने धीमी हंसी के साथ कहा। सिन्बाद उस हंसी को जानता था—वह हंसी जो ‘आहा!’ जैसी होती है। उन्होंने हिरण के सींगों वाली बकरी को एक ऐसी स्त्री से मिलते देखा जिसके घने लाल बाल जूड़े में बंधे थे। वह घुटनों के बल बैठी बकरी की देखभाल कर रही थी मानो उससे बातें कर रही हो। अचानक उसकी नज़र ऊपर उठी और उसने सिंदबाद और रीस को देखा।
पल भर में, उसकी आंखों की पुतलियां घातक हो गईं, मानो उनमें आशंका झलक रही हो।
‘मुझे भी यही लगा था।’ मास्टर रीस ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा।
‘क्या?’ सिंदबाद किसी तरह बोल पाया।
‘सिंदबाद,’ रीस ने उसकी ओर देखते हुए कहा, ‘इस द्वीप पर एक चुड़ैल रहती है। और वह इस बात से खुश नहीं है कि अब हमें उसके बारे में पता चल गया है।’

बारह

आज
वे सराय के मुख्य हॉल के ठीक बीच में खड़े थे, जो दिन के समय खाली था क्योंकि इस समय कोई भी सराय में जबरदस्ती नहीं घुसता। सिंदबाद और हुसैन वहाँ खड़े महमूद की फटकार का इंतज़ार कर रहे थे, जो मानो भड़कने को तैयार था।
सिंदबाद ने अपना सिर नीचे रखा और हुसैन ने भी ऐसा ही किया।
महमूद के माथे की नसें उभरी हुई थीं।
‘मुझे तो पता भी नहीं...’ उसने अपनी बड़ी टोपी को गुस्से से ठीक करते हुए कहना शुरू किया।
‘रुको, रुको।’ हुसैन ने चालाकी से मुस्कुराते हुए महमूद को बिठाया और सिंदबाद को एक तरफा मुस्कान दी। ‘महोदय, यह महज़ एक गलतफहमी थी। अधिकारियों ने हमसे माफ़ी मांगी। हमसे! हा हा! यकीन मानिए? उन्होंने कहा कि उन्हें लगा कि यह मैं और वह थे, लेकिन बाद में पता चला कि ऐसा नहीं था।’ महमूद ने आश्वासन के लिए सिन्बाद की ओर संदेह भरी निगाहों से देखा, जिसने इशारा मिलते ही मजाकिया अंदाज में सिर हिलाया और अपनी हंसी दबा ली। 'तो फिर तुमने यह क्यों कहा कि तुम भी इसमें शामिल थे?'
हुसैन ने महमूद के कंधे पर थपथपाते हुए कहा, 'क्योंकि वह एक नाटकीय मसखरा है। उसे पता नहीं था कि मामला क्या है, लेकिन वह हमेशा अपने दोस्तों का साथ देता है—जिसमें तुम भी शामिल हो—भले ही वह इस स्थिति में किसी भी तरह से शामिल न हो।'
सिन्बाद हुसैन की हाजिरजवाबी का कायल था। जब सिन्बाद जाफ़र के साथ कमरे में था, तब उसने जाफ़र से हुसैन की सज़ा भी माफ़ करने को कहा था। जाफ़र ने पहले तो तकनीकी भाषा का इस्तेमाल करते हुए मना कर दिया, लेकिन अंततः सिन्बाद द्वारा यह समझाने पर मान गया कि हुसैन एक तरह का जादूगर था।
हाँ, वह वाकई एक जादूगर है। शब्दों का जादूगर।

‘मैं तुम्हारी बात पर विश्वास क्यों नहीं करना चाहता?’ महमूद ने हुसैन से संशयपूर्वक पूछा।
‘क्योंकि हम पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों से भरी दुनिया में रहते हैं! हमें देखो,’ उसने सिंदबाद और खुद की ओर हाथ हिलाते हुए कहा, ‘हम दोनों स्वभाव से ही शरारती दिखते हैं... सुंदर लड़के हैं, यह तो मानना पड़ेगा। और इसीलिए पुलिस वालों ने मान लिया कि हम शव चुराने में शामिल थे। पुलिस और उनकी कार्यप्रणाली, मैं तुम्हें बताता हूँ!’ हुसैन ने सिर हिलाया और गहरी साँस ली। फिर उसने मासूमियत भरी नज़र से देखा।
विचारों में डूबे महमूद ने अपना सिर हिलाया।
‘इसका सीधा सा मतलब यह है कि उन्हें बाद में अपनी गलती का एहसास हुआ
और वे हमें जाने देने के लिए सहमत हो गए। इसके अलावा इसका कोई और कारण नहीं है।’
‘ऐसा तो नहीं है, लेकिन...’ महमूद ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी, वह उन सुरागों को याद करने की कोशिश कर रहा था जो उसे स्थिति को पलटने में मदद कर सकते थे, लेकिन हुसैन ने उसे मौका नहीं दिया।
हुसैन ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, "तो अब चिंता मत करो। अंदर जाओ
और आराम करो। हम फर्श साफ कर देंगे, बर्तन धो देंगे और बाकी सब कुछ संभाल लेंगे। ठीक है?" महमूद ने अनमने ढंग से सिर हिलाया।
उसके जाने पर हुसैन ने राहत की सांस ली। अचानक महमूद मुड़ा और बोला, 'बात बस इतनी सी है... तुम दोनों मेरे बच्चों जैसे हो। कुछ गड़बड़ मत करना। मुझे खुशी है कि यह सिर्फ एक गलतफहमी थी, लेकिन क्या पता एक दिन ऐसा न हो? तुम मेरे बच्चों के बारे में जानते हो... कि उन्हें मुझसे कैसे अलग किया गया था।' उसने अपनी निगाहें नीचे कर लीं जब सिंदबाद को हुसैन से हुई बातचीत याद आई कि महमूद की पत्नी की मृत्यु के बाद, उसका भाई बच्चों को अवैध व्यापार और पैसे कमाने के लिए ले गया था। 'मैं नहीं चाहता कि तुम दोनों मुसीबत में पड़ो।'
खासकर तुम, हुसैन। सिंदबाद अपना ख्याल रख सकता है, लेकिन तुम... तुम्हें अपने नाम के अनुरूप जीना है।
हुसैन का चंचल स्वभाव तुरंत बदल गया।
‘तुम्हारे पिता सेना में थे, एक घुड़सवार सैनिक थे जिन्होंने इस साम्राज्य के लिए ज़ाब की लड़ाई में भाग लिया था। उन्हें निराश मत करना।’

‘उसे निराशा नहीं होगी। वह मर चुका है।’ हुसैन ने जवाब दिया, लेकिन सिंदबाद समझ गया कि अपने शहीद पिता का ज़िक्र सुनकर हुसैन नाराज़ हो गया था। हुसैन कभी उसके बारे में बात नहीं करता था, क्योंकि उसकी माँ की बहुत समय पहले एक प्राकृतिक बीमारी से मृत्यु हो जाने के बाद से वही उसका एकमात्र अभिभावक था।
‘हां... उन्होंने इस साम्राज्य के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी,’ महमूद
ने आगे कहा।
‘और इससे क्या फायदा हुआ?’ हुसैन ने अपने जबड़े भींच लिए। ‘शहीद का इकलौता बेटा गंदी ज़मीनें साफ कर रहा है और मूर्खों के लिए गाने गा रहा है? न पेंशन, न कोई मुआवज़ा! एक ‘धन्यवाद’ भी नहीं। सच में, ऐसी दुनिया में हीरो बनने का क्या मतलब है जहाँ न कोई कृतज्ञता है, न पैसा, न बदले में कुछ? आखिर कोई हीरो बनता ही क्यों है?’
महमूद ने उसे उदास मुस्कान दी। ‘एक हीरो कुछ नहीं मांगता, मेरे बेटे।
वह दुनिया के लिए काम नहीं करता। वह अपने लिए करता है। वह इसलिए करता है क्योंकि वह जानता है कि यह सही काम है।’ आह भरते हुए, उसने नम आँखों से दोनों लड़कों को देखा और चला गया। सिंदबाद चुप रहा। महमूद के शब्द उसके दिल को छू गए थे।
हुसैन सीधे खड़े हुए और उपहास उड़ाते हुए बोले, 'ये सब सरासर बकवास है। आजकल मालिक कुछ ज्यादा ही भावुक हो रहे हैं। अब बताओ जाफ़र ने क्या कहा — क्या उसमें दिरहम का कोई अंश है?'
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'कोई नहीं। शिकारियों को उनकी सेवाओं के लिए भुगतान नहीं मिलता। मैं अकेला अपवाद हूँ।'
हुसैन ने आगे कहा, 'अच्छा मिशन है!' इसके बाद सिंदबाद ने उन्हें पूरे मिशन के बारे में समझाया। कुछ पल की चुप्पी के बाद हुसैन ने कहा, 'तो दुनिया के अंत में हम सब गरीब ही मरेंगे? क्या ही तरीका है!' उन्होंने धीरे से ताली बजाई।
सिंदबाद ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसके विचार कहीं और थे। इस मिशन में उसे पैसों की परवाह नहीं थी। यह मिशन एक अपवाद था।
सफीना... वह एक अपवाद थी।
अगर वह न होती तो उसने इस मिशन को स्वीकार करने या दुनिया के अंत के बारे में कभी सोचा भी न होता।

‘अब जब पैसे का कोई सवाल ही नहीं है, तो चलिए नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देते हैं, ठीक है?’ हुसैन ने कहा। ‘मैं राख से भरी दुनिया में नहीं रहना चाहता जहाँ कोई दरिंदा हम पर राज करे। तो क्या हम इसके बारे में कुछ करने वाले हैं?’
'हां।' सिंदबाद ने सिर हिलाया। 'हमें करना ही होगा।'
'क्या पर?'
‘एक एल्डर सेइड आ रहे हैं। हमारा मार्गदर्शन करने के लिए।’
‘आ रहे हो? कहाँ? यहाँ? क्या तुम्हें पता है कि सेइड कैसा दिखता है?’ सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'मैं इदरीस नाम के अलावा कुछ नहीं जानता।'
हुसैन के जवाब देने से पहले ही, उन्होंने एक आकृति को अपनी ओर आते देखा, जिसने उस मेज पर मछली पटक दी जिस पर सिंदबाद और हुसैन ने अपने हाथ रखे हुए थे। सिंदबाद चौंककर उठा और उसने छोटे बालों वाली चीनी लड़की प्रेसा को देखा।
‘प्रवेश करने का यह अच्छा तरीका है,’ सिन्बाद ने कहा। ‘शायद नाटकीयता
पर थोड़ा और काम करना चाहिए?’
‘चुप रहो, लड़के। क्या कब्र खोदने की घटना तुम्हारे लिए काफी नाटकीय नहीं थी?’ प्रेसा ने अकड़कर जवाब दिया। ‘मैं तुम्हारे लिए एक बात स्पष्ट कर दूं: मैं तुम दोनों के बारे में सब कुछ जानती हूं। और तुम, सिंदबाद,’ उसने मछली उठाकर उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, ‘मैं जानती हूं कि तुम किसी न किसी तरह दुनिया को राक्षस से बचाने से जुड़े हो।’
सिन्बाद पीछे हट गया और अनजाने में अपने पीछे एक कुर्सी धकेल दी। उसकी आवाज़ पूरे हॉल में गूंज उठी। हुसैन की ओर उलझन भरी नज़रों से देखते हुए उसने कहा, 'रुको, कैसे... कौन... कब...'
‘इतना नाटक मत करो, बैठ जाओ,’ प्रेसा ने मछली को फिर से ज़ोर से मेज पर
पटक दिया। ‘याद है मैंने तुमसे कहा था कि मुझे तुमसे कुछ बात करनी है?’ प्रेसा की पतली भौहें ऊपर उठ गईं। ‘तो अब समय आ गया है। मैं सीधे मुद्दे पर आती हूँ। मुझे कुछ बातें समझ आ रही हैं।’
‘खैर, तुम्हारे पास आंखें तो हैं,’ हुसैन ने सहज भाव से कहा।
प्रेसा ने मछली से हुसैन के चेहरे पर जोरदार थप्पड़ मारा। 'मुझे भी गंध आती है। और तुम सैल्मन मछली की तरह बदबू मारते हो, मंदबुद्धि, मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी।'

हुसैन ने अपना गाल सहलाया, उसकी आँखों में लगभग आंसू आ गए थे। 'तुम्हें मुझे मारने की ज़रूरत नहीं थी।'
‘मछली के साथ या पर्यायवाची शब्दों के साथ?’ प्रेसा ने बड़ी-बड़ी आँखों से उसे घूरकर देखा।
“अच्छा…” हुसैन ने बोलना शुरू किया लेकिन मछली को देखकर खुद को रोक लिया।
‘इस मछली का दोबारा इस्तेमाल करने से पहले,’ प्रेसा ने सिंदबाद की ओर देखते हुए कहा, ‘सिंदबाद, मुझे चीज़ें दिखाई देती हैं। मैं बचपन से ही ऐसा कर पाती हूँ, लेकिन मैंने कभी इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। अब ये बात मुझे साफ़ समझ आ रही है। पहले मुझे लगता था कि ये मेरी कल्पना है, जब तक मैंने हुसैन को काम करते हुए कीचड़ में सना हुआ और लगातार भौंकते हुए नहीं देखा। फिर मुझे कब्र खोदने की घटना और उसके बारे में पता चला। मैंने सोचा, अरे रुको—क्या पता ये सिर्फ़ मेरी कल्पना न हो, क्या पता मुझे सच में जो हो रहा है, जो होने वाला है या जो हो चुका है, वो दिखाई दे रहा हो?’
सिंदबाद का चेहरा पीला पड़ गया। ‘तुमने देखा... तुमने अतीत में जो हुआ
वो देखा?’ वह स्तब्ध रह गया। उनके बीच एक भविष्यवक्ता? यह कैसे हो सकता है? यह तो एक अद्भुत संयोग था। उसे मास्टर रीस की कही बात याद आई: एक महान भविष्यवक्ता वह नहीं होता जो केवल भविष्य देख सकता है, बल्कि वह होता है जो वर्तमान और अतीत दोनों देख सकता है।
दुर्भाग्य से, अब भविष्यवक्ता बहुत कम हैं; वास्तव में वे इतने दुर्लभ हैं कि बहुत से लोग उनके बारे में जानते भी नहीं हैं।
सिन्बाद प्रेसा को घूर रहा था, जिसने गंदा एप्रन पहना हुआ था, प्याज
की गंध आ रही थी और रसोई में काम करने के कारण उसका चेहरा धूल और तेल से थोड़ा काला पड़ गया था। उसने पलकें झपकाईं। क्या यह सच हो सकता है? गिल्ड की भविष्यवक्ता ज़ारका केवल भविष्य देख सकती थी, लेकिन प्रेसा अतीत देख सकती थी... तो क्या वह ज़ारका से भी अधिक शक्तिशाली है? लेकिन वह तो सिर्फ तेरह साल की है...
प्रेसा ने आगे कहा, 'मैं तुम पर, सिंदबाद, ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ
और मैंने बहुत कुछ सीखा है। केवल छवियों के माध्यम से और लगातार नहीं, लेकिन इतना ज़रूर कि तुम मुझे बता सकते हो कि इस वरदान या अभिशाप का क्या

करना है, क्योंकि तुम जादूगरों के किसी अजीब पंथ से ताल्लुक रखते हो, या जो भी तुम इसे कहते हो। तो तुम्हारा क्या कहना है?'
‘खैर,’ सिन्बाद ने धीरे से कहना शुरू किया, ‘यह वाकई एक वरदान है। और ये जादूगर नहीं हैं। ये राक्षसों का वध करने वाले शिकारियों का एक पंथ है। और सामान्य परिस्थितियों में, मैं तुम्हें उस संघ में भेज देता।’ सिन्बाद मुस्कुराया, उसके दिमाग में एक विचार आया। ‘लेकिन मैंने तुम्हारे लिए कुछ और योजना बनाई है।’

मछली के बिना, वे तीनों एक छोटे से कमरे में थे।
प्रेसा एक अंडाकार कुर्सी पर बैठी थी, जिसका मुख हुसैन और सिन्बाद की
ओर था। सिन्बाद ने अपने होंठ दबाए और कहा, 'मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे बताओ कि सफीना उमैर कहाँ है।'
प्रेसा ने सिन्बाद को संदेह भरी निगाहों से देखा और फिर अपनी आँखें बंद कर लीं। काफी देर तक वह आँखें कसकर दबाए, ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करती रही, लेकिन अचानक रुक गई। 'कोई फायदा नहीं।'
मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे कोई चीज मुझे रोक रही है।'
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'उसने खुद पर ही भविष्यवक्ता-प्रतिरोधक मंत्र का जाप किया होगा ताकि इस तरह उसका पीछा न किया जा सके।'
‘सिनबाद, तुम बहुत बकवास करते हो, क्या तुम्हें पता है?’ हुसैन ने झुंझलाहट में कहा। ‘यह द्रष्टा-प्रतिरोधक मंत्र क्या होता है?’
‘काला जादू। बस इतना ही जानना काफी है,’ सिन्बाद ने जवाब दिया। उसने प्रेसा की ओर देखा और कहा, ‘मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे बताओ कि मैं सफीना उमैर को कैसे ढूंढ सकता हूँ। और मैं यहाँ ‘कैसे’ पर विशेष जोर दे रहा हूँ।’

प्रेसा ने सिर हिलाया और अपनी आँखें बंद कर लीं। उसकी पलकें फड़कने लगीं और आँखों की पुतलियाँ इधर-उधर घूमने लगीं। अचानक उसने सिंदबाद की बांह पकड़ ली और अपने नाखून उसकी त्वचा में गड़ा दिए।
‘मुझे दिख रहा है...’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘यह... यह यूनानियों से संबंधित कुछ है... पानी... मछली... बूढ़ा आदमी... समुद्र... मैं बस...’ खून की कुछ बूँदें सिंदबाद की पीली बाहों पर गिरीं। उसकी नाक से खून बह रहा था। सिंदबाद ने हल्के से उसके कंधे को छुआ और प्रेसा अचानक होश में आ गई, उसकी आँखें खुल गईं। वह हाँफते हुए खून पोंछ रही थी। ‘वांग बा दान!’ वह चीनी भाषा में चीखी।
'तुम ठीक हो?'
‘दर्द हुआ। दर्द क्यों हुआ?’ उसने सिंदबाद की ओर देखते हुए चीख मारी। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, वह खड़ी हो गई, उसका कुर्ता पकड़ा और उसे अपने बराबर खींच लिया। सिंदबाद लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा क्योंकि वह प्रेसा के चार फुट ग्यारह इंच के कद के हिसाब से खुद को ढालने की कोशिश कर रहा था, जबकि वह लगभग छह फुट का था। ‘दर्द क्यों हुआ, लड़के? क्यों?’
‘शांत हो जाओ,’ सिन्बाद ने कहा और धीरे-धीरे अपनी पकड़ ढीली कर दी। ‘क्योंकि यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम क्या देख रही हो और किसे देख रही हो। तुम मुझे आसानी से और विस्तार से देख पाईं क्योंकि मैं पास ही थी और मैं भी एक इंसान ही हूँ। लेकिन तुमने आज जिसे देखा—जो हमारी मदद कर सकता है—वह कोई दुष्ट और इतना... इंसान नहीं है,’ सिन्बाद ने अत्यंत शांत भाव से समझाया, लेकिन फिर भी उसे एक सिहरन महसूस हुई।
हुसैन ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'इंसान नहीं? क्या? रुको, तो तुम कह रहे हो कि तुम्हें समझ आता है कि यूनानी, पानी, मछली, बूढ़ा आदमी और ये सब बकवास क्या होती है?'
‘हाँ। क्योंकि मैं उस चूहे से एक बार निपट चुका हूँ।’ सिंदबाद ने ग्रीस के माइकोनोस में मास्टर रीस के साथ बिताए समय को याद करते हुए दांत पीस लिए। ‘लेकिन मुझे नहीं पता था कि वह यहाँ होगा। हालाँकि वह उन सभी जगहों पर जाता है जहाँ निर्मल समुद्र तट और साफ किनारा उसका स्वागत करते हैं... खैर, मुझे आश्चर्य नहीं होना चाहिए।’
प्रेसा ने चीनी भाषा में कुछ बुदबुदाते हुए कहा, 'यह "वह" कौन है?'

'उन्हें समुद्र का बूढ़ा आदमी कहा जाता है,' सिंदबाद ने कहा, यह समझते
हुए कि यह मिशन आसान नहीं होने वाला है। 'और वह एक यूनानी देवता हैं।'

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

का एक तेज झटका लगा, जिससे उसके गाल पर एक गहरा घाव हो गया और खून बहने लगा। वह चीख पड़ा।
रीस तुरंत मुड़ा और पेड़ पर झपटा—उसके ठीक बीचोंबीच वार किया, जिससे छाल फट गई। पेड़ वहीं सूख गया। एक और पेड़ उनकी ओर दौड़ा, लेकिन रीस तैयार था, उसने अपनी तलवार पेड़ की शाखाओं पर घुमाई और वार किया। अचानक, एक और पेड़ किनारे से आया और गुरु के गले पर निशाना साधा। लेकिन रीस फुर्ती से मुड़ा और थोकचा तलवार उस पर फेंक दी। चमकती हुई आकाश-लोहे की तलवार हवा में उड़ी और सीधे पेड़ पर जा लगी, उसे दो टुकड़ों में तोड़ दिया और कहीं पीछे गायब हो गई। रीस ने सीटी बजाई और तलवार उसके हाथों में लौट आई। रीस मुस्कुराया और तलवार को अपने कुर्ते पर पोंछा। तलवार की यही खासियत थी— वह मालिक की आज्ञा मानती थी और आदेश मिलते ही चलती थी। लेकिन तलवार को अपने धारक से भावनात्मक रूप से जुड़ने के लिए बहुत शक्ति और लगाव की आवश्यकता होती थी।
‘यह तो पागलपन है। हम शांति से आए हैं,’ रीस चिल्लाया, तभी सिंदबाद तेजी से उसके करीब आया और उनके पैरों के चारों ओर लिपटी शाखाओं को गुस्से से काटने लगा। ‘मैं एक सेइड हूँ। और मेरा किसी को नुकसान पहुँचाने का कोई इरादा नहीं है।’
लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।
नुकीले मुंह वाले फूल बहुतायत में उग रहे थे। कई और छोटे-छोटे पेड़- पौधे आपस में सट गए थे। सांप जैसी शाखाओं की कतारें जंगल की ज़मीन पर रेंगती हुई उनकी ओर बढ़ रही थीं। 'यह तो हद से ज़्यादा है, स्वामी,' सिंदबाद हांफते हुए बोला। 'उसने इनमें से इतने सारे पौधे यहाँ लगा रखे हैं... ये सुंदरता के लिए नहीं, बल्कि घात लगाने के लिए हैं... जैसे यह वाला,' सिंदबाद ने कहा, उन अलौकिक प्राणियों की बुद्धि देखकर वह दंग रह गया था।
‘एक सेइड?’ अचानक एक महिला की आवाज़ सुनाई दी। उसकी उंगलियों की चटकने
की आवाज़ और नीली बिजली के झटके से जंगल बीच से फट गया। महिला प्रकट हुई। ‘क्या वे चुड़ैलों का भी शिकार नहीं करते?’
‘सिर्फ़ समस्या पैदा करने वाले।’ मास्टर रीस हँसते हुए बोले, उनकी तलवार हमले के लिए तैयार थी। ‘क्या तुमने कुछ ऐसा किया है जिसे समस्या माना जा सके?’ लाल बालों वाली महिला ने अपनी भौंहें उठाईं।

सिंदबाद ने उसके खुरदुरे, चौकोर चेहरे पर अजीब से लाल धब्बे देखे। उसने अपना सिर हिलाया, उंगलियां चटकाईं और सारे फूल और पेड़ जम गए। ठीक वैसे ही जैसे वे स्वाभाविक रूप से होते हैं।
सिन्बाद सीधा खड़ा हुआ, उसका हाथ उसके गाल पर लगे खून से लथपथ घाव को सहला रहा था। मास्टर रीस ने अपनी तलवार म्यान में डाली और कहा, 'मेरा इरादा किसी को नुकसान पहुंचाने का नहीं था। मैंने सचमुच यही कहा था।'
उस महिला ने अपनी हल्के रंग की छोटी-छोटी आँखों से उन्हें संदेह भरी निगाहों से देखा। 'और तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?'
‘हम आपसे भी यही सवाल पूछ सकते हैं,’ रीस ने जवाब दिया।
‘मैं बाइजेंटाइन से लियोना हूँ।’
'घर से बहुत दूर हो, है ना?'
'इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए। मैं एक यात्री हूँ। मुझे अपनी औषधियों पर प्रयोग करने के लिए एक अच्छी सी छोटी जगह मिल गई थी, तभी मैंने उस बड़े पक्षी को देखा।'
मास्टर रीस ने सिर हिलाया। 'तो इस पक्षी के उत्परिवर्तन के पीछे आपका हाथ नहीं है?'
‘तुम्हें पता है कि यह एक उत्परिवर्तन है?’ उसने प्रभावित होकर अपनी भौहें ऊपर उठाईं।
‘बिल्कुल। इसका हमारे किसी मिथक से कोई लेना-देना नहीं है। इसे किसी न किसी ने गढ़ा होगा।’ वह मुस्कुराया।
लियोना ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। 'इसके रूपांतरण में मेरा कोई हाथ नहीं था।'
यह एक खूबसूरत प्राणी है। कभी-कभी मैं इसे खाना खिलाता हूँ।'
मुझे यकीन है। लेकिन यह खूबसूरत जीव द्वीपवासियों का शिकार कर रहा है।
लियोना ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'यह मेरी समस्या नहीं है। नश्वर प्राणी लंबे समय से चुड़ैलों का शिकार करते आ रहे हैं। उन्हें उनके कर्मों का फल मिलना ही चाहिए।' सिंदबाद की ओर बढ़ते हुए उसने अपना चेहरा बिगाड़ा और उसका घाव देखा। 'अरे, तुम्हें चोट लगी है। अंदर आना चाहोगे?'
इससे पहले कि सिंदबाद कुछ बोल पाता, रीस ने कहा, 'मुझे रात का खाना खाने में कोई आपत्ति नहीं होगी।'

लियोना ने सिर हिलाया और उन्हें अपने पीछे-पीछे कुटिया की ओर चलने को कहा।
‘तुमने मुझे कैसे देखा?’ उसने पूछा।
‘भविष्यवाणी दर्पण।’
'बिल्कुल।'
बिना किसी झिझक के, मास्टर रीस ने पूछा, 'क्या तुमने यहाँ आसपास कोई लड़की देखी है?'
वह रुक गई और जबड़े भींचते हुए पीछे मुड़कर देखा। 'क्यों?'
‘वह खो गई है। उसे वापस गांव ले जाना होगा।’
लियोना ने रीस की ओर सख्ती से देखा और फिर धीरे से जवाब दिया, 'हां। मैंने किया है।'

सिन्बाद ने गौर किया कि लियोना की कुटिया कितनी साफ-सुथरी और अच्छी तरह से सजी हुई थी।
दीवारों के किनारे अलग-अलग आकार के कई बड़े-बड़े बर्तन रखे थे, लेकिन उनमें से वैसी गंध नहीं आ रही थी जैसी बगदाद में मास्टर रीस के यहाँ आती थी। उनके पास कई कांच की नलियाँ भी थीं जिनमें रंग-बिरंगे तरल पदार्थ भरे थे। उनकी लंबी मेज पर किताबें और कागजों के ढेर करीने से तह करके रखे थे। और झोपड़ी के एक कोने में एक छोटा सा साधारण सा पलंग रखा था।
लियोना ने सिन्बाद को गहरे, लाल घाव को साफ करने के लिए एक साफ कपड़ा
और ठंडा पानी दिया। उसने अपने थैले से एक मरहम निकाला और अपने गाल पर हल्के से मालिश की, तभी उसने देखा कि भूख से बेहाल मास्टर रीस अपना मटन और चावल खा रहे हैं।
चुड़ैल एक झूला कुर्सी पर बैठी थी, उसके हाथ कुर्सी के आर्मरेस्ट पर टिके थे। उसने लाल रंग का एक छोटा वस्त्र पहना था, जो उसके बालों के रंग से मेल खाता था, और ढीले बेज रंग के पायजामे के साथ सैंडल और उंगलियों में कई

अंगूठियां पहनी थीं। उसमें कुछ ऐसा था जो स्वाभाविक रूप से बहुत ही सुरुचिपूर्ण था।
'तुम्हें हम पर हमला नहीं करना चाहिए था,' मास्टर रीस ने कहा।
'तुम इतने अच्छे नहीं दिखते कि शांति से आए हो,' लियोना उस पर चिल्लाई।
रीस खिलखिलाकर हँसा। 'तुम उस लड़की के बारे में क्या जानते हो?'
‘उसकी आंखें बिल्ली जैसी हैं,’ लियोना ने कहा, तभी एक भूरा खरगोश उछलता हुआ उसके पास आया। उसने उसे उठाया और उसके कान सहलाए। ‘और मैंने उसे इस विशाल पक्षी को “रॉक” कहते हुए सुना है।’
‘क्यों?’ रीस ने अपनी भौंहें उठाईं।
‘कोई अंदाजा नहीं। लेकिन उससे एक अजीब सी ऊर्जा निकलती है—ऐसी ऊर्जा मैंने पहले कभी महसूस नहीं की,’ लियोना ने सोच-विचार करते हुए कहा। ‘मुझे नहीं लगता कि वह इंसान है। अगर तुम उसे पकड़ लो, तो मैं उसकी गहराई से जांच कर सकती हूं या तुम उसे अपने संघ में ले जा सकते हो, जिन्होंने वैसे तो सब कुछ हमसे ही सीखा है।’
सिंदबाद कुर्सी से उठकर घर में चारों ओर देखने लगा। उसकी नज़र पिछले दरवाजे के ऊपर लगी बड़ी पेंटिंग पर पड़ी। उसमें एक महिला तलवार पकड़े हुए थी और उसके बगल में एक अवर्णनीय जानवर बना हुआ था। महिला ने एक लंबा, सफेद गाउन पहना हुआ था और उस पर एक बड़ा पंचकोण बना हुआ था।
‘हेकेट,’ सिंदबाद ने लियोना की ओर मुड़ते हुए कहा, जो उसे देखकर मुस्कुराई। ‘जादू टोने की जननी।’
‘हम सब उनकी शिक्षाओं का पालन करते हैं।’ लियोना ने सिर हिलाया। ‘वह वाकई एक असाधारण महिला थीं और तुम...’ उसने घृणा से रीस की ओर देखते हुए कहा, ‘और तुम्हारे संघ ने उन शिक्षाओं को अपनाया, मनुष्य द्वारा इस्तेमाल किए जा सकने वाले मंत्रों को छाँटा और उनका ही विशेष रूप से उपयोग किया।’
‘खैर, हम इसी तरह अपना गुजारा करते हैं। अलग-अलग जातियों से चोरी और लूटपाट करके।’ रीस ने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘मुझे बस कुछ सवाल पूछने हैं और फिर हम चले जाएंगे,’ और उसने प्लेट एक तरफ रख दी।
लियोना ने अनिच्छा से सिर हिलाया। 'आगे बढ़ो।'
सिंदबाद उस खरगोश को देखने में मग्न था जिसे लियोना थोड़ी देर पहले सहला रही थी। वह खरगोश अब कमरे में उछल-कूद कर रहा था और बाहर जाने के लिए बेताब था। सिंदबाद ने दरवाजा खोला और वह चारों ओर फैले चांदी जैसे घने

पेड़ों की ओर उछलने लगा, मानो वह किसी चुड़ैल की कुटिया का आंगन हो। वह बाहर निकला। पेड़ अजीबोगरीब रंगों के थे और एक पल के लिए सिंदबाद ने गहरी सांस ली और उनकी सुंदरता की सराहना की, तभी उसकी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी... कुछ अजीब सा।
जंगल में कहीं से एक दबी हुई सी आवाज़ आ रही थी, मानो कोई वहाँ छिपा हो। भूरा खरगोश आवाज़ की ओर उछला, तभी उसे 'शू' की आवाज़ सुनाई दी।
सिंदबाद ने अपनी भौंहें उठाईं। 'क्या वहाँ कोई है?' वह आगे बढ़ा तो उसने पेड़ों के झुरमुट में एक आकृति देखी।
बिल्ली जैसी आंखों वाली एक आकृति।

चौदह

आज
आर्मागेडन में छह दिन शेष थे। सिंदबाद को एहसास हुआ कि उसे देर हो रही है। ‘क्या आपको यकीन है कि यह तरीका काम करेगा?’ हुसैन ने नाव चलाते हुए पूछा।
वे बसरा के उम क़सर बंदरगाह के पूर्वी तट से रात में नाव लेकर निकले
थे, जब फ़ारसी पहरेदार तट पर किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर नज़र नहीं रख रहे थे। सिंदबाद ने अपनी कमाई के कुछ दिरहमों में से नाविक को अपनी सरकंडे की नाव उधार देने के लिए पैसे दिए। उसकी एकमात्र शर्त यह थी कि यदि वे आधिकारिक अनुमति के बिना समुद्र में जाते हुए पकड़े जाते हैं, तो नाविक का नाम न लिया जाए और न ही उसे इसमें शामिल किया जाए।
सिंदबाद को कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि वह हर तरह के गैरकानूनी कृत्यों से मुक्त था।
‘बेशक, ऐसा होगा।’ उसने शराबखाने से चुराई हुई शराब का एक गिलास खुला रखा। ‘मैं समुद्र के बूढ़े आदमी को जानता हूँ। उसकी भी एक कमजोरी है।’ ‘अजीब देवता। मुझे लगा था कि केवल एक ही देवता होता है। मुझे नहीं पता
था कि अलग-अलग देशों के लिए अलग-अलग देवता होते हैं,’ हुसैन ने बड़बड़ाते हुए कहा और नाव चलाना जारी रखा।
वे तारों भरे आकाश के नीचे, अँधेरे समुद्र के बीचोंबीच थे। दूर से सिंदबाद को टिमटिमाती रोशनी दिखाई दे रही थी, जिससे उसे याद आ रहा था कि वह अभी भी सभ्यता के करीब है। लहरें तेज़ थीं और नाव डगमगा रही थी—यह स्वाभाविक ही था क्योंकि वे किसी झील पर नहीं बल्कि समुद्र में एक छोटी सी सरकंडे की नाव पर थे, जो तकनीकी रूप से जीवित रहने की स्थिति में परिवहन का सबसे अच्छा साधन नहीं था। लेकिन उनके पास कोई छोटी नाव किराए पर लेने का समय नहीं था क्योंकि प्रेसा के सपने के बारे में पता चलते ही वे तुरंत किनारे पर आ गए थे।

‘ये मौलिक देवता हैं,’ सिंदबाद ने स्पष्ट किया और हुसैन के नाव चलाना बंद करते ही खड़ा हो गया। उसने गला साफ किया और जोर से बोला, ‘हे प्रभु प्रोटियस, मैं आपको अपनी भेंट अर्पित करता हूँ। अपनी दिव्य उपस्थिति से मुझे आशीर्वाद दें।’
कोई जबाव नहीं।
‘प्रोटियस कौन है?’ हुसैन ने फुसफुसाते हुए पूछा।
‘उसका असली नाम,’ सिन्बाद ने कहा। ‘पिछली बार जब मैं उससे मिला था, वह... खैर, बस इतना कह लीजिए कि वह एक सनकी था। उसने मेरे गुरु पर हमला किया और उन्हें ढूंढने की सजा के तौर पर उनकी पीठ पर बैठ गया। फिर मुझे उसे शराब का लालच देकर रिश्वत देनी पड़ी! तभी उसने मेरे गुरु को जाने दिया और हमें उस मिशन के बारे में ज़रूरी जानकारी दी जिसके लिए हम जा रहे थे।’
हुसैन ने कहा, 'आपने काफी शानदार जीवन जिया है।'
‘यह अभी खत्म नहीं हुआ है।’
छह दिनों में ऐसा हो सकता है। आधी रात हो चुकी है।
सिन्बाद ने दांत पीस लिए। अगर प्रोटियस नहीं आया तो उसका समय व्यर्थ
ही बर्बाद हो रहा था। 'अगर प्रेसा किसी भी तरह से सही है, तो वह यहीं होगा।
और अगर वह नहीं है, तो हमारे पास कोई विकल्प नहीं है।' वह एक पल के लिए रुका।
अचानक उसके मन में एक विचार आया। उसने घड़ा खोला और उसे नीचे किया, जिससे शराब पानी पर गिर गई।
समुद्र में हलचल मचने लगी। लहरों का आकार और शक्ति बढ़ती गई।
‘अरे, वह गुस्सा हो रहा है।’ सिंदबाद मन ही मन मुस्कुराया। ‘अगर आप नहीं आए, भगवान प्रोटियस, तो मैं सब कुछ पानी में बहा दूंगा। सब कुछ बर्बाद हो जाएगा,’ उसने जोर से कहा।
‘क्या यह कुछ ज़्यादा ही बेतुका नहीं है?’ हुसैन ने अपने हाथों से नाव
को स्थिर करने की कोशिश करते हुए पूछा। ‘मेरा मतलब है, वह जल देवता हैं और आप उन्हें पानी में शराब पिला रहे हैं... तो एक तरह से, क्या वह शराब नहीं पी रहे हैं? फिर आप इसे कैसे बर्बाद कर रहे हैं?’
‘वह एक देवता हैं। वह पानी नहीं हैं, हुसैन। मैं वास्तव में तकनीकी बातों में नहीं पड़ना चाहता...’ सिंदबाद चुप हो गया।
पानी ज़ोर से कांपने लगा, गर्जना करने लगा और झाग उठने लगा, और बीच में एक भंवर बन गया जिसने छोटी सी सरकंडे की नाव और उसमें बैठे लोगों को

झकझोर दिया। फिर गहरे समुद्र से दो विशाल सिंहासन निकले, पानी उछालते हुए और सिंदबाद और हुसैन को भिगोते हुए। अपना चेहरा पोंछते हुए सिंदबाद ने देखा कि सिंहासन पारदर्शी था, शुद्ध नीले पानी से बना था, जिस पर सफेद दाढ़ी और अजीबोगरीब हरे बालों वाला एक बूढ़ा आदमी बैठा था, जिसने केवल एक चमकीली नीली धोती पहनी हुई थी। उसके बगल में, एक और चमकदार नीले सिंहासन पर सुनहरे बालों वाली सांवली त्वचा की एक महिला बैठी थी, जिसने सफेद गाउन पहना हुआ था और गले और बाजू पर समुद्री शैवाल के आभूषण थे।
‘पहली बात तो ये है कि’ बूढ़े आदमी ने गुस्से में कहा, ‘ये शराब पानी को खराब कर रही है। दूसरी बात... मुझे दे दो।’
नाव के ठीक बगल में पानी से बना एक समुद्री घोड़ा प्रकट हुआ और उसने अपना सिर आगे बढ़ाया। सिंदबाद ने घड़ा अपने सिर पर रखा और समुद्री घोड़ा कुछ मीटर चलकर सिंहासन तक पहुंचा और उसे प्रोटियस को सौंप दिया, जिसने तुरंत घड़ा पीना शुरू कर दिया। उसके बगल में बैठी महिला ने तेवर चढ़ा लिए। ‘क्या?’ प्रोटियस ने बच्चे की तरह विरोध किया। ‘मैं इसे सालों बाद पी
रहा हूँ।’
'अगर आप एक सप्ताह को युग कहते हैं, तो सचमुच आपकी कोई सीमा नहीं है और
आप यह नहीं समझते कि समय कैसे काम करता है,' महिला ने गुस्से से कहा।
'बस एक घूंट, मेरी जान, बस एक छोटी सी घूंट।'
'आपकी पंसद।'
प्रोटियस ने अपनी नाक फुलाते हुए जार समुद्री घोड़े को वापस दे दिया,
जिस पर समुद्री घोड़े ने घरघराहट की आवाज निकाली। प्रोटियस ने उसे आँख मारी और धीरे से इशारा किया कि जार को कहीं गुप्त रूप से रख दे ताकि वह बाद में उसे पी सके। समुद्री घोड़े ने अपने पंख हिलाए और जार को पानी के अंदर ले गया।
उस स्त्री ने सिंदबाद और हुसैन की ओर मुड़कर कहा, “तुमने उसे क्यों बुलाया और उसके साथ यह घिनौना काम क्यों किया? वह तो स्वास्थ्य लाभ के दौर से गुजर रहा है। तुमने ऐसा क्यों किया? हम आखिरकार ग्रीक द्वीपों को इस भयानक स्थिति से दूर रहने और फारस की खाड़ी में एक अच्छी छुट्टी का आनंद लेने के लिए छोड़कर आए थे, और यहाँ तुम्हारा स्वागत तुम दोनों नासमझों ने किया। मैं इसके लिए तुम्हारे सिर डुबो दूंगी!” उसने व्यंग्य किया और उसकी नीली आँखें चमक उठीं।

प्रोटियस ने आत्मसमर्पण करते हुए अपना सिर पटका। 'मेरे शिष्टाचार कहाँ गए? सज्जनों, मेरी पत्नी, प्सामथे से मिलिए।'
सिंदबाद असमंजस में था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, लेकिन शब्दों की तलाश में उसने गलत बात कह दी: 'क्या तुम्हारी पत्नी है? जब हम आखिरी बार मिले थे तब तुम्हारी पत्नी नहीं थी।'
‘अरे? हम पहले मिल चुके हैं?’ प्रोटियस ने अपने हरे बालों को खुजलाया।
‘यह अजीब है। मुझे याद नहीं आ रहा कि तुम कौन हो। लेकिन अगर तुम्हें बढ़िया बीयर के प्रति मेरे आकर्षण के बारे में पता होता, तो मुझे यकीन है कि हम किसी अच्छे मौके पर मिले होते।’ वह हँसा और उसके चारों ओर पानी उछल पड़ा। ‘तुम कौन हो? मुझे याद दिलाओ।’
‘मैं...’ सिन्बाद कुछ समझाना चाहता था, लेकिन उसे एहसास हुआ कि बेहतर यही होगा कि प्रोटियस को वह बच्चा याद न आए जिसने पहली मुलाकात में उसे मात दी थी और धोखा दिया था। ‘उम्म... ये तो लंबी कहानी है। शायद कभी और। हमें आपकी मदद चाहिए, लॉर्ड प्रोटियस, इसीलिए हमने आपको बुलाया है।’
‘दो नश्वर प्राणी एक देवता से मदद मांग रहे हैं?’ प्रोटियस ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। ‘अब कुछ नियम-कानून हैं, क्या तुम नहीं जानते? मैं तुम्हारी मदद तब तक नहीं कर सकता जब तक तुम मुझे चुनौती न दो, चाहे शारीरिक रूप से हो या मानसिक रूप से।’
मतलब, अगर तुम चाहो तो हम यहीं, अभी द्वंद्वयुद्ध कर सकते हैं।’ उसने उंगलियां चटकाईं और आसमान में बिजली कड़की। लहरों को चीरते हुए उसके हाथ में एक कांटा आया—वह खंजर के आकार का था।
हुसैन और सिंदबाद ने अपनी हंसी छिपा ली। उन्हें लगा था कि हथियार बड़ा होगा।
"हाँ, हाँ, बड़ा जलवान व्यक्ति लड़ना चाहता है और अपने "युवा खून" का प्रदर्शन करना चाहता है," प्सामथे ने उपहास किया।
प्रोटियस ने विरोध करते हुए कहा, 'मेरी प्रियतमा, तुम हमेशा मेरे साथ इतनी बदतमीजी क्यों करती हो?'
‘क्योंकि मैं चिढ़ गई हूँ,’ उसने कहा और अपनी बाहें मोड़ लीं।
मुझे खेद है। आप मुझसे जो भी करने को कहेंगे, मैं वह करूंगा।
‘खैर, तुम तो हमेशा यही कहते हो। मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता।’

प्रोटियस असहाय लग रहा था। उसने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे सिंदबाद की ओर घबराकर मुस्कुराते हुए कहा, 'हम हमेशा ऐसे ही झगड़ते रहते हैं। खैर, तुम क्या जानना चाहते हो?'
‘सफीना उमैर नाम की एक लड़की के बारे में,’ सिन्बाद ने कहा।
मुझे इस लड़की के बारे में कोई जानकारी नहीं है।
वह नेफिलिमों के साथ आई थी।
‘अरे, वो बिल्ली जैसी आँखों वाली औरत!’ प्सामथे अचानक उठकर बैठ गई।
‘जहाँ तक मुझे याद है, तुमने उसे “दिलचस्प” कहा था,’ उसने गुस्से से कहा।
‘पहली बात तो यह कि वह मुझसे 800 साल छोटी थी और मैं लंबे समय बाद किसी इंसान से मिला था। दूसरी बात, मुझे वह पसंद नहीं आई। मुझे उसका औरा अस्वाभाविक लगा। इसीलिए मैंने उसे “दिलचस्प” कहा,’ प्रोटियस ने समझाया। ‘साथ ही, उसके साथ नेफिलिम भी थे... मुझे वह डरावना समूह बिल्कुल पसंद नहीं है।’
सिंदबाद ने सोचा, "ये सचमुच डरावने हैं," उसे तीन साल पहले का वो समय याद आया जब उसने खुद उनके अप्रत्याशित व्यवहार का अनुभव किया था। उसने उन विचारों को झटक दिया और समुद्र देवता और उनकी पत्नी से पूछा, "तो आपको पता है कि वह किस दिशा में गई?"
प्रोटियस ने उत्साह से कहा, 'ओह, बिल्कुल। और यह भी कि वह कैसी है।'
‘मुझे बताओ,’ सिंदबाद ने उत्सुकता से कहा।
‘अच्छा, बात तो तब की है...’ प्रोटियस ने बोलना शुरू ही किया था कि तभी प्सामथे ने चिंता से उसके हाथ पर थपथपाया। ‘अरे हाँ! मैं तुम्हें बता नहीं सकता। दुर्भाग्य से, पिता ने मनुष्यों की मदद करने पर एक शर्त रखी है— तुम्हें मुझे चुनौती देनी होगी। लेकिन रुको, क्या मैंने तुम्हें यह पहले ही नहीं बताया है? फिर तुमने मुझसे उस लड़की के बारे में बताने को क्यों कहा? अरे, तुम मुझे धोखा दे रहे थे!’ उसकी आँखों में क्रोध की आग भड़क उठी। उसने अपनी उंगलियाँ चटकाईं; हुसैन ने खुद को संभाला और आँखें बंद कर लीं, लेकिन... कुछ नहीं हुआ।
नाव के चारों ओर केवल बुलबुले फूट रहे थे। हुसैन हँसने ही वाला था कि उसने देखा कि नाव के नीचे से रेंगने वाली तंतु निकल रही हैं और सरकंडे की नाव को जकड़ रही हैं, जिससे नाव चटकने और चरमराने लगी।

‘एक ऑक्टोपस मेरा एहसानमंद है,’ प्रोटियस ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘अब क्या तुम मुझे चुनौती दोगे या मैं तुम्हें डूबने दूँ?’
‘ठीक है, ठीक है। मैं तुम्हें मानसिक रूप से चुनौती दूंगा,’ सिंदबाद
ने आह भरी।
‘ओह!’ प्रोटियस ने उत्साह से ताली बजाई। ‘क्यों न हम कुछ पहेलियाँ हल करें? मैं हमेशा से पहेलियों में अच्छा रहा हूँ।’
‘ठीक है। जो भी पूछो,’ सिंदबाद ने कहा, और हुसैन के साथ नाव पर संतुलन बनाए रखने की कोशिश करने लगा। ऑक्टोपस नाव को स्थिर रखने में कोई खास मदद नहीं कर रहा था।
‘नहीं,’ प्रोटियस ने सोच-विचार करते हुए कहा। ‘चलो इसे अलग तरीके से करते हैं। क्यों न तुम मुझसे पहेलियाँ पूछो और मैं उनका उत्तर दूँ? यदि मैं उत्तर नहीं दे पाऊँगा, तो मैं तुम्हें उस लड़की के बारे में जो कुछ भी जानता हूँ, वह बता दूँगा। लेकिन यदि मैं उत्तर दे पाऊँगा, तो तुम मर जाओगे।’
‘लेकिन... आप हमें यूं ही नहीं मार सकते?’ हुसैन ने हिचकिचाते हुए विरोध किया।
प्रोटियस ने अपनी हरी भौहें उठाईं। ‘बेशक, मैं कर सकता हूँ! मैं एक देवता हूँ। चुनौती में, अगर आप जीतते हैं, तो आपको लाभ मिलता है। अगर आप हारते हैं, तो आप मर जाते हैं।’ हुसैन ने घुरघुराते हुए कायरतापूर्ण भाव से बैठ गया। सिंदबाद ने सोचते हुए अपनी बाहें मोड़ लीं। ‘मुझे कितने मौके मिलेंगे?’
‘तीन,’ प्रोटियस ने प्सामथे की ओर मुड़ते हुए उत्तर दिया। ‘क्या यह मजेदार नहीं है, प्रिये?’
'अगर उन्हें ऑक्टोपस खा जाए तो बेहतर होगा,' प्सामथे ने अपनी बांह पर
लगी समुद्री शैवाल से खेलते हुए सामान्य भाव से उत्तर दिया।
‘यह तो बढ़िया होगा,’ सिंदबाद ने झुंझलाहट में आह भरी। ‘ठीक है। मेरे
पास एक सवाल है। और यह थोड़ा मुश्किल है। सुनो: ऐसी कौन सी चीज है जिसके पंख तो हैं लेकिन वह उड़ नहीं सकती?’
प्रोटियस इस पर विचार करने लगा। 'यह मुर्गी हो सकती है, लेकिन मुर्गियां थोड़ी दूर तक उड़ सकती हैं... तो... इसलिए मैं कहूंगा कि यह शुतुरमुर्ग है।'

सिंदबाद ने धीमी आवाज़ में कहा, 'सही।'
ऑक्टोपस ने नाव को जकड़ लिया और उसकी एक तंतु नीचे से बाहर निकल आई; कोने में एक छेद बन गया, जिससे पानी अंदर रिसने लगा।
सिंदबाद ने नाव को संतुलित करने के लिए अपने पैर फैलाए, जबकि हुसैन ने अपनी हथेलियों से पानी को बाहर फेंकने की पुरजोर कोशिश की।
'तुम्हारे पास ज्यादा समय नहीं है,' प्रोटियस ने अपने चेहरे पर बनावटी मुस्कान के साथ कहा।
‘ठीक है। ठीक है। किसका मुँह बड़ा है पर बोल नहीं सकता?’ ‘अजार!’ प्रोटियस चिल्लाया, और एक छोटी सी लहर उठी। नाव और भी ज़्यादा टूट गई, और उसके दो हिस्से पानी में गिर गए। अष्टकोण के तंतु गहरे पानी से निकले और सिंदबाद को कमर से और हुसैन को टांगों से पकड़ लिया, एक को उल्टा लटका दिया और दूसरे को हवा में लटका दिया। और सबसे बुरी बात यह थी कि सिंदबाद अष्टकोण को देख भी नहीं पा रहा था। वह बस हरे-बैंगनी रंग के तंतु देख पा रहा था जो उन्हें इधर-उधर घुमा रहे थे, और हुसैन की चीखें गूंज रही थीं क्योंकि वह इधर-उधर झूल रहा था।
'ठीक है... ठीक है, ध्यान केंद्रित करो। आखिरी मौका है,' सिंदबाद ने तब
कहा जब उसे सांस लेने में दिक्कत महसूस हुई।
हुसैन ने तीखी आवाज में कहा, 'सिंदबाद, तुमसे मिलकर अच्छा लगा। तुम एक सच्चे दोस्त हो, यह बात हमेशा याद रखना। लेकिन मुझे लगता है कि हमारा अंत एक ऐसे देवता के हाथों होने वाला है जिसे शराब से बेहद प्यार है और वैवाहिक समस्याएं हैं।'
‘चुप रहो।’ सिंदबाद ने अपनी आँखें बंद कर लीं और कुछ सोचने की कोशिश करने लगा। पलक झपकते ही उसने आँखें खोलीं और मुस्कुराया। ‘किसकी पत्नी इतनी खूबसूरत है कि देखने में भी बहुत अच्छी लगती है, लेकिन उसे शराब पीना बहुत पसंद है और वह अपनी शराब नहीं छोड़ सकती?’
जैसे ही प्रोटियस जवाब देने के लिए अपना मुंह खोलने ही वाला था, प्सामथे ने उसे घूरकर देखा। प्रोटियस रुक गया। उसकी आंखें चौड़ी हो गईं और उसने घबराकर एक गहरी सांस ली।
‘नहीं, बोलो,’ प्सामथे ने फटकार लगाई। ‘कहो कि तुम शराब पीना नहीं छोड़ सकते।’
बोलो। हिम्मत है तो बोलो, हे दयनीय समुद्री शैवाल के देवता!

प्रोटियस ने अपना सिर झुकाया और सिंदबाद की ओर देखा। 'बड़ी चतुराई से चाल चली, मनुष्य। तुमने मुझे फंसा लिया।' उसने चुटकी बजाई और ऑक्टोपस ने सिंदबाद और हुसैन को छोड़ दिया, जो धड़ाम से नाव पर गिर पड़े। ऑक्टोपस आँखों से ओझल हो गया और तुरंत ही पानी से बने दो समुद्री घोड़े प्रकट हुए और मनुष्यों की ओर बढ़े। प्रोटियस ने इशारा करते हुए कहा, 'आराम से आइए।' उन्होंने सिंदबाद और हुसैन को उनकी जगह से ज़ोर से धक्का देकर हटा दिया। दोनों के पास समुद्री घोड़ों पर बैठने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, जिससे सिंदबाद को बहुत अजीब लगा क्योंकि समुद्री घोड़ा पानी का बना था और फिर भी इतना ठोस था। उसने यूनानी देवता की ओर देखा। 'तो?'
‘पानी के नीचे हुई कुछ बातों से मुझे इतना ही पता चला कि सफ़ीना उमैर पूरब की ओर रवाना हो गई हैं। साथ ही, उनके औरा से अजीब सी गंध आ रही थी, जैसे सल्फर की। क्या यह जानकारी आपके लिए पर्याप्त है?’
यह मौजूद तो था, लेकिन वह इसका इस्तेमाल कैसे करेगा? सिंदबाद ने खुद
से पूछा।
‘अब तुम जाओ!’ उसने समुद्री घोड़ों को हाथ हिलाकर इशारा किया, जो पीछे मुड़े और तेजी से किनारे की ओर चल पड़े।
सिंदबाद के बाल पीछे की ओर लहराए और उसने अपने बगल में भयभीत हुसैन को देखा, जो अपने समुद्री घोड़े की पानी से भीगी त्वचा को कसकर पकड़े हुए था। सिंदबाद ने आगे देखा; झागदार लहरें पहले से कहीं अधिक शांत थीं। वह उनके सरपट दौड़ने की गति को महसूस कर सकता था, नमकीन हवा उसके चेहरे और बालों को छू रही थी। यह सुखद था।
जैसे ही वे किनारे पर पहुँचे, समुद्री घोड़ों ने गूंजती हुई हिनहिनाहट की आवाज़ निकाली। सिंदबाद और हुसैन कूद पड़े। सिंदबाद ने उन जानवरों को हाथ हिलाकर अभिवादन किया, जो पल भर में समुद्र में विलीन हो गए। ‘वो तो...’ हुसैन ने लंबी सांस छोड़ते हुए कहा, ‘कुछ अलग ही था।’
मुझे निराशा हुई। मुझे उम्मीद थी कि आप चौंक जाएंगे।
हुसैन ने शांत भाव से जवाब दिया, 'अब मुझे झटकों का कोई असर नहीं होता।' सिंदबाद मुस्कुराया, उसे याद आया कि कुछ मिनट पहले हुसैन कितना डरा हुआ था।

सिंदबाद को एहसास हुआ कि वे बसरा के मुख्य बंदरगाह से बहुत दूर आ गए हैं। लेकिन समस्या यह नहीं थी। असली समस्या यह थी कि वह अपनी इस नई जानकारी का क्या करेगा?
‘प्रेसा ने कहा कि प्रोटियस हमें जो बताएगा उससे हमें सफीना का पता लगाने में मदद मिलेगी,’ सिन्बाद ने कहा। ‘लेकिन उसने उसके औरा के बारे में बात की।’
जब तक हम उसकी आभा को सूंघकर उसके पदचिह्नों का अनुसरण नहीं कर सकते,
तब तक हम कुछ नहीं कर सकते—'
सिंदबाद की आंखें चौड़ी हो गईं और उसने हुसैन के माथे पर चुंबन किया। 'धन्यवाद! मुझे समझ आ गया। मुझे पता है क्या करना है।'
‘क्या?’ हुसैन ने हैरानी से भौंहें चढ़ाईं।
'हमें किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना होगा जो आभाओं को सूंघ सके। ऐसा करने की क्षमता को क्लेयरएलियंस कहा जाता है और देवताओं के अलावा केवल एक ही जाति के पास यह क्षमता होती है।'
हुसैन ने पूछा, 'प्रोटियस जैसा कोई दूसरा देवता क्यों नहीं?'
“ज़रूर, क्योंकि अभी-अभी जिनसे हम मिले, उनके साथ हमारा बहुत अच्छा
समय बीता। नहीं। कोई देवता हमारे साथ काम नहीं करेगा। उनका एक सख्त नियम है कि वे इंसानों के मामलों से दूर रहें। लेकिन मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो शायद हमारी मदद कर सके,” सिंदबाद ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मुझे यह मुस्कान पसंद नहीं आई।’ हुसैन ने अपनी नाक फुलाते हुए पूछा,
‘यह कौन है?’ ‘इसका नाम अशरफिया है। यह मेरी पुरानी साथी है,’ सिन्बाद ने कहा।
हुसैन ने जवाब दिया, 'यह तो बिल्कुल भी बुरा नहीं लग रहा है।'
सिंदबाद मुस्कुराया। 'खैर, वह एक पिशाच है।'

पंद्रह

चार वर्ष पहले
उसने बिल्ली जैसी आंखों वाली लड़की का पीछा किया।
सिंदबाद राख से भरे जंगल में दौड़ते हुए तेजी से धड़कने लगा। वह अपने स्वामी को पुकारना चाहता था, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, लड़की वहां से भाग गई।
लेकिन वह इस अवसर को गंवाना नहीं चाहता था। उसके पास उस शैतान की बच्ची को भेदने के लिए खंजर था और एक लकड़ी का डंडा भी था, जो राक्षसों की सबसे बड़ी कमजोरी होती थी। अगर मैं ऐसा करूँ, अगर मैं उस लड़की को मार डालूँ, तो मास्टर रीस मुझ पर गर्व करेंगे।
जैसे ही वह जंगल के बीचोंबीच पहुँचा, जहाँ शाखाओं पर उल्लुओं का एक समूह बैठा तेजी से पलकें झपका रहा था, उसने उसे पुकारा, 'सब ठीक है। मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। मैं तुम्हारा नाम जानता हूँ। सफीना।' उसे कहीं भी बिल्ली की आंखें दिखाई नहीं दे रही थीं और उसे यह भी पक्का नहीं पता था कि वह यहाँ है या नहीं। वह थोड़ा और आगे बढ़ा और झाड़ियों में जीवन के किसी भी संकेत की तलाश करने लगा।
सूरज की तेज़ गर्मी पड़ रही थी और राख जैसे पेड़ों की घनी छाया न होने
के कारण प्रकाश की किरणें सिंदबाद पर पड़ रही थीं। उसने नीचे देखा और अपनी परछाई देखी। और उसमें उसे कुछ गज की दूरी पर एक और परछाई दिखाई दी, जो एक पेड़ की शाखा की परछाई से मिल गई थी।
वह पेड़ पर है। मुझे शांत रहने का नाटक करना होगा।
‘सफीना, मैं तुम्हारा दोस्त हूँ,’ सिन्बाद ने मास्टर रीस की नकल करने
की कोशिश करते हुए कहा—शांत और संयमित—हालांकि उसकी गर्दन के पीछे रोंगटे खड़े हो गए थे। ‘मैं बस तुमसे बात करना चाहता हूँ।’
उसने तुरंत ऊपर नहीं देखा क्योंकि ऐसा करने से वह चौंक जाती।

लेकिन वह धीरे से मुड़ा और एक मनमोहक मुस्कान बिखेरी।
वह बंदर की तरह एक ऊँची शाखा पर बैठी थी। उसकी बिल्ली जैसी आँखें इतनी तीखी थीं कि सिंदबाद ने उसके बाकी चेहरे-मोहरे पर ध्यान ही नहीं दिया।
हालांकि, उसने एक साफ-सुथरी, फूलों वाली पोशाक पहनी हुई थी।
उसने उसे संदेह भरी नजरों से देखा।
‘नमस्कार,’ उसने कहा। ‘मैं सिंदबाद हूँ।’
उसने कोई जवाब नहीं दिया। और न ही हिली-डुली।
क्या यह एक अच्छा संकेत है?
‘क्या तुम्हें... उम...’ सिंदबाद ने पूछा और बैग में तलाशी लेने लगा, लेकिन वह घबरा गई और उस पर फुफकारने लगी। ‘नहीं... नहीं... मैं तुम्हें चोट पहुँचाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ,’ सिंदबाद ने एक किताब निकालते हुए कहा। ‘क्या तुम्हें पढ़ना पसंद है?’
उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। 'पढ़ो,' उसने कहा।
‘हाँ। यह एक किताब है जिसमें अक्षरों से बने शब्द होते हैं...’ सिंदबाद
को समझ नहीं आ रहा था कि वह उसे किताब का मतलब कैसे समझाए क्योंकि उसे पढ़ने का शौक था। ‘क्या तुम पढ़ती हो?’
उसने सिर हिलाया।
'तुम क्या पढ़ते हो?'
‘छी!’ उसने मुंह बनाया।
'बुरी बात है, है ना?'
उसने फिर सिर हिलाया।
‘आपको पढ़ने के लिए कौन मजबूर करता है?’
उसकी आँखों में चमक आ गई। सिंदबाद समझ गया कि वह कुछ छुपा रही है। लेकिन वह इस बारे में और जानने की कोशिश नहीं करना चाहता था, वरना वह दुखी होकर भाग जाती। 'तुम्हें यह किताब चाहिए? यह परियों की कहानियों के बारे में है। एक महल में रहने वाली एक खूबसूरत राजकुमारी के बारे में। और एक पागल राजकुमार के बारे में जो उससे छुटकारा पाना चाहता है लेकिन प्यार के कारण ऐसा नहीं कर पाता। वह जानता है कि वह उसके लिए खतरा है, लेकिन... आह, बाकी तो तुम्हें खुद पढ़ना चाहिए।'
लड़की ने पलकें झपकाईं और पल भर में वह डाल से उल्टा लटक गई, सिंदबाद
के स्तर तक आ गई और अपनी बाहें फैला दीं।

सिन्बाद थोड़ा चौंक गया, लेकिन उसने सफीना को किताब दे दी। सफीना ने खुद को संभाला और उसे पढ़ना शुरू कर दिया, मानो आँखों से शब्दों को तेज़ी से पढ़ रही हो। एक पल में वह खिलखिलाती और अगले ही पल उसके चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान आ जाती।
सिंदबाद उस लड़की को देखता रहा। वह समझ नहीं पा रहा था कि इतनी मासूम
और पवित्र इंसान शैतान के अंग से कैसे बनी हो सकती है। उसे यह बात समझ नहीं आ रही थी। वह कुछ देर तक उसके बारे में सोचता रहा, तभी हवाएं तेज चलने लगीं और आसमान में बादल छा गए। तभी चिड़िया की आवाज सुनाई दी: चहचहाहट!
‘जाओ,’ उसने ऊपर देखते हुए कहा। ‘जाओ।’ वह चिंतित थी।
‘ठीक है, ठीक है।’ सिंदबाद ने अपने पैर हिलाए और जल्दी से पूछा, ‘क्या तुम मुझसे दोबारा मिलोगे?’
उसने सिर हिलाया।
तभी वह पक्षी प्रकट हुआ।
सामने मंडराते हुए, उसने इतनी ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाए कि पेड़ अपनी जड़ों से उखड़ने लगे। सिंदबाद तेज़ हवा से बचने के लिए एक झाड़ी के पीछे छिप गया, क्योंकि वह विशाल पक्षी उसके ऊपर से उड़ता हुआ अपने हाथी जैसे पंजों से उस पर हमला करने की कोशिश कर रहा था।
सिंदबाद बाल-बाल बचता हुआ जमीन पर लोट पड़ा। पक्षी बहुत विशालकाय था
और वह उससे छिपने की पूरी कोशिश करते हुए हांफ रहा था।
उसने लड़की को यह कहते हुए सुना, 'कोई खतरा नहीं! कोई खतरा नहीं! दोस्त।' एक पल के लिए सिंदबाद को लगा कि वह उससे कह रही है, लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह यह बात उस विशालकाय पक्षी से कह रही थी।
हालांकि ऐसा लग रहा था कि पक्षी को उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ क्योंकि उसने एक बार फिर हमला किया, अपने पंजों से सिंदबाद को पकड़ने की कोशिश की और इस दौरान जोर-जोर से चीखने लगा...
और यह बहुत करीबी मामला था।
सिंदबाद को अपनी ओर आते हुए तेज धार वाले पंजे दिखाई दिए। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।
कुछ सेकंड बीत गए। उसे न तो चोट लगी थी और न ही उसे उठाया गया था...

जैसे ही उसने अपनी आँखें खोलीं, उसने देखा कि मास्टर रीस पक्षी और उसके बीच खड़े हैं, और उनकी तलवार पक्षी के पंजों को रोकते हुए एक तीखा वार कर रही है। पक्षी ज़ोर से कराहते हुए कहीं उड़ गया।
वह कब आया?
‘क्या तुम ठीक हो, बेटा?’ उसने पूछा।
सिन्बाद ने सिर हिलाया और खड़ा हो गया, क्योंकि उसने देखा कि पक्षी अभी भी मंडरा रहा था—अपने अगले हमले की तैयारी में चारों ओर ध्यान से देख रहा था। दूसरे कोने में, उसने चुड़ैल लियोना को देखा, जिसकी उंगलियों से ऊर्जा की चिंगारियां निकल रही थीं और वह उन्हें पक्षी की ओर निर्देशित कर रही थी, लेकिन पक्षी उनसे बच रहा था।
'नहीं!'
सिंदबाद ने एक चीख सुनी; यह सफीना की थी जो अभी भी पेड़ की चोटी पर थी
और भयभीत दिख रही थी।
‘ये वही है,’ रीस ने उत्साह से कहा। ‘मैं पक्षी को संभाल लूंगा। तुम लड़की को निशाना बनाओ। हल्की सी गंध छोड़ो। याद है ना?’
सिन्बाद ने सिर हिलाया। यह एक पीले रंग का पाउडर था जो एक गोले के अंदर बंद था, जिसे फेंकने पर विस्फोट होता और बेहोशी का आभास होता, जिससे व्यक्ति गिर पड़ता। सफीना पेड़ से नीचे उतरकर पक्षी तक पहुँचने की हड़बड़ी में जुटी थी। सिन्बाद समझ गया कि यही उसका मौका है। उसने गोला उठाया और सफीना की ओर दौड़ा।
इसी बीच, पक्षी रीस की ओर बढ़ा, जिसने अपनी तलवार से एक और वार किया और उसे डराकर भगा दिया। लियोना रीस के पास दौड़ी और उस जीव को भयंकर रूप से पकड़ लिया, जबकि रीस लगातार तलवार चलाकर पक्षी को निहत्था करने और डराने की कोशिश कर रहा था, लेकिन पक्षी पर इसका कोई असर नहीं हो रहा था।
गेंद हाथ में लिए सिंदबाद सफीना की ओर दौड़ा, लेकिन इससे सफीना डर गई
और उससे दूर भाग गई।
‘नहीं, रुको!’ सिंदबाद चिल्लाया, लेकिन उसने नहीं सुना।
उसने गेंद फेंकने का फैसला किया, उसका निशाना सफ़ीना पर था... और जैसे
ही उसने ऐसा किया... उसे पीठ पर एक ज़ोरदार झटका लगा जिससे वह ज़मीन पर औंधा गिर पड़ा। उसने हिलने-डुलने की कोशिश की, लेकिन उसकी ऊर्जा खत्म हो रही थी।
सब कुछ धुंधला और भारी लग रहा था। उसने ऊपर देखा, उसकी दृष्टि अब धुंधली हो

रही थी। सफ़ीना उस जीव की ओर दौड़ रही थी और इससे पहले कि वह कुछ समझ पाती, उस विशाल पक्षी ने उसे उठाकर उड़ा ले गया।
और यही आखिरी दृश्य था, इससे पहले कि वह अंधेरे में डूब जाए।

सोलह

आज
'हमें ओमान जाना होगा,' सिन्बाद ने नक्शे को समतल करते हुए अपने दोस्तों, प्रेसा और हुसैन से कहा। 'वहाँ सोहार नाम का एक बंदरगाह शहर है। बहुत सारे रोमानियाई पिशाच वहाँ चले गए हैं क्योंकि वहाँ रेगिस्तान हैं और उनके लिए छिपने की आदर्श जगह है। उन्होंने स्थानीय लोगों को अपने इशारों पर चलने का निर्देश भी दिया है और उनमें से एक पिशाच अशरफिया थी।'
‘पिशाच?’ प्रेसा ने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं। ‘ओह, बहुत बुरा। कहानियों में इनके बारे में सुना है। खून चूसने वाले।’
‘हाँ, वैसे तो वे खून चूसने वाले नहीं हैं,’ सिन्बाद ने कहा। ‘लेकिन यह बात हम बाद में करेंगे। अभी ओमान जाने के लिए हमें एक जहाज चाहिए। और जैसा कि आप दोनों जानते हैं, मेरे पास जहाज किराए पर देने के लिए बहुत पैसा है।’ हुसैन ने कहा, 'मैं भी।'
‘मेरे पास नहीं है!’ प्रेसा ने हैरानी से कहा। ‘मैं तुम लड़कों जितना अमीर नहीं हूँ।’
सिन्बाद ने अपना हाथ माथे पर मारा। 'हम व्यंग्य कर रहे थे, प्रेसा। और वैसे भी, अगर तुम्हारे पास पैसे भी होते तो भी तुम कुछ नहीं देते, क्योंकि तुम जा ही नहीं रहे हो।'
‘क्या?’ प्रेसा ने अपने दोनों हाथ कमर पर रखे और भौंहें चढ़ा लीं। ‘तुम
उस इकलौते व्यक्ति को नहीं ला रहे जो तुम्हारी मदद कर सकता है और इस मूर्ख को अपने साथ ले जा रहे हो?’ उसने हुसैन की ओर इशारा किया।
अरे! मैं बेवकूफ नहीं हूँ। मैं उसकी बहुत मदद करता हूँ।
‘कैसे?’ प्रेसा ने कर्कश स्वर में पूछा।
मैं मीठी-मीठी बातें करने में माहिर हूँ।
‘अपनी मीठी बातों से इस स्थिति से बाहर निकलो, लड़के।’

सिन्बाद उन दोनों के बीच आ गया। 'ठीक है, शांत हो जाओ, तुम दोनों। प्रेसा, हुसैन ने यहाँ आने के बाद से मेरी बहुत मदद की है। वह पहला व्यक्ति है जिसने मुझे मेरे स्वभाव से जाना और यह सुनिश्चित किया कि मैं यहाँ जीवित रह सकूँ। उसने मुझे अपने काम से पैसे कमाना सिखाया। हुसैन भविष्य नहीं देख सकता, लेकिन वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिस पर मुझे भरोसा है, और यह एक ऐसी शक्ति है जो मेरे जीवन में बहुत कम लोगों के पास है।'
‘और तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?’ प्रेसा ने घूरते हुए पूछा।
‘तुम तेरह साल के हो। और तुम... आवेगशील हो।’
प्रेसा ने दांत पीसते हुए चीनी भाषा में अपशब्द कहे, ‘बेन दान!’ ‘तुम दोनों के विपरीत, मैं सचमुच इस दुनिया को बचाना चाहती हूँ क्योंकि...’ वह बीच वाक्य में ही रुक गई। ‘बस, मैं चाहती हूँ, ठीक है?’
सिंदबाद ने उसकी ओर देखा। उसने उसकी आवाज़ में गंभीरता पहचान ली। वह नज़रें फेरे हुए थी; ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ छुपा रही हो। वह पूछना चाहता था, पर समय नहीं था। उसने शराबखाने की खिड़की से बाहर देखा और शाम के धुंधलके में कई लंबी परछाइयाँ दिखाई दीं। अंगूरों की गंध बहुत ही घिनौनी थी और उसने अपने साथियों से विचार-विमर्श करने के बाद कमरे से निकलने का फैसला किया। 'ठीक है, तुम किनारे तक हमारी मदद कर सकते हो।'
‘जो भी हो।’ उसने आंखें घुमाईं। ‘अब जहाज के लिए पैसे कैसे जुटाएंगे? कोई उपाय है?’
सिंदबाद ने हुसैन की ओर देखा, जो विचारों में डूबा हुआ लग रहा था, और कहा, 'मैं दूसरे लोक के प्राणियों को भगाने के लिए और अनुबंध मांग सकता हूँ, लेकिन इसमें समय लगेगा और जहाज के लिए हमें जो पैसा चाहिए, उसकी तुलना में बहुत कम पैसा मिलेगा। और सिर्फ जहाज ही नहीं, हमें एक दल की भी जरूरत है।' ‘हम तो बस बच्चे हैं, सिंदबाद। क्या जाफ़र हमारी मदद नहीं कर सकता?’ हुसैन ने कहा।
‘हुसैन, वो मौका तो हाथ से निकल गया। मैं उनसे जहाज मांग सकता था और वो हमें दे भी देते, लेकिन हमारे पास उनसे संपर्क करने का समय नहीं है। वो बगदाद वापस चले गए हैं।’
‘तो फिर उस गिल्ड मेंटर का क्या हुआ जिसे उन्होंने तुम्हारे लिए नियुक्त किया था? वह सेइड... इदरीस?’
‘अभी तक कोई संकेत नहीं मिला है।’ सिंदबाद ने कंधे उचका दिए।

‘यह ठीक नहीं चल रहा है,’ हुसैन ने आह भरी। ‘सबसे खराब स्थिति में, हम महमूद से इसके लिए पैसे मांग सकते हैं। जैसे कि कर्ज। हम उसे बताएंगे कि हम इस शराब को फारस की खाड़ी के द्वीपों में निर्यात करने की सोच रहे हैं। मैं काफी समय से ऐसा करने की योजना बना रहा हूँ... भविष्य में, अगर हम दुनिया को बचा लेते हैं।’
‘अच्छा विचार है।’ सिंदबाद मुस्कुराया। हालांकि समस्या यह थी कि महमूद हुसैन को पैसे नहीं देगा, क्योंकि वह कंजूस था।
जब वे सोच-विचार कर रहे थे, तभी उन्हें बाहर ज़ोरदार शोर सुनाई दिया। सिंदबाद, प्रेसा और हुसैन ने हैरानी भरी नज़रों से एक-दूसरे को देखा। सिंदबाद ने नक्शा पलटा और तीनों बाहर देखने चले गए।
जैसे ही सिंदबाद सराय के मुख्य हॉल में दाखिल हुआ, उसने देखा कि मेजें
और कुर्सियाँ इधर-उधर फेंकी जा रही हैं। महमूद दो हट्टे-कट्टे आदमियों से विनती कर रहा था। वे गंजे थे, उनके चेहरों पर टैटू बने थे और उनके दाँत लोहे के थे। बीच में एक आदमी गहरे लाल रंग का चोला और सोने की कमरबंद पहने खड़ा था। उसका चेहरा दुबला-पतला था और उस पर पतली घुमावदार मूंछें थीं। उसकी मौजूदगी से लग रहा था कि वह सरदार है। उसने महमूद से धीरे से कहा, 'तुम्हें हमारा बकाया चुकाना होगा, सूअर। हमने तुम्हें यह दुकान शुरू करने के लिए 3000 दिरहम उधार दिए थे और तुमने हमें पैसे नहीं लौटाए।'
तीन हजार दिरहम?
‘मैंने आपको पूरी रकम चुका दी है,’ महमूद सिसकते हुए और रोते हुए बोला।
‘ब्याज नहीं!’ उस आदमी ने चालाकी भरी मुस्कान बिखेरी। ‘मुझे ब्याज भी चाहिए, ठीक है? तुम्हारे पास सात घंटे हैं।’ उसने तस्करों जैसे दिखने वाले अपने पहरेदारों को इशारा किया और सब कुछ तहस-नहस छोड़कर अपने पीछे चलने को कहा।
महमूद अपने सबसे पास वाली कुर्सी पर बैठ गया और अपने भाग्य के बारे में सोचने लगा।
‘तो लगता है महमूद से कर्ज लेने का विचार कामयाब नहीं होगा?’ प्रेसा
ने मासूमियत से कहा। ‘अब क्या करें, लड़कों?’
सिंदबाद ने आह भरी और हुसैन की ओर देखा। 'वह कौन था?'

‘गंदा आदमी था वो!’ हुसैन ने गुस्से से कहा। ‘वो फ़ज़ीन था, बसरा में तस्करी के सारे धंधों का सरगना। वो झुग्गी-झोपड़ियों का मालिक भी है, गरीब इलाकों में रहने वालों की मदद करता है और अनाथों को कुली-सह-चोर बनाकर काम पर रखता है। वो व्यापारियों को पैसे देकर भी कमाई करता है। एक तरह से कहें तो वो कई तरह के अपराधों का सरगना था। हालांकि आजकल उसके आदमी मर रहे हैं और उसका धंधा ठप हो रहा है, इसलिए वो हताश है और महमूद जैसे छोटे-मोटे कर्जदारों से पैसे उधार ले रहा है... लेकिन,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा, ‘मुझे एक बात सूझी है क्योंकि मुझे अभी-अभी गलियों में सुनी हुई कोई बात याद आई, उसका एक राज़...’
‘कहीं हम उसे ब्लैकमेल तो नहीं करने वाले? या उसे धोखा तो नहीं देने वाले?’ सिंदबाद ने झुंझलाते हुए कहा। ‘क्योंकि मैं दोबारा जेल नहीं जाना चाहता, या इससे भी बुरा, उसके आदमियों के हाथों मारा जाना नहीं चाहता।’ ‘अच्छा...’ हुसैन ने विजयी मुस्कान के साथ कहा। ‘हम फ़ज़ीन के सामने एक प्रस्ताव रखने जा रहे हैं और मुझे पूरा यकीन है कि वह मना नहीं करेगा।’

सत्रह

चार वर्ष पहले
'तुमने उसे क्यों मारा?' मास्टर रीस की धीमी आवाज़ आई। लेकिन सिंदबाद उनकी आवाज़ में क्रोध महसूस कर सकता था।
‘मैंने उसे नहीं मारा,’ लियोना ने जवाब दिया। ‘वह बीच में आ गया था।’
मैं उस लड़की के पीछे पड़ा था।'
सिंदबाद को बस इतना ही सुनाई दिया। इसके बाद उसे याद आया कि किसी ने
उसे उठा लिया था और उसका मालिक लगातार चिंता से कुछ बुदबुदा रहा था।
जब उसने दोबारा आंखें खोलीं, तो उसने खुद को छावनी परिसर के उस कमरे में पाया। उसके सामने कमांडर कासिम और मास्टर रीस खड़े थे। रीस ने उसे कुछ पीने को दिया। 'तुम ठीक हो जाओगे, बेटा। मुझे तुम पर गर्व है। मैं तुम्हारी काबिलियत को उतना महत्व नहीं देता जितना देना चाहिए।'
‘क्या वह ठीक हो जाएगा?’ कासिम ने पूछा।
‘हां,’ रीस ने उत्तर दिया।
‘उसके साथ क्या हुआ?’
‘सांप का काटना,’ रीस ने झूठ बोला।
तुम झूठ क्यों बोलते हो? सिंदबाद पूछना चाहता था, लेकिन उसके होंठ पीले और सूखे थे, उसकी जीभ सुन्न थी।
उन्होंने आँखें मूँद लीं।
उसे समय बीतने का एहसास हुआ।
जब उसने दोबारा आँखें खोलीं, तो उसने देखा कि मास्टर रीस कमरे में कुछ दस्तावेज़ देख रहे हैं। सिंदबाद सीधा बैठ गया। उसे ऐसा लगा जैसे उसने अपने जीवन की सबसे अच्छी नींद ली हो। मास्टर रीस उसकी ओर मुड़े और बोले, 'आशा है तुमने आराम किया होगा, बेटा। जादू जानलेवा था। मुझे तुम्हें वापस लाना पड़ा... और अमृत से बने तेलों से तुम्हारा इलाज करना पड़ा।'

सिंदबाद ने आंखें मलते हुए सिर हिलाया। 'चुड़ैल को क्या हुआ? क्या उसने मुझे मारा? मैंने कुछ आवाज सुनी।'
उसने नज़रें फेर लीं। 'वह कहती है कि यह एक दुर्घटना थी।' उसने सिर हिलाया। 'तैयार हो जाओ। हमें जाना होगा।'
सिंदबाद ने आज्ञाकारी भाव से सिर हिलाया।
पूरा करने के लिए।

सिंदबाद और मास्टर रीस गैरीसन परिसर के अन्न भंडार की ओर चले।
सिन्बाद को इसका कोई अंदाजा नहीं था। लेकिन वैसे भी, मास्टर रीस ने कभी भी इसके बारे में विस्तार से नहीं बताया था।
बाहर एक गार्ड खड़ा था, जो रीस को देखते ही तुरंत सीधा खड़ा हो गया।
'मेरे कुछ सवाल हैं,' रीस ने कहा।
सुबह का समय था और कोई आवाज़ नहीं थी, यहाँ तक कि पक्षियों की चहचहाहट
भी नहीं। जीवन चलता रहा, लेकिन सिंदबाद सफीना के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रहा था—कि वह कितनी नाज़ुक दिखती थी।
‘जी सर,’ सिपाही ने कहा।
‘क्या अनाज भंडार पर कोई हमला हुआ है?’ रीस ने पूछा।
‘हमला? नहीं महोदय।’
‘क्या खाने-पीने की कोई चीज खो गई है, या कोई सामान चोरी हो गया है?’
‘नहीं, महोदय। यह सब अच्छी तरह से रिकॉर्ड किया गया है और सुरक्षित रखा गया है,’ उसने गर्व से कहा।
‘अनाज भंडार की देखरेख कौन करता है?’ रीस ने पूछा।
‘कमांडर।’
‘ठीक है।’ रीस ने सिर हिलाते हुए सिंदबाद की ओर देखा। ‘चलो चलते हैं।’ गार्ड को धन्यवाद दिए बिना, रीस अपने प्रशिक्षु के साथ निकास द्वार
की ओर बढ़ गया।

‘गुरुजी, यह सब क्या था?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘तुम्हें पता चल जाएगा। लेकिन मैं तुम्हें एक बात का वादा कर सकता हूँ। यहाँ कुछ अजीब हो रहा है। और मैं चुड़ैल और पक्षी की बात नहीं कर रहा हूँ।’
सिन्बाद असमंजस में था। मास्टर रीस तो बहुत ही रहस्यमय थे। 'अब हम आगे कहाँ जाएँगे?'
‘राख के जंगल में,’ रीस ने जवाब दिया, उस जगह का जिक्र करते हुए जहां सिंदबाद घायल हो गया था और जहां पक्षी ने उन पर हमला किया था। ‘पिछली बार जब हम वहां थे, तो जब मैं तुम्हें बचाने आया था, तब मैंने कुछ देखा था।’ 'क्या?'
‘वूडू गुड़िया,’ उसने कहा। ‘और क्या आप जानते हैं कि इनका मतलब क्या है?’
सिंदबाद का खून जम गया। 'काला जादू।'

सिंदबाद और रीस ने चुड़ैल के घर का चक्कर लगाया और पीछे की ओर चले गए क्योंकि वे उसे सतर्क नहीं करना चाहते थे।
राख के रंग का जंगल पिछली बार से भी बदतर लग रहा था। विशालकाय जीव के पंजों का शिकार होने के बाद अधिकांश पेड़ टूट चुके थे। ज़मीन में कई दरारें थीं।
सिंदबाद अपने जादुई दर्पण की मदद से सुरागों की तलाश में चारों ओर देख रहा था। वह अपने स्वामी के पीछे-पीछे चलते हुए इलाके का जायजा ले रहा था।
‘यहाँ कुछ तो है,’ रीस ने रुकते हुए चिल्लाकर कहा।
सिन्बाद ने देखा कि उसका स्वामी किस ओर इशारा कर रहा था: वह एक जंगली सूअर का शव था जिसका सिर सुनियोजित तरीके से काटकर भयावह ढंग से प्रदर्शित

किया गया था। रीस घुटनों के बल बैठकर उसे सूंघने लगा, जबकि सिन्बाद पीछे हटकर अपनी नाक ढँकने लगा।
‘बलिदान,’ मास्टर रीस ने कहा, ‘लेकिन बहुत ही घटिया तरीके से किया गया।
किसी पेशेवर ने नहीं किया।’ उन्होंने सूअर का सिर घुमाया और कहा, ‘हम्म,’ तीखे घाव, लेकिन गहरे नहीं।
‘क्या आपको लगता है कि लियोना ने यह किया?’
‘नहीं,’ उसने कहा।
उन्होंने सूअर को वहीं छोड़ दिया और कुछ और मिलने की उम्मीद में आगे बढ़ गए... और तभी उन्होंने एक पेड़ से लटकती हुई कपड़े की गुड़िया देखीं।
उनके चेहरे पुराने बोरों से ढके हुए थे।
सिंदबाद को लगा जैसे उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा हो। उसने अपनी घबराहट
को काबू करने की कोशिश की और धीरे से कुछ बुदबुदाया।
मास्टर रीस एकदम शांत और संयमित लग रहे थे। वे गुड़ियों के पास गए और उनके पैरों की जाँच की, जहाँ उंगलियाँ होनी चाहिए थीं। वे बैंगनी रंग की थीं। साथ ही, उनके भूसे से भरे शरीर कुतरे हुए थे और उन पर पंजों के निशान थे।
‘आत्माओं को बुलाने की रस्म। पीड़ितों की आत्माओं को बुलाने के लिए इस्तेमाल की जाती थी। फिर उन्हें पक्षी उठा ले जाता था। लेकिन लियोना आत्मा को बुलाने की रस्म क्यों करेगी? यह... आह...’ और फिर उसे समझ आया। सिंदबाद ने अपनी सांसों को नियंत्रित करने की कोशिश करते हुए उस भयावह दृश्य से नज़रें फेर लीं। उसने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था और यह उसके लिए बेहद डरावना था।
‘लड़का?’ मास्टर रीस ने कहा। ‘यहाँ पक्षी से कहीं ज़्यादा खतरनाक कोई
है, और वह छोटी बच्ची नहीं है। वह व्यक्ति है जो उस बच्ची को काला जादू सिखा रहा है, और यह जंगल उसका प्रशिक्षण स्थल है। पक्षी द्वीपवासियों को मार नहीं रहा है या उन्हें खा नहीं रहा है—इसका इस्तेमाल पीड़ितों को यहाँ लाने के लिए एक धमकी के रूप में किया जा रहा है।’ उन्होंने घृणा से सिर हिलाते हुए घोषणा की, ‘लियोना ने झूठ बोला। वह उस बच्ची को जानती थी और यह कोई संयोग नहीं था कि उसने तुम पर जादू किया ताकि तुम उसे पकड़ न सको। और अब... हमें उसका सामना करना होगा और पता लगाना होगा कि वह किसके लिए काम कर रही है।’

अठारह

आज
वे बसरा के सबसे खतरनाक आदमी के सामने खड़े थे।
इस मुलाकात का इंतज़ाम करने के लिए हुसैन ने उस सरगना के लिए काम करने वाले चोरों से संपर्क साधा था, जिन्होंने उसे सरगना के सबसे भरोसेमंद अंगरक्षकों तक पहुँचाया। हुसैन ने उनसे कहा, 'मैं इस बंदरगाह शहर में उसके साम्राज्य को बचाने में उसकी मदद कर सकता हूँ।' सोलह साल के लड़के की बात सुनने में अंगरक्षकों को पहले तो संदेह हुआ, लेकिन हुसैन के बार-बार आग्रह और विनती करने पर वे मान गए। अगले दिन, सिंदबाद और हुसैन फ़ज़ीन मलिक के अड्डे पर पहुँचे।
विशाल हॉल की छत असामान्य रूप से ऊँची थी, दरवाज़े लकड़ी के बने थे जिन पर सुंदर नक्काशी की गई थी और फर्श पर भूसा बिखरा हुआ था। कमरे के हर कोने में तलवार और कटार लिए लंबे-लंबे, तगड़े आदमी खड़े थे। हालाँकि सिंदबाद को इंसानों से डर नहीं लगता था; वे दुनिया के सबसे सुंदर लोग थे, यहाँ तक कि वह गंजा, एक आँख वाला रक्षक भी, जो उन दो किशोरों को घूर रहा था। लालटेन जल रही थीं जिससे रोशनी मिल रही थी, कमरा काफी गर्म और हवा उमस भरी थी। दूर से घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
इस जगह में प्रवेश करने से पहले उनकी आंखों पर पट्टी बांध दी गई थी और
जब पट्टी हटाई गई, तो सिंदबाद ने फजीन मलिक को लगभग पचास सुरक्षा गार्डों से घिरे एक सिंहासन पर बैठे देखा।
‘अब तुम कहते हो कि तुम मेरा कारोबार बचा सकते हो। लेकिन मेरा कारोबार
तो एकदम सुचारू रूप से चल रहा है। फिर तुम झूठी अफवाहें क्यों फैला रहे हो? और मुझे एक वजह बताओ कि मैं तुम्हें, झूठे लोगों को, क्यों न सबक सिखाऊं,’ फ़ज़ीन ने पान चबाते हुए कहा।

हुसैन, जो मीठी बातों में माहिर था, मुस्कुराया। ‘महान लॉर्ड फ़ज़ीन,
हम दोनों जानते हैं कि यह सच नहीं है। आपका बाज़ार डूब रहा है। और आपके आदमियों पर बुरी नज़र रखी जा रही है। मैं शहर में घूम रहा था—मैं अक्सर ऐसा करता हूँ, लोगों से मिलता-जुलता हूँ और नए दोस्त बनाता हूँ—और तभी मेरी मुलाकात एक सीधे-सादे आदमी से हुई जो आपके यहाँ काम करता था। एक सट्टेबाज़, ऐसा कह सकते हैं। हमारी बातचीत शुरू हुई और जल्द ही हम दोस्त बन गए। बाद में उस आदमी ने मुझे बताया कि कोई अलौकिक शक्ति आपका और आपके कारोबार का पीछा कर रही है। आपके कई आदमियों की मानसिक स्थिति खराब हो गई है, कुछ तो भयानक मौत मर गए हैं। उसने कहा कि एक आदमी ने उस दुष्ट प्राणी को देखा है जो इसके पीछे है, क्या यह सच है?’ वहाँ खड़े सभी पहरेदार घबरा गए और उनका चेहरा पीला पड़ गया, मानो उन्होंने नरक के कुत्तों को देख लिया हो। हुसैन ने सिंदबाद की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मैं दूसरों के मामलों में दखल नहीं देता, और जब तक मेरा साथी यहाँ है... और कोई हमारे पास आकर हमारी सेवाएं नहीं मांगता, तब तक हम हस्तक्षेप नहीं करते। लेकिन अब हमें करना पड़ा क्योंकि हम आपके साथ जल्दी से सौदा करना चाहते हैं।'
फ़ज़ीन ने अपनी आँखें सिकोड़ीं। 'अगर मैं कहूँ—और यह एक बहुत बड़ा 'अगर' है—कि बाहर कुछ है और उसने मेरे पहरेदारों को धोखा दिया है, तो तुम दोनों बच्चे मेरी मदद कैसे करोगे?'
‘खैर, मैं तो बस उसका प्रबंधक हूँ,’ उसने सिंदबाद की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘लेकिन यह लड़का एक सेइड है जिसके पास असाधारण ज्ञान है। यह आज रात ही तुम्हारी समस्या का समाधान कर देगा। इसे सिंदबाद नाविक कहा जाता है, क्योंकि इसने समुद्र पार राक्षसों को हराया है।’
‘कौन सा राक्षस? एक का नाम बताओ!’ फ़ज़ीन अपने सिंहासन पर हाथ रखकर
आगे की ओर झुक गया।
‘हाँ, मैंने राक्षसों को हराया है,’ सिंदबाद ने झूठ बोला, ‘जिन्होंने
कई जहाजों पर आक्रमण किया था।’
‘राक्षसों की बात कर रहे हो?’ फ़ज़ीन ने गंभीरता से सिर हिलाया। ‘देखो, साथियों, मुझे तुम्हारी बात पर यकीन नहीं है, लेकिन शायद, चलो मान लेते हैं कि शायद, मैं किसी मुश्किल में फँस गया हूँ और मेरे किसी खास गार्ड ने उस आत्मा को देख लिया हो। तब से वो भूत जैसा दिखता है। अगर तुम्हारा दावा सच

है और वाकई कुछ है, तो उसे मिटा दो। मैं नहीं चाहता कि मेरे आदमियों की जान पर कोई असर पड़े।’ वह थोड़ी देर रुका।
‘अच्छा, ठीक है, हम करेंगे, लेकिन हमारा क्या? हम भूखे मर रहे हैं। आप हमें क्या दे सकते हैं?’ हुसैन ने शरारती अंदाज़ में पूछा।
'आप क्या चाहते हैं?'
'एक जहाज। और उस पर बहुत सारे लोग जिन पर भरोसा किया जा सकता है और जो समुद्र पार हमारे साथ चलते हैं।'
फ़ज़ीन ने अपने पहरेदारों की ओर देखते हुए सिर हिलाया, जो चुपचाप खुश दिख रहे थे कि उसने उस सौदे को मान लिया है जो उन्हें अज्ञात खतरे से बचा सकता है। फ़ज़ीन को इस बात का एहसास नहीं था, लेकिन सिंदबाद ने गौर किया कि पहरेदारों को ज़्यादा जानकारी थी—दरअसल, उन्हें इतनी जानकारी थी कि वे समझ गए थे कि जो लोग उनका पीछा कर रहे उस जीव को काबू कर सकते हैं, उन्हें एक महंगा जहाज़ और एक दल देना उचित होगा। फ़ज़ीन ने कहा, 'ठीक है, मेरे व्यापार और मेरे आदमियों को बचा लो और मैं तुम्हें तुम्हारी मनचाही चीज़ और उससे भी ज़्यादा दूंगा।'
सिन्बाद को इससे ज़्यादा कुछ नहीं चाहिए था। उसने बस इतना कहा, 'मुझे
उस गार्ड से बात करनी है जिसने यह सब देखा। मुझे उसके पास ले चलो, लॉर्ड फ़ज़ीन।'

सिन्बाद इस विशाल कमरे के कई हिस्सों में से एक में था। चलते-चलते वह फ़ज़ीन के कमरे के पास से गुज़रा, जहाँ से एक महिला उसे घूर रही थी। सिन्बाद को एक अजीब सी अनुभूति हुई, लेकिन वह पहरेदार कक्ष की ओर बढ़ता रहा। फ़ज़ीन उसके साथ गया जबकि हुसैन बाहर इंतज़ार करता रहा। फ़ज़ीन ने दरवाज़ा खटखटाया और इंतज़ार करते हुए उसने सिन्बाद से पूछा, 'क्या सेइड्स के बारे में कही जाने वाली बात सच है—कि जब उन्हें अनाथ के रूप में गोद लिया जाता है, तो उनकी यादें मिटा दी जाती हैं ताकि उन्हें याद

न रहे कि वे कहाँ से आए हैं? इससे गिल्ड के लिए उनके दिमाग पर प्रभाव डालना आसान हो जाता है।'
सिंदबाद ने अपनी भौंहें उठाईं। यह सच था कि उसे अपना अतीत याद नहीं था... और कभी-कभी उसे इसकी कमी खलती थी और वह अपने बारे में उस हिस्से को जानने के लिए तरसता था। वह एक आम अरब बच्चे की तरह बड़ा नहीं हुआ था। 'मुझे नहीं पता। क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?'
'हाँ।'
'तुम अपने आदमियों को सताने वाले इस दानव के बारे में इतने रहस्यमय क्यों हो?'
क्योंकि मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसके बारे में क्या सोचूं... यह अजीब है। और मुझे मदद करने के तरीके भी नहीं मिल रहे।
‘रुको। अजीब कैसे?’
'मेरे आदमियों ने यह नहीं कहा है कि उन्हें किसी क्रूर आत्मा का साया
सता रहा है।'
'तब?'
फ़ज़ीन ने आह भरी। 'लोग कहते हैं कि यह एक बच्चे जैसा दिखता है।'
दरवाजा खुला और पहरेदार नज़र आया—बेजान और कंबल में लिपटा हुआ। उसने खोखली आँखों से सिंदबाद को संदेह भरी निगाहों से देखा और फिर फ़ज़ीन की ओर मुड़कर सम्मानपूर्वक उसे प्रणाम किया।
‘बिलाल, ये सिन्बाद है। वो तुमसे तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ उसके बारे
में बात करना चाहता है। वो तुम्हारी मदद कर सकता है।’
सिंदबाद ने सोचा कि बिलाल एक विनम्र दिखने वाला आदमी था, या शायद वह ऐसा बन गया था।
‘मैं अब आगे का काम संभाल लूंगा,’ सिंदबाद ने फजीन से कहा।
फ़ज़ीन ने विरोध करते हुए कहा, 'मैं भी उस कमरे में रहना चाहूंगी।'
नहीं। मुझे इसे अपने तरीके से करने दो।
फ़ज़ीन ने अपने जबड़े भींचे और कमरे से निकलते समय सिर हिलाया।
सिन्बाद ने बिलाल की ओर देखा जो चिंता से भरा चेहरा लिए खड़ा हो गया था। वह दीवार से टिक गया। 'लोग कहते हैं कि तुम ही इकलौते बचे हो। मुझे शुरू से सब कुछ बताओ।'

बिलाल की नज़र अपनी साइड टेबल पर रखे पानी के जग पर पड़ी, जिस पर लालटेन की रोशनी चमक रही थी। उसने कहा, "जब हम अपने मालिक के लिए बंदरगाह पर काम करने जाते थे, तब हमने वह अजीबोगरीब नज़ारा देखा था। पहले तो हमने उसका मज़ाक उड़ाया, यह सोचकर कि यह कोई शरारत है। वह किसी बच्चे जैसा दिखता था। क्योंकि वह हमारी तरफ रेंगता था। हम भाग जाते थे और बाद में जब मुड़कर देखते, तो वह वहाँ नहीं होता था। मैंने गौर किया कि वह हर महीने की चौदह तारीख को आता था... अब वह कोई आत्मा नहीं थी, बल्कि कुछ ऐसा था जो दोनों के बीच का था..."
शायद कोई जीव था... और जल्द ही, पुरुषों को नुकसान पहुंचने लगा। यह इतना आम हो गया कि हम अंदाज़ा लगाने लगे थे कि अगला नंबर किसका होगा। ‘लेकिन यह चीज तुम्हारा शिकार कैसे करेगी?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘मेरा मतलब है, क्या आप इसे चांदी से छेद नहीं सकते थे?’
‘सब लोग बहुत डरे हुए थे...’ बिलाल ने नीचे देखते हुए जवाब दिया। ‘हम अपनी जान बचाने के लिए भागते थे... लेकिन फिर चौदह तारीख को वो चीज़ सामने आ जाती और हममें से किसी एक को पकड़ लेती। अगले दिन हमें उसका अंजाम पता चलता। हम... मैंने उसे कभी करीब से नहीं देखा था... कुछ दिन पहले तक।’ वह कांप उठा। ‘धोफ़ार से रात में एक माल भेजा जा रहा था... बसरा के लिए एक माल आ रहा था... और मैं उसे लेने के लिए अकेला वहाँ था। तभी मैंने उसे इतनी तेज़ी से मेरी तरफ रेंगते हुए देखा कि... उसने मेरी गर्दन पकड़ ली और फुसफुसाया, “मुझे कब्रिस्तान ले चलो”।’
सिन्बाद ने अपने होंठ हल्के से सिकोड़े। 'यह कैसा दिख रहा था?'
‘शैतानी। उसकी त्वचा पूरी तरह लाल थी। और उसकी आँखें उसके मुँह से भी बड़ी थीं। वह बस...’
‘कोई बात नहीं,’ सिंदबाद ने फुर्ती से कहा। ‘फिर तुमने क्या किया?’
मुझे ऐसा करना पड़ा... देखिए, वह मुझसे फुसफुसाता रहा। लेकिन... लेकिन फिर हर गुजरते मिनट के साथ, वह मुझे हवा में ऊपर उठाए हुए बड़ा और फैलता चला गया। लेकिन जब उसे मुझ पर अपनी पकड़ बनाए रखना मुश्किल लगा, तो अचानक मैं नीचे गिर गया। फिर, गुस्से में आकर, उसने मुझे नोंचना शुरू कर दिया और मुझ पर पंजे मारने लगा। सौभाग्य से, उसे नहीं पता था कि मैंने चांदी की अंगूठी पहनी हुई है, इसलिए मैंने उसे जोर से घूंसा मारा और वहां से भाग

निकला। उस चीज से मिलने वाला कोई और इतना भाग्यशाली नहीं रहा... और मैं दोबारा उसका सामना करने के लिए बाहर नहीं जाना चाहता।
सिन्बाद ने अपनी बाहें मोड़ीं और सिर हिलाया। वह जानता था कि बिलाल
ने किसे देखा था। उसने गुरु रीस द्वारा सिखाई गई भूतों पर लिखी किताबों में से एक में इन प्राणियों के बारे में पढ़ा था—ऐसे प्राणी या आत्माएं जो आपकी पीठ से चिपक जाती हैं और आकार में बढ़ती जाती हैं, माइलिंग्स। लेकिन माइलिंग्स हमेशा ऐसा किसी कारण से ही करते थे।
और उसे वह कारण ढूंढना ही था।
क्या फ़ज़ीन का कोई बच्चा है?
‘बच्चा? मैं, उह...’ बिलाल की पुतलियाँ फैल गईं। ‘मैं कह नहीं सकता, लेकिन
मैं आपको सलाह दूंगी कि आप महोदय की पत्नी, मिस्ट्रेस फेयरूज़ से बात करें। उनका कमरा दो दरवाजे छोड़कर है...'
लेकिन सिंदबाद ने सुनना बंद कर दिया था। वह बाहर भागा तो देखा कि गलियारा खाली था। फ़ज़ीन नीचे चली गई थी। सिंदबाद उस कमरे की ओर गया जहाँ उसने पहले उस महिला को देखा था और उसने दरवाजा खटखटाया।
‘श्रीमती फेयरूज़! मैं सिंदबाद हूँ। मैं यहाँ रहस्यमय घटनाओं के बारे में बात करने आया हूँ।’
कोई जबाव नहीं।
मुझे लगता है कि यह सब आपके बच्चे द्वारा किया जा रहा है।
दरवाजा खुला और सामने भूरे, घुंघराले बालों वाली एक क्रोधित महिला खड़ी थी, जो खून से लाल आँखों से सिंदबाद को घूर रही थी। ‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! उसकी बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! वह तो कब की जा चुकी है...’ उसकी आवाज कांप रही थी।
'अच्छा, इससे आपका ध्यान आकर्षित हुआ। मेरा इरादा तो बस भला ही है, महारानी फेयरूज़। उन्हें इस भौतिक संसार से मुक्त होने की आवश्यकता है।' उसकी आँखों में नरमी आ गई।
‘क्या आप अपने बच्चे को रिहा करवाना चाहते हैं या नहीं?’
वह थोड़ी देर रुकी। 'हाँ, मैं करती हूँ।'
सिंदबाद ने निर्मम भाव से कहा, “तो फिर तुम उन अनसुलझी घटनाओं और हर महीने की चौदह तारीख को प्रकट होने वाले प्राणी के बारे में जानते हो।

उसका जन्म भी चौदह तारीख को ही हुआ था, है ना? मुझे पता है कि यह सही है। इसलिए मुझे संक्षेप में उत्तर दो और केवल सत्य बताओ।”
सिन्बाद जानता था कि वह कठोर व्यवहार कर रहा है। ऐसे समय में, वह मानवीय व्यवहार से बेपरवाह हो जाता था और इस बात पर ध्यान नहीं देता था कि कोई कितना नाराज़ है। यही बात उसे मास्टर रीस ने सिखाई थी। यही एक सेइड की पहचान होती है।
‘आपने अपना बच्चा कैसे खोया?’
‘वह बिल्कुल स्वस्थ पैदा हुई थी, लेकिन फिर...’ उसने आंसू रोकते हुए कहा, ‘फज़ीन ने कहा कि उसमें कुछ गड़बड़ है, उसकी सांसें ठीक नहीं चल रही हैं, इसलिए वह उसे डॉक्टर के पास ले गया। बाद में उसने मुझे बताया कि वह हमें छोड़कर चली गई... मर गई। यह बहुत भयानक था।’ वह रुकी और अचानक बोली, ‘क्यों... क्यों आप मुझे ये बुरी यादें फिर से याद दिला रहे हैं? क्यों? और क्या वह वापस आ गई है... कैसे? मैं... मुझे समझ नहीं आ रहा...’
सिन्बाद ने कुछ पल उस व्याकुल महिला को देखा। वह कुछ महसूस करना चाहता था, लेकिन उसने नहीं किया। क्योंकि उसके दिमाग में सिर्फ मिशन ही था।
आधी रात हो चुकी थी और उसके पास तुरही ढूंढने के लिए केवल पांच दिन बचे थे।
मुझे इस भावनात्मक उलझन में नहीं पड़ना चाहिए।
और जब मालकिन फेयरूज़ दरवाजे से टेक लगाकर रो रही थीं, तब सिंदबाद असली अपराधी से मिलने के लिए निकल गया।

उन्नीस

चार वर्ष पहले
हम क्या करेंगे?’ सिंदबाद ने पूछा।
वे चुड़ैल के घर के पास थे। और मास्टर रीस बहुत क्रोधित थे। सिंदबाद उनकी कुंठा और उनके भीतर उबलता हुआ क्रोध देख सकता था।
उसने कहा, 'हम उसे मार डालेंगे। लेकिन उससे पहले हम उसे फंसा लेंगे।'
वे दरवाजे तक पहुंच गए।
‘हम ऐसा कैसे करेंगे, गुरुजी?’
'अपने पाठ याद रखो, बेटा। मैं तुम्हें हर समय सब कुछ चम्मच से खिला नहीं सकता।'
सिंदबाद गहरी सोच में डूबा हुआ था।
मास्टर रीस ने दरवाजे पर जोर से दस्तक दी। 'जब जरूरत हो तो बस तात्कालिक उपाय अपनाएं।'
सिंदबाद के दिमाग में मास्टर रीस द्वारा दुनिया के विभिन्न हिस्सों
की यात्राओं के दौरान सिखाए गए सैद्धांतिक पाठों की यादें दौड़ रही थीं। चुड़ैलों के बारे में सिंदबाद को बस इतना याद था कि चुड़ैलों को मारना बहुत मुश्किल होता है क्योंकि वे चालाक होती हैं। लेकिन जहां चालाक लोग सिर्फ शरारती होते हैं, वहीं चुड़ैलें बुद्धिमान होती हैं और अपने प्रतिद्वंद्वी से तीन गुना आगे होती हैं।
सिंदबाद ने खरगोश को घर के आसपास उछलते-कूदते देखा। और हिरण के सींगों वाली बकरी को पास ही चरते हुए देखा।
दरवाजा खुला और लाल बालों वाली चुड़ैल ने उन्हें हैरानी से देखा। 'अब क्या बात है?' लियोना ने पूछा।
'मुझे आपसे बात करनी है,' मास्टर रीस ने कहा।
‘किस बारे में?’ लियोना ने आधा दरवाजा रोक दिया था।

‘क्या तुम्हारे अंदर कोई है, शायद कोई छोटी बच्ची?’
लियोना ने अपने जबड़े भींच लिए। 'नहीं।' उसने दरवाजा खोलकर दिखाया कि कमरा खाली था। 'क्या एक जादूगरनी को थोड़ी निजता नहीं मिल सकती?'
'ऐसा तब नहीं हो सकता जब वह उनके मेहमानों के प्रति इतनी शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर रही हो, खासकर तब जब उसने उनमें से एक को चोट पहुंचाई हो।'
लियोना ने सिंदबाद की ओर देखा, उसकी आँखों में नरमी आ गई। 'मुझे माफ़ करना, बच्चे। उम्मीद है तुम ठीक होगे। यह कोई श्राप नहीं था, इसलिए मुझे यकीन है कि थोड़ी सी कोशिश से तुम ठीक हो जाओगे।'
मास्टर रीस ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'मैं उस लड़की के बारे में आपसे बात करना चाहता हूँ। मुझे उसके बारे में कुछ नई जानकारी मिली है।' लियोना ने इस पर विचार किया और कहा, 'ठीक है। अंदर आ जाओ।'
सिंदबाद और मास्टर रीस उस मंद रोशनी वाले कमरे में दाखिल हुए, जिसमें लकड़ी और जलती हुई मोमबत्तियों की महक आ रही थी, जिनकी रोशनी दीवार पर परछाईं डाल रही थी।
जब चुड़ैल मग और जूस लाने गई, तो सिंदबाद का दिमाग उन पाठों की ओर चला गया जिनमें उसने चुड़ैलों को नष्ट करने के तरीके सीखे थे - वह जानता था कि मास्टर रीस कुछ योजना बना रहे हैं और उसे तैयार रहने की जरूरत है।
उन्हें फंसाना होगा, उसने याद किया। और तभी उन्हें मारा जा सकता है। हालांकि, उन्हें फंसाने के लिए, उन्हें किसी राक्षस की तरह किसी चिन्ह में बांधा नहीं जा सकता। नहीं। उन्हें किसी न किसी तरह से...
लियोना के वापस आकर उन्हें मग देते ही सिन्बाद के विचार कहीं खो गए। उसने अपने मग पर नज़र डाली, जिसमें खुबानी का रस था। उसने मास्टर रीस की ओर देखा, उम्मीद कर रहा था कि शायद वह कुछ संकेत दें कि इसे पीना चाहिए या नहीं, क्योंकि इसमें ज़हर हो सकता है।
लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय, उसने एक घूंट ऐसे लिया मानो कोई खतरा ही न हो।
सिंदबाद ने भी ऐसा ही किया।
‘तो तुमने क्या सीखा है?’ लियोना ने अपनी अध्ययन मेज की ओर चलते हुए और कुर्सी पर बैठते हुए पूछा।

उनके आने से पहले वह कुछ लिख रही थी और सिंदबाद ने कुछ आधे-अधूरे पन्ने देखे। उसके बगल में एक कलम तैर रही थी, मानो उसके निर्देशों का इंतज़ार कर रही हो।
‘क्या आपको लिखना पसंद है?’ मास्टर रीस ने पूछा।
‘कभी-कभी। मुझे साहित्य में थोड़ी रुचि है,’ लियोना ने कहा। ‘तो, किस विषय में रुचि है, बताओ?’
'आप जानते हैं, मैं सोच रहा था,' मास्टर रीस ने शुरू किया, 'आपने हमें जो खाना परोसा, वह कहाँ से प्राप्त किया।'
‘तुम्हारा क्या मतलब है? मैंने इसे उगाया है। मैं एक चुड़ैल हूँ।’ वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।
‘हाँ। लेकिन ठीक किए हुए मांस में जो नमक डाला गया था, वह वही था जो हमें छावनी परिसर में मिलने वाले भोजन में डाला जाता था। मैं अनाज भंडार में जाँच करने गई थी, इस उम्मीद में कि शायद मुझे पता चल जाए कि तुमने वहाँ से चोरी की है।’ रीस ने मग को अपनी अध्ययन मेज पर रखा और सीधे उसकी आँखों में देखा। ‘लेकिन कुछ भी चोरी होने की सूचना नहीं मिली थी। इसलिए मुझे लगता है कि तुम्हारा कोई अंदरूनी सूत्र है जो तुम्हें जानता है और तुम्हें भोजन की आपूर्ति करता है।’
लियोना मुस्कुराई। 'तो... इससे क्या फर्क पड़ता है? इससे क्या साबित होता है?'
‘कुछ नहीं, जब तक मुझे यह पता नहीं चला कि तुम भी उस लड़की को जानते हो।’ मास्टर रीस मुस्कुराया। ‘मुझे गुड़िया और सूअर सबूत के तौर पर मिले हैं। बताओ। तुम उसे काला जादू कब से सिखा रहे हो?’
‘ये सब मेरा काम है। मैंने उसे नहीं सिखाया...’ उसने झूठ बोला लेकिन फिर होंठ सिकोड़ते हुए खुद को रोक लिया।
तभी सिंदबाद को चुड़ैल को फंसाने का तरीका याद आया।
यह उसके शरीर के किसी हिस्से को लेकर किया जाता था—चाहे वह उसके बालों का एक गुच्छा हो, नाखून हो या त्वचा की एक परत हो—और उसे एक बोतल में बंद कर दिया जाता था।
‘और इससे मुझे यह शक हुआ कि शायद अंदरूनी सूत्र को पता है कि तुम उस लड़की को सिखा रहे हो और असल में वह चाहता है कि तुम उसे सिखाओ। तुम दोनों किसी के लिए काम कर रहे हो ताकि वह लड़की बुराई की राह पर चल पड़े, और यह

विशालकाय पक्षी उन काले जादू के मंत्रों में से एक था जो तुमने उसे सिखाए थे और जो काफी कारगर साबित हुए।’ मास्टर रीस मुस्कुराए। ‘अब, अगर कोई खास सेइड आकर इस व्यवस्था को बिगाड़ दे तो कितना अच्छा होगा?’ वे रुके। ‘लेकिन इन सबमें सबसे बुरी बात यह है कि तुमने मेरे शिष्य को चोट पहुंचाई है। और इसके लिए तुम्हें कीमत चुकानी पड़ेगी।’
लियोना ने अपनी मानसिक ऊर्जा को केंद्रित करते हुए तुरंत तैरते हुए कलम को मास्टर रीस पर हमला करने का निर्देश दिया। वह झुक गए और उससे बच गए। अपना खंजर निकालते हुए उन्होंने लियोना की बांह को तेजी से पकड़ा और उसे मेज पर पटक दिया, जिससे उसका अंगूठा कट गया। लियोना दर्द से कराहते हुए कुर्सी से गिर पड़ी और छटपटाने लगी।
मास्टर रीस ने खून से लथपथ कटे हुए अंगूठे को उठाया और उसे अपने थैले में रखी कांच की बोतल में रख दिया।
‘तुम फंस गए हो, तुम पतित हो,’ मास्टर रीस ने धीमी आवाज में कहा। ‘काश तुमने मेरे शिष्य को नुकसान न पहुंचाया होता।’
चुड़ैल की आँखों में आँसू थे। वह पीछे हट गई और अपने नथुने फुला लिए बोली, 'तुम्हें पता नहीं मैं कौन हूँ। मैं कोई साधारण चुड़ैल नहीं हूँ जिसे तुम फँसा सको, मूर्ख। और अगर तुम्हें लगता है कि तुमने मुझे बाँध लिया है, तो तुम गलत हो... क्योंकि मैं एक दानव हूँ।'
और चुड़ैल ने अपनी उंगलियां चटकाईं। उसका अंगूठा रीस के थैले में रखी बोतल में खड़खड़ाया... और वापस उसके पास आ गया।
मास्टर रीस और सिंदबाद ने बोतल की ओर देखा—वह खाली थी।
चुड़ैल की आँखों से लाल चिंगारियाँ निकलीं और उसने कहा, 'मैं लियोनार्ड हूँ, जादू-टोने का महान गुरु, रहस्यवाद का स्वामी और इब्लिस का सबसे वफादार सेनापति।'
‘वह अश्वेत व्यक्ति,’ मास्टर रीस ने धीमी आवाज़ में कहा।
सिंदबाद ने उसके बारे में पढ़ा था। यह जर्मन पौराणिक कथाओं से लिया गया था। काले आदमी का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि उसका चेहरा पूरी तरह से काला था, ठीक वैसे ही जैसे नरक की कभी न खत्म होने वाली, अंधकारमय और निराशा से भरी खाई।

लेकिन सिंदबाद अपने विचारों में खोया हुआ था कि तभी उनके प्रतिद्वंदी ने उन पर बिजली की कई किरणें बरसा दीं। और चारों ओर घना अंधेरा छा गया।

बीस

आज
'यह तुम थे!' सिन्बाद ने फ़ज़ीन के कार्यालय में घुसते हुए घोषणा की। फ़ज़ीन, जो नीचे अपने दफ्तर में अपने एक आदमी के साथ था, ने ऊपर देखा।
इस गुस्ताखी को देखकर उसने उस आदमी को जाने का इशारा किया और फिर लड़के की ओर ध्यान दिया। 'मुझे एक ठोस कारण बताओ कि मैं तुम्हें तुम्हारे किए के लिए क्यों न मार डालूँ।'
मैं तुम्हें एक अच्छा कारण दूंगा। तुम्हारे आदमियों की मौत का कारण तुम ही हो।
फ़ज़ीन ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'क्या तुम पागल हो? मैं कैसे—' ‘तुम्हारा एक बच्चा था, है ना?’ सिंदबाद कमरे में घूमते हुए बोला। ‘अब
एक माइलिंग होने के नाते यह बात तुम्हें सता रही है।’
‘क्या?’ फ़ज़ीन ने अचंभित होकर पूछा।
‘यह एक तरह का भूत है। ऐसा तभी होता है जब शव को ठीक से दफनाया न गया हो
और उसकी मृत्यु प्राकृतिक कारणों से न हुई हो।’ सिंदबाद ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा, ‘अब बताओ, फ़ज़ीन, तुम्हारा बच्चा स्वस्थ था, तो तुमने उसे क्यों मार डाला?’
‘वह सांस नहीं ले रही थी...’ फ़ज़ीन को पसीना आने लगा।
‘मुझे ये सब मत बताओ। ये शायद तुम्हारी भोली-भाली पत्नी पर असर कर जाए, जो तुम्हारी सेवा करती है और तुम पर विश्वास करती है, लेकिन मुझ पर नहीं।’
फ़ज़ीन ने पलकें झपकाईं। उसके माथे पर घबराहट साफ झलक रही थी। 'मैं... उह... मैंने... क्या आपको यकीन है कि यह मेरा ही बच्चा है?'
'बिल्कुल। इसीलिए तो वो तुम्हारे आदमियों का शिकार करती है। तुमने जो किया, उसी का बदला वो तुमसे ले रही है। तुमने उसे नवजात शिशु अवस्था में ही त्याग दिया था। तुमने उसे मरने के लिए छोड़ दिया था, लेकिन वो एक भयानक

प्राणी में बदल गई है जो पीड़ा में है और अब तुम्हें बर्बाद करना चाहती है।'
‘मैं, उह... मुझे करना पड़ा...’ उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, लेकिन एक भी आँसू नहीं निकला। ‘मुझे करना पड़ा... वह एक लड़की थी।’
‘सिर्फ इसलिए कि वह एक लड़की थी?’
‘हाँ।’ उसने शर्म से अपना सिर झुका लिया। ‘यह दुनिया किसी लड़की के लिए जगह नहीं है। मैं तुम्हें बता रहा हूँ। बिल्कुल भी नहीं। बेहतर होगा कि समस्या को शुरू में ही खत्म कर दिया जाए। इसलिए मैंने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे यह काम करें और उसे दफना दें।’
सिंदबाद ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'इस लड़की ने जाहिर तौर पर तुम्हारे ज्यादातर आदमियों को मार डाला है, इसलिए तुम यह नहीं कह सकते कि यह जगह उसके लिए उपयुक्त नहीं है।'
'मेरा मजाक उड़ाने के बजाय, मुझे बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए। मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं है कि वास्तव में ऐसा कुछ मौजूद है और बिलाल सच कह रहा है।'
‘हाँ, वो है। तुम्हारे आदमी तुम्हारे पापों और तुम्हारे किए गए कर्मों की सज़ा भुगत रहे हैं। ज़रा सोचो तुमने क्या किया। अपने ही बच्चे के साथ,’ सिंदबाद ने घृणा से कहा। थोड़ी देर रुककर उसने कहा, ‘मुझे पता है इस स्थिति को कैसे संभालना है। लेकिन जहाजों वगैरह के अलावा, मुझे तुमसे एक और चीज़ चाहिए।’
‘क्या?’ फ़ज़ीन ने हैरानी से कहा। उसे एहसास हुआ कि सिंदबाद उसकी दयनीय स्थिति का फायदा उठा रहा है।
‘मुझे आपसे महमूद के ब्याज भुगतान को माफ करने का अनुरोध है।’
फ़ज़ीन ने अपनी नाक फुला ली। 'तुम्हें मुझसे एक जहाज़ और एक दल मिल रहा है और तुम एक छोटे से शराबखाने के ब्याज भुगतान की चिंता कर रहे हो? क्यों?'
'वह मेरे लिए महत्वपूर्ण है,' सिन्बाद ने कहा।
'ज़रूर, ज़रूर, मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। बस मुझे बता दो कि मुझे क्या करना है।'
‘अच्छा,’ सिंदबाद ने कहना शुरू किया, ‘इसमें आपको कुछ ऐसा करना होगा जिससे आपको घृणा हो सकती है।’

आधी रात हो चुकी थी। वे उस स्थान पर पहुँच गए।
यह एक एकांत बगीचे के पास था जहाँ चेरी का पेड़ खिलता था। बगीचे के सामने एक मस्जिद थी जहाँ चाँद की चाँदी जैसी रोशनी चमकती हुई ऊपर तक जाती थी। बगीचा बहुत बड़ा होने के कारण, दफनाने की जगह कोने में चुनी गई ताकि अगर कोई इस लॉन में आ जाए तो उसे पता न चले।
सिन्बाद, फ़ज़ीन और उसका एक सबसे भरोसेमंद आदमी वहाँ मौजूद थे। वे धुंधली रोशनी में पेड़ की ओर बढ़े, तभी उन्होंने देखा कि... कब्रगाह खोद दी गई थी।
‘यह कैसे संभव है?’ फ़ज़ीन के खास आदमी ने कहा। ‘सर, हमने... हमने यह सुनिश्चित किया था कि किसी को पता न चले। कोई...’
‘यह कोई ‘व्यक्ति’ नहीं है। आत्मा ने ऐसा किया है,’ सिंदबाद ने कहा। ‘खैर, हम भाग्यशाली हैं। यह महीने की चौदहवीं तारीख को ही उठकर तुम्हारे आदमियों को परेशान करती है।’
‘लेकिन... लेकिन... आज,’ उस आदमी ने बुदबुदाते हुए कहा।
‘तुम्हें व्यंग्य या कटाक्ष समझने की समझ नहीं है, है ना? आज चौदहवाँ
दिन है, इसलिए हमें सावधान रहना होगा।’ उसने फ़ज़ीन की ओर देखा, जो शायद उस आत्मा की तरह पीली पड़ गई थी जिससे वे मिलने वाले थे। ‘तुम्हें बस उसे अपने हाथों से कब्रिस्तान तक ले जाना है। तुम्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि वह जाग न जाए। क्योंकि अगर वह जाग गई तो...’
‘क्यों... क्यों नहीं कर सकते तुम?’ फज़ीन ने कांपते हुए पूछा।
क्योंकि मैं उसका पिता नहीं हूँ। और मैं वो भी नहीं हूँ जिसने... खैर, आत्मा को शांति तभी मिलेगी जब उसका परिवार उसे उचित अंतिम संस्कार के साथ कब्रिस्तान में दफनाएगा। क्या तुम्हारे बाकी आदमी आ रहे हैं?
‘हां।’ फ़ज़ीन ने गले में अटकी हुई बात को किसी तरह निगल लिया।
तो चलिए, यही करते हैं। चलिए पता लगाते हैं कि यह कहाँ गया।

वे बगीचे में घूमे और जल्द ही उन्हें वह चेरी के पेड़ के पास दिखाई दिया। उन्होंने उस प्रेत-प्राणी के चारों ओर चक्कर लगाया। सिंदबाद ने करीब से देखा—वह प्राणी कुंडली मारकर सो रहा था और कराह रहा था। उसके खर्राटे कुत्ते के भौंकने और चील की सीटी जैसी आवाज़ कर रहे थे। उससे मरे हुए चूहों की गंध आ रही थी और उसके मुंह से लंबे-लंबे दांत बाहर निकले हुए थे। उस सड़े हुए प्राणी की त्वचा गहरे लाल रंग की थी और उसकी आंखें लंबी और असामान्य आकार की थीं।
‘मेरे बच्चे,’ फ़ज़ीन ने फुसफुसाते हुए कहा।
‘नहीं। वो लड़की जिसे तुमने निकाल दिया था,’ सिन्बाद ने कहा, यह सुनिश्चित करने की कोशिश करते हुए कि फ़ज़ीन को अपराधबोध हो।
फ़ज़ीन ने अपने दाहिने हाथ के आदमी से सफेद तौलिया लेने से पहले मन ही
मन बड़बड़ाते हुए कुछ अपशब्द कहे और बच्चे को अपनी बाहों में उठा लिया।
‘चलो चलते हैं,’ सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा।
तीनों वापस लौटने लगे। सिंदबाद इतना सतर्क था कि उसने अपनी आकाश-लोहे
की तलवार निकाल ली और उसे तैयार रखा ताकि अगर वह प्राणी जाग जाए तो वह उसका इस्तेमाल कर सके।
‘मैंने ऐसा क्यों किया?’ फ़ज़ीन ने मन ही मन बुदबुदाया। ‘क्यों? मैं किस तरह का बाप हूँ... कि मैंने उसे इस हालत में पहुँचा दिया...?’
सिंदबाद द्वेषपूर्ण बातें कहना चाहता था, पर वह चुप रहा। वह समाज में महिलाओं की स्थिति और उनकी दयनीय स्थिति से भलीभांति परिचित था। जब वे बाहर निकलती थीं तो हमेशा सतर्क और नकाबपोश रहती थीं, और अगर निकलती भी थीं तो उन्हें देर रात तक बाहर रहने की अनुमति नहीं थी। खाना बनाना, सफाई करना या बच्चों की देखभाल करना जैसे घरेलू कामों के अलावा उन्हें किसी और काम में शामिल नहीं किया जाता था।
फ़ज़ीन एक रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आता था और उसके लिए इस व्यवस्था में एक महिला का मर जाना ही बेहतर था। लड़कियों का कोई भविष्य नहीं था। और चूंकि उसका एक आपराधिक साम्राज्य था, इसलिए उसे एक उत्तराधिकारी चाहिए था और वह कोई लड़की नहीं हो सकती थी।
फ़ज़ीन ने अफ़सोस जताते हुए कहा, “मैंने उसे मरने दिया क्योंकि वह एक लड़की थी। मुझे उसे ज़िंदा रहने देना चाहिए था। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था... मैंने बहुत सारे बुरे काम किए हैं, सिंदबाद।” बिना कुछ कहे, सिंदबाद

उन्हें बसरा की सुनसान सड़कों से होते हुए कब्रिस्तान की ओर ले गया, जहाँ कोहरा और भी घना हो गया था। “लेकिन मैं एक हत्यारा हूँ और मुझे अब तक इस पर गर्व था... उसे देखकर...”
‘कम से कम अब तुम्हें एहसास हो गया है कि तुमने जो किया वो गलत था,’ सिन्बाद ने कहा। उसे कुछ ही गज की दूरी पर कब्रिस्तान दिखाई दे रहा था। ‘अब तुम्हें दूसरा मौका नहीं मिलना चाहिए। तुम इसके लायक नहीं हो।’
‘हां। हम... दोबारा बच्चे पैदा नहीं कर सकते।’ उसने अपना सिर हिलाया और नीचे देखने लगा।
'शायद यह उस राक्षस का श्राप है। एक बार जब आप इसे शांत कर देंगे, तो क्षमा मांग लें और हो सकता है कि आपको एक नई शुरुआत का आशीर्वाद मिले।' फ़ज़ीन ने सिर हिलाया।
लेकिन तभी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई देने लगी।
जब वह प्राणी जागा, तब सिंदबाद कब्रिस्तान के इतने करीब ही था।
माई लिंग ने पलकें झपकाईं।
और तीनों जम गए।
फ़ज़ीन ने घबराते हुए कहा, 'यह जाग गया। *1-1... मुझे क्या करना चाहिए?' 'शांत रहो। इसे तुम्हें स्वीकार करने दो।'
‘अगर वो मुझे मार डाले तो क्या होगा?’
'नहीं, अगर उसे पता चल जाए कि तुम उसे शांति देने वाले हो,' सिन्बाद ने कहा, हालांकि उसे याद नहीं था कि मास्टर रीस ने इस बारे में क्या कहा था कि अगर माइलिंग इस अनुष्ठान के बीच में जाग जाए तो क्या होगा।
माइलिंग का बच्चा रोने लगा और उसके हाथ-पैर बढ़ने लगे।
नहीं, बिलकुल नहीं!
‘भागो!’ सिंदबाद चिल्लाया। ‘उसे कब्र में डाल दो, इससे पहले कि वह सचमुच तुमसे बड़ी हो जाए!’
जैसे ही उसमें बदलाव आने लगे, वे कब्रिस्तान की ओर भागे। कब्रों के बीच से टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होते हुए वे उस जगह की ओर दौड़े जहाँ फ़ज़ीन के खास आदमी ने माइलिंग के लिए जगह खोदी थी।
“ये तो बहुत बड़ा हो रहा है... मैं इसे पकड़ नहीं पा रहा...” फ़ज़ीन चिल्लाया और माइलिंग को खुद से दूर फेंकने की कोशिश करने लगा। माइलिंग ने इस हरकत को भांपते हुए उस आदमी को पकड़ लिया और उसकी बांह को कुतरने लगा।

फ़ज़ीन भय से चीख उठा और माइलिंग को उछाल दिया। हवा में उछलते ही वह प्राणी आकार में बढ़ने लगा, और तब तक बढ़ता रहा जब तक कि उसकी ऊंचाई छह फीट से भी अधिक नहीं हो गई। दो विचित्र आकार के पैरों पर खड़ा, उसके झुके हुए शरीर की त्वचा धधकती लाल थी और उसकी आंखें विशाल वृत्ताकार थीं।
सिन्बाद फ़ज़ीन और उस प्राणी के बीच दौड़ पड़ा और अपनी बाहों से उसे ढाल बना लिया।
लेकिन जब उसकी नजरें सिंदबाद से मिलीं, तो उस प्राणी ने एक भयानक चीख निकाली।
अपने सामने आने वाली निश्चित तबाही को भांपते हुए, फ़ज़ीन रोने लगी
और कांपने लगी। 'मैंने क्या कर दिया...'
फ़ज़ीन की आवाज़ सुनकर वह प्राणी रोना बंद कर दिया। उसने अपनी नज़र
उस आदमी पर डाली। छोटे-छोटे कदम बढ़ाते हुए वह आगे बढ़ा। 'दा... दाआ।' फ़ज़ीन असमंजस में था, लेकिन उसकी आँखों में आँसू भर आए। 'मुझे माफ़
कर दो...'
माइलिंग का चेहरा नरम पड़ गया और वह गले लगाने के लिए बाहें फैलाकर धीरे-धीरे करीब आ गई। फ़ज़ीन भी थोड़ा आगे बढ़ी। 'मुझे माफ़ कर दो, मेरे जे' इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाता, वह प्राणी उस पर झपटा, उसका छोटा सा मुँह खुला हुआ था और उसकी आँखों में बेजोड़ क्रोध था। जैसे ही फ़ज़ीन चीखा, सिंदबाद ने तुरंत अपनी तलवार निकाली और माइलिंग पर वार कर दिया।
यह दो हिस्सों में फट गया...
और फिर पलक झपकते ही दोबारा लगाव हो जाना। मानो कुछ हुआ ही न हो।
क्या हो रहा है!
सिंदबाद ने गहरी सांस ली और उस प्राणी की ओर दौड़ पड़ा। उसने तेज़ी से
उस प्राणी पर वार किए, लेकिन वह प्राणी चतुराई से पीछे हटकर हमले से बच गया। और फिर अचानक, उसके लंबे पंजे सिंदबाद की छाती से टकराए और उसे पीछे की ओर धकेल दिया। उसकी तलवार उससे दूर जा गिरी।
उसकी अनदेखी करते हुए, वह प्राणी फ़ज़ीन की ओर बढ़ा, जो ज़मीन पर गिर पड़ा और चीखने-चिल्लाने लगा और उस प्राणी से क्षमा मांगने लगा।
जैसे ही वह फाज़ीन की ओर तेजी से बढ़ा और उसकी जान लेने के लिए आगे बढ़ा...

अंधेरे से एक आकृति प्रकट हुई, जिससे धुंध छट रही थी। काले वस्त्रों
से ढकी उस आकृति ने एक लंबी दोधारी तलवार से हमला किया, जिससे एक भयानक चीख निकली—और फिर वह प्राणी आकार में छोटा होकर एक नन्हा बच्चा बन गया... लेकिन मृत।
सिंदबाद और फ़ज़ीन अवाक रह गए। उस छोटे कद के व्यक्ति ने अपना लबादा हटाया तो बैंगनी आँखों और घुंघराले काले बालों वाली एक युवती दिखाई दी। उसने अपनी दोधारी तलवार पीठ पर म्यान में रखी और फ़ज़ीन से कहा, 'बच्चे को ले जाओ और अपनी योजना के अनुसार करो।'
फ़ज़ीन ने सदमे में सिर हिलाया। बच्ची को गोद में उठाकर वह उसे श्मशान घाट ले गया। उसने ईश्वर का नाम जपते हुए स्तुति की और सिसकते हुए बच्ची के ऊपर मिट्टी डाली। सिंदबाद अपनी तलवार से कुछ ही इंच दूर ज़मीन पर जम गया। बैंगनी आँखों वाली स्त्री उसकी ओर बढ़ी और तलवार उठाकर उसे सौंप दी।
‘मैं छुपकर तुम्हारा पीछा कर रही थी, यह सुनिश्चित कर रही थी कि तुम
सब कुछ सही ढंग से करो, लेकिन इस बार मुझे दखल देना पड़ा। अगली बार जब तुम किसी माइलिंग से निपटो, तो याद रखना कि पहले उसे मंत्र से बेहोश करना होगा और फिर उसे दफनाना होगा; नहीं तो वह जाग जाएगा,’ महिला ने घमंडी मुस्कान के साथ कहा।
सिंदबाद ने अपनी तलवार उठाई और पूछा, 'तुम कौन हो?'
महिला ने कहा, 'इदरीस। आपका निरीक्षक।' और उसने आँख मारी।

इक्कीस

चार वर्ष पहले
सिंदबाद नींद से बेहाल और थका हुआ जागा। जब उसने अपनी आँखें पूरी तरह खोलीं, तो उसे एहसास हुआ कि वह एक बहुत ऊँचे स्थान पर है, जिसकी सतह पथरीली नहीं बल्कि घास-फूस जैसी लग रही थी। चारों ओर धुंध की चादर छाई हुई थी। ठंड से उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
उसने चारों ओर नज़र घुमाई, मास्टर रीस को ढूंढने की कोशिश की, और उसे
एक अजीब सी बेचैनी महसूस हुई कि उसका अंजाम इससे भी बुरा हो सकता था। उसका शरीर कमज़ोर महसूस हो रहा था जब वह एक चमकदार सफेद चट्टान पर झुककर खड़ा हुआ। तभी उसने मास्टर रीस को दूसरी तरफ एक सफेद चट्टान पर झुके हुए देखा। ‘गुरुजी? क्या हुआ?’
‘वह हमें यहाँ लाई है,’ मास्टर रीस ने दर्द भरी आवाज़ में कहा। उनका चेहरा पीला पड़ गया था।
‘हमें कहाँ ले गए?’
आकाश अंधेरा था, लेकिन सूर्योदय की नारंगी रोशनी ने क्षितिज को रोशन
कर दिया। चारों ओर मरे हुए जानवरों की गंध फैली हुई थी और सिंदबाद को पता नहीं था कि यह गंध कहाँ से आ रही है।
‘अपने चारों ओर देखो, सिंदबाद। ध्यान से देखो,’ मास्टर रीस मुश्किल से
बोल पाए। ‘उफ़, उसके जादू से मेरे पेट में दर्द हो रहा है।’
सिंदबाद ने अपने आसपास के वातावरण को समझने की कोशिश की और घास-फूस
और पत्थर को टटोलने लगा। लेकिन उसे एहसास हुआ कि जिसे वह सफेद पत्थर समझ रहा था, जिस पर वह टिका हुआ था, वह वास्तव में एक विशाल अंडा था।
दरअसल, जिस चीज पर मास्टर रीस झुके हुए थे, वह भी एक अंडा था और वह उनके गुरु की ऊंचाई से दोगुना था - और रीस की लंबाई छह फीट थी।
वे चिड़िया के घोंसले में थे।

‘ये चिड़िया के अंडे हैं,’ रीस चिल्लाया। ‘चुड़ैल हमें यहाँ लाई है ताकि जब चिड़िया आए तो वह हमें खा जाए।’
सिंदबाद के पैर कांप रहे थे, वह घोंसले के किनारे तक रेंगकर नीचे झाँकने लगा। उसने पहाड़ों और एक जंगल को देखा जो कोहरे के बीच ऊपर से बेहद छोटा दिखाई दे रहा था।
उसे चक्कर आने लगे और वह हांफते हुए पीछे हट गया। वह पीठ के बल गिर पड़ा और कोने में एक जानवर के शव पर ठोकर खा गया। उसे देखकर उसे उल्टी आने लगी।
‘गुरुजी, हमें क्या करना चाहिए?’
‘हम जा रहे हैं। मेरी मदद करो।’
सिंदबाद ने सिर हिलाया और अपने स्वामी के पास जाकर उन्हें उठने में मदद की। अचानक, उन्हें दूर से एक आवाज़ सुनाई दी—पक्षी की चहचहाहट। दोनों दूर तक देखते रहे जहाँ घने कोहरे के कारण लगभग सब कुछ धुंधला दिख रहा था, लेकिन गहरे भूरे पंखों और हाथी के आकार के पंजों वाला पक्षी उन्हें देखते ही जोर से चीखने लगा।
‘भागो!’ मास्टर रीस चिल्लाया।
उसके पास उसकी तलवार नहीं थी।
सिंदबाद के पास उसका बैग नहीं था। लियोना ने उसका सारा सामान चुरा लिया था।
वे भागे और घोंसला गिरा दिया। चिड़िया ने अपने पंख फड़फड़ाए और एक तेज़ हवा चली, जिसने उन्हें खंजर की तरह चुभन दी। वे ढलान की ओर भागे, जहाँ एक तरफ़ बीहड़ इलाका था और दूसरी तरफ़ एक चट्टान का किनारा। वे अचानक रुक गए।
‘हमें छिपना होगा,’ मास्टर रीस चिल्लाया।
लेकिन पक्षी उनके करीब से उड़ता हुआ आया और आँखें चौड़ी करके उनकी ओर झपटने ही वाला था...
‘अरे!’ किसी ने चिल्लाकर कहा।
सिंदबाद ने ढलान की चट्टानी दीवार पर नजर डाली—उसमें एक छोटी सी दरार थी।
और वहाँ बिल्ली जैसी आँखों वाली लड़की थी।
‘आओ,’ उसने कहा।

‘गुरुजी!’ सिंदबाद ने उन्हें पुकारा।
रीस ने उसकी ओर देखा। सिंदबाद ने दरार की ओर इशारा करते हुए कहा कि उन्हें उसके अंदर जाना चाहिए।
वे झटपट अंदर की ओर बढ़े और पलक झपकते ही पक्षी की विशाल चोंच ने उन
पर बेतहाशा हमला किया, लेकिन वह अंदर नहीं घुस सका क्योंकि दरार बहुत संकरी थी।
'मेरे पीछे आओ,' लड़की ने निर्देश दिया।
सिंदबाद ने सिर हिलाया और तीनों पतली दीवारों से होते हुए तब तक चलते रहे जब तक वे एक खुले मैदान में नहीं पहुँच गए जहाँ एक छोटी सी आग जल रही थी और सिंदबाद ने देखा कि उसकी परियों की कहानियों की किताब एक गंदे कंबल पर रखी हुई है।
यह उसकी छिपने की जगहों में से एक हो सकती है।
मास्टर रीस उत्सुकता से उस खुले मैदान में घूमने लगे।
लड़की, सफीना उमैर ने उसे संदेह भरी नजरों से देखा लेकिन सिन्बाद के साथ मुस्कुराहट का आदान-प्रदान किया।
उन्होंने कहा, 'हमें बचाने के लिए धन्यवाद।'
‘धन्यवाद,’ उसने जवाब दिया और उसे किताब दे दी। ‘अच्छा। और चाहिए?’
'हां, मेरे पास और भी हैं। परिसर में वापस।'
उसकी मुस्कान फीकी पड़ गई। 'कंपाउंड? बुराई।'
'हां। उन्होंने तुम्हें बाहर निकाल दिया।'
‘नहीं। वे परिवार के सदस्यों को मार डालते हैं। फिर सैनिक ने मुझे बाहर फेंक दिया।’ उसने अपना सिर नीचे कर लिया।
सिन्बाद ने मास्टर रीस के साथ हैरानी भरी नजरों का आदान-प्रदान किया, लेकिन मास्टर रीस ने सिन्बाद को आगे बढ़ने का इशारा किया।
‘लेकिन...’ सिंदबाद ने कहा, ‘उन्होंने कहा कि उनकी मौत बीमारियों और दुर्घटनाओं से हुई।’
‘झूठ।’ उसने फुफकारा, उसकी बिल्ली जैसी आंखें चमक उठीं। ‘सब झूठ है। बदला लेना ही होगा।’
सिंदबाद को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। उसने पूछा, 'तो तुमने
इस पक्षी को बदला लेने के हथियार के रूप में बनाया है?'

‘नहीं।’ उसने सिर हिलाया। ‘प्यार से। एक घायल पक्षी को चूमा था। उसी
से ये बन गया। अफसोस!’ उसने उदास स्वर में कहा।
सिंदबाद इस बात का अंदाजा नहीं लगा पा रहा था कि अगर यह लड़की सिर्फ अपने स्पर्श से इस खूंखार पक्षी को रूपांतरित करने में सक्षम थी, तो उसके पास कितनी शक्ति थी।
‘इसका नाम रॉक रखा है, जैसे रॉक!’ वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।
‘लियोना के बारे में क्या?’
‘लियोना कौन?’
‘लियोनार्ड।’
कांपते हुए उसने कहा, 'बकरी का दानव। भयानक। अंधेरा। मुझे डराता है। मुझे वो सब करने का मन करता है जो मैं नहीं करना चाहती।'
वह कहता है कि मुझे मजबूत बनने के लिए प्रशिक्षण लेना चाहिए। मुझे अपनी शक्तियों का सही उपयोग करना चाहिए। वह कहता है कि मुझे इतना मजबूत होना चाहिए कि मैं उन सभी को मार सकूँ जिन्होंने मेरे परिवार की हत्या की। लेकिन आपको नहीं लगता कि वह एक अच्छा इंसान है?
‘नहीं। बुराई।’
सिंदबाद को इस बात की खुशी थी कि भले ही वह आसानी से प्रभावित हो जाती
थी, फिर भी वह अच्छे और बुरे के बीच का अंतर समझती थी।
‘मेरी नानी मुझे नायकों की कहानियां सुनाती थीं,’ उसने कहा। ‘कोई भी नायक निर्दोषों की जान नहीं लेता।’
‘तुम्हें पता है कि बकरी के राक्षस ने ऐसा क्यों कहा था कि तुम्हारे माता-पिता को ग्रामीणों ने मार डाला था?’ सिंदबाद ने पूछा।
'क्यों?'
उन्होंने कहा, ‘क्योंकि वह चाहता है कि तुम अपनी शक्तियों का इस्तेमाल नफरत फैलाने के लिए करो। इसे काला जादू कहते हैं और यह बुराई है।’ उन्होंने आगे कहा, ‘उसने झूठ बोला। ग्रामीणों ने कुछ नहीं किया, मुझे इस बात का पूरा यकीन है।’
वह असमंजस में थी लेकिन उसने सिर हिलाया।
मास्टर रीस ने सिंदबाद की ओर मुड़ते हुए बीच में ही कहा, 'उससे पूछो कि
हम यहां से कैसे भाग सकते हैं।'

‘मैं समझ गई,’ लड़की ने तुरंत जवाब दिया, सीधे उसकी ओर देखते हुए मानो
कह रही हो कि वह बेवकूफ नहीं है। ‘पीछे से।’
रीस ने सिर हिलाया और सिन्बाद से इशारे से कहा, 'शाबाश।'

बाईस

आज
भोर होते ही एक जहाज तैयार किया गया।
सिन्बाद को इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि इदरीस ने परिवहन समेत सब कुछ पहले से ही तय कर लिया था, इसीलिए उसने देर से लेकिन नाटकीय ढंग से प्रवेश किया। उसने खुद को कोसना शुरू कर दिया। जब वह प्रलय के समय में जहाज़ हासिल करने के लिए आपराधिक साम्राज्यों को बचाने में व्यस्त था, तब तक इदरीस ने उम क़सर बंदरगाह पर एक जहाज़ का इंतज़ाम कर लिया था, उसकी सुरक्षा के लिए गार्ड तैनात कर दिए थे और यहाँ तक कि एक दल भी तैयार कर लिया था।
सिन्बाद ने अपने सामने खड़े दो मस्तूल वाले जहाज को देखा, जिस पर 'किस्मत और भाग्य से' लिखा था, मानो किसी छुरी से उकेरा गया हो। जहाज इतना बड़ा था कि उसमें 200 से अधिक लोग सवार हो सकते थे। हालांकि वह इसके लिए आभारी था, लेकिन उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि फ़ज़ीन के मामलों को सुलझाने में उसने अपना एक कीमती दिन बर्बाद कर दिया।
इदरीस उसके बगल में खड़ी थी और शरारती मुस्कान बिखेर रही थी। एक एल्डर सेइड होने के बावजूद, वह काफी युवा दिख रही थी; शायद वह उससे लगभग पाँच साल बड़ी रही होगी। सिन्बाद इस बात की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका क्योंकि यह एक बड़ी उपलब्धि थी, खासकर गिल्ड और उनके नियमों को देखते हुए। "यह एल्फवुड से बना है," इदरीस ने कहा जब वे उस तख्ते पर चल रहे थे जो किनारे और जहाज के बीच पुल का काम करता था।
दरअसल, एल्फवुड उतना सरल नहीं था जितना लगता था। यह एल्फ्स से नहीं, बल्कि यग्द्रसिल नामक पवित्र, ज्ञान प्रदान करने वाले नॉर्स वृक्ष से प्राप्त हुआ था। वृक्ष की आत्माएं, जिन्हें ड्रायड्स कहा जाता था, इसकी रक्षा करती थीं, लेकिन ज़्यादा समय तक नहीं। यग्द्रसिल की शक्ति का लाभ उठाते हुए, एल्फ्स—जो युद्धप्रिय और लालची थे—ने वृक्ष को टुकड़ों में

तोड़कर दुनिया भर में भारी धन के लिए बेच दिया। सिंदबाद जानता था कि वह जिन लोगों से कभी नहीं मिलना चाहता था, वे थे ये धूर्त छोटे एल्फ्स। उसे यग्द्रसिल के साथ हुए इस बुरे बर्ताव पर दुख हुआ। लेकिन वह लकड़ी की शक्ति को भी जानता था, क्योंकि जब जादुई या विशेष शक्तियों वाले प्राणी इसका उपयोग जहाजों में करते थे, तो यह जहाज को साधारण जहाज की तुलना में दस गुना, या उससे भी अधिक, तेज़ बना देता था। और सात दिनों से भी कम समय में इस तरह की यात्रा पूरी करना उसके लिए वरदान था।
सिंदबाद जब जहाज की चमकदार, चिकनी लकड़ी पर चल रहा था, जिससे किसी कारणवश हल्दी की खुशबू आ रही थी, तो उसे ऐसा लगा मानो वह यहीं का है। उसने इदरीस द्वारा नियुक्त दल को माल, कच्चा माल, भोजन के लिए आवश्यक मसाले और लंबी यात्रा के दौरान आवश्यक बुनियादी चीजों को संभालते हुए देखा।
‘इसे इतनी आसानी से नष्ट नहीं किया जा सकता,’ इदरीस ने लकड़ी पर थपथपाते हुए कहा। ‘इसके लिए विशेष जादू की आवश्यकता है।’
‘आपको कैसे पता चला कि हमें समुद्र की ओर रवाना होना पड़ेगा?’
“ओह, गिल्ड को पता था कि महान ज़ारका द्वारा हमें अपने दर्शनों के बारे में बताने के बाद सफ़ीना निश्चित रूप से पूर्व की ओर समुद्र में यात्रा करेगी। इसलिए हमने सबसे अच्छा जहाज लिया।”
‘जाफर ने मुझे नहीं बताया।’
‘शायद उसने सोचा होगा कि मैं तुम्हें सब बता दूँगी।’ इदरीस की आँखों
में शरारत झलक रही थी। ‘चिंता मत करो, चैंपियन, मुझे तुम्हें यहाँ से ले जाने दो, सब ठीक हो जाएगा।’ उसने सिंदबाद की पीठ थपथपाते हुए कहा, ‘बस मेरे पीछे आओ, और जब मुझे तुम्हारी ज़रूरत होगी, तुम आ जाना।’
सिंदबाद ने उपहास करते हुए कहा, 'नहीं। मैं ही इसका नेतृत्व कर रहा हूँ। मैंने प्रोटियस को खोजने और सफीना कहाँ गई, यह पता लगाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली।'
“ओह हाँ, मुझे पता है। मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे वहाँ गया था, यह सुनिश्चित करने के लिए कि तुम मिशन पर हो और समय बर्बाद नहीं कर रहे हो। तुमने क्या किया?”
सीखना?'
'हमें उसके आभा मंडल का अनुसरण करना होगा। उसमें सल्फर की गंध आ रही
है, जो समुद्र में नहीं पाई जाती, इसलिए हमें एक अच्छे ट्रैकर की जरूरत है।'

'बहुत खूब! हमें एक भगवान की जरूरत है और हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।'
'नहीं, मेरी एक पिशाच दोस्त अशरफिया है जो हमारी मदद कर सकती है।'
क्या वह यहाँ रहती है?
उसने सिर हिलाया। 'वह ओमान में है।'
‘हम वहां नहीं जा रहे हैं, चैंपियन। आखिरकार, ओमान पिशाचों का अड्डा है,’ उसने रोमानियाई भाषा में पिशाचों के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द स्ट्रिगोई का जिक्र करते हुए कहा।
‘अशरफिया एक दोस्त है।’
‘स्ट्रिगोई नश्वर प्राणियों के मित्र नहीं होते। खासकर हमारे जैसे लोगों के। साथ ही, वे पैसे लेकर सूंघने और खाने का काम करते हैं। नश्वर प्राणी यह काम मुफ्त में करते हैं। मुझे इन रक्तचूसों पर भरोसा नहीं है, इसलिए बेहतर होगा कि मैं किसी देवता को ही फंसा लूं।’
‘ईश्वर खतरनाक हो सकते हैं।’
लेकिन अगर हम किसी एक को हमारी मदद करने के लिए मना लें तो ऐसा नहीं होगा।
सिन्बाद ने दृढ़ता से कहा, 'मुझे पता है मैं क्या कर रहा हूँ, महारानी इदरीस, और मुझे पता है कि हमें जाकर अपने पिशाच मित्र को ढूंढना होगा।' उसने पलकें झपकाते हुए उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में एक अजीब सी उग्रता झलक रही थी। 'ठीक है, जो तुम कहो। गिल्ड ने कहा था कि तुम एक समस्या बनोगे क्योंकि तुम्हें पता है कि तीन साल पहले विद्रोह के दौरान क्या हुआ था। तुम्हारी कहानी वाकई चौंकाने वाली थी और हमें कहा गया था कि तुम्हारे जैसा नहीं बनना चाहिए। यह अजीब बात है कि तुम्हें अभी भी गिल्ड में स्वीकार किया जाता है, शायद इसलिए कि तुम किसी दिन काम आ सकते हो। जैसे अभी।'
सिंदबाद ने कुछ नहीं कहा। वह बस इतनी... परेशान करने वाली थी।
‘लेकिन इस जहाज की कप्तान तो मैं ही हूं,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। सिन्बाद ने दांत पीसते हुए कहा, 'ठीक है, जैसा आप कहें, कप्तान।' 'उस अपराधी सरगना की मदद करने का कोई मतलब नहीं था। आप मेरे लिए पूछताछ कर सकते थे। मैं बंदरगाह पर ही था।'
तुम सीधे मेरे पास आ सकते थे।

‘और मेरी उस शानदार एंट्री को छोड़ दिया?’ वह हंस पड़ी।
सिन्बाद जवाब देने ही वाला था कि उसने बंदरगाह के पास भाले, दस्ताने
और ढाल लिए दर्जनों अफ्रीकी सैनिकों को मार्च करते देखा। कुली और नाविक डर गए और यह देखने के लिए जमा हो गए कि आखिर क्या हो रहा है।
यहां तक कि इदरीस भी असमंजस में इधर-उधर देखने लगी और अपना सिर खुजलाने लगी।
सबसे आगे चल रहा सिपाही, जो उनका नेतृत्व कर रहा था, रुका और जोर से बोला: 'सिनबादल की तलाश है।'
सिंदबाद ने इदरीस की ओर देखा और तख्ते से नीचे उतर गया।
मैं सिंदबाद हूँ।
'हमें फ़ज़ीन ने भेजा है। उसने हमें मृत्यु तक आपकी सेवा करने का आदेश दिया है।'
ये मवाली थे, गैर-अरब गुलाम जो भाड़े के सैनिकों के रूप में काम करते थे।
‘चूंकि वह आप दोनों को जहाज के रूप में आपकी सेवाओं का प्रतिफल नहीं
दे सका, इसलिए उसने हमें भेजा है।’ तब सभी अफ्रीकियों ने एक स्वर में कहा: ‘सिंदबाद के पास!’
उनके नेता ने कहा, 'मैं मार्कस हूं। और मैं तुम्हारा नाव का तोपची बन सकता हूं।'
सिन्बाद ने खुद को कप्तान घोषित करने वाले इदरीस की ओर देखा, जिसने बस कंधे उचका दिए। 'हाँ, जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही मज़ा आएगा। सब लोग सवार हो जाओ, लड़कों!'

जब वे रवाना हो रहे थे, तब सिंदबाद को क्वार्टरमास्टर का पद दिया गया। बोट्सवेन इदरीस द्वारा नियुक्त एक बुजुर्ग दल का सदस्य था जो प्रत्येक माल की देखरेख कर रहा था। जहाज में हथियार, गुलेल और सहायक नौकाएँ थीं।

सिन्बाद कोने में बैठकर सेब खा रहा था, जबकि हुसैन सिक्का उछालने में व्यस्त था। 'महमूद के ब्याज भुगतान को माफ कर दिया गया है। उसने मुझे बताया कि आपने इस बारे में फ़ज़ीन से बात की थी।'
‘हां,’ सिन्बाद ने कहा। ‘क्या वह हमारे यात्रा पर जाने से नाराज़ है?’
‘अरे, उसे लगता है कि हम कोई शैक्षिक यात्रा पर जा रहे हैं।’ हुसैन जोर
से हंस पड़ा। ‘मैंने उसे कुछ बेतुकी बातें बताकर राजी कर लिया।’
‘क्या आपने प्रेसा को देखा?’
नहीं, मैं अलविदा कहने गया था, लेकिन वह वहां नहीं थी।
सिन्बाद ने सिर हिलाया। उसे पता था कि वह ठीक हो जाएगी। उसने मार्कस
की ओर देखा जो जहाज के हथियारों का परीक्षण कर रहा था। वहाँ दुश्मन के जहाजों को रोकने के लिए इस्तेमाल किए जा सकने वाले लंबे भाले, ग्रीक अग्नि बमों से लैस गुलेलें और भी बहुत कुछ था।
‘मुझे नई कप्तान पसंद नहीं है,’ सिंदबाद ने सेब को जोर से चबाते हुए कहा। ‘वह मुझे मेरे पिछले मालिक की याद दिलाती है।’
लेकिन वो कम मुस्कुराता था, ज्यादा काम करता था। वो ज्यादा मुस्कुराती है। और मुझे लगता है कि वो कुछ छुपा रही है। मुझे नहीं पता कि वो क्या छुपा रही है, लेकिन वो जरूर छुपा रही है।'
'खैर, उसे पता है कि वह क्या करना चाहती है।'
'जब तक मैंने इसका जिक्र नहीं किया, तब तक उसने मुझे बताया ही नहीं कि हमें पूरब की ओर जाना होगा। मुझे लगता है कि वह हमसे कहीं ज्यादा जानती है।'
‘तुम बहुत ज्यादा सोच रहे हो, सिंदबाद,’ हुसैन ने कहा। ‘और वैसे भी, वह इतनी खूबसूरत है कि ऐसा कुछ कर ही नहीं सकती।’
'मुझे यह मत बताओ कि तुम उस पर मोहित हो गए हो।'
'सभी महिलाएं खूबसूरत होती हैं और वह... वह एक देवी हैं।'
‘तुमने देवियों को नहीं देखा है और मुझे उम्मीद है कि तुम कभी नहीं देखोगे। उनमें से अधिकतर मनुष्य से नफरत करती हैं, इसलिए...’
हुसैन की आंखें चमक रही थीं। सिंदबाद ने सिर हिलाया और अपना सेब खत्म किया। जैसे ही जहाज रवाना होने के लिए तैयार हुआ, उसने सेब को समुद्र में फेंक दिया। तख्ते उखाड़ दिए गए और जहाज को किनारे से बांधने वाली रस्सियां खोल दी गईं।

जहाज के चारों ओर मीलों तक फैले समुद्र को देखकर सिंदबाद को थोड़ी बेचैनी महसूस हुई। उसने अपना सिर घुमाया और देखा कि इदरीस उनकी ओर आ रहा है।
हुसैन, अब भी उसके आकर्षण में डूबा हुआ, बुदबुदाया, 'मेरी महारानी, यह मेरा बड़ा सौभाग्य है कि—'
‘क्या मैं सिंदबाद से अकेले में बात कर सकती हूँ?’ उसने हंसते हुए बीच में ही टोक दिया।
हुसैन असमंजस में दिख रहे थे। उन्होंने सिर हिलाया और निचले डेक की
ओर चले गए।
सिंदबाद ने देखा कि इदरीस उससे काफी लंबी खड़ी है। उसने कहा, 'देखो, मुझे पता है कि हमें हर बात पर सहमत होने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम एक बात पर मुझसे सहमत होगे।'
'और वह यह है कि?'
'हमें सफीना उमैर को मारना होगा,' उसने शांत चेहरे से कहा।
सिंदबाद का खून जम गया। उसने जाफ़र की कही बात पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया था। तुरही हासिल करने के अलावा, उसे उसे मारना भी था। पहला काम तो कठिन था, लेकिन दूसरा... बहुत बड़ा काम था।
‘क्योंकि वह प्रलय की घड़ी है। अगर हम ऐसा नहीं करते, तो यह स्थिति फिर से उत्पन्न हो सकती है। वह शैतान का हथियार है और मौका मिलते ही हमें उसे मार डालना चाहिए,’ उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘ठीक है?’
सिन्बाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'ज़रूर।'
‘मुझे हैरानी हो रही है, तुम्हें पता है।’ रेलिंग पर झुकते हुए वह हंस पड़ी। ‘मुझे हैरानी हो रही है कि उसके किए के बाद भी तुम उसकी परवाह करते हो।’
‘उसने क्या किया?’ सिंदबाद ने ऊपर देखा।
उसने उसकी ओर देखा और सोचा कि उसे यह स्पष्ट सत्य कैसे नहीं पता। 'तुम्हारा स्वामी, सिंदबाद।' उसने रुककर उसे उसके कठोर और कड़वे अतीत की याद दिलाई। 'उसने तीन साल पहले स्वामी रीस की हत्या कर दी थी।'

[redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

दूर ले जाऊँगा। मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हें एक ऐसा परिवार मिले जहाँ तुम खुश रह सको।’ उसने मुस्कुराते हुए उसके सिर पर थपथपाया।
सफीना ने अनिच्छा से ही सही, मुस्कुराकर जवाब दिया।
सिंदबाद को इस बात की खुशी थी कि मास्टर रीस के कठोर बाहरी रूप के नीचे कोमलता छिपी हुई थी।

वे चुड़ैल के घर पहुँच गए।
जाहिर तौर पर, लड़की कई बार पैदल चलकर वहां जा चुकी थी और उस जगह से पूरी तरह वाकिफ थी, इसलिए इससे उन्हें जल्द से जल्द कुटिया तक पहुंचने में मदद मिली।
जब तीनों उस जगह में दाखिल हुए, तो वह खाली थी। सिंदबाद ने अपना वह थैला उठाया जो अध्ययन की मेज पर रखा था और रीस ने अपनी तलवार और औषधि की थैलियाँ उठाईं जो सब एक साथ रखी थीं।
सिंदबाद ने कमरे का सावधानीपूर्वक जायजा लिया और उसे अजीब सा महसूस हुआ क्योंकि पिछली बार जब वह यहां आया था, तब वह खतरे में था।
जब वे सामने के दरवाजे से बाहर निकले, तो लड़की ने पूछा, 'आप कहाँ जा रहे हैं?'
‘वापस परिसर में चलते हैं। हमें बकरी राक्षस को हराने की योजना बनानी होगी,’ सिंदबाद ने जवाब दिया।
उसने सिर हिलाया। 'नहीं। नहीं। डरावना। बकरी के राक्षस से भी बदतर। हत्यारे।'
सिन्बाद ने मास्टर रीस की ओर देखा, जिन्होंने उसे उनसे बात जारी रखने
के लिए इशारा किया। 'लेकिन फिर और कहाँ?'
‘वहाँ को छोड़कर कहीं भी।’
क्या वहां रहने वाला कोई खास व्यक्ति आपको चोट पहुंचाता है?

उसकी आँखें चमक उठीं और इससे पहले कि वह कुछ और कह पाती— ‘अरे, तुम सबको देखो। एकदम परफेक्ट परिवार,’ चुड़ैल की आवाज़ आई। चौंककर सबने उसे सामने के रास्ते पर खड़े देखा, उसके पैर फैले हुए थे और वह हमले की मुद्रा में थी। ‘मैं तुमसे निराश हूँ, सफीना। भोर के देवता को तुमसे बहुत उम्मीदें थीं। लेकिन तुमने उन्हें और मुझे बहुत दुख पहुँचाया है। मैंने तुममें अथाह ऊर्जा लगाई और तुमने उसे यूँ ही बर्बाद कर दिया।’
उसकी आवाज़ मर्दाना होती जा रही थी। उसका चेहरा बदल गया, काला पड़ गया
और विकृत बारहसिंगे की तरह लंबा हो गया, और उसका शरीर भी बदलने लगा, हाथ मुड़कर लंबे होते गए और पैर छोटे होते गए। चुड़ैल के चमगादड़ जैसे विशाल पंख उग आए। काले आदमी ने मुस्कुराते हुए अपनी खोपड़ी चटकाई और उसमें से तीन भयंकर सींग निकल आए।
मास्टर रीस ने अपनी तलवार निकाल ली।
'आओ इसे करें।'

चौबीस

आज
वे सभी कप्तान के केबिन में कार्ययोजना पर चर्चा करने के लिए खड़े थे। सिन्बाद एक कोने में किताबों के ढेर से टेक लगाकर बैठा था। उसके बगल में हुसैन था, जो अपने सिक्के से खेल रहा था। उसने दूर कोने में मार्कस को देखा। सिन्बाद ने सोचा, उसका गंभीर चेहरा कितना डरावना लग रहा है। उसकी नाक में उसके नाक के बराबर बड़ी नथनी थी और उसकी मांसपेशियां गठीली थीं। उसकी कमरबंद में आगे की तरफ एक पीतल की ढाल और पीठ के निचले हिस्से में एक बड़ी कुल्हाड़ी थी।
इदरीस केबिन के बीच में एक कुर्सी पर बैठा था।
उसके सामने एक नक्शा रखा हुआ था, साथ ही पिशाचों के बारे में कागजों
के ढेर भी थे।
'आशा है कि आप जानते होंगे कि यह कोई साधारण यात्रा नहीं है, मार्कस,' इदरीस ने मुस्कुराते हुए कहा।
'मैंने अनांसी के पुत्र को अपने नंगे हाथों से पराजित किया है, कप्तान,' मार्कस ने गंभीरता से कहा।
‘बेटा? तुम्हारा मतलब एक विशाल मकड़ी से है?’
उसने सहमति में सिर हिलाया।
अनांसी एक धूर्त देवता था जो अपने मकड़ी जैसे जीवों से अफ्रीकी निवासियों को परेशान करने के लिए प्रसिद्ध था।
उन्होंने कहा, 'मुझे इस दुनिया में किसी चीज से डर नहीं लगता। ओगुन ओनिरे मेरी रक्षा करते हैं,' उन्होंने अफ्रीकी पौराणिक कथाओं में युद्ध और लोहे के देवता का जिक्र करते हुए यह बात कही।
‘वाह!’ इदरीस ने धीरे से ताली बजाई और सिंदबाद और हुसैन की ओर झुकते
हुए पीछे की ओर देखा। ‘अच्छा, जैसा कि आप जानते हैं, जहाज एल्फवुड से बना है, जिससे इसकी गति तेज हो जाती है, इसलिए हम ओमान की खाड़ी के करीब हैं और

योजना से एक दिन पहले सोहार पहुँच जाएँगे। आप सभी जानते हैं कि वहाँ पहुँचने पर हमें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, है ना?’
सिन्बाद को स्पष्ट रूप से नहीं पता था। वह बहुत समय पहले सोहार जा चुका था। 'मुझे पता है, लेकिन, हुसैन के लिए इसे फिर से याद दिला दीजिए।' हुसैन मुस्कुराया। 'जी हां, मेरी मालकिन।'
इदरीस ने अपना सिर हिलाया और केवल सिंदबाद की ओर देखते हुए कहा, 'तुमने अपने दोस्त अशरफिया से मदद लेने की योजना बनाई है, लेकिन क्या तुम नहीं जानते कि आदम की संतानें ओमान की सड़कों पर स्ट्रिगोई का शिकार करते हुए घूम रही हैं?'
हुसैन ने पूछा, 'आदम की संतान?'
‘पिशाच शिकारी,’ इदरीस ने झुंझलाहट भरी आह भरते हुए कहा। ‘वे खुद को “आदम की संतान” कहते हैं क्योंकि आदम, लिलीथ, प्रथम वैम्पायर का पति था, इससे पहले कि वह एक वैम्पायर बन गई और आदम ने उसे बहिष्कृत कर दिया, उसे दुनिया की गहराइयों में भेज दिया। लिलीथ ने बदला लेने के लिए उत्परिवर्तित स्ट्रिगिडे की महामारी फैला दी, जिससे दुनिया में वैम्पायरवाद का प्रसार हुआ।’
‘और वे खून नहीं चूसते,’ सिन्बाद ने आगे कहा। ‘यह एक आम गलतफहमी है। वे आपकी आत्मा चूस लेते हैं।’
हुसैन घबराकर हँस पड़ा। 'इससे क्या फर्क पड़ता है?'
‘लेकिन वे ऐसा करते हैं!’ इदरीस ने तुरंत कहा, मानो दोनों के बीच शब्दों की जंग चल रही हो। ‘स्ट्रिगोई, जैसे स्ट्रिगोई मोर्ट, प्राचीन पिशाच हैं और वे खून के प्यासे होते हैं। वे अपना असली रूप भी धारण कर सकते हैं, लेकिन वे मानव रूप में रहना पसंद करते हैं—यह उन्हें अच्छी सुरक्षा प्रदान करता है।’
‘मेरी दोस्त अशरफिया,’ सिंदबाद ने हुसैन की ओर देखते हुए बीच में ही बात काट दी, ‘वह है जिसे हम स्ट्रिगोइका कहते हैं, जो एक क्लेयरएलियंस वैम्पायर है—वह प्रकार जो स्पष्ट रूप से सूंघने की मानसिक शक्ति रखता है।’
‘बहुत ज्यादा बड़े-बड़े शब्द इस्तेमाल किए हैं। मैं बस एक बात जानना चाहता हूँ: क्या वह आत्माओं को भी खाती है?’

‘हाँ, लेकिन वे इंसानों जैसे हैं और धूप में रह सकते हैं। दरअसल, सभी पिशाच रह सकते हैं। यह एक और मिथक है जो फैलाया गया है क्योंकि अंधेरे को बुराई से जोड़ा जाता है, इसलिए पिशाचों को भी अंधेरे से जोड़ दिया गया,’ सिंदबाद ने समझाया। उसने इदरीस की ओर मुड़कर पूछा, ‘जब हम वहाँ पहुँचेंगे तो हम क्या करेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई योजना है?’
'मुझे लगता है कि आपको मुझे बताना चाहिए कि हम अशरफिया से कैसे संपर्क
कर सकते हैं। क्या आपके पास कोई पता है?'
सिन्बाद को कुछ भी पता नहीं था। उसने घबराकर कहा, 'हम, उम्म...'
इदरीस मुस्कुराया। 'कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हें पता ही नहीं कि वह कहाँ है। अभी तो मुझे बस यही लगता है कि हमें सोहार में तैनात एडम्स चिल्ड्रन के सार्जेंट ब्रदर केन से बात करनी चाहिए। मैं उन्हें थोड़ा- बहुत जानता हूँ और वो एक अच्छे इंसान हैं। शायद वो हमारी मदद कर सकें।' ‘लेकिन वे चरमपंथी हैं,’ सिन्बाद ने विरोध जताया।
क्या आपके पास कोई बेहतर विकल्प है?
लेकिन इससे पहले कि वह जवाब दे पाता, दरवाजे पर दस्तक हुई। इदरीस ने अंदर आने वाले व्यक्ति को अंदर आने दिया, जिसने कहा, 'कैप्टन... यहाँ, उह... खैर... आपको इसे खुद देखना होगा।'
सिन्बाद और हुसैन ने एक-दूसरे को देखा। वे केबिन से बाहर निकले और मार्कस और इदरीस के साथ सीढ़ियों से ऊपर चले गए। जैसे ही वे ऊपरी डेक पर पहुँचे, उन्होंने देखा कि चालक दल के सदस्य किसी चीज़ के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हैं और हलचल मचा रहे हैं।
सिन्बाद हुसैन के साथ भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ा और उन्होंने एक परिचित व्यक्ति को देखा, जो शराब से रहित एक शराब के घड़े से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था।
तेरह वर्षीय चीनी भविष्यवक्ता को देखकर सिंदबाद ने आह भरी और सिर हिलाया, 'प्रेसा।'

प्रेसा को पीने के लिए पानी दिया गया। केबिन में मौजूद सभी लोग उसे देख रहे थे। उसने चुपचाप पानी पिया और खिलखिलाकर हंसते हुए कहा, 'मैं और देर तक वहीं रहना चाहती थी, लेकिन बहुत गर्मी है।' 'ये कौन है?' इदरीस ने सिंदबाद से पूछा।
उन्होंने कहा, 'वह मेरी दोस्त है। और वह भविष्यवक्ता है।'
‘ओह, यह तो बहुत ही जोशीली है। गिल्ड वाली तो बूढ़ी और जंग खा चुकी है।’ इदरीस ने प्रेसा की ओर मुड़कर मुस्कुराते हुए पूछा, ‘बच्ची, तुम यहाँ क्यों हो? ये खतरनाक जगहें हैं।’
‘लड़की, मुझे किसी चीज़ से डर नहीं लगता,’ प्रेसा ने सीधे-सीधे कहा। ‘मैं आना चाहती थी, लेकिन इस लड़के ने,’ उसने सिंदबाद की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘मुझे आने नहीं दिया, इसलिए मैंने सोचा कि जब तक जहाज़ गहरे पानी में न चला जाए, तब तक मैं बैरल में ही क्यों न छिप जाऊं और फिर खुद को प्रकट कर दूं—ता-दा!’ वह उत्साह से मुस्कुराई।
सिन्बाद को उम्मीद थी कि इदरीस किसी तरह का जवाब देगी, लेकिन इसके बजाय, उसकी बैंगनी आँखें नरम पड़ गईं और उसने कहा, 'हमें आपकी मदद की ज़रूरत है।'
यह देखकर सिंदबाद अचंभित रह गया, लेकिन वह चुप रहा और उसने अपने हाथ अपनी छाती पर बांध लिए।
‘ज़रूर, मैं इसीलिए तो यहाँ हूँ,’ प्रेसा ने जवाब दिया और कप को मेज पर
रख दिया। ‘आप मुझे क्या दिखाना चाहते हैं?’
इदरीस मुस्कुराया और बोला, 'मुझे यह जानने की ज़रूरत है कि हम अशरफिया नाम की महिला को कैसे ढूंढ सकते हैं।'
प्रेसा ने आंखें बंद करते हुए सिर हिलाया।

सिंदबाद और हुसैन कुछ मिनटों तक देखते रहे जब मार्कस की विशालकाय आकृति उनके पीछे खड़ी थी, उनकी गर्दन पर सांस ले रही थी और उन्हें रोंगटे खड़े कर रही थी।
अचानक, प्रेसा ने हांफते हुए अपनी आँखें खोलीं। उसने कुर्सी के बाजूबंद कसकर पकड़ लिए। 'मैंने देखा कि... उफ़... मैंने देखा कि हमें कुछ... देवताओं को ढूंढने जाना होगा। लेकिन यह इतना डरावना क्यों था?'
‘तुम्हें लिलीथ के बच्चे के बारे में जानने का एक रास्ता मिल गया है। लिलीथ भविष्यवक्ताओं के लिए बुरी यादें लाती है, इसलिए हम तुम्हारा उपयोग बहुत ही कम कर सकते हैं,’ इदरीस ने कहा। ‘लेकिन फिर भी, मुझे उम्मीद है कि तुम जो जानकारी हमें दोगे वह हमें आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त होगी और हमें तुम्हारी मदद दोबारा नहीं मांगनी पड़ेगी।’
‘ठीक है, उम,’ प्रेसा ने मुश्किल से निगलते हुए कहा, ‘मैंने एक सफेद कपड़े पर एक लाल क्रॉस देखा और, उम... सुनहरी आँखें... परछाईंहीन... मैग्नस कुछ... सच कहूँ तो, मैं बस इतना ही देख पा रही हूँ।’
इदरीस ने सिंदबाद की ओर देखा और कहा, 'इससे मुझे जो एक बात समझ में आती
है, वह है रेड क्रॉस, और तुम जानते हो कि वे किस बात का प्रतिनिधित्व करते हैं। दुर्भाग्य से, सिंदबाद, तुम्हारे वैम्पायर को ढूंढने का एकमात्र तरीका वास्तव में उन लोगों से मिलना है जो उसका शिकार कर रहे हैं।'
और उसी क्षण, एक नई चिंता ने उसे घेर लिया।
वह अपनी दोस्त अशरफिया के भाग्य के बारे में सोच रहा था और यह भी कि क्या वह एडम के बच्चों नामक चरमपंथी, युद्धप्रिय समूह की हिरासत में थी।

पच्चीस

चार वर्ष पहले
सिन्बाद ने रीस को लियोनार्ड, उस अश्वेत व्यक्ति की ओर गुस्से में बढ़ते हुए देखा।
अपनी तलवार के साथ, वह फुर्ती से दौड़ा और फिर हवा के विपरीत दिशा में छलांग लगाते हुए, तलवार से राक्षस पर वार किया। लेकिन लियोनार्ड ने अपने पंख फड़फड़ाए और तुरंत अपनी जगह से उछलकर रीस की पीठ पर कूद गया और उसके कंधों को नोंचने लगा।
रीस दर्द से चीख उठा और उसने अपनी तलवार को बेतरतीब ढंग से घुमाया— आखिरकार वह तलवार की नोक को लियोनार्ड में घुसाने में कामयाब रहा और उसे कुछ हद तक घायल कर दिया।
‘सींग,’ सफीना ने सिंदबाद की ओर भयभीत निगाहों से देखते हुए कहा। ‘सींग। कमजोरी।’
सिन्बाद ने लियोनार्ड के सिर पर तीन सींग देखे जो उसकी भुजाओं जितने बड़े थे। वह चिल्लाया, 'मास्टर रीस! सींग!'
रीस ने शायद उसकी आवाज़ नहीं सुनी, लेकिन लियोनार्ड ने ज़रूर सुनी, क्योंकि वह मास्टर रीस को छोड़कर झोपड़ी के कोने में छिपे सिंदबाद और सफ़ीना की ओर उड़ गया। दोनों भागने लगे, लेकिन काला आदमी अपने चमड़े जैसे चमगादड़ के पंख फड़फड़ाते हुए उनसे कहीं तेज़ था। भागते हुए सिंदबाद ने अपनी आँखों के कोने से देखा कि लियोनार्ड अपनी हथेलियों में नीली ऊर्जा की लपटें पैदा कर रहा है और उन्हें सफ़ीना की ओर फेंक रहा है। इससे पहले कि वह उसे सावधान होने के लिए कह पाता, वे लपटें उसके सीने पर लगीं। वह पीठ के बल गिर पड़ी और बेहोश हो गई।
‘नहीं! सफीना!’ सिंदबाद उसकी ओर दौड़ा।

लेकिन वह राक्षस सिंदबाद के पास ही घात लगाए बैठा था। उसने अपना मुंह खोला और अपने भयानक दांत दिखाए जो सिंदबाद के सिर से मांस नोच डालने के लिए तैयार थे, लेकिन अचानक, एक अदृश्य शक्ति ने उसे पीछे धकेल दिया और धूल के गुबार के साथ उसे जमीन पर पटक दिया।
यह मास्टर रीस थे जो अपनी टेलीकाइनेटिक आकर्षण शक्ति का प्रयोग कर रहे थे, उनके दस्ताने पहने हुए उंगलियों से पीली चिंगारियां निकल रही थीं। सिन्बाद ने सफीना की नब्ज़ जाँची। वह धीरे-धीरे साँस ले रही थी, मानो गहरी नींद में हो।
वह ज़िंदा है। ऐसा लगता है जैसे उसने उसे सुला दिया हो ताकि वह दखल न
दे सके... इसका मतलब है... लियोनार्ड भी उसकी क्षमताओं से डरता है... सिन्बाद ने मास्टर रीस और लियोनार्ड पर नज़र डाली जो अपनी पूरी ताकत
से लड़ रहे थे। मास्टर रीस अपनी तलवार का इस्तेमाल करते हुए चमगादड़ के पंखों को रणनीतिक रूप से मोड़ रहे थे। फिर वे हवा में उछले और राक्षस की पीठ में वार कर दिया।
लेकिन कुछ नहीं हुआ, लियोनार्ड दर्द से कराह उठा लेकिन उसने दर्द को झटक दिया। तुरंत बाद, एक ज़ोरदार गर्जना हुई और वह आसमान में बहुत ऊपर उड़ गया।
मास्टर रीस सिंदबाद की ओर दौड़े और चिल्लाए, 'ऊपर देखो!' सैकड़ों मधुमक्खियाँ लियोनार्ड के पंखों के चारों ओर मंडरा रही थीं... और उसने उन सभी को सिंदबाद और मास्टर रीस की ओर निर्देशित कर दिया।
मधुमक्खियाँ एक साथ गति में उनकी ओर बढ़ने लगीं। मास्टर रीस ने एक मंत्र पढ़ा जिसके बाद उनके चारों ओर एक चमकीली नारंगी रंग की सुरक्षात्मक ढाल बन गई, जिसने मधुमक्खियों को पल भर में दूर कर दिया।
यह इतनी जल्दी हुआ कि केवल एक प्रशिक्षित जादूगर ही इसे अंजाम दे सकता था।
‘भागो!’ मास्टर रीस चिल्लाया।
‘मालिक, ये उसके सींग हैं। यही उसकी कमजोरी है।’
मास्टर रीस ने सिर हिलाया, लेकिन तभी ध्यान भटकने के उसी क्षण में, विशालकाय बकरी दानव तुरंत उनके करीब उड़कर आया, सिंदबाद की गर्दन पकड़कर उसे हवा में ऊपर खींच लिया, मास्टर रीस और उनके हमलों से दूर।

वह उसे ऊपर ले गया और सिंदबाद ने विकृत हिरण का चेहरा स्पष्ट रूप से देखा। उसकी काली आँखों के चारों ओर लाल धुआँ उठने लगा। उसके शरीर पर जगह-जगह से उखड़े हुए बाल चिपचिपे लग रहे थे और उसके पंजे सिंदबाद की गर्दन में धंस गए।
‘मुझे छोड़ दो...’ उसने हवा में ही राक्षस को मुक्के और लात मारते हुए मुश्किल से कहा।
मुझे नहीं पता कि वह तुम्हें क्यों पसंद करती है। शायद तुम्हारे मानवरूपी रूप के कारण। मैंने उसके लिए एक स्नेही माँ बनने की कोशिश की, लेकिन वह मुझे जानती थी और मुझसे डरती थी। तुमने उसे बिगाड़ दिया। तुमने भोर के देवता के हथियार को बिगाड़ दिया, और इसके लिए तुम्हें कभी क्षमा नहीं किया जाएगा।
‘वह निर्दोष है...’ सिंदबाद ने रुंधे हुए स्वर में कहा। ‘तुमने उससे भयानक काम करवाए।’
‘काला जादू गेंडों और परियों की कहानी नहीं है, बच्चे!’ पंजे और कस गए
और गहरे धंस गए। सिंदबाद की त्वचा से खून रिसने लगा।
यह सुनकर उसे लगा कि वह बेहोश हो जाएगा।
‘सिंदबाद! इसे पकड़ो!’
वह मास्टर रीस थे।
सिंदबाद को मदद की सख्त जरूरत थी, उसने लियोनार्ड की पकड़ से अपना हाथ छुड़ाया और उस तलवार को पकड़ लिया जिसे मास्टर रीस ने उसकी ओर फेंका था। थोकचा तलवार!
एक झटके में उसने बकरी जैसे राक्षस के तीनों सींगों को चकनाचूर कर दिया। वह भय और पीड़ा से चीख उठा। चमगादड़ के पंख चूर-चूर होने लगे। दोनों जमीन पर गिर पड़े। सिंदबाद सिर के बल गिरा और एक सख्त सतह से टकराया।
एक मिनट तक उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। धीरे-धीरे उसने अपनी आँखें खोलीं, लेकिन दृष्टि धुंधली थी। उसने गहरी साँसें लीं और खड़ा हो गया, तब उसे एहसास हुआ कि वह वास्तव में उस दानव पर गिरा था, जिसने तकिये का काम किया और शायद उसकी जान बचाई।
राक्षस जमीन पर पड़ा था, उसकी जीभ बाहर निकली हुई थी।

सिन्बाद ने आगे देखा और पाया कि मास्टर रीस मुस्कुराते हुए उसकी ओर आ रहे हैं।
‘तुमने कर दिखाया!’ उसने गर्व से मुस्कुराते हुए कहा और घुटनों के बल बैठ गया। सिंदबाद ने देखा कि उसके गुरु के शरीर पर भी उतने ही निशान थे जितने उसके। ‘तुमने कर दिखाया!’
सिंदबाद।
और लंबे समय बाद पहली बार, मास्टर रीस ने सिंदबाद को उसके नाम से पुकारा।

[redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

‘क्या आपको पता है कि आदम की संतानें कहाँ तैनात हैं?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘पता लगाना पड़ेगा।’
जब उन्होंने आसपास के इलाके का जायजा लिया, तो सिंदबाद ने एक वक्ता को नाले के पास एक चबूतरे पर खड़े देखा। वह बच्चों और अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए घंटी बजा रहा था।
सिंदबाद ने हुसैन को अपने साथ चलने का इशारा किया जबकि इदरीस आदम की संतान के बारे में दुकानदारों से पूछताछ करने चला गया। जैसे ही वे उस अनार के पेड़ के पास पहुँचे जिस पर वक्ता की छाया थी, उसकी आवाज़ गूंज उठी: ‘सुनो, सुनो, सब लोग! आदम की संतानों की वीरता की गाथाएँ।’ इसके बाद उन्होंने चरमपंथी ईसाई पिशाच शिकारियों के बारे में प्रभावशाली कहानियाँ सुनाईं।
हुसैन ने सिंदबाद से फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम्हें क्या लगता है कि इन झूठों को फैलाने के लिए उसे कितना पैसा मिलता है? क्या यह दुष्प्रचार इसलिए नहीं है क्योंकि तुमने मुझे बताया था कि बच्चे एक भयानक, फासीवादी शिकारी समूह हैं?'
‘हाँ, ऐसा ही है। लेकिन वक्ताओं को भीड़भाड़ वाली सड़कों पर लाने का
यह विचार रोम से लिया गया है। वहाँ यह बहुत प्रचलित है। खिलाफत के विपरीत, सल्तनत को बीजान्टिन लोगों के साथ व्यापार करना पसंद है,’ सिंदबाद ने उत्तर दिया।
वक्ता ने आगे कहा, “आदम के बच्चे पोप की देन हैं, जिन्होंने यह महसूस किया कि ओमान में लालची खून चूसने वाले जीव मौजूद हैं। सल्तनत के साथ मिलकर, आदम के बच्चों को यह खुली छूट दी गई है कि वे जो चाहें करें ताकि व्यवस्था और शांति बनी रहे और कोई राक्षस निवासियों का शिकार न कर सके। और उन्होंने अपने सैन्य दल को उनका शिकार करने और उन्हें सूली पर चढ़ाकर मारने के लिए भेजा। अपने शक्तिशाली नागफनी के हथियारों से—जो उस विशेष लकड़ी से बने हैं जो पिशाचों को मार सकती है—वे हर दिन उनका शिकार करते हैं ताकि हम सभी रात को चैन से सो सकें।”
सिंदबाद और हुसैन ने अपने पीछे खांसी की आवाज सुनी।
उन्होंने मुड़कर देखा तो इदरीस के हाथ में एक चर्मपत्र का टुकड़ा था। एल्डर सेइड ने कहा, 'एक डीलर को पैसे दिए और उनका पता पता कर लिया।'

वे शहर के बिल्कुल बीचोंबीच काम करते हैं। आइए।

जैसे ही वे एकांत भीतरी शहर में स्थित आदम के बच्चों के किले के पास पहुँचे, सिंदबाद ने तैनात सैनिकों को देखा। कुछ सैनिक अपनी कंटीली तलवारें तेज कर रहे थे, जबकि कुछ आपस में बातचीत कर रहे थे। सभी ने शूरवीरों की तरह सफेद कवच पहन रखा था और लंबी, लहराती हुई काली चादर ओढ़ रखी थी जिस पर लाल क्रॉस की कढ़ाई थी। सिंदबाद ने उनकी अनोखी कंटीली तलवारों पर ध्यान दिया—वही तलवारें जिनका जिक्र वक्ता ने किया था। इदरीस पीले किले के प्रवेश द्वार की ओर चला, जहाँ दो पहरेदार सावधान मुद्रा में खड़े थे।
उनमें से एक ने इदरीस से पूछा, 'हम आपकी किस तरह मदद कर सकते हैं, मिस?'
‘मैं यहां भाई केन से मिलने आया हूं। उन्हें बता देना कि निनुर्ता गिल्ड की मालकिन इदरीस यहां हैं। वह मुझे जानते हैं,’ इदरीस ने कहा।
‘भाई केन?’ एक गार्ड ने पूछा। ‘जी हां, महोदया।’ उनके इंतजार करते हुए
एक गार्ड अंदर चला गया।
सिंदबाद ने पूछा, 'यह भाई केन कैसा है?'
इदरीस ने कहा, 'वह काफी गंभीर स्वभाव का आदमी है। वह बातों को घुमा- फिराकर नहीं कहता और उसे सामाजिक मेलजोल से नफरत है। उसे संगीतकारों का शौक है और अच्छे गाने सुनना पसंद है।'
‘अच्छा, तो फिर हम दोनों में कुछ तो समानता है।’ हुसैन मुस्कुराया।
‘उसे अपना काम बहुत पसंद है और स्ट्रिगोई से उसे सख्त नफरत है। सचमुच नफरत,’ इदरीस ने आगे कहा। ‘मैंने सुना है कि उसने सौ से ज़्यादा स्ट्रिगोई को कीलें ठोककर मार डाला है। वह सबसे ताकतवर शिकारियों में से एक है।’ 'मुझे उम्मीद है कि अशरफिया उनमें से एक नहीं है, अन्यथा हम अपनी एकमात्र बढ़त खो देंगे।'
गार्ड वापस आया और उनसे अंदर आने के लिए कहा।

जैसे ही वे आगे बढ़े, सिंदबाद ने ध्यान से चारों ओर देखा और पाया कि भाई तलवारबाजी कर रहे थे, जबकि अन्य लोग कुश्ती लड़ रहे थे। वहाँ रंग-बिरंगी खिड़कियाँ थीं। वे एक छोटे से आँगन में पहुँचे जो झाड़ियों से घिरा हुआ था। पहरेदार ने एक दरवाजा खोला और वे सभी एक तरह की जेल कोठरी में प्रवेश कर गए, जहाँ कोनों में गमले रखे हुए थे, जो बिल्कुल विपरीत दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे।
और ऐसे ही एक कोने में एक लंबा, बड़े सिर वाला आदमी बैठा था, जिसकी पीठ उनकी ओर थी। वह एक गमले के पास घुटनों के बल बैठा एक फूल को सूंघ रहा था। उस आदमी के बगल में एक स्ट्रिगोई था।
उसकी सफ़ेद त्वचा के नीचे गहरी लाल नसें उभरी हुई थीं। उसके बाल घने काले थे और उसके दांत इतने बड़े थे कि वह अपने मुंह में समा नहीं पा रहा था। उसे दीवार से जंजीरों से बांधा गया था और उसके शरीर पर जलने के कई निशान थे।
सिन्बाद ने सोचा कि क्या भाई कैन ने अशरफिया को इसी हालत में रखा था, लेकिन उसने इस विचार को मन से निकाल दिया।
फूल को सूंघने के बाद, ब्रदर केन ने पंखुड़ियाँ तोड़ लीं और स्ट्रिगोई की ओर चल पड़ा। सिसकता हुआ पिशाच डरा हुआ था और लगभग रोने ही वाला था, लेकिन केन ने उसकी परवाह नहीं की। उसने अपने दस्तानों से ढके हाथों से उसका मुंह खोला और पंखुड़ियाँ उसके मुंह में ठूंस दीं, और उन्हें वहीं रहने दिया।
पिशाच विलाप करता हुआ जल रहा था। उसके भीतर की रोशनी बुझने के साथ ही धुएं के गुबार उठने लगे।
‘वाह!’ भाई केन ने पीछे मुड़ते हुए खुशी से ताली बजाई।
सिंदबाद ने उसकी सुनहरी आँखों पर ध्यान दिया।
प्रेसा ने यही देखा।
‘मुझे सेइड परिवार से मिलने का सौभाग्य किस कारण से मिला?’ उसने एक निपुण रोमन लहजे में पूछा।
केन निस्संदेह एक सुंदर व्यक्ति था। लेकिन उसकी मुस्कान, भले ही वह गर्मजोशी और खुशी से भरी थी, सिंदबाद को विचित्र और क्रूर लगती थी।
‘मैं यहां एक पिशाच के बारे में बात करने आया हूं। अशरफिया। उम्मीद है
आप उसे जानते होंगे।’

भाई केन की मुस्कान फीकी पड़ गई। 'बेशक, मैं जानता हूँ। लेकिन एक अनुभवी शिकारी उसकी तलाश क्यों कर रहा है?'
‘यह मैं ही हूँ,’ सिन्बाद ने कहा। ‘मैं उसे व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ। वह मेरी दोस्त है।’
‘चलो, केन, सच बताओ,’ इदरीस ने कहा।
केन मरे हुए स्ट्रिगोई से दूर चला गया, पास के नल के नीचे अपने दस्ताने धोए और अपना चेहरा धोने के लिए घुटनों के बल बैठ गया। कोठरी बदबूदार थी और उसमें चूहे थे, लेकिन केन को इसकी परवाह नहीं थी। 'जानते हो, मुझे बहुत खुशी है कि तुम लोग यहाँ हो।' वह उठा और सिंदबाद और हुसैन की ओर चल पड़ा। 'क्या तुम दोनों भी शिकारी हो?'
हुसैन ने अपना सिर हिलाया।
सिंदबाद ने एक शब्द भी नहीं कहा।
‘अरे, तो आप हैं।’ कैन ने सिंदबाद की ओर मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैं भाई कैन हूँ।’
आपसे मिलकर खुशी हुई।'
‘सिंदबाद।’
‘बहुत खूब, सिंदबाद।’ वह इदरीस की ओर मुड़ा। ‘सेइड्स काफी मददगार और ताकतवर होते हैं क्योंकि वे लगातार तरह-तरह के पेय पीते रहते हैं और उनकी शारीरिक क्षमता की परीक्षा होती रहती है। है ना? और वे हम इंसानों जैसे नहीं हैं। वे कहीं ज़्यादा श्रेष्ठ हैं। सुनो, तुम दोनों के लिए मेरे पास एक काम है।’
'हम यहां कोई काम करवाने नहीं आए हैं,' सिन्बाद ने झल्लाकर कहा।
‘और तुम्हें लगा कि मैं यूं ही जानकारी लीक कर दूंगा?’ केन ने उंगलियां चटकाते हुए मुस्कुराते हुए कहा। ‘लेकिन मैं फिर भी लीक करूंगा। अशरफिया उस महल में है जो कॉन्स्टैंटा के मैग्नस नाम के स्ट्रिगोई मोर्ट का है। वह रोम में एक बैरन था, लेकिन भाग निकला और यहां आ गया और अब लोगों को नुकसान पहुंचाता है। वह इस समय वहीं है।’
‘तुम्हें कैसे पता?’ इदरीस ने पूछा।
‘उसने मेरे लिए जासूस के तौर पर काम किया है।’
इदरीस खिलखिलाकर हँसा। 'भाई केन एक पिशाच से मदद ले रहा है।'
अजीब लगता है।'

‘मुश्किल समय में कड़े कदम उठाने पड़ते हैं। लेकिन आप उसकी मदद नहीं
कर पाएंगे।’ केन ने कंधे उचका दिए।
सिंदबाद ने मुट्ठी भींच ली। 'क्यों?'
क्योंकि वह सौ से अधिक स्ट्रिगोई से घिरी हुई है। और उसकी मदद करने वाला एकमात्र व्यक्ति मैं ही हूँ। मैं अंदर घुसकर किले को ध्वस्त कर सकता हूँ और उसे बाहर निकाल सकता हूँ। लेकिन मेरे हाथ बंधे हुए हैं, क्योंकि अगर मैं उसे बचा लेता हूँ, तो एक जासूस के रूप में उसे जो हासिल करना था, उसे खोने का खतरा है।
'आपकी क्या अपेक्षा है जो हम करें?'
‘महल में शादी हो रही है। लताएँ भी मिलन का जश्न मना रही हैं!’ वह हँसते हुए बोला, लेकिन उसकी मुस्कान उसकी आँखों तक नहीं पहुँची। ‘उन्होंने दुनिया भर से स्ट्रिगोई को आमंत्रित किया है। तो, मैं आपसे यह चाहता हूँ: उन्हें बताएँ कि आप अशरफिया के दोस्त हैं—वैसे, यह लड़का वास्तव में है— और उससे मिलें। उसके पास जो भी जानकारी है, उसे इकट्ठा करें और मुझे वापस बताएँ।
मैं किले को ध्वस्त कर दूंगा और अशरफिया को तुम्हारे पास ले आऊंगा,’ उसने कहा। ‘यह तो बिल्कुल स्पष्ट है।’
'अगर खुफिया जानकारी हासिल करने के चक्कर में हम अशरफिया को भी बाहर निकाल लें तो क्या होगा?' सिन्बाद ने पूछा।
‘असंभव। तुम्हें पता चल जाएगा क्यों,’ केन ने कहा। ‘क्या हमारा सौदा
हो गया?’ सिंदबाद ने आखिरी बात पर ध्यान नहीं दिया। ‘क्या जानकारी है?’ ‘कुछ ऐसा जिससे मैग्नस को नुकसान हो सकता है। कुछ ऐसा जिसकी मुझे ज़रूरत है।’ और कुछ?’ केन ने पूछा।
इदरीस ने कहा, 'हम ही क्यों?'
‘क्योंकि तुम सेइड्स हो। तुम्हारा हर जगह स्वागत है, यहाँ तक कि किसी बेवकूफी भरी पिशाच की शादी में भी, बशर्ते तुम्हारा उन्हें नुकसान पहुँचाने का कोई इरादा न हो।’ वह मुस्कुराया और उसकी मुस्कान में बेसब्री और लालच साफ झलक रहा था।
'मुझे तुम पर भरोसा नहीं है,' सिंदबाद ने सपाट लहजे में कहा।
‘आह!’ भाई केन ने नाटकीय अंदाज़ में अपनी छाती के दाहिने हिस्से को सहलाया। ‘बहुत दर्द हुआ। इदरीस, प्यारे बच्चे, उसे बता देना कि मैं कितना

भरोसेमंद हूँ और मैं हमेशा अपना वादा निभाता हूँ, क्योंकि तुम्हें पता है कि तुम्हारे साथ जो भी हुआ, मैं तुम्हारी मदद के लिए वहाँ मौजूद था।’ सिंदबाद ने इदरीस की ओर देखा, जिसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
‘ठीक है। चलो शुरू करते हैं,’ इदरीस ने सिंदबाद की चौंकी हुई निगाहों
को नजरअंदाज करते हुए कहा।
'बहुत बढ़िया। काम पूरा हो जाने पर, रुब अल खली रेगिस्तान में एडम चिल्ड्रेन की चौकी पर मुझसे मिलो,' उसने कहा और बाहर निकल गया, एक लालटेन के पास से गुजरते हुए, जिस पर एक तेज रोशनी पड़ रही थी।
और सिंदबाद ने कुछ गौर किया।
भाई केन की कोई परछाई नहीं थी।

सत्ताईस

चार वर्ष पहले
सिंदबाद जानता था कि उनमें से एक चुड़ैल के लिए काम करता था।
लेकिन उसे नहीं पता था कि वह कौन था।
गंदे शीशे के कोने से उसने कप्तान अब्दुल और कमांडर कासिम को झाँका।
बाहर उत्सुक ग्रामीणों की भीड़ जमा थी। खिड़की की ओर पीठ करके मास्टर रीस खड़े थे, जो उन्हें समझाने की कोशिश कर रहे थे कि उन्होंने शैतान का हथियार उनके परिसर में क्यों लाया है।
‘तुम्हें उसे मार डालना होगा!’ गांव वालों में से एक चिल्लाया।
सिन्बाद का खून जम गया जब उसने अपनी नई दोस्त सफीना को देखा, जो उसके बिस्तर पर शांति से सो रही थी। लियोनार्ड द्वारा किए गए जादू के बाद से, जिससे उसे चोट लगी थी, वह जाग नहीं पाई थी। मास्टर रीस ने सिन्बाद को भरोसा दिलाया था कि वह ठीक हो जाएगी। उन्होंने उस पर कुछ तेल लगाए थे और उसे चिंता न करने को कहा था।
कासिम ने आगे कहा, 'जी मालिक। मेरा मानना है कि हमें उसे जंगल में ले जाकर उससे छुटकारा पा लेना चाहिए।'
सिंदबाद ने बाहर कमांडर की आवाज सुनी और उसे बहुत बुरा लगा। वह उससे छुटकारा पाना चाहता था।
‘हमें उसे अपने पास रखना होगा!’ रीस ने कहा। ‘मैंने तुमसे कहा था, मैंने नरक के दानव से बात की है और उसने तुम्हें आश्वासन दिया है कि इसमें उसका कोई हाथ नहीं है।’
सिंदबाद जानता था कि वह झूठ बोल रहा है।
सिंदबाद इस बारे में सोचते-सोचते थक गया और उसकी आँखें भारी हो गईं, इसलिए उसने उन्हें बंद कर लिया। जब वह जागा तो उसने खुद को एक अंधेरे कमरे में पाया और लालटेनें बुझी हुई थीं।

उसने फिर बाहर देखा, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। उसने मास्टर रीस को कमरे में ढूँढा, लेकिन वह भी वहाँ नहीं थे। शायद परिसर में कुछ सुरक्षा कवच लगाने गए होंगे।
सिंदबाद ने कमरे के दूसरी तरफ से धीमी कराहने की आवाज सुनी और वह रेंगकर वहां पहुंचा तो उसने देखा कि सफीना जाग रही थी और मासूमियत और बच्चे जैसी अदा से उसे देख रही थी।
‘हे,’ सिंदबाद ने धीरे से कहा।
सफीना एक पल के लिए घबरा गई। फिर वह शांत हुई और बोली: 'कहाँ?'
‘तुम सुरक्षित हो।’ वह उसे यह नहीं बताना चाहता था कि वे परिसर में हैं।
‘बिस्तर। बिस्तर क्यों?’
‘चिंता मत करो। हम इस द्वीप से भागने का रास्ता ढूंढ रहे हैं,’ उसने पूरी ईमानदारी से कहा, हालांकि उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि मास्टर रीस क्या करने वाले हैं।
उसने बाहर देखा, जहाँ चाँदी जैसी रोशनी खिड़की से अंदर आ रही थी और
नाच रही थी। यह उस दिन की रात थी जब सिंदबाद का राक्षस से युद्ध हुआ था— जिस बात ने उसे साहसी महसूस कराया।
‘बकरी का राक्षस?’ सफीना ने पूछा।
मैंने उसे मार डाला।
उसकी आंखें चौड़ी हो गईं। 'वाह!' उसने उसकी प्रशंसा करते हुए उसके सिर
पर थपथपाया।
‘यह क्या है? मैं कुत्ता नहीं हूँ।’
‘नहीं।’ वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। ‘मैं अपने पालतू जानवरों के साथ ऐसा करती थी जब वे मेरे साथ खेलते थे। पहले करती थी। रॉक...’ उसकी आँखों में उदासी छा गई।
‘सफीना, इसके बारे में मत सोचो... मुझे बताओ कि तुम ग्रामीणों के बारे में क्या जानती हो।’
उसने अपना सिर हिलाया और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। 'उन्होंने मेरे परिवार की हत्या कर दी... क्यों? काश मुझे पता होता। पता नहीं।'
‘क्या आपने उन्हें ऐसा करते देखा?’
उसने अपना सिर हिलाया।

‘तो फिर आपको कैसे पता चला कि उन्होंने ही यह किया?’
कप्तान ने मुझे बताया।
सिन्बाद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। यह महत्वपूर्ण जानकारी है। 'आपका मतलब कैप्टन अब्दुल से है?'
मुझे उसका नाम नहीं पता।
सिंदबाद बोलने के लिए मुंह खोलने ही वाला था कि दरवाजा चरमराते हुए खुल गया।
दोनों ने अपना सिर घुमाया और सिंदबाद ने चौड़े चेहरे और मजबूत कद-काठी वाले एक परिचित व्यक्ति को अंदर प्रवेश करते देखा।
वह कैप्टन अब्दुल थे और उनके हाथ में तलवार थी।
कप्तान चिल्लाया, 'मैं तुम्हें मार डालूंगा और मेरी सारी चिंताएं जल्द ही दूर हो जाएंगी। मैंने यह सुनिश्चित कर लिया है कि तुम्हारा मालिक मेरे बॉस के साथ व्यस्त है, जबकि मैं यह सुनिश्चित कर रहा हूं कि यह दुर्घटना हो जाए।'
भयभीत होकर सिंदबाद ने उस आदमी की ओर देखा, जिसकी निगाह सफीना पर नहीं बल्कि उस पर टिकी हुई थी।
सफीना सिसकते हुए बोली, 'तुम मुझे परिसर में ले गए थे?'
मैंने किसी को नहीं बताया। मेरे लिए यहां रहना खतरनाक है।'
सिन्बाद को यह सोचकर पेट में अजीब सी बेचैनी होने लगी कि उसने उसे धोखा दिया है, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, अब्दुल उस पर झपटा। सिन्बाद लुढ़क गया।
अब्दुल ने अपनी तलवार उठाई और उस पर वार करने की कोशिश की, तलवार लकड़ी के फर्श से टकराई और उसमें दरारें पड़ गईं। सिंदबाद घबराकर पीछे हट गया। चांदी जैसी चमकती रोशनी में और उसकी लाल आँखों के कारण, अब्दुल मानो क्रोध का साक्षात रूप लग रहा था।
कोने में एक मोमबत्तीदान गिर गया और सिंदबाद ने झट से उसे उठा लिया। जैसे ही अब्दुल ने दूसरा वार किया, सिंदबाद ने मोमबत्तीदान को आगे लाकर हमले को रोक दिया।
‘मुझे नहीं पता कि वह तुममें क्या देखती है,’ अब्दुल गुर्राया। ‘लेकिन तुम उसका ध्यान भटकाते हो और ध्यान भटकाने वाली चीज का ध्यान भटकाना जरूरी होता है।’

तलवार का एक और वार हुआ, और इस बार सिंदबाद को बहुत दर्द हुआ क्योंकि तलवार का नुकीला सिरा उसके पैरों को छूकर निकल गया। वह लड़खड़ाते हुए दूर जाने की कोशिश करने लगा, लेकिन
अब्दुल उससे काफी लंबा खड़ा था और गुस्से से घूर रहा था।
और सिंदबाद को कुछ एहसास हुआ। 'तुम इब्लिस के लिए काम करते हो या लियोनार्ड के लिए?'
अब्दुल कुछ पल के लिए असमंजस में पड़ गया।
इस मौके को हाथ से जाने न देते हुए, सिंदबाद ने तुरंत कप्तान के पैरों
के बीच लात मार दी।
दर्द से कराहते हुए अब्दुल का चेहरा सिकुड़ गया और वह अपने गुप्तांग
को पकड़कर ज़मीन पर गिर पड़ा। लेकिन उसने अपना चाकू नहीं छोड़ा। उसका चेहरा लाल हो गया था। वह फिर उठा और सिंदबाद पर वार करने की कोशिश की, लेकिन सिंदबाद ने पूरी ताकत से मोमबत्ती स्टैंड से अब्दुल के सिर पर वार किया।
कप्तान खून से लथपथ होकर जमीन पर गिर पड़ा।
सिन्बाद ने अपनी सांस और होश संभालने की कोशिश की। तो, कैप्टन अब्दुल
ही वह अंदरूनी सूत्र था जो लियोनार्ड की मदद कर रहा था। क्या वह इब्लिस के लिए भी काम करता था? एक आम अनुयायी? सफीना!
उसने कमरे के अंधेरे में उसे ढूंढने के लिए चारों ओर देखा, तभी उसे कड़वी सच्चाई का एहसास हुआ।
वह भाग गई थी।

अट्ठाईस

आज
वे रुब अल खली रेगिस्तान में थे।
चूंकि लगभग रात हो चुकी थी, इसलिए गर्मी उतनी तीव्र नहीं लग रही थी, लेकिन ठंड का मौसम ही उसे परेशान कर रहा था।
घोड़े पर बैठे सिंदबाद के चेहरे पर ठंडी हवा लग रही थी और उसने अपने चारों ओर शॉल लपेट ली। उसके बगल में इदरीस दूसरे घोड़े पर बैठी थी, उसका चेहरा दुपट्टे से ढका हुआ था, और यद्यपि उसे हवा में ठंडक महसूस हो रही होगी, सिंदबाद को इसका कोई संकेत नहीं दिखाई दिया। यहाँ तक कि उसके चेहरे पर हल्की सी भी सिकुड़न नहीं दिखी।
वे निर्धारित स्थान की ओर बढ़ रहे थे। लेकिन पूरे रास्ते उनके बीच सन्नाटा छाया रहा। सिंदबाद चाहता था कि हुसैन भी साथ आए, लेकिन यह असंभव था क्योंकि यह पिशाचों का अड्डा था और पिशाच इंसानों का खून पीते थे। सिंदबाद को परेशान हुसैन को समझाना पड़ा कि स्ट्रिगोई या पिशाच सेइड्स का खून नहीं पीते, क्योंकि बहुत सारे जादुई पेय, मंत्र और अन्य कई चीजों के प्रभाव से उनकी आत्माएं दूषित हो चुकी थीं। दरअसल, वे उनसे दूर ही रहते थे क्योंकि सेइड्स उनके लिए स्वास्थ्य के लिए हानिकारक थे।
वे रुक गए और इदरीस ने विशाल रेगिस्तानी बंजर भूमि में जीवन के संकेतों की तलाश करने के लिए अपनी दूरबीन निकाली, जहाँ हर 500 गज पर एक नखलिस्तान था।
‘तुम भाई केन को कैसे जानते हो?’ सिंदबाद ने पूछा।
'इससे तुम्हारा कोई संबंध नहीं।'
मुझे उस पर भरोसा नहीं है। उसने कहा कि मुझे तसल्ली के लिए आपसे बात करनी चाहिए। तो, मुझे बताइए।

इदरीस ने उसकी ओर देखा, उसकी बैंगनी आँखें सिंदबाद की आत्मा में उतर गईं। 'मैं उसकी गारंटी दे सकती हूँ। वह अपना वचन निभाता है। मैं तुम्हें यह आश्वासन देती हूँ।'
‘जब तुम्हें पता था कि किसी देवता को वश में करने से कहीं ज़्यादा आसान स्ट्रिगोई से संपर्क करना होगा, तो तुम शुरू से ही उनके खिलाफ क्यों थे?’ सिंदबाद ने अपनी भौंहें उठाईं। ‘किसी देवता को वश में करने में कम से कम तीन से पाँच दिन लग सकते हैं, और मैं किसी मामूली प्राचीन जल देवता की बात नहीं कर रहा हूँ। आखिर तुम किससे भाग रहे हो?’
‘बीता हुआ कल,’ उसने सीधे-सीधे जवाब दिया। ‘हालांकि अब... खैर, दुनिया खत्म होने में लगभग चार दिन बचे हैं, इसलिए अगर यह बातचीत खत्म हो गई है, तो हमें अपनी गति बढ़ानी चाहिए।’
सिंदबाद ने कंधे उचकाए। 'ठीक है। तुम आगे चलो।'

वह उसे देख सकता था। और स्पष्ट रूप से, वह किसी भी तरह से घोंसला नहीं था।
उसके सामने विशाल पर्वत और बलुआ पत्थर और गारे से बने किले खड़े थे। जैसे-जैसे वे करीब आते गए, सिंदबाद को तुरही और ढोल की आवाज़ें सुनाई दीं। फिर उसने लोहे की जाली वाले द्वार देखे, जिनकी दोनों ओर काले वस्त्र पहने दो स्ट्रिगोई पहरा दे रहे थे। और दर्जनों लोग, बेहतरीन वस्त्र पहने हुए, अपने घोड़ों और ऊंटों पर सवार होकर अंदर जा रहे थे।
‘वाह, यह तो बहुत शानदार है,’ सिंदबाद ने कहा।
‘मैंने इसकी उम्मीद नहीं की थी। एक स्ट्रिगोई की शादी! वाह! क्या बात है!’ इदरीस मुस्कुराई। सिंदबाद भी मुस्कुराया। इदरीस को मुस्कुराते हुए देखना अच्छा लगा, क्योंकि उसने काफी समय से मुस्कुराया नहीं था।
वे द्वार तक पहुँच गए, रास्ते में उन्हें कुछ स्ट्रिगोई यात्री मिले
जो अधिकतर हानिरहित थे। उनके पीछे गाड़ियाँ और कारवां भी आ रहे थे।

पहरेदारों ने सिंदबाद और इदरीस की ओर देखा।
उनमें से एक ने पूछा, 'निमंत्रण?' उसका लहजा भारी था, लेकिन कर्कश नहीं। बस विदेशी था।
अगर सिंदबाद को यह पता न होता कि वे मनुष्यों की आत्माओं को चूस लेते हैं, तो वह इन दोनों को किसी अन्य इंसान की तरह ही समझता।
‘हम स्ट्रिगोई नहीं हैं,’ इदरीस ने कहा। ‘हम सेइड्स हैं।’
गार्ड ने उनकी गंध महसूस की और गुर्राया। उसने दूसरे गार्ड की ओर देखा और कहा, 'हमें इनके बारे में क्या करना चाहिए?'
दूसरे पिशाच के कुछ कहने से पहले ही इदरीस ने बड़े ही आकर्षक ढंग से जवाब दिया, 'कुछ नहीं। मैं यहाँ इसलिए आया हूँ क्योंकि मैं कॉन्स्टैंटा के मैग्नस को शादी की बधाई देना चाहता हूँ। हम यहाँ उनके किसी परिचित - अशरफिया - के मेहमान हैं।'
गार्डों ने एक-दूसरे की ओर देखा।
उनमें से एक ने कहा, 'चलिए आपको उस महिला के पास ले चलते हैं - हम कहें
कि वह मिलने आई है?'
‘सिंदबाद और इदरीस।’
उसने सिर हिलाया। एक रक्षक अन्य मेहमानों का स्वागत करने के लिए वहीं रुका रहा, जबकि दूसरा रक्षक उन्हें अंदर ले गया और उनसे कहा कि वे अपनी घोड़ियों से उतरें और महल के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर उसके पीछे चलें। सिंदबाद और इदरीस एक साथ चल रहे थे और चारों ओर मधुर संगीत और खाने की खुशबू फैली हुई थी। हर तरह की रोटियाँ और शराब उपलब्ध थीं। स्ट्रिगोई बच्चे फव्वारों, मनोकामना पूरी करने वाले कुओं और भव्य फूलों की सजावट के बीच उछल-कूद कर रहे थे। व्यवस्थापक सब कुछ व्यवस्थित रखने में जुटे हुए थे, वहीं बाज़ीगर और नर्तक अपने प्रदर्शन से दर्शकों का मनोरंजन कर रहे थे। यह एक भव्य आयोजन था और एक पल के लिए सिंदबाद का मन हुआ कि वह यहीं रुककर इस माहौल का आनंद ले। तारों से भरा आकाश इतना सुंदर पहले कभी नहीं लगा था और हवा इतनी ताज़ी कभी महसूस नहीं हुई थी।
‘मुझे नहीं पता कि अशरफिया किस रूप में जासूसी कर रही थी। शायद कोई बारमेड हो,’ सिंदबाद ने इदरीस से कहा।
‘अच्छा, वो मैग्नस के इतने करीब है कि उसे जानकारी मिल जाती है, तो वो ज़रूर कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति होगी। शायद कोई दासी? कोई सलाहकार?’ इड्रिस

ने कहा, तभी कुछ खूबसूरत पिशाच उसके पास से गुज़रे। ‘आह, पुरानी यादें ताज़ा हो गईं।’
सिंदबाद ने तिरछी नज़र से उसे देखा। 'यात्रा के दौरान, मेरे मन में कुछ सिद्धांत आए थे।'
'क्या?'
‘तुम्हारे एक पुरुष पिशाच से कुछ संबंध थे, इसीलिए तुम्हें स्ट्रिगोई
और ब्रदर केन के बारे में पता था। और इस पिशाच ने तुम्हें धोखा दिया या कुछ ऐसा ही हुआ।’
उसने उसे गुस्से भरी निगाहों से देखा। 'जिन चीजों के बारे में तुम्हें जानकारी नहीं है, उनके बारे में मत बोलो। और तुम्हें मेरे अतीत में इतनी दिलचस्पी क्यों है?'
‘क्योंकि हम दुनिया को बचाने के मिशन पर जा रहे हैं—तो क्यों न एक-दूसरे को जान लें।’ सिंदबाद ने शरारती मुस्कान के साथ कहा।
‘तुम तो बिल्कुल सिरदर्द हो,’ उसने चिड़चिड़ाते हुए कहा।
सिंदबाद मुस्कुराया और चारों ओर देखा। उसने हजारों पिशाचों को देखा
और उसे समझ में आ गया कि भाई केन ने क्यों कहा था कि अशरफिया को बाहर निकालना असंभव होगा।
लेकिन वह अभी भी चुपके से बाहर निकल सकती है।
सिंदबाद ने गैलरी में पहुंचते ही चमकीले वस्त्र पहने स्ट्रिगोई के
एक समूह को देखा। गमलों से घिरे, गैलरी के अंतिम छोर पर स्थित वह क्षेत्र स्ट्रिगोई से भरा हुआ था और वहीं शाही जोड़ा ऊंचे चबूतरे पर बने अपने सिंहासनों पर बैठकर मेहमानों का स्वागत कर रहा था।
सिंदबाद और इदरीस गार्ड के साथ आगे बढ़े, भीड़ के बीच से गुज़रते हुए,
जो उन्हें उत्सुक निगाहों से देख रही थी और आपस में बातें कर रही थी। अंततः वे आगे पहुंचे और शाही जोड़े के सामने खड़े हो गए।
सिंदबाद ने पहली बार बैरन को देखा।
कॉन्स्टैंटा के मैग्नस कद में छोटे थे। उनके गहरे भूरे बाल पीछे की
ओर कंघी से संवारे हुए थे। उनकी आंखें कोयले जैसी काली थीं, चेहरा दुबला- पतला था और दाहिने गाल पर एक निशान था। उन्होंने सोने के आभूषण और एक शानदार लंबा कोट पहना हुआ था। उनके सिंहासन चमकीले लाल माणिकों से सजे हुए थे। भावी बैरोनेस एक प्याले से खेल रही थीं। उनका चेहरा एक असामान्य रूप

से लंबी टोपी से ढका हुआ था, जिससे माणिकों से बना एक सुंदर घूंघट लटक रहा था।
'हम अशरफिया से मिलना चाहते हैं,' इदरीस ने गार्ड को याद दिलाया, जिसने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, मानो शाही जोड़े से मिलना हर मेहमान की अपने निजी काम में लगने से पहले सर्वोच्च प्राथमिकता हो।
पहरेदार ने बैरन से कहा, 'मेरे स्वामी, मैं आपके पास दो सेइड लेकर आया हूँ जो कहते हैं कि वे लेडी अशरफिया के मित्र हैं।'
कठोर निगाहों से मैग्नस ने सिंदबाद और इदरीस को घूर कर देखा।
संगीत बजना शुरू हो गया।
और उसी क्षण, बैरन ने अपनी मंगेतर की ओर मुड़कर कुछ फुसफुसाया। उसने अपना माणिक्य रंग का घूंघट हटाया और सिंदबाद की ओर देखा।
उसकी आँखों में खुशी की एक झलक थी।
वह अशरफिया थी।
भावी बैरोनेस।

उनतीस

चार वर्ष पहले
उसे नहीं पता था कि उसका भविष्य क्या होगा।
सिंदबाद ग्रामीणों की भीड़ के बीच में खड़ा था। सूर्यास्त का समय नजदीक था।
कल रात कैप्टन अब्दुल की मौत गांव वालों के साथ-साथ कमांडर कासिम के लिए भी एक दुखद घटना थी, जिसने इसका दोष भाग निकली शैतान लड़की पर लगाया। सभी लोग गुस्से में थे। तभी सिंदबाद ने सारा दोष अपने ऊपर ले लिया। उसने कहा कि उसने अपनी रक्षा इसलिए की क्योंकि कैप्टन अब्दुल ने उन्हें जान से मारने की कोशिश की थी।
उन्होंने मास्टर रीस को वास्तविक कारण समझाया, जिन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि अब्दुल भोर के देवता का एक नश्वर सेवक था।
लेकिन इससे स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ, क्योंकि वह ग्रामीणों और
उन सैनिकों के बीच फंस गया था जो सिंदबाद को घृणा भरी निगाहों से देख रहे थे। मास्टर रीस यह बात सीधे-सीधे नहीं बता सकता था कि अब्दुल शैतान के लिए काम करता है। कोई भी इस बात पर विश्वास नहीं करेगा।
कमांडर कासिम ने मास्टर रीस की ओर देखते हुए कहा, 'किसी अधिकारी की हत्या की सजा मृत्युदंड है। चाहे वह बच्चा हो या वयस्क, मृत्युदंड ही अंतिम होगा।'
मास्टर रीस ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'यह आत्मरक्षा का कार्य था।'
‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे फांसी दी जाएगी,’ कासिम ने घोषणा की।
‘या फिर पत्थर मारकर मौत के घाट उतार दिया जाएगा।’
उन शब्दों को सुनकर सिंदबाद सिहर उठा।
मास्टर रीस चुप रहे। थोड़ी देर रुकने के बाद उन्होंने कहा, 'अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं चला जाऊंगा और फिर तुम खुद उस पक्षी से निपट लेना।'

‘तुम्हें क्या लगता है कि हम इस लड़के को यूं ही छोड़ देंगे?’ कासिम ने सिंदबाद का कॉलर ज़ोर से पकड़ते हुए कहा। सिंदबाद को आमतौर पर शांत और स्नेहशील रहने वाले कासिम से कभी इतनी नफ़रत नहीं मिली थी। ‘यह मौत का हकदार है।’
मास्टर रीस ने समय लेने के लिए कहा, 'वह बगदाद की अदालत में निष्पक्ष सुनवाई के अलावा किसी और चीज का हकदार नहीं है।'
‘मुझे नहीं पता कि हम वहां कब जाएंगे। और क्या हम वहां जाएंगे भी या नहीं। तुम इस द्वीप पर पक्षी को मारने आए थे, लेकिन इसके बजाय हमारे पास एक रब्बी और एक अधिकारी हैं जो इस लड़के के हाथों मारे गए,’ कासिम ने गुस्से से कहा।
‘और वह चुड़ैल भाग गई!’ एक ग्रामीण चिल्लाया।
मास्टर रीस ने झल्लाकर कहा, 'वह तो बस एक लड़की है। मैंने तुम सबको कई बार बताया है, वह निर्दोष है।'
“तो फिर ऐसा क्यों है कि वह जहां भी जाती है, अपने साथ मौत लाती है, जैसा कि हम अभी देख रहे हैं?” एक अन्य ग्रामीण ने पूछा।
मास्टर रीस ने कोई जवाब नहीं दिया।
सिंदबाद वहीं स्थिर रहा और कासिम ने कहा, 'हम उसे पत्थर मारेंगे और अगर तुमने बीच में आने की कोशिश की तो मेरे आदमी तुम्हें मार डालेंगे।' तभी उसके लगभग एक दर्जन कवचधारी आदमी उसके पीछे खड़े हो गए।
मास्टर रीस ने अपनी बाहें मोड़ लीं। उन्होंने सिर हिलाया और कहा, 'ठीक है। उसे मरने दो। मैं दूसरा शिष्य ले आऊंगा।'
क्या? सिंदबाद के पैर लड़खड़ा गए। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह क्या सुन रहा है।
‘लेकिन इस तरह नहीं। पत्थर मारकर नहीं। उसे अंधेरे में छोड़ दो जहाँ पक्षी उसे ले जा सके। अगर किस्मत ने चाहा तो वह भटकता रहेगा और भूख से मर जाएगा। अगर नहीं तो पक्षी उसे ले जाएगा। ठीक है?’ मास्टर रीस ने पूछा। कासिम हँस पड़ा। 'क्या उस्ताद है! तुम तो खुद एक निर्दयी व्यक्ति हो
जो अपने शिष्य के लिए और भी निर्दयी भाग्य चुन रहे हो।'
इस टिप्पणी पर मास्टर रीस ने कोई भाव नहीं दिखाया।

‘ठीक है,’ कासिम ने कहा। ‘अंधेरा होते ही उसे बाहर धकेल देना।’ और सिंदबाद को बेहद खौफनाक निगाहों से देखते हुए उसने कहा, ‘तुम जल्द ही मर जाओगे।’

मास्टर रीस के साथ परिसर के द्वार के बाहर खड़े होकर सिंदबाद ने कहा, 'मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।'
कासिम के आदमी उनके साथ थे, ताकि रीस की किसी भी हरकत का उन्हें पता
चल सके। लेकिन गंभीर चेहरे वाले रीस की ऐसी कोई योजना नहीं थी। वह घुटनों के बल बैठ गया और सिंदबाद की आँखों में सीधे देखते हुए बोला, 'मुझे पता है कि तुम इस अंधेरे और इस द्वीप से बच जाओगे।'
सिंदबाद ने सिर हिलाया। 'मैं नहीं कर सकता। तुम मेरे साथ क्यों नहीं चलते?'
‘मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। तुम्हें कभी न कभी अपने दम पर जीना सीखना ही होगा। बस मुझ पर भरोसा रखो। मैं जानता हूँ कि तुम्हें बाहर भेजकर मैं क्या कर रहा हूँ। अगर मेरी योजना सफल रही, तो तुम ज़िंदा रहोगे और पक्षी मर जाएगा।’
'और अगर नहीं?'
उसने कुछ नहीं कहा और अपनी निगाहें नीचे कर लीं।
और... अगर मुझे वो न मिले तो? अगर वो पक्षी मेरा पीछा करे तो? मेरे पास कोई हथियार नहीं है।
उन्होंने कहा, ‘तुम एक सेइड हो। हमारा आदर्श वाक्य याद रखो—ज्ञान ही हमारा हथियार है। ज्ञान ही हमारी शक्ति है। ज्ञान ही हमारा कवच है।
तुम्हें हथियारों की जरूरत नहीं है।’
सिन्बाद इसे भूल चुका था, लेकिन अब इसे सुनकर उसे और भी ताकत मिली।
उसे एहसास हुआ कि यह योजना मानो उसे मास्टर रीस के सुरक्षा कवच से निकालकर वास्तविक दुनिया में धकेल रही है।

और भले ही इससे उसे असहजता और थोड़ा डर महसूस हुआ, लेकिन उसने फैसला किया कि वह तैयार है।
और अगर वह नहीं भी होता, तो भी उसे होना ही पड़ता।
उसके पास कोई विकल्प नहीं था।
मास्टर रीस ने उसके कंधे पर थपथपाया और फिर चले गए। कासिम के गार्ड भी उनके पीछे चले गए। और फिर दरवाजे बंद हो गए, परिसर की बत्तियाँ बुझ गईं।
सिंदबाद ने सामने जंगल की ओर देखा।
ठंड थी। धुंध छाई हुई थी।
और इससे भी बुरी बात यह थी कि उसे भेड़ियों के howling की आवाजें सुनाई दे रही थीं।

तीस

आज
वह शांत रहने का नाटक कर रही थी।
अशरफिया मुस्कुराते हुए और आसपास के लोगों को हाथ हिलाते हुए सिंदबाद का हाथ पकड़कर उसे भीड़ से दूर खींच ले गई। जब वे कुछ दूरी पर पहुँच गए और नज़रों से ओझल हो गए, तो उसने तुरंत उसे गले लगा लिया। उसके घने, काले बाल कंधों तक लहरा रहे थे और उसकी आँखें समुद्री शैवाल के रंग की थीं। उसने बेहद बड़े कपड़े पहने थे जो उसके छोटे कद पर ढीले-ढाले लग रहे थे, और देखने में वह सिंदबाद की उम्र की लग रही थी, लेकिन वास्तव में वह सौ साल से भी अधिक उम्र की थी।
इदरीस एक कोने में खड़ा होकर धीरे-धीरे हंस रहा था और इस नाटक का आनंद
ले रहा था।
लेकिन सिंदबाद को यह समझ ही नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा है।
‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ अशरफिया ने रोमन और अरबी लहजे में पीछे हटते हुए पूछा।
सिन्बाद ने गौर किया कि वह स्पष्ट रूप से बेचैन और चिंतित थी, शायद हाथ में पकड़े शराब के गिलास से थोड़ा नशा सा हो गया था। उसके गाल एकदम लाल हो गए थे। 'मुझे लगा था कि तुम खतरे में हो या कुछ और। लेकिन लगता है कि तुम तो मुख्य अतिथि हो।' उसने मुंह बनाया और सिंहासन पर बैठे बैरन की ओर देखा, जो बार-बार उन पर संदेह भरी निगाहें डाल रहा था।
‘मेरी मर्जी से नहीं, सिंदबाद। मैं यहाँ फँसी हुई हूँ।’ उसने इदरीस की तरफ देखा और उससे पूछा, ‘क्या ये तुम्हारी नई गर्लफ्रेंड है? अरे, हमारे बीच का रिश्ता खत्म हो गया तो इसका मतलब ये नहीं कि तुम ऐसे मजे करो... ऐसे...’ वह हँस पड़ी।
इदरीस के चेहरे पर चौड़ी मुस्कान थी। 'रुको, तुम दोनों साथ थे?'
सिंदबाद ने दांत पीस लिए। वह नहीं चाहता था कि यह बात सामने आए।

‘बस थोड़े समय के लिए।’
‘कितना प्यारा था!’ अशरफिया ने ताली बजाते हुए कहा। ‘मैं उनसे तब मिली
थी जब वे बहुत छोटे थे, लगभग दस साल के, और हम एक-दूसरे को चिट्ठियाँ लिखते थे। हमारी दोस्ती तब एक रिश्ते में बदल गई जब वे तेरह साल के हुए। मैंने तब उनकी देखभाल की... जब यह सब हुआ। मैं वहीं थी। ओह, बेचारा! लेकिन अफसोस, हमारी कहानी का भी अंत होना ही था, जैसे सभी महान प्रेम कहानियों का होता है। उन्हें एहसास हुआ कि मैं हमेशा जीवित रहूँगी और उनका प्यार नश्वर है।’ फिर वह रुकी और इदरीस की ओर चिंता भरी नज़र से देखा। ‘तो, आप कौन हैं?’ ‘उसका संरक्षक।’ इदरीस हँस पड़ा।
‘बेबीसिटर जैसी लग रही हो,’ सिन्बाद ने गुस्से से कहा। उसे अशरफिया का इतना नाटकीय व्यवहार पसंद नहीं आया। वही तो उससे प्यार करती थी; उसने हमेशा उसे एक दोस्त समझा था। लेकिन अब वह यह कहना नहीं चाहता था। ‘ऐश, तुम बैरन से शादी क्यों कर रही हो?’
‘खैर, क्योंकि वह मुझे पसंद करता है,’ अशरफिया ने कहा। ‘और
मुझे वो थोड़ा पसंद है।
मैं तुम्हें यहाँ से ले जाने आया हूँ।
‘और रास्ते में सैकड़ों पिशाचों को हराया? मैग्नस बहुत सावधान है। वह
हर समय मेरी सुरक्षा करता है,’ उसने कराहते हुए कहा। ‘बहुत ही सुरक्षात्मक आदमी है, आप जानते हैं। हालांकि, घुटन भी होती है। मुझे यहाँ जानकारी इकट्ठा करने के लिए आना था, लेकिन जल्द ही मैं उसकी प्रेरणा बन गई। प्यार— आपको कभी पता नहीं चलता कि यह कैसे और किसके साथ होगा।’
सिंदबाद ने सामान्य दिखने की कोशिश करते हुए पिशाच सैनिकों को अपने चारों ओर आते देखा। उसने धीरे से बुदबुदाया, 'ठीक है। भाई केन तुम्हारी मदद करेगा। वैसे, उसने ही हमें भेजा है।'
‘ओह!’ उसने फिर से ताली बजाई। ‘सुनो, मेरे पास वो चीज़ है जिसकी उसे ज़रूरत है।’ उसने नाटकीय अंदाज़ में चारों ओर देखा, फिर अपनी टोपी को ठीक किया और उसमें से कागज़ के छोटे-छोटे पन्ने निकाले।
उसने उसे सिंदबाद की छाती पर थमा दिया और गंभीरता से बोली, 'इसे उसके पास ले जाओ। और कृपया, कृपया उससे कहो कि वह जल्दी आए। मुझे पूरा यकीन है कि मैं बैरन के साथ नहीं रह सकती। वह बहुत डरावना है।'
‘कितना डरावना?’ सिंदबाद ने पूछा।

‘ओह, वो रूप बदल लेता है। अजीब आदमी है। वो एक बूढ़ा पिशाच है, बहुत बूढ़ा।’ वह मन ही मन कांप उठी।
‘इसमें क्या है?’ सिंदबाद ने चर्मपत्र को ऊपर उठाते हुए पूछा।
‘मुझे लगता है कि ये किसी धम्पिर को वापस इंसान बनाने के लिए रासायनिक तत्वों की सूची है। अजीबोगरीब चीज़ें हैं; पता नहीं भाई केन को इसकी ज़रूरत क्यों है, पर मुझे परवाह नहीं। मुझे बस अपना पैसा चाहिए और फिर आज़ादी से अपनी ज़िंदगी जीनी है।’ अशरफ़िया मुस्कुराई।
‘ठीक है,’ सिंदबाद ने कहा। ‘साथ ही, मुझे तुम्हें सातों समुद्रों में सूंघकर रास्ता खोजने और दुनिया को बचाने में हमारी मदद करने के लिए नियुक्त करना होगा।’
अशरफिया ने एक पल के लिए सिन्बाद की ओर देखा और उसे एक भोली सी मुस्कान दी। 'वाह, कितना प्यारा प्रस्ताव है! और इसे इतने अच्छे से पेश भी किया गया है। मुझे इस बारे में सोचने दीजिए। लेकिन मुझे अब जाना होगा। जैसा कि आप जानते हैं, मेरे प्यारे होने वाले पति थोड़े...' उसने इदरीस का हाथ पकड़ा और कहा, 'आप मेरे साथ रहिए।'
इदरीस ने इस अचानक अनुरोध पर अचंभित होकर सिर हिलाया। 'मैं नहीं कर सकती।' 'अच्छा, तुम्हें करना ही होगा,' अशरफिया ने कहा। 'बैरॉन और उसके आदमियों को शक हो सकता है कि इस शादी में मेरे इकलौते दो मेहमान आकर तुरंत क्यों चले गए। पहली बात तो यह है कि इसे असभ्य माना जाता है। दूसरी बात, वह तुम दोनों पर शक करेगा और हमें नुकसान पहुँचाने के लिए कुछ करेगा—और हम से मेरा मतलब तुम दोनों से है क्योंकि वह मुझसे बहुत प्यार करता है और मुझे यकीन है कि वह तुम दोनों को कुछ भी नहीं समझता।' सिंदबाद मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। हालाँकि अशरफिया थोड़ी हैरान थी, लेकिन उसकी बातें बहुत सही थीं। 'वह बहुत सावधान आदमी है, बहुत सावधान। इसलिए रुको, औरत।'
इदरीस ने सिंदबाद की ओर देखा। 'तो जल्दी करो,' उसने दांत पीसते हुए कहा।
‘मैं कोशिश करूंगा।’ सिंदबाद मुस्कुराया। ‘या फिर मजे के लिए थोड़ा ज्यादा समय भी ले सकता हूं।’
'मेरी सहनशीलता की परीक्षा मत लो, बच्ची,' इदरीस ने कहा और अशरफिया उसे झटपट डांस फ्लोर की ओर ले गई।

‘अरे, बहुत देर हो गई, मैं पहले से ही उस पर काम कर रहा हूँ,’ सिंदबाद ने
कहा और वह भाग गया।
और ऐसा करते समय, दूर से ही उसकी नजरें बैरन की नजरों से मिलीं।
पिशाच की बर्फीली निगाह ने सिंदबाद की रीढ़ में सिहरन पैदा कर दी।

सिंदबाद वापस घोड़े पर सवार होकर चला गया।
उसकी घोड़ी के खुर घनी रेत में जोर से धंस रहे थे, जिससे रेत पर निशान बनते जा रहे थे, क्योंकि वह सोहार शहर की ओर तेजी से दौड़ रहा था।
सिंदबाद ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे धीरे-धीरे और सावधानीपूर्वक उसकी ओर आती हुई परछाइयाँ दिखाई दीं।
वे महज परछाइयाँ थीं।
या फिर वे थे?
क्या बैरन ने उसके पीछे अपने आदमियों को भेजा था?

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

सिंदबाद धीरे-धीरे उठा और उसने देखा कि एक जानवर उससे कुछ ही इंच की दूरी पर खड़ा है। उसके शरीर पर काले और भूरे रंग के बाल थे और उसके कान खड़े थे।
एक भेड़िया।
भेड़िये के जोर से सूंघने पर उसके दिल की धड़कनें कुछ देर के लिए रुक गईं।
वह हिलना चाहता था, लेकिन वह वहीं जम गया था, इस उम्मीद में कि भेड़िया उस पर हमला नहीं करेगा।
और फिर, उसने देखा कि उनमें से और भी लोग उसकी ओर, उसके पैरों के पास आ रहे हैं।
झुंड ने उसे सूंघा, और शायद सभी सोच रहे थे कि सबसे पहले कौन उसकी टांग चबाकर अलग कर देगा, क्योंकि वे मांसाहारी थे और ताजा मांस खाना पसंद करते थे।
और इससे पहले कि वह कोई प्रतिक्रिया कर पाता, एक भेड़िये ने गुर्राया।
सिंदबाद जानता था कि उसे भागना ही होगा। एक खुला मैदान देखकर वह तेजी
से भागा और सूखी पत्तियां हवा में उड़ने लगीं। जान बचाने के लिए दौड़ते हुए वह पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहता था, उसकी जान को खतरा था।
उसे अपने पैरों के नीचे गीली ज़मीन का एहसास हुआ, कीचड़ उसकी चप्पलों
से चिपक गया था। तूफानी हवा उसके चेहरे पर ज़ोर से टकरा रही थी।
सिंदबाद के हाथ में नुकीली शाखा थी।
क्या मैं उनसे बच निकलने में कामयाब रहा?
वह दौड़ना बंद करके उस घूमते हुए कोहरे में चला गया जो वास्तव में उसके लिए रहस्य के बादल जैसा था - चाहे उसमें से कोई भेड़िया निकले या न निकले।
लेकिन उन्होंने ऐसा किया। एक-एक करके। सभी गुर्रा रहे थे। सभी भूखे थे।
सिंदबाद ने खुद को तैयार किया।
आओ इसे करें।
भेड़िये ने गुर्राया।
बहुत खूब। मैं तो मरने ही वाला हूँ।

धरती कांप उठी। उसे अपने पीछे कुछ महसूस हुआ, मानो कोई उसकी रक्षा के लिए आया हो।
आगे के भेड़िये सिसकने और दुबकने लगे और कोहरे में गायब हो गए।
ठीक है। अभी क्या हुआ?
वह मुड़ गया।
यह सफीना का प्यारा पालतू पक्षी रोक था - एक विशालकाय नरभक्षी पक्षी।

बत्तीस

आज
जैसे ही सिंदबाद चौकी के करीब पहुँचा, उसने किले को देखा, जो प्राचीन दीवारों पर सजी मशालों की रोशनी में अंधेरे में जगमगा रहा था। चारों ओर नुकीले बैरिकेड लगे थे और पहरेदार तैनात थे ताकि कोई भी स्ट्रिगोई अंदर न घुस सके।
उसने देखा कि भाई कैन बाहर खड़े होकर अपने सैनिकों से कुछ चर्चा कर रहे थे। उसने सिंदबाद को देखा और मित्रवत भाव से उसे हाथ हिलाकर अभिवादन किया।
सिंदबाद द्वार तक पहुँचने ही वाला था कि उसे महसूस हुआ कि उसके पीछे कोई है।
उसने अपनी घोड़ी को घुमाया तो अंधेरे में कई जोड़ी आंखें चमकती हुई दिखाई दीं—पिशाच घोड़े पर सवार होकर उसका पीछा कर रहे थे।
सिंदबाद ने अपनी आकाश-लोहे की तलवार निकाली।
उनके चेहरों पर एक अजीब सी मुस्कान फैल गई। उन्होंने अपने घोड़ों को मोड़ा और जिस दिशा से आए थे उसी दिशा में वापस चल दिए।
भाई केन सिंदबाद की ओर बढ़ा, उसकी निगाहें स्ट्रिगोई पर टिकी हुई थीं।
‘उन्हें रोको,’ सिंदबाद ने कहा। ‘नहीं तो वे बैरन को बता देंगे कि मैं इदरीस और अशरफिया के साथ तुम्हारे लिए काम करता हूँ।’
केन ने कहा, 'ज़रूर, ज़रूर। चिंता मत करो, मेरे आदमी इसका ख्याल रखेंगे। क्या तुम खुफिया जानकारी लाए हो?'
सिंदबाद ने सिर हिलाया, वह अभी-अभी हुई घटना से थोड़ा अनिश्चित और परेशान था।
‘बहुत बढ़िया। चलो चलते हैं।’ वह मुस्कुराते हुए किले के अंदर वापस
चला गया और द्वार बंद हो गए।

और जैसे ही सिंदबाद ने कड़ी सुरक्षा वाले किले में प्रवेश किया, वह यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाया कि उसे केन के आदमियों में से कोई भी पिशाचों का पीछा करते हुए रात में बाहर क्यों नहीं दिखाई दे रहा था।

सिंदबाद कैन के अध्ययन कक्ष में था।
मेज पर किताबें और दस्तावेज़ बिखरे पड़े थे और अलमारियाँ हार्डकवर किताबों से भरी हुई थीं। दीवार के किनारे कई गमले रखे थे और केन उन्हें बार-बार सूंघ रहा था, मानो उनकी सुगंध से उसे परमानंद का अनुभव हो रहा हो। वह समय-समय पर अपने मिट्टी के बर्तन से उनमें पानी डालता था, ठीक वैसे ही जैसे वह कमरे में प्रवेश करने के बाद करता था।
सिन्बाद शांति से मेज के पास वाली कुर्सी पर बैठ गया। 'क्या तुमने अपने आदमियों को भेजा है? मैं सचमुच नहीं चाहता कि मेरे दोस्त पकड़े जाएँ।'
“शांत हो जाओ, सिंदबाद। हालांकि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इदरीस तुम्हारे साथ नहीं लौटा,” उसने पौधे की एक पत्ती को ध्यान से सहलाते हुए कहा। “ऐसा क्यों?”
सिन्बाद ने पिशाचों की शादी में हुई घटनाओं और अशरफिया से उनकी मुलाकात के बारे में बताया। केन मुस्कुराया और बोला, 'वह छोटी बच्ची हमेशा दूसरों से एक कदम आगे रहती है। काश वह स्ट्रिगोई न होती, वरना मैं उसे गोद ले लेता।'
‘तुम्हारे बच्चे नहीं हैं?’ सिंदबाद ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। ‘लेकिन तुम बहुत बूढ़े हो गए हो,’ उसने व्यंग्य करते हुए कहा।
“ध्यान देने के लिए धन्यवाद,” सार्जेंट ने शांत भाव से कहा और अपनी कुर्सी की ओर चलकर बैठ गया। “मैं बच्चे पैदा नहीं कर सकता।”
'क्यों?'

उसके चेहरे पर उदासी की झलक थी, लेकिन उसने इसे नजरअंदाज करते हुए कहा, 'मेरी नौकरी की मांग है कि मैं एक ही चीज के प्रति पूरी तरह समर्पित रहूं, और वह है इन आत्माओं को चूसने वालों को मारना।'
सिंदबाद ने कैन की अनामिका उंगली पर अंगूठी देखी, लेकिन उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। कैन शादीशुदा था और झूठ बोल रहा था।
‘तो यह कहाँ है?’ आँखों में चमक लिए केन आगे की ओर झुका।
सिन्बाद ने चर्मपत्र निकाला लेकिन उसे पकड़े रखा। 'तुम्हें एक धम्पिर को इंसान में बदलने का नुस्खा क्यों चाहिए था?'
केन की सुनहरी आँखें उसकी आँखों में टिक गईं। 'बात सीधी सी है। अगर एक धम्पिर—जो पिशाच और इंसान की संतान होता है—वापस इंसान बन सकता है, तो एक पूर्ण विकसित स्ट्रिगोई भी बन सकता है। हम बस इसका परीक्षण और उत्परिवर्तन करना चाहते हैं। और बस! हमें इस भयानक, पीड़ादायक बीमारी का इलाज मिल जाएगा।'
पाखंडी। सिंदबाद झूठ से भरे बसरा में काफी समय बिता चुका था और हुसैन
के अभिनय कौशल को इतना देख चुका था कि वह जान जाता था कि कोई कब झूठ बोल रहा है।
'दरअसल, मैंने जिन पिशाचों को देखा, वे अपने जीवन से काफी खुश लग रहे
थे,' सिन्बाद ने कहा।
‘मुझे यकीन है। लेकिन सेइड्स के विपरीत, हम इंतज़ार नहीं करते।’ केन मुस्कुराया। ‘मौका मिलते ही हम उन्हें मार डालते हैं। दूसरी ओर, तुम्हारा संघ किसी भी तरह के राक्षस को तब तक जीवित रहने देता है जब तक वे उनके काम में दखल न दें। बड़ी उदारता है। लेकिन मेरी सलाह है कि समस्या को शुरू में ही खत्म कर दो।’ सिंदबाद बहस नहीं करना चाहता था। उसने चर्मपत्र केन की ओर फेंक दिया, जिसने उसे बड़ी उत्सुकता से पकड़ा और पढ़ना शुरू कर दिया। ‘क्या अब हम इदरीस और अशरफिया को बचाने जा सकते हैं?’ सिंदबाद ने फिर कहा। ‘पिशाच तो महल तक पहुँच ही गए होंगे।’
कागज पर नजर गड़ाए हुए केन ने कहा, 'मुझे बहुत दुख है कि इदरीस तुम्हारे साथ वापस नहीं आई। उस बेचारी ने बहुत कुछ सहा है। उसका पति इन घिनौने राक्षसों में से एक बन गया था। उसने फिर भी उसके साथ रहने की कोशिश की, लेकिन बात नहीं बनी। दरअसल, मैं उसके पति का शिकार कर रहा था और गिल्ड भी, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उनका प्रतिभाशाली, अनमोल शिकारी एक आत्मा

भक्षक के साथ रहे। बदनामी होती। जैसा कि तुम समझ ही गए होगे, अंत बुरा ही हुआ।'
‘क्या तुमने उसके पति की हत्या की?’
‘अरे नहीं, नहीं।’ वह हँस पड़ा। ‘काश ऐसा होता। हमने एक समझौता किया
था, इसलिए।’
मैं पीछे हट गया।
‘उसने तुम्हें सौदे में क्या दिया?’
‘एक महत्वपूर्ण हथियार। चिंता मत करो। मैं लोगों के साथ व्यापार करता रहूंगा,’ केन ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। ‘खैर, हम पीछे हट गए, लेकिन उस गिरोह ने उसे पकड़ लिया और उसके पति से अलग कर दिया। उन्होंने उसे सजा के तौर पर जेल में डाल दिया और चूंकि वे अपनी प्रतिभाशाली शिष्या को हाथ से फिसलने नहीं देना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उससे कहा कि वह अपने प्रेमी को रिहा करवाने के लिए खुद को योग्य साबित करे।’
सिंदबाद का दिल बैठ गया। अब तक वह यही सोच रहा था कि उसे किसी स्ट्रिगोई ने धोखा दिया है और इसीलिए वह उनके साथ काम नहीं करना चाहती, जबकि असल में वह अपने पति को बचाने के साथ-साथ दुनिया को भी बचा रही थी... उस गिरोह से! सिंदबाद को अचानक एक बेचैनी महसूस हुई और वह झट से बोला, 'हमें उसे और अशरफिया को बचाना होगा। चलो चलें।'
‘उफ़।’ केन ने सिर हिलाया और उठकर कोने में टंगी अपनी केप पहन ली। ‘काश
हम ऐसा कर पाते। लेकिन मेरे और मेरे आदमियों के पास कुछ और ही योजनाएँ हैं।’
सिन्बाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'मुझे लगा था कि हमारा समझौता हो गया था।'
‘और मैंने इसे तोड़ दिया।’ वह हँसा। ‘कोई बड़ी बात नहीं।’
सिन्बाद हथियार निकालते हुए खड़ा हो गया। 'तुमने मुझसे वादा किया था
कि तुम अशरफिया की मदद करोगे।'
उसी क्षण, आदम की संतानें अपने हाथों में धनुष लिए हुए अध्ययन कक्ष
में दाखिल हुईं - सभी धनुष सिंदबाद की ओर ताने हुए थे।
केन सिंदबाद के बगल में खड़ा हुआ और बोला, ‘काश मैं मदद कर पाता। अशरफिया मददगार साबित हुई, लेकिन वह किला एक हजार से अधिक पिशाचों का अड्डा है। अब उसे जलाकर राख कर देने का यही सही समय है। और उन हजारों

आवाजों को दर्द से कराहने दो।’ वह हँसा। ‘शादी के लिए एक बढ़िया तोहफा। क्या नजारा होगा, और मैं यह सब देखने के लिए सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठा रहूंगा।’ फिर उसने एक पहरेदार की ओर देखा और सख्ती से कहा, ‘इसे कोठरी में डाल दो।’ पहरेदार तुरंत आगे आया और सिंदबाद की तलवार लेकर उसके हाथ रस्सी से पीछे बांध दिए।
‘और मुझे लगा था कि इदरीस तुम्हारे बारे में सही कह रहा था। कि तुम पर भरोसा किया जा सकता है।’ सिंदबाद ने कैन पर थूका।
‘इसे यहाँ से ले जाओ। सुनिश्चित करो कि इसे कोई चोट न आई हो,’ केन ने भावहीन स्वर में कहा। ‘आखिरकार, हमारे पास इसके लिए कुछ और योजनाएँ हैं।’ जब उसे बाहर ले जाया जा रहा था, तब सिंदबाद ने उसे घूरकर देखा। 'क्या? तुम—' 'एक। तुम्हारे आरोप के जवाब में, मैं एक भरोसेमंद आदमी हूँ...' कभी-कभी,’ केन ने दरवाजा बंद करते हुए कहा। ‘दो। एक व्यक्ति है जिसने मुझसे तुम्हें रोकने का अनुरोध किया और इसके लिए मुझे पैसे भी दिए। मुझे यह काम दिन में पहले ही कर देना चाहिए था क्योंकि उस व्यक्ति ने मुझे बताया था कि तुम मुझसे मिलने आओगे, लेकिन फिर मैंने सोचा कि चलो, दो सेइड्स का कुछ इस्तेमाल कर ही लेते हैं। किसी और परिस्थिति में मैं तुम्हें जाने देता, लेकिन यह व्यक्ति बहुत महत्वपूर्ण है। वास्तव में, बेहद महत्वपूर्ण। और वह चाहता है कि जब तक वह तुम्हारे सामने न आ जाए, तब तक तुम्हें कुछ दिनों के लिए कैद रखा जाए।’
और फिर उसने दरवाजा बंद कर दिया, जिससे सिंदबाद को आश्चर्य हुआ कि यह कौन था।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

उसने सांस लेने के लिए एक पल का समय लिया और जैसे ही उसने एक कदम आगे बढ़ाया—
चिड़िया तेज़ी से नीचे आई, पेड़ों की डालियों को गुस्से से खींचती हुई, और ज़मीन पर गिर पड़ी, सिंदबाद के शरीर को अपने पंजों से जकड़ लिया। वह ज़ोर से चीखी, मानो चोंच मारने के लिए तैयार हो।
भय से व्याकुल सिंदबाद हांफते हुए अपने ऊपर मंडराते विशालकाय पक्षी
को देख रहा था। बचने का बस एक ही रास्ता था। उसने जोखिम उठाने का फैसला किया और भाले की तरह शाखा को पक्षी के खुले गले में घुसा दिया।
एक पल के लिए पक्षी भ्रमित हो गया। वह पीछे हट गया—उसकी आँखें दर्द
से सिकुड़ गईं और वह चीखने-चिल्लाने लगा और इधर-उधर लड़खड़ाने लगा, लगभग अपना संतुलन खो बैठा, शायद यह समझ नहीं पा रहा था कि एक साधारण लकड़ी की छड़ी इतना नुकसान कैसे पहुंचा सकती है।
जंगल की ज़मीन पर पड़ा हुआ सिंदबाद उस पक्षी पर थोड़ी दया और साथ ही राहत महसूस कर रहा था, क्योंकि वह बारिश में बुरी तरह छटपटा रहा था और अंत में उसने छड़ी को खांसकर बाहर निकाल दिया। ऐसा करते ही उसके गले से चिपचिपा भूरा पदार्थ बाहर निकला।
पक्षी ने सिंदबाद की आंखों में सीधे आंखें डालकर देखा।
आंखें क्रूर और काली थीं।
ठीक है, मैं मरने जा रहा हूँ।
और जैसे ही वह धीरे-धीरे करीब आया और अपना मुंह खोला, सिंदबाद ने उसकी कठोर चोंच के डर से अपनी आंखें बंद कर लीं...
उसके दिमाग में बीते दिनों की कई घटनाएं कौंध गईं और उसे याद आया कि उसका जीवन कितनी अजीब तरह से बदल गया था। उसे अपने बचपन की कोई बात याद नहीं थी—माता-पिता या दोस्त, और अब तो उसे गिल्ड की शिक्षाएं भी बीते दिनों की याद दिला रही थीं। उसने मास्टर रीस के आखिरी पलों के बारे में सोचने की कोशिश की, लेकिन उसके विचार बस फूलों वाली पोशाक पहने उस लड़की की ओर ही मुड़ गए, जो पेड़ से उल्टी लटकी हुई थी। सिंदबाद के चेहरे पर एक छोटी सी उदास मुस्कान थी, क्योंकि वह उस अपरिहार्य घटना का इंतजार कर रहा था। लेकिन उस पर लगातार बारिश ही बरस रही थी।
पक्षी को इतना समय क्यों लग रहा है?

सिंदबाद ने धीरे-धीरे अपनी आंखें खोलीं तो देखा कि उसके सामने एक आकृति खड़ी है।
यह सफीना थी। उसके बाल पूरी तरह गीले थे और उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया
हुआ था, उसकी उंगलियों से ऊर्जा निकल रही थी जिससे वह पक्षी को नियंत्रित कर रही थी।
‘बहुत ज्यादा गुस्सा...’ वह गुस्से से बोली, ‘कुछ करना पड़ेगा...’
वह चिड़िया उनके बीच बनी सुरक्षा कवच को तोड़ने की कोशिश कर रही थी। रोक को अब इस बात की परवाह नहीं थी कि वह सफीना है। वह अपनी नुकीली चोंच और पंजों से उस कवच को कुतर रही थी।
‘करना ही होगा...’ सफीना ने बुदबुदाते हुए तुरंत अपनी पूरी ताकत लगाकर
ढाल को पक्षी की ओर धकेल दिया और वह उसके चेहरे पर जा लगी।
पक्षी हवा में उछलकर वापस पेड़ से जा टकराया, उसका सिर एक पेड़ से जा टकराया, उसके पंख फड़फड़ाना बंद हो गए और उसकी आंखें बंद हो गईं। वह ज़मीन पर ज़ोर से गिरा।
सफीना ऊर्जाहीन होकर घुटनों के बल बैठ गई।
सिन्बाद दौड़कर आया और पीछे से उसे गले लगा लिया। 'क्या तुम ठीक हो?'
वह देख सकता था कि उसकी आंखों में आंसू आ रहे थे।
‘मैंने उसे मार डाला,’ वह रोते हुए बोली। ‘मैंने उसे मार डाला।’
'कोई बात नहीं।'
वे कुछ देर तक एक-दूसरे को गले लगाते रहे। सिंदबाद ने अपने हाथों से उसका सिर थाम लिया और उसे कसकर पकड़ लिया।
उसने कहा, 'मैं जहां भी होती हूं, रॉक मेरा पीछा करता है। मुझे नहीं पता... मैंने जो किया वो सही था या नहीं।'
'वह था।'
‘क्या मैं बुरी हूं?’ उसने नम आंखों से पूछा।
सिंदबाद ने गहरी सांस ली। 'मिनोटौर की तरह? हाँ! बस एक भैंस का सिर चाहिए,' उसने तनाव कम करने की उम्मीद में कहा।
वह मुस्कुराई।
‘सफीना... तुम परिसर से क्यों भाग गई?’ सिंदबाद ने पूछा।

‘बुरा आदमी। वह तुम्हें मारना चाहता था, मुझे बकरी जैसे राक्षस के पास
ले जाना चाहता था। बहुत बुरा। हमें फिर से भागना होगा,’ उसने उठने की कोशिश करते हुए कहा।
सिंदबाद ने आह भरी। 'मैं, उम्म... हमारी लड़ाई हुई थी। वह मर गया है।'
सफीना की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। 'मर गई? वाह! अच्छा हुआ।' 'दरअसल, इसीलिए तो मैं यहाँ हूँ। इसके लिए सज़ा भुगत रही हूँ।' 'कैसे—' उन्हें कदमों की आहट सुनाई दी। सिंदबाद ने उसे सुरक्षात्मक भाव से पकड़ लिया, मानो वह उससे कहीं अधिक शक्तिशाली हो, जबकि वह उससे दस गुना अधिक शक्तिशाली थी। वास्तव में, वे घने जंगल में, अंधेरे और बरसात के बीच, दो डरे हुए बच्चे थे। एक आकृति उनकी ओर बढ़ी।
'अच्छा काम।'
‘तुम... तुम तो शुरू से यहीं थे?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘बेशक, मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। मुझे तुम्हारी सुरक्षा सुनिश्चित करनी ही होगी। मैंने तुम्हें अकेले होने का भ्रम दिया था, और तुमने इसका भरपूर आनंद उठाया। तुमने यह कर दिखाया,’ स्वामी रीस ने प्रशंसा में सिर हिलाते हुए कहा।
‘क्या... लेकिन...’ सिंदबाद ने गुस्से से अपने गुरु का चेहरा देखा। वह उन्हें कोसना चाहता था और उन पर लाखों सवाल बरसाना चाहता था, लेकिन अचानक उसके भीतर विरोधाभासी भावनाएँ उमड़ आईं और उसे वास्तव में... अच्छा लगा। उसे एहसास हुआ कि उसने कुछ ऐसा कर दिखाया है जो उसने कभी सोचा भी नहीं था कि वह कर सकता है—डर पर विजय प्राप्त करना।
मास्टर रीस ने आगे कहा, 'और मुझे यह भी पता था कि अगर लड़की तुम्हें खतरे में देखेगी, तो वह तुम्हारी मदद करेगी। उस पक्षी को मारने वाला एकमात्र व्यक्ति उसका निर्माता ही था।'
‘तुमने मुझे मोहरे के रूप में इस्तेमाल किया।’ सिंदबाद ने उसे घूरकर देखा।
‘हां। क्या आपको इस बात का बुरा लग रहा है?’ मास्टर रीस ने सीधे चेहरे
से पूछा, लेकिन वास्तव में उन्हें जवाब की परवाह नहीं थी।
सिन्बाद हाँ कहना चाहता था, लेकिन वह चुप रहा। वह मास्टर रीस के प्रति अपनी भावनाओं को लेकर दुविधा में था। कभी-कभी वह एक नेक इंसान लगता था, लेकिन वह एक धोखेबाज झूठा भी था। लेकिन सबसे बढ़कर, वह अपने फायदे के लिए

किसी का भी इस्तेमाल करने से पहले कभी नहीं हिचकिचाता था। यहाँ तक कि सिन्बाद का भी नहीं।
सफीना ने रीस की ओर अविश्वास भरी नजरों से देखा और बोली, 'कृपया हमें यहां से चलने दीजिए।'
मास्टर रीस ने सिर हिलाया। 'हाँ। लेकिन हमें एक आखिरी काम करना बाकी है।' और वह मुस्कुराया।

चौंतीस

आज
सिंदबाद अपनी जीभ से अपनी नाक को छूने की कोशिश कर रहा था।
उसकी जीभ इतनी लंबी नहीं थी, लेकिन हर बार जब वह कोशिश करता, तो उसे उम्मीद रहती कि वह छू जाएगी। यह एक छोटी जीभ वाले लड़के की असीम लगन का प्रदर्शन था।
वह कोठरी में ऊब रहा था।
सफेद कवच और लाल क्रॉस वाले काले लबादे में एक रक्षक प्रकट हुआ। उसके बगल में एक मेज थी जिस पर सिंदबाद का थैला और तलवार रखी थी। रक्षक के हाथ में एक भाला था और उसकी निगाहें सिंदबाद पर टिकी हुई थीं।
मेरा समय बर्बाद हो रहा है।
सिंदबाद ने एक योजना बनाने की कोशिश की।
वह खड़ा हुआ और लड़खड़ाते हुए उस जेल की सलाखों की ओर बढ़ा, जिनमें उसे कैद किया गया था, और पहरेदार को चिल्लाकर बोला: 'मदद चाहिए। तबीयत खराब लग रही है। गला... मेरा गला...'
उसने दम घुटने का नाटक किया, उल्टी करने का नाटक किया और अपना मुंह पकड़ लिया, फिर वह जमीन पर गिर पड़ा और दर्द से कराहने लगा।
सिंदबाद ने तिरछी नजर से देखा कि पहरेदार असमंजस में था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह उसे संदेह भरी नजरों से घूर रहा था। सिंदबाद हांफते हुए बोला, 'मुझे पानी चाहिए।'
गार्ड स्पष्ट रूप से डरा हुआ था और चूंकि वह इस कैदी के महत्व को जानता था, उसने कोठरी के दरवाजे खोल दिए। कांपती उंगलियों से उसने उसे थोड़ा सा पानी दिया।
‘यहाँ। यहाँ। अपना मुँह खोलो,’ वह पास आते हुए बोला, लगभग घुटनों के बल बैठकर सिंदबाद के मुँह में पानी डालने लगा। उसी क्षण, लड़के ने अपनी आँखें खोलीं और गार्ड के चेहरे पर एक घूंसा मारा, उसकी कमरबंद से लटकती चाबियाँ

पकड़ीं और कोठरी से बाहर निकल गया। उसने अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया और गार्ड के कुछ प्रतिक्रिया करने से पहले ही उसे ताला लगा दिया।
अपनी खून बहती नाक को पकड़े हुए, गार्ड ने अपना भाला सलाखों के बीच में रखा और उसे कुरेदने की कोशिश की, लेकिन सिंदबाद तेजी से पीछे हट गया। ‘ना, ना,’ सिंदबाद ने मुस्कुराते हुए अपनी तलवार और थैला उठाया। ‘शुभ दिन, महोदय। फिर कभी नहीं मिलेंगे।’

उसका पीछा किया जा रहा था।
सिंदबाद ने भाले और तलवार लिए शूरवीरों के झुंड को अपने पीछे आते देखा। उसने यह उम्मीद नहीं की थी कि धुंधली रोशनी वाले गलियारों से भागते समय अन्य रक्षकों ने उसे देख लिया होगा।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाए। वह घबराकर बाहर निकलने का रास्ता ढूंढने लगा, लेकिन अंत में एक कमरे में घुस गया और दरवाजा कसकर बंद कर लिया।
पहरेदारों ने दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाया और उसने कमरे का जायज़ा लिया।
कमरे के ठीक बीच में एक पहरेदार बिना कवच के बैठा था। वह एक बड़े टब में गर्म पानी से नहा रहा था।
उसने सिंदबाद की ओर देखा, पलकें झपकाते हुए, असमंजस में पड़ गया।
‘नमस्ते। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं आपकी खिड़की का इस्तेमाल करूँगा।’ सिंदबाद ने दबे पांव खिड़की तक जाते हुए विनम्रता से मुस्कुराते हुए बाहर देखा। खिड़की से एक अस्तबल दिखाई दे रहा था जहाँ ढेर सारा भूसा पड़ा था जिसे घोड़े चर रहे थे।
सिंदबाद तीसरी मंजिल पर था। सिंदबाद ने कंधे उचकाए; अगर वह ठीक से नहीं उतरा तो उसकी मौत हो सकती थी।
उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसे एक सिपाही खड़ा दिखाई दिया—जिसकी कमर
पर तौलिया लिपटा हुआ था और हाथ में तलवार थी। 'मुझसे लड़ो, कैदी।'

सिंदबाद ने अपनी तलवार निकाली और कहा, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं
यह दिन देखूंगा।'
तौलिए से लिपटा सिपाही आगे बढ़ा और तलवार हवा में लहराई, लेकिन सिंदबाद ने उसे रोक दिया। फिर वह नर्तक की तरह घूमा और गंदे पानी से भरी बाल्टी के पास गया।
पहरेदार ने एक और हमला किया और सिंदबाद ने फिर से उसे चकमा दिया, फिर बाल्टी को लात मारी। पानी छलक गया और जैसे ही पहरेदार आगे बढ़ा, उसका संतुलन बिगड़ गया और वह पीठ के बल गिर पड़ा, उसकी तलवार बगल में गिर गई। ‘क्या अब हमारा काम पूरा हो गया है?’
सिंदबाद सावधानीपूर्वक फिर से खिड़की की ओर बढ़ा...
लेकिन तभी, कई गार्डों ने दरवाजा तोड़कर अंदर प्रवेश किया।
लगभग एक दर्जन लोग अर्धनग्न सैनिक को अविश्वास भरी निगाहों से देख रहे थे, जो कराह रहा था, और उस लड़के को भी देख रहे थे जिसने हंगामा खड़ा किया था।
सिंदबाद ने खिड़की से बाहर देखा। फिर उसने पहरेदारों की ओर एक नज़र डाली और कहा, 'खैर, तुम्हारे द्वारा पीछा किया जाना बहुत अच्छा लगा।'
और एक गहरी सांस लेकर, वह उससे कूद गया, इस उम्मीद में कि वह भूसे के गट्ठे पर गिरेगा।
उसे तेज़ हवा का झोंका महसूस हुआ और वह किसी नरम चीज़ पर गिर पड़ा। उसने अपना सिर घुमाया और अपने सामने कई हैरान घोड़ों को देखा, जिन्होंने अपना चारा खाना बंद कर दिया और कराहने लगे।
‘शांत हो जाओ, लड़कों,’ सिंदबाद ने उठते हुए कहा और एक घोड़े को आगे बढ़ने के लिए उकसाया। घोड़ा हिनहिनाया।
सिंदबाद ने ऊपर देखा तो पाया कि पहरेदार खिड़की पर आ गए थे और उसे देख
रहे थे।
सिंदबाद ने और इंतजार नहीं किया।
उसने झट से लगाम पकड़ी और घोड़े को लेकर चल पड़ा। बैरन के महल की ओर।
केन की ओर।

सिंदबाद सुनसान रेगिस्तान में घोड़े पर सवार था। उसे प्यास लगी थी।
लेकिन अभी पानी या खाने के बारे में सोचने का समय नहीं था... वैसे भी उसके पास कुछ था नहीं। अब समय था अपने दोस्तों को बचाने का, फिर महल से निकलकर दुनिया को बचाने का।
काश, अशरफिया को बाहर निकालना आसान होता।
लेकिन जीवन कठिनाइयों और संघर्षों से भरा है। सिंदबाद अपने गले में
उठ रही प्यास को अनदेखा करते हुए पूरी रफ्तार से आगे बढ़ता रहा।
कैन किसके बारे में बात कर रहा था? सिंदबाद ने खुद से पूछा। कोई हमारा पीछा कर रहा है, कोई ऐसा है जो हमें सफल नहीं होने देना चाहता।
लेकिन कौन? क्या कोई मेरे अतीत का व्यक्ति?
रुब अल खली रेगिस्तान के बीचोंबीच वास्तुकला के एक शानदार चमत्कार
की तरह खड़े किले के पास पहुंचते ही सिंदबाद ने आग देखी।
और विस्फोट।
वे बहुत विशालकाय थे। वह भयभीत हो गया।
जाहिर तौर पर, केन ने ही इस गड़बड़ी की शुरुआत की थी।
वह अपने दोस्तों को बचाने की उम्मीद में पूरी रफ्तार से घोड़े पर सवार होकर भागा।

पैंतीस

चार वर्ष पहले
मास्टर रीस ने पक्षी का कटा हुआ सिर जमीन पर फेंक दिया।
सभी ग्रामीणों और सैनिकों ने खून से लथपथ सिर को जीभ बाहर लटकी हुई और आंखें बंद किए हुए लुढ़कते हुए देखा।
सिन्बाद, रीस के बगल में खड़ा था। ग्रामीण सदमे, विस्मय और पूर्ण राहत
से हांफ रहे थे। वे खुशी से ताली बजा रहे थे और एक-दूसरे को गले लगा रहे थे। भावहीन कमांडर कासिम घटनास्थल से दूर खड़ा था, लेकिन इतना करीब था कि रीस की कही बातें सुन सके।
'सुनो, मेरे शिष्य ने जंगल और पहाड़ों के दरिंदे को मार गिराया है। अब
तुम सब अपना जीवन बना सकते हो, इस परिसर को छोड़कर अपनी स्वतंत्रता का आनंद उठा सकते हो।'
सभी ग्रामीणों ने सिंदबाद के लिए खुशी मनाई और तालियाँ बजाईं। उसे अच्छा लगा, हालाँकि पक्षी को उसने नहीं मारा था। यह काम सफ़ीना ने किया था। वह अब भी उसके बारे में चिंतित था, लेकिन रीस ने उसे निर्देश दिया था कि वह रोक की मृत्यु की घोषणा होने तक समुद्री पक्षियों के साथ किनारे के पास छिपी रहे।
‘उस लड़की का क्या हुआ?’ कासिम ने पूछा।
‘उन्हें भी मार डाला गया।’
कासिम स्तब्ध रह गया और चारों ओर सन्नाटा छा गया। फिर उसने सिर हिलाया और किले की ओर चल पड़ा। सिंदबाद को पता नहीं था कि रीस के मन में क्या चल रहा है, लेकिन सफीना ने उन्हें जो रहस्य बताया था, उसके बारे में उसे कुछ करना ही था।

ग्रामीणों से बातचीत समाप्त करने के बाद, सिंदबाद और मास्टर रीस कमांडर के क्वार्टर की ओर चल पड़े। जब वे अंदर गए, तो कमांडर कागजी कार्रवाई में व्यस्त प्रतीत हुए।
'मुझे लगता है मुझे आपका धन्यवाद करना चाहिए,' कासिम ने अनिच्छा से कहा।
'तुम खुश नहीं लग रहे हो,' मास्टर रीस ने कहा।
'बहुत सारा पुनर्निर्माण करना बाकी है।'
‘जहाज हमारा इंतजार कर रहा है,’ रीस ने कहा। ‘हम आपकी अनुमति से ही रवाना होंगे क्योंकि आपने लड़के को सजा दी थी।’
कासिम ने सिंदबाद को गुस्से भरी निगाहों से देखा। ‘उसने मेरे सिपाही
को मारा है और उसकी यह उपलब्धि इस बात को नहीं बदल सकती कि बगदाद में उस पर मुकदमा चलेगा। तुम उसे हीरो बताकर दिखावा कर सकते हो, भले ही मुझे पता है कि तुमने खुद ही उस पक्षी को मारा होगा, लेकिन अब मेरे हाथ बंधे हैं और मैं किसी हीरो को फांसी नहीं दे सकता।’ उसने भौंहें चढ़ा लीं। ‘अच्छा किया, शिकारी। लेकिन मैं हंगामा मचा दूंगा और यह सुनिश्चित करूंगा कि अदालत मेरी बात सुने।’
‘मुझे यकीन है।’ रीस मुस्कुराया। ‘गिल्ड के पास अपने वकीलों की टीम
है, लेकिन जब कानून तोड़ने वाला आप ही हों तो उस पर चर्चा करने के लिए मुकदमे की क्या जरूरत?’
कासिम आगे की ओर झुका। वह कुछ कहना चाहता था, लेकिन उससे पहले उसने अपने कार्यालय में मौजूद गार्डों को जाने का आदेश दिया। 'किसी कमांडर पर आरोप लगाने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं।'
‘चूंकि आप एक कमांडर हैं,’ रीस ने जवाब दिया।
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ उसकी पुतलियाँ फैल गईं।
‘शुरू से ही तुम ही थे, है ना?’ माहिर शिकारी मुस्कुराया। ‘तुमने ही अनाज भंडार से डायन को खाना पहुँचाया। तुमने एक-एक करके सफ़ीना के परिवार को मार डाला—उसके माता-पिता और उसके भाइयों को—और फिर सबको बताया कि उस पर श्राप है, इसलिए उसे अपने गाँव में वापस नहीं आने दिया जाएगा। बेचारी। और फिर, तुमने और उस राक्षस लियोनार्ड ने सफ़ीना से कहा कि उसके परिवार को गाँव वालों ने मारा है। तुमने एक को दूसरे के खिलाफ भड़काया।’

मैं कुछ समय तक असमंजस में रहा, जब तक कि मैंने कल रात उससे बात नहीं
की और उसने मुझे बताया... कि कमांडर ही उसे राक्षस के घर ले गया था।
कासिम के चेहरे का रंग उड़ गया।
‘तुमने अब्दुल को सम्मोहित करके अपना घिनौना काम करवाया और जब वह नाकाम रहा, तो तुमने एक अधिकारी की हत्या का इल्जाम सिंदबाद पर लगा दिया,’ रीस ने कहा। ‘सिंदबाद ने मुझे बताया कि अब्दुल वही बात बुदबुदा रहा था जो शैतान बुदबुदा रहा था, कि मेरा लड़का उस लड़की का ध्यान कैसे भटका रहा था।’ कासिम चुप रहा और खड़ा हो गया।
रीस ने अपनी तलवार निकाली, लेकिन कासिम ने हमला नहीं किया। वह मुड़ा
और किताबों की अलमारी की ओर चल पड़ा। अचानक, कासिम जोर से हंस पड़ा।
यह धीरे-धीरे शुरू हुआ लेकिन फिर गंभीर और बदतर होता चला गया।
‘तुम एक बात में गलत थे।’ अब उसकी आवाज़ अजीब तरह से कर्कश थी और कासिम
की आवाज़ से बिल्कुल अलग थी। ‘मैंने अब्दुल को सम्मोहित नहीं किया था। वह मेरा नौकर था। और उस लड़की के परिवार को उसी ने मारा था। मैंने नहीं।’ वह उनकी ओर मुड़ा और सिंदबाद पीछे हट गया—कासिम का चेहरा बदल गया था।
और वह अभी भी बदल रहा था। वह जवान हो गया था। उसके बाल लंबे थे जो एक
तरफ चिकने किए हुए थे। उसके होंठ अधिक घुमावदार थे और कान छोटे थे। वह लंबा हो गया, उसकी तंग वर्दी फट गई। उसने अपना कवच उतार दिया और अपनी कमीज़ ढीली कर दी। उसकी आँखें शुद्ध, सफेद रोशनी से चमक रही थीं। 'क्या तुमने अंदाज़ा लगाया कि मैं कौन हूँ?'
'एक देवदूत,' रीस ने बिल्कुल शांत चेहरे के साथ कहा।
‘गलत। एक पतित देवदूत।’ वह हँसा। ‘वह जीवित है, है ना? मैं उसे महसूस कर सकता हूँ। ठीक वैसे ही जैसे मैं अपने आसपास के सभी लोगों की भावनाओं को महसूस कर सकता हूँ।’
रीस ने तलवार को कसकर पकड़ लिया। 'एक मृत व्यक्ति को एक साधारण लड़की में इतनी दिलचस्पी क्यों है?'
‘मैंने शैतान से सौदा किया है।’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘और तुम मुझे अपना वादा पूरा नहीं करने दे रहे हो। लेकिन मुझे तुम्हारा तरीका पसंद आया। मुझे तुम्हारी जाँच-पड़ताल और मुझे पकड़ने का तरीका भी पसंद आया। बढ़िया और साफ-सुथरा। अब बताओ, वो लड़की कहाँ है?’

‘तुम्हें वो नहीं मिलेगी। वो हमारे साथ जा रही है,’ रीस ने जबड़े भींचते हुए जवाब दिया।
'अरे नहीं। मैं करूँगा। मैं एक देवदूत हूँ, एक मलाक हूँ, आप समझ रहे
हैं ना।'
'लेकिन पतितों के पास रूप बदलने और थोड़ी सी ताकत के अलावा और कोई खास शक्तियां नहीं होतीं,' रीस ने उपहास उड़ाते हुए कहा।
उस आदमी की मुस्कान गायब हो गई। उसकी परछाईं कमरे में फैलती हुई सी लग रही थी। 'थोड़ी सी ताकत? मैं अज़राएल हूँ, मृत्यु का दूत, और तुम्हें लगता है कि मुझमें थोड़ी सी ताकत है?' वह आगे बढ़ा और हल्के से धक्का देकर रीस को दीवार से टकरा दिया।
फिर अजराइल ने सिंदबाद की ओर मुड़कर कहा, 'मेरे साथ आ जाओ, बच्चे। तुममें प्रतिभा दिखती है। गिरोह के आकर्षण में मत पड़ो।'
सिंदबाद ने कोई जवाब नहीं दिया। वह भय से कांप रहा था।
‘सुनो,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। ‘तुम मुझे बताओ कि लड़की कहाँ है और बदले में मैं तुम्हें बताऊँगा कि इन पागल दरिंदों द्वारा शिकारी बनाए जाने से पहले तुम कौन थे। तुम्हारे माता-पिता कौन थे। मुझे यकीन है कि तुम्हें इसमें दिलचस्पी होगी।’
सिन्बाद ने गले में अटके एक शब्द को निगल लिया। उसने रीस की ओर देखा
जो ज़मीन पर गिरा हुआ था—उसका गुरु जो झूठ और छल में माहिर था, जिसने उसे भेड़ियों के साथ एक अंधेरे जंगल में अकेला छोड़ दिया था और जिसने उसे गिल्ड द्वारा चुने जाने से पहले उसके बचपन के बारे में कभी कुछ नहीं बताया था। सिन्बाद ने अज़राएल के शब्दों पर विचार किया। उसने इस बारे में सोचा था—अपने अतीत के बारे में, अपने बारे में... और वह कभी भी पर्याप्त यादें इकट्ठा नहीं कर पाया था।
ऐसा प्रतीत होता है कि अजराइल ने सिंदबाद के विचारों को पढ़ लिया था।
‘मैं तुम्हें ज़रूरी जानकारी दे सकता हूँ... बस तुम मुझे वो बता दो जो मुझे जानना है। यकीन मानो, बच्चे, तुम्हारा एक खास खानदान है। मुझे बताओ वो लड़की कहाँ है और मैं तुम्हें तुम्हारी मनचाही चीज़ दे दूँगा वरना...’ वो आगे बढ़ा, उसकी सफेद आँखों से धुआँ निकल रहा था, ‘मैं तुम्हें मार डालूँगा।’

‘नहीं!’ रीस ने दूसरी तरफ से चिल्लाते हुए कहा, उठने की कोशिश करते हुए। ‘नहीं! वह तुम्हें मार नहीं सकता, बेटा। वह इंसानों को नहीं मारता। वह सिर्फ उन्हें प्रभावित कर सकता है, इसीलिए अब्दुल ने तुम्हें चोट पहुंचाई, उसने नहीं। वह इंसानों का खून अपने हाथों पर नहीं लगने दे सकता। धरती पर तो बिल्कुल नहीं।’
‘लेकिन मैं सच बोल रहा हूँ,’ अज़राएल ने कंधे उचकाते हुए कहा और सिंदबाद से दूर चला गया। ‘मैं उसे उसके अतीत के बारे में बता सकता हूँ।’ ‘मैं... मैं...’ सिंदबाद को अज़राएल को अपनी इच्छा बताने का मौका ही नहीं मिला क्योंकि रीस ने अपनी तलवार लेकर झपट्टा मारा और तुरंत अज़राएल की छाती पर वार कर दिया...
और वह पतित देवदूत गायब हो गया।
‘क्या उसकी मौत हो गई?’ सिंदबाद ने स्तब्ध रीस से पूछा।
गुरु ने आह भरी और अपनी तलवार पर झुकते हुए उसे ज़मीन में गाड़ दिया। “दुर्भाग्यवश, नहीं।” उन्होंने सिर हिलाया। “देवदूत तभी मर सकते हैं जब उनके हृदय पर प्रहार किया जाए। मैं ऐसा नहीं कर पाया। वह अभी के लिए गायब हो गया है और टेलीपोर्ट हो गया है, लेकिन वह बाद में हमला कर सकता है। हमें यहाँ से चले जाना चाहिए। मुझे लगता है कि हमारा समय यहाँ समाप्त हो गया है।”

छत्तीस

आज
वह महल की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ा।
हर तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी।
जिस घोड़े पर सिंदबाद सवार था, उसने हिनहिनाया और उसे जमीन पर गिरा दिया। फिर घोर भय से घोड़ा सरपट भाग गया।
आग की लपटों और गूंजती चीखों के बीच, सिंदबाद ने देखा कि महल की ओर जाने वाला रास्ता पिशाचों की लाशों से भरा पड़ा था - कुछ जले हुए थे, जबकि अन्य को नागफनी की तलवारों से गोद दिया गया था।
यह एक निर्मम नरसंहार था।
सिंदबाद को विश्वास नहीं हो रहा था कि यहाँ के राक्षस स्ट्रिगोई नहीं थे। वे तो इंसान थे। कानूनविहीन नश्वर प्राणी जो सहिष्णुता में नहीं, बल्कि हिंसक उग्रवाद में विश्वास रखते थे।
उसने अपनी तलवार निकाली और उस गैलरी की ओर दौड़ा जहाँ उसने आखिरी बार अशरफिया और इदरीस को देखा था। वह वहीं रुक गया जब उसने एक स्ट्रिगोई जोड़े को पिशाच शिकारियों से भागते हुए देखा जो उनका पीछा कर रहे थे। जब शिकारी आखिरकार उन तक पहुँचे, तो उन्होंने उन पर नुकीली छड़ियों से हमला किया, उनके पेट चीर दिए और उन्हें सूखा छोड़ दिया।
सिंदबाद मदद करना चाहता था।
लेकिन उनके पास समय नहीं था।
वह अपने अपराधबोध को दबाने और चीखों को अनसुना करने की कोशिश करते हुए खुली गैलरी की ओर भागा। उसके मन में बस एक ही बात गूंज रही थी, जो महमूद ने एक बार कही थी: हीरो वही होता है जो सबसे बुरे समय में भी सही काम करता है।
दुर्भाग्यवश, मैं उनमें से एक नहीं हूँ। मैं कभी नहीं था।

सिंदबाद ने मृत्यु और विनाश देखा और यद्यपि यह उसे परेशान कर रहा था, उसने इसे अनदेखा कर दिया। वह अधिक से अधिक लोगों की मदद करना चाहता था, लेकिन वह जानता था कि अभी मदद करने से कुछ हासिल नहीं होगा; बल्कि इससे उसका खतरा और बढ़ सकता था। उसे अपने गुरु की तरह निर्दयी बनना पड़ा, जिन्होंने उसे सिखाया था कि अपनी भावनाओं को अपने कार्य-जीवन के निर्णयों पर हावी न होने दें।
मुझे अशरफिया और इदरीस को ढूंढना है।
वह गैलरी में पहुंचा और उसने देखा कि सैकड़ों स्ट्रिगोई मलबे और कचरे
के बीच बेजान पड़े हुए थे। अन्य टावर जल रहे थे और विस्फोट हो रहे थे।
यह पागलपन है।
‘अरे वाह, देखो तो सही, यहाँ कौन है!’ उसके पीछे से किसी ने आवाज़ लगाई।
सिंदबाद धीरे से मुड़ा और उसने आदम के बच्चों के दो शूरवीरों को अपनी कुंद कांटेदार कुल्हाड़ियों के साथ देखा।
शूरवीरों में से एक ने कहा, 'मुझे लगा था कि हमने इस लड़के को कैद कर लिया है। तुम यहाँ क्या कर रहे हो, लड़के?'
‘क्या वो भागा हुआ कैदी है? खैर, जैसा कि ब्रदर केन ने आदेश दिया है, देखते ही मार डालो।’
वे हड़बड़ी में उसकी ओर दौड़े।
‘तुम लोग आराम नहीं करते, है ना?’ सिंदबाद ने अपनी तलवार तैयार कर ली,
और इस पागलपन का सामना करने के लिए खुद को तैयार किया।
लेकिन अचानक ही एक आकृति प्रकट हुई और उसने एक के बाद एक उनके गले काट दिए। सिंदबाद उस शक्तिशाली आकृति को देख नहीं पाया, जब तक कि वह उसके सामने आकर रुक नहीं गई और उसके पीछे लाशें ढेर होकर जमीन पर गिर पड़ीं।
इदरीस अपने दोधारी भाले के साथ प्रकट हुईं।
'मैं तुम्हें बचाने आया हूं,' सिंदबाद ने अविश्वास भरे लहजे में उससे कहा।
‘जैसे कि मुझे बचाने की ज़रूरत थी।’ इदरीस मुस्कुराया। ‘यह सब क्यों
हो रहा है?’
"खैर, तुम्हारा भरोसेमंद दोस्त केन उतना भरोसेमंद नहीं निकला जितना सोचा था। उसने हमें धोखा दिया। उसे पता था कि हम उसके पास आ रहे हैं। उसे किसी ने मुझे पकड़ने के लिए काम पर रखा था।"

‘तुम? क्या? कौन?’ इदरीस के चेहरे से मुस्कान गायब हो गई थी। एक जोरदार धमाके से किले की नींव हिल गई।
सिंदबाद और इदरीस लड़खड़ाते हुए फर्श पर रेंगने लगे। किले के प्रांगण के चारों ओर, उन्होंने पिशाचों के एक समूह को आदम के बच्चों से भागते हुए देखा, जो उन पर अपने धनुष ताने हुए थे।
‘वह जगह को जलाने के लिए ग्रीक आग का इस्तेमाल कर रहा है।’ सिंदबाद ने दांत पीसते हुए चारों ओर देखा। ‘आग के बड़े-बड़े गोले फोड़ रहा है और विस्फोट करने के लिए किसी खास सामग्री का इस्तेमाल कर रहा है।’
‘धिक्कार है!’ उसने गुस्से में कहा।
'क्या?'
‘मैंने बहुत समय पहले उससे एक समझौता किया था। बात इसी बारे में थी।’ इदरीस ने अपनी आँखें बंद कर लीं और घबराकर बोली, ‘तुम्हें पता है कि हमारा संगठन युद्ध में तकनीकी प्रगति में लगा हुआ है, और हमने विस्फोटकों को पूरी तरह विकसित कर लिया था। केन को योजनाएँ चाहिए थीं, इसलिए मैंने उनकी एक प्रति बनाकर उसे दे दी। मुझे नहीं पता था कि वह इतना नीच काम करेगा और उनका इस्तेमाल इस तरह सभ्यताओं को जलाने के लिए करेगा।’
सिंदबाद को कैन द्वारा बताई गई सौदेबाजी याद आ गई। बदले में, उसके पति
का आदम की संतानों द्वारा पीछा नहीं किया जाएगा।
‘अशरफिया कहाँ है?’ उसने पूछा। समय कम होता जा रहा है।
मैं उसके पास जा रहा था। आखिरी बार जब मैंने उसे देखा था, वह बैरन के साथ डिनर हॉल में थी।
'चल दर!'
इदरीस की आँखों में बदले की भावना झलक रही थी। 'तुम जाओ।' उसने उन पिशाचों को देखा जिन्हें दीवार के सहारे खड़ा करके यातनाएँ दी जा रही थीं, और फिर कुछ ही मिनटों में उन्हें मार डाला गया। आँगन की हरी घास पर खून की नदियाँ बह रही थीं। 'मुझे उन्हें बचाना है। वे मेरी ज़िम्मेदारी हैं।' ‘सुनो... मैं समझता हूँ। लेकिन हमारे पास समय कम है। दुनिया का अंत होगा, तुम्हें पता है। सिर्फ इसलिए कि हमने इन पिशाचों को मरने से बचा लिया, दुनिया हमारा इंतज़ार नहीं करेगी। समय हमारे पक्ष में नहीं है और हमें चुनाव करना होगा,’ सिंदबाद ने कहा। ‘हम यहाँ अशरफिया को लेने आए हैं और फिर चले जाएंगे। हम इन पिशाचों का शिकार करते हैं। हम ही गिल्ड हैं,

चाहे हमें पसंद हो या न हो। यही हमारा काम है। यही हमारी पहचान है। और हमारे पास उन्हें बचाने का समय नहीं है।’
इदरीस ने अपने जबड़े भींच लिए। 'मुझे करना ही होगा।'
हम शिकारी हैं। हम शिकार करते हैं। हम बचाते नहीं हैं।
‘नहीं, सिंदबाद। ये तुम्हारे अंदर के मास्टर रीस की आवाज़ है,’ उसने कहा। ‘जब ज़रूरत भी न हो तब भी आगे बढ़कर जान बचाना—यही तो हमें खास बनाता है।’ और फिर वह दौड़कर किले के प्रांगण की ओर चली गई।
सिन्बाद को क्षण भर के लिए अपने आप पर अपराधबोध और क्रोध हुआ कि उसने गुरु रीस जैसा व्यवहार किया, लेकिन वह अपने गुरु की वजह से ही ऐसा बना था। उसने कंधे उचका दिए। उसने यह सीख लिया था कि किन बातों पर ध्यान देना है और किन पर नहीं। सिन्बाद अपने दोस्तों के प्रति वफादार था, लेकिन दुनिया के प्रति... उसे यकीन नहीं था। उसने बहुत कुछ देख लिया था। दरअसल, वह इस दुनिया को सिर्फ इसलिए बचा रहा था ताकि इतने लंबे समय बाद सफीना से मिल सके। उसने उसे चुना था। और वह जानना चाहता था कि वह ऐसा क्यों कर रही है। लेकिन बाकी सब बातों के लिए, उसने बहुत पहले ही इस दुनिया से उम्मीद छोड़ दी थी। एक ऐसी दुनिया जो दुष्ट, नीच लोगों से भरी हुई थी।
बिना सोचे समझे वह भोजन कक्ष की ओर चल पड़ा।

अपने उत्तम वस्त्रों में सजे हुए, निर्जीव स्ट्रिगोई मेजों के पास कतार में खड़े थे।
आग छत और दीवारों में तेज़ी से फैल रही थी। सिंदबाद ने अपनी तलवार निकाल रखी थी और सावधानी से अंदर जाते हुए चिल्लाया: 'अशरफियाहल'
'यहाँ!'
सिन्बाद तेजी से आगे बढ़ा और उसने एक पिशाच शिकारी को देखा। उसने उस शूरवीर की पीठ देखी, जिसका सफेद लबादा पिशाचों के खून से लथपथ था। शूरवीर मुड़ा और उसका चेहरा सामने आया। वह ब्रदर केन था और उसकी पकड़ में बैरन था।

केन ने सिन्बाद की ओर देखा, उसके चेहरे पर उन्मादी मुस्कान थी, उसने कांटेदार शंख उठाया और उसे बैरन की गर्दन में घोंप दिया। खून केन के चेहरे पर फैल गया और उसने बैरन के शरीर को कोने में फेंक दिया, उसकी सुनहरी आँखें चमक रही थीं।
एक खौफनाक चीख सुनाई दी।
सिन्बाद ने देखा कि आवाज़ मेज़ों के नीचे से आ रही थी। वह नीचे झुककर अशरफ़िया को देखने लगा, जो डर के मारे सिसकते हुए छिपी हुई थी।
उसने कहा, 'बाहर निकलो।'
‘नहीं। पहले उस पागल को मारो। और उसकी थैली ले लो, उसमें मेरा सोना है।’ सिंदबाद खड़ा हो गया और उस योद्धा की ओर देखा जो अपने दस्तानों से अपना खून से सना चेहरा पोंछ रहा था।
‘तुम बच निकले,’ केन ने कहा। ‘यह तो बहुत बुरा हुआ। लेकिन मैंने तो सिर्फ तुम्हें फंसाने का वादा किया था। तुम्हारे बाहर निकलने और मेरी योजनाओं में दखल देने के बारे में कुछ नहीं कहा था। अब मुझे तुम्हें मारना ही पड़ेगा।’
'मैं जानता हूं कि तुम युद्ध की योजनाएं क्यों चाहते थे,' सिंदबाद ने सख्ती से कहा।
केन अपनी तलवार लेकर आगे बढ़ा और उसे सिंदबाद की ओर घुमाया, जिसने उसे रोक दिया और लुढ़क कर पलटवार करते हुए अपनी धातु की तलवार से वार किया। केन तेज़ी से मुड़ा। 'और ऐसा क्यों?'
‘मैं यह बात पहले नहीं कहना चाहता था, लेकिन मैंने इस बारे में बहुत सोचा। पहली बात, तुम्हारी आँखें सुनहरी हैं। एक नश्वर प्राणी के लिए यह बहुत असामान्य है। दूसरी बात, तुम्हारे पास...’ सिंदबाद फिर पलटा और कैन के कंधों पर झपटा, उन्हें कई टुकड़ों में तोड़ दिया।
इसके बाद, सिंदबाद ने अपने लबादे को फाड़ दिया, जिससे बड़ा लाल क्रॉस
कट गया और उसकी जगह एक बड़ा छेद हो गया।
केन ने तेवर चढ़ाए। उसने झपट्टा मारा, लेकिन सिंदबाद ने वार रोककर उसके पेट में लात मार दी। वह पीछे की ओर गिर पड़ा।
‘तुम्हारी कोई परछाई नहीं है। मैंने इसे तुम्हारे उस छोटे से यातना कक्ष में ही देख लिया था। साथ ही, तुम जिस जानकारी की तलाश कर रहे थे, वह धम्पिरों को मनुष्यों में बदलने के बारे में थी।’

'इसलिए?'
मुझे पता चल गया है कि तुम कौन हो।
केन आगे बढ़ा और उसने अपनी तलवार को पूरी ताकत से नीचे की ओर मारा, और
जब तलवारें आपस में टकराईं तो धातु की खनक सुनाई दी, जब तक कि उनके चेहरे कुछ इंच की दूरी पर नहीं रह गए।
‘कौन?’ उसने ताना मारा।
‘एक आधा पिशाच। एक धम्पिर। आप इस बीमारी से छुटकारा पाने की कोशिश कर
रहे हैं। क्या आपके आदमियों को इस पूरी घेराबंदी की सबसे बड़ी विडंबना का पता है?’
केन ने अपनी नाक फुलाते हुए खुद को पीछे खींच लिया। 'बड़ी चालाकी से। क्या तुम मेरी शिकायत करने वाले हो?'
'अगर आप मुझे अशरफिया के साथ छोड़कर अपने रास्ते चले जाते हैं, तो शायद मैं ऐसा न करूं। मैं रोमन राजनीति में दखल नहीं देता।'
‘काश मैं तुम्हारी बात पर यकीन कर पाता, शिकारी। खैर, मुझे अशरफिया को मारना ही पड़ेगा क्योंकि मेरा उससे संबंध है। मुझे उससे मदद लेने से घिन आती थी, पर मुझे पता था कि यह बस थोड़े समय के लिए ही है।’ केन हँस पड़ा। 'मुझे उसकी ज़रूरत है।'
‘क्या तुम्हें लगता है कि मुझे परवाह है?’ उसने गुस्से से कहा।
‘जब तुम खुद पिशाच हो तो शिकारी बनना क्यों चुनते हो?’ सिंदबाद ने अपनी तलवार आगे की ओर फेंकी, लेकिन केन ने उसे चकमा दिया और अपनी तलवार से सिंदबाद की पीठ पर प्रहार किया।
सिन्बाद को तीव्र पीड़ा महसूस हुई और इससे पहले कि वह हमला कर पाता,
केन ने अपनी तलवार से सिन्बाद की बांह पर वार किया और उसकी दाहिनी हथेली पर गहरा घाव कर दिया। इस प्रहार से आकाश-लोहे की तलवार उसके हाथ से छूट गई और वह घुटनों के बल जमीन पर गिर पड़ा, उसकी आँखों में आँसू भरे थे और उसके दाहिने हाथ से खून टपक रहा था।
केन उसके सामने खड़ा था, तलवार की नोक सिंदबाद के गले पर रखे हुए, और बोला, “तुम कह सकते हो कि मैंने शिकारी बनना इसलिए चुना क्योंकि मैं एक पिशाच था। जब मुझे अपनी असलियत का पता चला तो मैं बुरी तरह शर्मिंदा हुआ। जब मैं पैदा हुआ था, मेरी माँ ने एक भेड़ का खून लिया था जिसे एक भेड़िये ने खा लिया था और मुझे पिलाया था। मैं बस एक शिशु था। मैं सातवाँ पुत्र था,

लेकिन मुझे त्याग दिया गया क्योंकि बहुत सारे लोगों का पेट भरना था। और अब मैं यहाँ हूँ, अपनी किस्मत खुद बना रहा हूँ। मुझे देखो।” उसने गहरी साँस ली और बोला, “तो, मरने वाले हो और अपने बचाव के लिए तलवार भी नहीं है, तो तुम्हारे आखिरी शब्द क्या होंगे?” वह मुस्कुराया, और तलवार को सिंदबाद की गर्दन की नस पर बड़ी सावधानी से टिका दिया।
‘वह कौन व्यक्ति था जिसने आपको मुझे रोकने का निर्देश दिया था?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘व्यक्ति? यह कोई व्यक्ति नहीं था।’ केन मुस्कुराया। ‘यह तो ब्लैकविंग्ड वन था।’
सिंदबाद की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
वह जानता था कि वह कौन था।
तब सिंदबाद ने कहा, 'लेकिन तुम एक बात भूल गए।'
'क्या?'
मेरी तलवार टेलीपोर्ट कर सकती है।
सिंदबाद की तलवार अचानक केन के हाथ में आ गई और पलक झपकते ही उसने अपने भाई केन की बांह पर वार कर उसे काट डाला। केन दर्द और दहशत से चीख उठा, अपनी कटी हुई बांह को देखता हुआ पीछे हट गया—और तभी वह खिड़की से नीचे गिर गया।
अशरफिया मेज के नीचे से सरक कर निकली और बोली, 'शाबाश, मेरे प्रिय। हालांकि तुम्हें मेरे सिक्के नहीं मिले।' उसने मरे हुए बैरन की ओर देखा।
'मुझे बुरा लग रहा है कि मैं उसे इतना पसंद नहीं करती थी कि उसकी परवाह करूँ।'
सिंदबाद ने कुछ नहीं कहा और नीचे देखने के लिए खिड़की की ओर चल पड़ा।
और जब उसने ऐसा किया, तो उसे वहां कोई नहीं दिखा।
केन भाग निकला था।

वे शूरवीरों के बचे हुए घोड़ों पर सवार होकर किले से निकल गए।
सिर के ऊपर नारंगी रंग का सूरज जल रहा था। थोड़ी दूरी पर पहुँचकर इदरीस हाँफते हुए बोला, 'हमने कर दिखाया।'
‘क्या तुमने उन्हें बचा लिया?’
‘जी हां।’ वह मुस्कुराई।
सिन्बाद ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया। उसे अच्छा लगा। लेकिन इस समय उसका ध्यान केवल केन द्वारा दी गई जानकारी पर केंद्रित था।
‘केन मरा नहीं,’ सिंदबाद ने कहा। ‘वह आधा पिशाच है। वह गिरने के बाद भी
बच गया।’
इदरीस ने कहा, 'वह किसी और दिन की समस्या है।'
अशरफिया सिंदबाद के पीछे बैठी खर्राटे ले रही थी, उसका सिर सिंदबाद
के कंधों पर टिका हुआ था।
उसने एक हाथ से घोड़े की लगाम पकड़ी हुई थी, जबकि दूसरे हाथ में उसने अशरफिया की हद से ज्यादा लंबी पोशाक से फाड़ा हुआ एक कपड़ा लपेटा हुआ था। 'मुझे तुम्हें कुछ बताना है।'
‘क्या?’ इदरीस ने पूछा।
मुझे पता है कि हमें सफल होने से कौन रोक रहा है।
इदरीस ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'क्या हम किसी को जानते हैं?'
‘मैं उसे जानता हूँ।’ उसने आह भरी। ‘और दुर्भाग्य से मैं उसके बारे में बहुत कुछ जानता हूँ।’
'कौन है भाई?'
सूर्य की रोशनी उस पर पड़ रही थी जब उसने कहा, 'यह काले पंखों वाला है, जिसे अजराइल, मृत्यु के दूत के रूप में भी जाना जाता है।'

सैंतीस

चार वर्ष पहले
सिंदबाद जहाज पर सवार था और बंदरगाह की ओर वापस जा रहा था।
उसे सुकून का एहसास हुआ, मानो उसके ऊपर से कोई भारी बोझ उतर गया हो।
वह द्वीप पर जीवित रहने को लेकर इतना चिंतित था कि अब वह बस अपने केबिन में बिस्तर पर आराम करना चाहता था। जहाज फारस की खाड़ी के पानी में आगे बढ़ रहा था।
दरवाजे पर दस्तक हुई। सिंदबाद को नींद आ रही थी इसलिए उसे दरवाजा खोलने का मन नहीं हुआ, लेकिन फिर भी वह अनिच्छा से उठा और दरवाजा खोला, क्योंकि उसे डर था कि कहीं मास्टर रीस न हों।
इसके बजाय, यह सफीना थी।
‘अरे!’ वह मुस्कुराते हुए बोला। ‘क्या हुआ?’
‘नींद नहीं आ रही।’ उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘अंदर आ सकते हो?’
सिन्बाद ने सिर हिलाकर उसे अंदर आने का इशारा किया और उसके पीछे दरवाजा बंद कर दिया। अचानक अपने कमरे की अव्यवस्था को देखकर उसे शर्मिंदगी महसूस हुई और वह घबराकर बिखरी हुई किताबों को समेटने और अपना बिस्तर साफ करने लगा।
‘कोई बात नहीं।’ सफीना खिलखिलाकर हंस पड़ी और बिस्तर के बगल वाली कुर्सी पर बैठकर किताबें देखने लगी।
सिंदबाद रुका और उसे देखने लगा। उसकी जिज्ञासु पीली बिल्ली जैसी आँखें पन्नों पर सरपट दौड़ रही थीं और उसकी काली पुतलियाँ लंबवत रूप से कटी हुई थीं। उसने चिथड़े-चिथड़े कपड़े पहने थे, लेकिन वह बेहद खूबसूरत लग रही थी।
‘बैठो।’ उसने अपने बगल वाली कुर्सी पर थपथपाया।
सिंदबाद ने हिचकिचाते हुए ऐसा किया।

‘हम कहाँ जा रहे हैं?’ उसने पूछा।
'ठीक है, ऐसी जगह पर जहाँ तुम सुरक्षित रहोगी,' सिंदबाद ने जवाब दिया,
यह सोचते हुए कि कैसे उसने और रीस ने उसे एक बोरी में छिपाकर जहाज पर ले गए थे।
'ज़रूर?'
‘मैं इस पर अपनी जान की बाजी लगा सकता हूँ।’ सिंदबाद मुस्कुराया, हालाँकि उसे यह पक्का नहीं पता था कि सफीना के लिए उपयुक्त घर कहाँ मिलेगा। शायद उसे किसी निःसंतान दंपत्ति को दे दें जिन्हें रीस जानता हो, या उसे बुनकर की दुकान पर नौकरी दिलवा दें।
मास्टर रीस को पता होगा कि सफीना के लिए सबसे अच्छा क्या है।
उन्होंने कहा, 'कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं बहुत शक्तिशाली हूं। मुझे
यह शक्ति पसंद नहीं है।'
'क्यों?'
‘महान शक्ति महान पीड़ा लाती है।’ उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और उसके पीले गालों पर आँसू बहने लगे। ‘मेरे माता-पिता... मेरा पालतू जानवर...’ सिन्बाद ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा। 'सब ठीक हो जाएगा। तुम जितनी बहादुर हो, उसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। मुझे खुशी है कि मैं तुम्हें जानता हूं।'
उसने मासूमियत से सिर हिलाया, अपने आंसू पोंछे और अपना सिर उसकी गोद में रखते हुए कहा, 'मुझे एक कहानी सुनाओ।'
'अच्छा, आपको ग्रीक मिथक... मतलब कहानियां पसंद हैं, है ना?'
उसने सिर हिलाया।
बहुत समय पहले, ओलंपियनों और टाइटनों के बीच युद्ध हुआ था। एटलस नामक टाइटन की पुत्री कैलिप्सो नाम की एक लड़की थी, जिसने अपने पिता का साथ दिया था। जब ओलंपियनों ने युद्ध जीता, तो उन्होंने उसे एक द्वीप पर निर्वासित कर दिया और उसे श्राप दिया कि वह कभी उस द्वीप को नहीं छोड़ पाएगी। इस प्रकार, उसे अपने वंश के प्रति वफादार रहने के कारण कष्ट भोगना पड़ा। और वह तब तक कष्ट भोगती रही जब तक कि एक दिन ओडीसियस नाम का एक सुंदर, आकर्षक राजकुमार उस द्वीप पर नहीं आ गया।
‘मिनोटौर का हत्यारा?’

सिन्बाद मुस्कुराया। 'नहीं। कोई फर्क नहीं।' उसने उसके सिर पर थपथपाया और अपनी उंगलियों से उसके काले बालों को सहलाया।
ओडीसियस जाना चाहता था, लेकिन कैलिप्सो ने उसे वहीं रुकने के लिए मना लिया। उसने उसके लिए सब कुछ करने की कोशिश की और ओडीसियस खुश था। उसे कैलिप्सो भी पसंद थी। वे सात साल तक उस द्वीप पर साथ रहे, जब तक कि ओडीसियस को अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का एहसास नहीं हुआ। उसने कैलिप्सो से कहा कि उसे जाना होगा।
'दुखद,' उसने आह भरी।
इसलिए उसने कैलिप्सो को छोड़ दिया। उसका दिल भी टूट गया था, क्योंकि
वह अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अपने जीवन के प्यार को छोड़कर जा रहा था।
उसने पूछा, 'सभी महान प्रेम कहानियों का अंत दुखद क्यों होता है?'
अगर ऐसा नहीं हुआ तो उन्हें महान प्रेम कहानियां नहीं कहा जाएगा।
उसने कुछ नहीं कहा। सिंदबाद उसके बालों को सहलाता रहा।
‘क्या मैं बुरी हूं?’ उसने पूछा।
'नहीं।'
लेकिन क्या मैं बुरा हो सकता हूँ?
सिंदबाद एक पल के लिए रुका और फिर बोला, 'बेशक तुम नहीं कर सकते।'
यह आपके स्वभाव में नहीं है।'
'बकरी का दानव कहता है कि ऐसा ही है। दुनिया का अंत करने के लिए नियत है।'
‘लेकिन ऐसा करना ज़रूरी नहीं है,’ उन्होंने कहा। ‘हमारी पहचान हमारे फैसलों से होती है। सिर्फ इसलिए कि आप एक खास तरह से पैदा हुए हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि भविष्य में आप क्या करेंगे, इस बारे में आपके पास कोई विकल्प नहीं है।’
‘सिन्दाब, तुम नियति से भाग नहीं सकते,’ उसने कहा। वे चुपचाप बैठे रहे,
फिर उसने कहा, ‘मुझे एक मदद चाहिए।’
'हाँ।'
उसने कहा, 'मुझे मार डालो,' और उसके हाथ जम गए, 'अगर मैं बुराई की राह पर चलूँ तो। कृपया?'

सिन्बाद कहना चाहता था कि वह इसका वादा नहीं कर सकता। 'तुम नहीं करोगे।'
अगर मैंने ऐसा किया तो मुझे मार देना।
‘तुम इतने शक्तिशाली हो जाओगे कि तुम्हें मारना नामुमकिन होगा। तुम शायद उड़ जाओगे,’ सिंदबाद ने मजाक में कहा।
‘नहीं। जब तुम मेरे पास आकर कहोगे कि तुम्हें मुझे मारना है, तब मैं जान जाऊंगी कि मेरा समय आ गया है,’ उसने कहा। ‘मैं आत्मसमर्पण कर दूंगी। लेकिन केवल तुम्हारे लिए। किसी और के लिए नहीं।’
सिंदबाद ने आह भरी और कहा, 'चूंकि तुम एक द्वीप पर थी, इसलिए मैं तुम्हें कैलिप्सो कहकर बुलाऊंगा।'
‘कैलिप्सो। मुझे यह नाम पसंद है।’ वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।
कुछ देर बाद वह सो गई। उसे बिस्तर पर लिटाकर और उसके सिर के नीचे तकिया लगाकर, वह अंधेरे का सामना करने के लिए डेक पर चला गया।
वहाँ कुछ चालक दल के सदस्य खड़े थे। यह खलीफा साम्राज्य का जहाज था,
जिस पर सिंदबाद और रीस ने पहले यात्रा की थी।
आज चाँद बेहद खूबसूरत लग रहा था और फर्श उसकी रोशनी में नहाया हुआ था। कुछ ही गज की दूरी पर, सिंदबाद ने मास्टर रीस को सीढ़ी की रेलिंग पर झुके हुए देखा। उन्होंने साधारण कुर्ता पहना हुआ था और उनके पास कोई हथियार नहीं था।
सिंदबाद उसके पास गया। 'गुरुजी, आप सोए नहीं?'
रीस मुड़ा। 'लगता है तुमने भी नहीं किया।'
सिंदबाद ने नीचे देखा और थोड़ी देर रुकने के बाद कहा, 'हर चीज के लिए धन्यवाद...'
‘मुझे धन्यवाद मत दो। तुम्हारी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है,’ उसने धीमी और बेजान आवाज में कहा।
‘कैल... सफीना कहाँ रहने वाली है? क्या आपने इस बारे में सोचा है?’
‘वह हमारे साथ गिल्ड में आएगी। ग्रैंड मास्टर उससे मिलना चाहेंगे।’ उसके चेहरे पर एक धूर्त मुस्कान फैली हुई थी। ‘तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि यह गिल्ड के लिए कितना बड़ा मौका होगा; वे उसका अच्छी तरह से अध्ययन कर सकते हैं। हमारे पास लॉर्ड ऑफ द डॉन का हथियार है।’
उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगी।

और सिंदबाद सोचने लगा कि सफीना को द्वीप से बाहर निकालना एक समझदारी भरा फैसला था या नहीं।

अड़तीस

आज
भाग्य और किस्मत के चलते वह पूर्व दिशा की ओर रवाना हुआ।
सिंदबाद अपने घावों पर कई पट्टियाँ और मलहम लगा रहा था। उसे अपने खुरदुरे, चोटिल हाथ को संभालने में बहुत मुश्किल हो रही थी, जिस पर एक गहरा घाव था। यह उसका तलवार वाला हाथ था और अब एक शीशी जैसी साधारण चीज़ को पकड़ना भी उसके लिए दर्दनाक था।
यह एक समस्या बनने वाली है।
उसकी झोपड़ी के दरवाजे पर दस्तक हुई।
‘अंदर आ जाओ,’ उसने कहा।
उसने देखा कि इदरीस अंदर आने से पहले धीरे से झाँक रही थी। बिना कुछ कहे, वह सिंदबाद के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और उसके हाथ की देखभाल करने लगी। उसने मुँह में एक पिन दबाकर पट्टी को ठीक से लपेटा और चोट पर मरहम लगाया। फिर उसने पिन से पट्टियों को एक साथ बाँध दिया।
‘धन्यवाद,’ सिंदबाद ने कुर्सी पर पीछे झुकते हुए कराहते हुए कहा। ‘मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?’
‘अशरफिया तो बिल्कुल मुसीबत खड़ी कर देती है! लगता है उसे दुनिया के
अंत की भी परवाह नहीं, बस उसे एक हजार दिरहम मिल जाएं। मुझे उससे वादा करना पड़ा और एक आधिकारिक पत्र लिखना पड़ा कि उसका काम पूरा होते ही उसे दिरहम मिल जाएंगे,’ इदरीस ने एक ही सांस में कह दिया।
‘वह स्वार्थी हो सकती है।’ सिन्बाद हँसते हुए बोला। ‘लेकिन वह अपने
काम में माहिर है।’
मुझे उम्मीद है कि वह हमारे किसी क्रू मेंबर की हत्या नहीं करेगी।
'अगर वह ऐसा करती है तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। उन्हें हर कुछ महीनों
में एक इंसान को जन्म देना पड़ता है, लेकिन मुझे यकीन है कि वह अगले कुछ दिनों तक भूखी रह सकती है।'

‘बहुत खूब।’ इदरीस ने अपना सिर हिलाया और अपनी बैंगनी आँखों को घुमाया। ‘लेकिन फिर भी, उससे शालीन, मददगार और सबसे बढ़कर... वफादार बने रहने के बारे में बात करो।’
‘इदरीस, वो किसी के प्रति वफादार नहीं है। अगर कोई उसे हमें मारने के
लिए पैसे दे, तो वो मार डालेगी,’ सिंदबाद ने बेझिझक कहा। ‘इसलिए हमें इस बात का बहुत ध्यान रखना होगा कि वो किन लोगों के साथ उठती-बैठती है।’
‘बहुत बढ़िया,’ उसने कहा और उठ खड़ी हुई। ‘अगर तुम तैयार हो तो बाहर आ जाओ। तुम्हारा दोस्त हुसैन, मार्कस के दबाव में आकर और भी सख्त आदमी बनने की कोशिश कर रहा है।’ वह ज़ोर से हँसी।
सिंदबाद ने गहरी सांस ली और दरवाजे की ओर चलते हुए कहा, 'केन ने मुझे बताया कि उसने तुम्हारे लिए क्या किया। मैं यह भी जानता हूँ कि तुम इस मिशन पर क्यों हो। अपने पति को बचाने के लिए।'
उसने अपनी मुट्ठी कस ली। बिना मुड़े उसने कहा, 'तो अब तुम इसके बारे में क्यों बात कर रहे हो?'
‘क्योंकि...’ सिंदबाद ने पलकें झपकाईं। ‘यह मान लेना मेरी गलती थी कि तुम यहाँ सिर्फ अपने पति को बचाने आई हो। लेकिन जब तुमने उन पिशाचों की मदद करने की कोशिश की, तो मुझे एहसास हुआ कि तुम जितनी दिखती हो उससे कहीं ज़्यादा हो।’
इदरीस मुड़ी और सिंदबाद को उसकी आँखों में क्रोध की झलक की उम्मीद थी, लेकिन इसके बजाय उसने कहा, 'धन्यवाद। मैं बस... मैं जल्दी पहुँचकर तुरही लेना चाहती हूँ। मुझे पता है कि मैं इसे दिखा नहीं रही हूँ, लेकिन मैं बहुत चिंतित हूँ।'
चिंता मत करो। हम करेंगे।
हमारे पास अब बहुत कम समय बचा है।
सिन्बाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। जल्द ही, वह सफीना से मिलने वाला था
और सब कुछ बदल जाएगा। बस कुछ ही समय की बात है जब वह उसे फिर से देखेगा... और उसे मार डालेगा।
‘देखो, मुझे पता है जब मैंने तुम्हें सफीना के अंजाम के बारे में बताया था, तब तुमने कुछ नहीं कहा था,’ इदरीस ने कहा। ‘और पूरे गिल्ड को पता है कि तुम उसे कितना पसंद करते हो। लेकिन अगर तुम खुद यह घिनौना काम नहीं कर सकते, तो तुम्हें इस सब के बीच में नहीं पड़ना चाहिए।’

मैं आपको इसका वादा नहीं कर सकता।
इदरीस आगे बढ़ी, उसका चेहरा आधा छाया में, आधा प्रकाश में था। 'लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिला सकती हूँ कि मुझे इस बात की परवाह नहीं होगी कि तुम मेरे दल का हिस्सा हो या नहीं। मैं तुम्हें भी खत्म कर दूंगी।'
सिन्बाद ने अपनी नाक फुला ली। वह गुस्से में पलटवार करना चाहता था, लेकिन वह चली गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि मामला कितना पेचीदा है। क्या उसके लिए समझना आसान नहीं होना चाहिए था? आखिर उसने अपने पिशाच पति को बचाने के लिए संगठन के खिलाफ विद्रोह किया था।
सिंदबाद ने आह भरी। अब सफीना को बचाना और भी मुश्किल हो गया था। उसने सोचा था कि वह उसे मना लेगा और अपना मन बदलवाकर उसके पास ले आएगा, लेकिन अब...
उसे इदरीस का सामना करना पड़ा।

क्रिस्टल जैसे नीले पानी को देखकर उसे शांति का अनुभव हुआ।
पहले तो उसे समुद्री बीमारी महसूस हो रही थी, लेकिन अब असीम नीला आकाश
और समुद्र उसे मुस्कुराने के लिए काफी थे।
सिन्बाद ने जहाज के हलचल भरे डेक पर नज़र दौड़ाई। इदरीस कहीं नज़र नहीं आ रहा था। अशरफिया दूरबीन लेकर जहाज के अगले हिस्से पर खड़ी थी। एक कोने में हुसैन, मार्कस के साथ तलवारबाजी का अभ्यास कर रहा था, जो उससे कद में काफी लंबा था। जब भी हुसैन उस पर वार करने की कोशिश करता, मार्कस बड़ी आसानी से वार को रोक देता और उसे ज़मीन पर गिरा देता, कोई अपशब्द कहता और फिर उठने को कहता।
सिंदबाद हँस पड़ा।
उसे प्रेसा कहीं नजर नहीं आई; वह शायद रसोई में नाविक के साथ थी और चालक दल के लिए खाना बना रही थी।

सिन्बाद अपनी बाहों को अपनी छाती पर बांधे हुए हुसैन और मार्कस की ओर चला।
‘क्या मैं तुम्हें परेशान कर रहा हूँ?’ सिंदबाद ने हुसैन से पूछा, जो फिर से गिर गया, लेकिन उठ खड़ा हुआ और अपने नितंबों से धूल झाड़ी।
‘अरे, ठीक है,’ हुसैन ने बुदबुदाते हुए कहा।
‘कमजोर!’ मार्कस चिल्लाया। ‘कमजोर!’ उसने हुसैन की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘आओ, लड़ो, नन्हे बच्चे।’
हुसैन ने गुर्राते हुए अपनी सुस्त चाल का इस्तेमाल करने की कोशिश की
और जल्दबाजी में अपनी तलवार घुमाई, लेकिन मार्कस ने उसे नीचे गिरा दिया। ‘कमजोर! बहुत तेज़। तलवारबाजी में धैर्य की जरूरत होती है। क्लास खत्म।’ उसने सिर हिलाया और निचले डेक की ओर चल पड़ा।
हुसैन जमीन पर गिर पड़ा और उसने गुस्से में अपनी तलवार फेंक दी। 'वह मुझे मेरे पिता की याद दिलाता है, तुम्हें पता है। वह भी मुझे हमेशा मेरी कमजोरी बताता रहता था। वह मुझे तलवारबाजी और घुड़सवारी सिखाता था और मैं दोनों में बुरी तरह असफल रहा।'
समुद्र में जहाज के हिलने-डुलने के बीच सिंदबाद हुसैन के स्तर तक घुटनों के बल बैठ गया। 'मुझे यकीन है कि तुम ठीक हो जाओगे।'
“अच्छा, अगर मैं न करूँ तो क्या? सच कहूँ तो, मुझे यहाँ रहने का कोई मतलब नहीं दिखता। मैं यहाँ सिर्फ इसलिए हूँ क्योंकि मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। बस इतना ही,” उसने अफसोस जताते हुए कहा। “काश मेरे पास करने के लिए और भी कुछ होता।”
‘तुम कर लोगे,’ सिंदबाद ने कहा। ‘लेकिन याद रखना, तुम्हारी ताकत तलवारबाजी और घुड़सवारी में नहीं है। तुम्हारी ताकत शब्दों के खेल में है। तुम्हारी वजह से ही हमारे पास मार्कस और उसके सैनिक हैं। हमेशा याद रखना, हर हथियार, हथियार होना जरूरी नहीं। अपनी खूबियों को अपनाओ और उन चीजों के पीछे मत भागो जिनमें तुम उतने अच्छे नहीं हो। जिन कौशलों में तुम पहले से ही माहिर हो, उन्हें और निखारो।’
‘तुम्हें देखो। किसी पुजारी की तरह ज्ञानी हो तुम,’ उसने कहा और सिंदबाद मुस्कुराया।
‘प्रेमी!’ अशरफिया ने जहाज के अगले हिस्से से चिल्लाकर कहा।
हुसैन ने अपनी भौंहें उठाईं। 'प्रेमिका? दिलचस्प।'

‘लंबी कहानी है।’
'मैं शर्त लगा सकता हूं।'
'चुप रहो।'
हुसैन हंस पड़ा जब अशरफिया घबराई हुई सिंदबाद की ओर चली। उसने दूरबीन
से देखा। उसने गहरे काले रंग के चुस्त-दुरुस्त कपड़े पहने थे जो उसके सुडौल शरीर को और भी आकर्षक बना रहे थे, साथ में उसने बड़े-बड़े काले जूते पहने थे।
उसने पूछा, 'तुम्हारा हाथ कैसा है?'
'अच्छा।'
‘क्या यह इसे पकड़ने के लिए काफी अच्छा है?’ उसने दूरबीन की ओर इशारा करते हुए पूछा।
सिन्बाद ने सिर हिलाया। लेकिन उसमें से झाँकने से पहले उसने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि मैं तुम पर इतना भरोसा कर सकता हूँ कि तुम इसे बिगाड़ोगे नहीं।' उसे अशरफिया के बारे में इदरीस के शब्द याद आ गए। 'डार्लिंग, मेरे भरोसे को खरीदने के लिए किसी के पास पर्याप्त पैसा नहीं है,' उसने आंख मारते हुए कहा।
सिंदबाद ने दूरबीन से कुछ मील दूर एक द्वीप को देखते हुए मन ही मन बड़बड़ाया। 'एक द्वीप? दिलचस्प!' उसने बेपरवाही से कहा। 'मुझे समुद्र में द्वीप देखकर आश्चर्य हुआ!' उसने व्यंग्यपूर्वक कहा।
‘अरे नहीं, तुम नासमझ छोटे लड़के। गंध मुझे वहीं ले जाती है,’ उसने कहा। ‘हमें रुकना होगा क्योंकि मुझे लग रहा है कि सफीना भी वहीं रुकी थी।’ सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'ज़रूर।'
आपने इसे नहीं देखा, है ना?
'क्या?'
‘प्रिय, कभी-कभी तुम मुझे निराश कर देते हो। द्वीप के पश्चिमी तट को देखो,’ स्ट्रिगोई ने उत्तर दिया।
सिंदबाद ने ऐसा किया। और उसका दिल बैठ गया।
द्वीप के तट पर एक जहाज डूब गया था।
‘एक टूटा-फूटा जहाज। यह किसका है? क्या यह सफीना का जहाज हो सकता है?’ ‘शायद।’ अशरफिया ने दूरबीन हटा ली। ‘ज़्यादा ज़रूरी सवाल यह है कि चूंकि ये धीमी गति से बहने वाला पानी है, तो जहाज़ डूबने का कारण क्या था?’

उनतीस

चार वर्ष पहले
वे बगदाद पहुंच चुके थे।
इतने लंबे सफर का असर सफीना और सिंदबाद पर पड़ा, हालांकि मास्टर रीस तरोताजा और ऊर्जावान दिख रहे थे।
सिन्बाद को ठीक से नींद नहीं आई थी—पहले जहाज़ पर, फिर उस काफिले में
जो उन्हें राजधानी के चहल-पहल भरे केंद्र तक ले गया, जहाँ उन्होंने बाज़ार, गुंबदनुमा इमारतें, मस्जिदें और स्थानीय लोगों को देखा। अब्बासिद खिलाफत के रक्षक सड़कों पर मार्च कर रहे थे। रास्ते में अस्तबल, किराना दुकानें, ऊँट और लाल ईंटों के पुल दिखाई दिए। कुछ गलियाँ संकरी थीं और कुछ इतनी चौड़ी थीं कि दो गाड़ियाँ एक-दूसरे के बगल से गुज़र सकती थीं।
दूर से सिंदबाद को खलीफा का महल दिखाई दिया। सिंदबाद उस प्रतिभाशाली लड़के से कभी नहीं मिला था। जी हाँ, खलीफा एक लड़का ही था, एक नौजवान जिसने अपने उस भाई से यह उपाधि विरासत में पाई थी जिसकी कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी।
वे निनुर्ता गिल्ड के किले तक पहुँचे। यह वहाँ के अन्य किलों की तरह
ही खड़ा था, सिवाय इसकी ऊँची, शानदार मीनारों के, जिनके बारे में सिंदबाद जानता था कि वे मिलिशिया सैनिकों के गश्ती दल के लिए निगरानी चौकी के रूप में काम करती थीं।
किले के अंदर जब वे सब एक साथ huddled होकर बैठे थे, तब सफीना ने पूछा,
'यह क्या है?'
‘चिंता मत करो। जो लोग तुम्हें नुकसान पहुंचाना चाहते हैं, उनसे बचने
के लिए यह सबसे सुरक्षित जगह है,’ सिन्बाद ने समझाया।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सेइड प्रशिक्षण में इस प्रकार का मंत्र सीखना सबसे आसान था। सेइड जादूगर नहीं थे और वे केवल गैर-घातक जादू ही कर सकते थे क्योंकि यह करना आसान था। आपको बस चिन्ह, चिह्न और मंत्र के साथ-साथ इसे बोलने का सही तरीका भी जानना होता था।
सिन्बाद अशरफिया के पत्र की सामग्री पर विचार करता रहा।
उन्होंने उम्मीद जगाई।
वह आदर्शवादी थे।
और वह सही थी। उसने कहा था कि वह सर्वश्रेष्ठ शिकारी बनना चाहता है, मानवता को बचाने के लिए राक्षसों से लड़ना चाहता है और लोगों की अच्छाई पर विश्वास करता है। उसका सपना वाकई सपनों से भरा था।
लेकिन कहीं न कहीं उसके मन में सफीना की चिंता थी। उसे उम्मीद थी कि
वह ठीक होगी।
मुझे कम से कम एक बार जांच तो कर ही लेनी चाहिए। वह काफी समय से गायब
थी।
उसने गहरी सांस ली और यह उम्मीद करते हुए कमरे से बाहर निकल गया कि वह सुरक्षित होगी।
मुझे पूरा यकीन है कि वह होगी, उसने सोचा। लेकिन वह खुद से झूठ बोल रहा था। वह ग्रैंड मास्टर के लॉज की ओर चलते हुए अपनी गति बढ़ा दी।

चालीस

आज
वे द्वीप पर पहुँच गए।
और अजीब बात यह थी कि इससे सिंदबाद को चार साल पहले का वह भयानक एहसास
याद आ गया, जब वह और उसका गुरु एक द्वीप पर उतरे थे।
इदरीस ने यह सुनिश्चित किया कि जहाज तट से कुछ गज की दूरी पर लंगर डाले हुए है, ताकि अगर उनका सामना किसी अलौकिक प्राणी से हो जाए तो जहाज को कोई नुकसान न पहुंचे।
वे सुरक्षा नौकाओं में सवार हुए—एक नौका में सिंदबाद, मार्कस और उसके दो आदमी, साथ ही हुसैन भी थे, जिन्होंने स्वेच्छा से भाग लिया, हालांकि मार्कस ने असहमति जताते हुए कहा, 'नहीं! कमजोर।' हुसैन ने उनकी बात नहीं सुनी और सिंदबाद ने कोई विवाद नहीं किया, क्योंकि वह जानता था कि हुसैन इस मिशन का हिस्सा बनने के योग्य न होने के कारण अपराधबोध महसूस कर रहा था।
दूसरी सहायक नाव पर इदरीस और भी सैनिक थे। प्रेसा उनके साथ नहीं गई। दरअसल, उसने कहा कि वह इस जीवन-मरण के अभियान का हिस्सा न बनकर ही अधिक प्रसन्न होगी, क्योंकि क्षतिग्रस्त जहाज की हालत बेहद खराब लग रही थी, और जिसने भी यह किया था वह कोई बहुत शक्तिशाली व्यक्ति था।
दूसरी ओर, अशरफिया ने सीधे-सादे शब्दों में कहा: 'मुझे सूंघने के लिए पैसे मिलते हैं, न कि खतरनाक द्वीपों पर जाने के लिए। बस सुरक्षित रहें ताकि आप वापस आकर मुझे पूरा भुगतान कर सकें।'
सिंदबाद को स्ट्रिगोई से यही उम्मीद थी और उसने विरोध नहीं किया, भले
ही इदरीस इससे नाखुश था।
वे किनारे पर पहुँच गए, उस मलबे से कुछ ही गज की दूरी पर जहाँ विशाल जहाज रेत पर झुका हुआ था - बहुत सारा माल समुद्र में गिर गया था, जो चालक दल के क्षत-विक्षत शवों के बीच तैर रहा था।

किनारे पर कुछ लाशें भी पड़ी थीं। सिंदबाद और करीब गया।
वह उनमें से एक के पास घुटनों के बल बैठ गया और उनकी त्वचा और कपड़ों
को ध्यान से देखा। वे गरीब लग रहे थे। उनकी त्वचा झुलसी हुई थी। उनकी रीढ़ और टांगों की हड्डियाँ टूटी हुई थीं।
“ये व्यापारी हैं,” सिंदबाद ने इदरीस और चालक दल से कहा, जो सभी लाशों
का अध्ययन कर रहे थे। “यह सफीना का जहाज नहीं है।” उसने जहाज के अग्रभाग पर नज़र डाली और वह साधारण सा था। उस पर ऐसा कुछ भी नहीं था जो यह दर्शाता हो कि “हम दुनिया का अंत करने जा रहे हैं।”
“हां,” इदरीस ने जवाब दिया। “लगता है उन पर किसी बहुत बड़ी चीज से हमला हुआ है। मुझे आश्चर्य है कि वह क्या हो सकता है।”
सिंदबाद और हुसैन यह देखने की कोशिश करते हुए जहाज की ओर चले कि क्या
कोई जीवित बचा है, तभी अचानक उन्हें एक आवाज सुनाई दी।
कोई गाना गा रहा था।
दोनों दोस्तों ने एक-दूसरे को देखा और मलबे को एक तरफ धकेलते हुए जहाज में घुस गए। वहाँ उन्हें एक बीमार-सा दिखने वाला आदमी मिला, जिसकी बड़ी दाढ़ी थी और वह गुनगुना रहा था। सिंदबाद ने इधर-उधर बिखरे हुए कुछ आधे खाए हुए सेब और सब्जियां देखीं।
उसने धुंधली आँखों से सिंदबाद और हुसैन की ओर देखा और गाना जारी रखा मानो उनकी उपस्थिति ने उसे आश्चर्यचकित न किया हो।
‘हाय,’ सिन्बाद ने कहा।
वह आदमी गाना बंद करके मुस्कुराया और अपने आधे टूटे दांत दिखाते हुए बोला, 'क्या नजारा है! क्या चमत्कार है! अगर यह सचमुच का जादू नहीं है तो और क्या है?'
‘तुम कौन हो?’ हुसैन ने पूछा।
'मृतकों का साथी,' उसने हड़बड़ाते हुए उत्तर दिया।
‘क्या तुम्हारे सभी दोस्त मर गए?’
‘हाँ, उन्होंने किया। उस जीव ने जहाज को नष्ट कर दिया।’ वह हँस पड़ा।
कुछ नहीं लौटे, कुछ को वह प्राणी ले गया।
सिंदबाद ने हुसैन की ओर देखा और फुसफुसाते हुए कहा, 'वह पागल हो गया है।'

हुसैन ने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा, 'मैं इसका ख्याल रखूंगा।' उसने उस पागल की ओर देखा और सख्ती से पूछा, 'कौन सा प्राणी?'
'विशाल। बहुत बड़ा। किसी बड़े आदमी की तरह।'
बड़ा आदमी?
सिंदबाद को समझ नहीं आया कि उसका क्या मतलब था। वह उस आदमी के बगल में घुटनों के बल बैठ गया और पूछा, 'क्या आपने बिल्ली जैसी आंखों वाली कोई लड़की देखी है?'
‘बिल्ली जैसी आंखें? म्याऊं!’ बूढ़ा आदमी खुद पर हंस पड़ा।
सिंदबाद ने दांत पीसते हुए पूछा, 'क्या तुमने ऐसा किया है?'
'हां, हां। वह तुमसे पहले आई थी। कई दिन हो गए हैं। मुझसे कुछ चीजों के बारे में पूछ रही थी। मुझे समझ नहीं आया। उसने कप्तान से बात की।'
‘इस जहाज का कप्तान।’ सिंदबाद ने सिर हिलाया। ‘वह कहाँ है?’
और उसे उम्मीद थी कि कप्तान जिंदा बच गया होगा, क्योंकि वही सफीना को ढूंढने का एकमात्र सुराग था।
‘मर गया।’ पागल हँसते हुए बोला। ‘लेकिन ज़िंदा भी हूँ। जल्द ही मरने वाला हूँ। शायद उस प्राणी के साथ। उसका मनोरंजन करता हूँ। नाचता हूँ। दूसरे बचे हुए लोगों के साथ गाता हूँ। अगर प्राणी चाहे तो बदले में खाना देता है। मैं इनमें से कुछ नहीं कर सकता, इसलिए छिप जाता हूँ।’ वह हँसते हुए अपने हाथों से ताली बजाता रहा।
हुसैन और सिंदबाद पूरी खामोशी से जहाज से बाहर निकले।
‘मुझे लगता है कि इस द्वीप के जंगल में बहुत से लोग बच गए हैं,’ सिन्बाद ने कहा। ‘और सफीना कप्तान से कुछ जानकारी लेने आई होगी, लेकिन वह उस बड़े आदमी के साथ व्यस्त है... शायद उसका मनोरंजन कर रहा है। मुझे आश्चर्य है कि वह जहाज़ डूबने के बाद आई या पहले।’
‘बाद में ही होना चाहिए।’
‘लेकिन लगता है उस प्राणी ने उस पर हमला नहीं किया। क्यों?’ सिंदबाद
ने उलझन में बुदबुदाते हुए कहा। ‘क्या ऐसा हो सकता है कि उसने महसूस किया हो कि वह भोर के स्वामी का हथियार है और इसलिए उसने कप्तान के साथ उसके काम में दखल नहीं दिया?’
हुसैन ने आगे कहा, 'या फिर कुछ और। हम कभी निश्चित नहीं हो सकते।'

सिन्बाद ने सिर हिलाया। वे बाकी सैनिकों के साथ इदरीस और मार्कस के पास गए, जो अभी भी माल की जाँच कर रहे थे। सिन्बाद ने उन्हें अंदर मौजूद आदमी के बारे में बताया और इदरीस ने एक सैनिक को पास के बंदरगाह पर कौआ भेजकर उस आदमी को लाने का आदेश दिया।
जब वह जाने लगा, सिंदबाद कुछ कहने ही वाला था कि अचानक भूकंप के झटके महसूस हुए। वह घुटनों के बल बैठ गया और भूकंप के झटकों को महसूस करने के लिए अपना कान रेत पर सटा लिया। हर दो सेकंड में झटके आ रहे थे और वे बहुत हल्के थे।
और फिर उसने भूकंपों का कारण देखा... जब जंगल से एक प्राणी निकला, जिसके हाथ में लोहे और पत्थर से बना एक बड़ा गदा था।
वह दो पैरों पर चलता था।
वह स्पष्ट रूप से एक पुरुष था।
एक बहुत बड़ा आदमी।
और फिर सिंदबाद को इसका एहसास हुआ।
भीमकाय!
उसने उन सभी को देखा, जोर से अपनी छाती पीटी और... उनकी ओर दौड़ पड़ा।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

‘दिलचस्प, बहुत दिलचस्प,’ उसने सोचा, ‘उसकी पूरी शारीरिक संरचना ही अलग है। मैं यह निष्कर्ष निकाल सकता हूँ कि हमें कोई ऐसा व्यक्ति मिल गया है जो हमारे लिए वरदान साबित हो सकता है।’
क्या सफीना मर गई थी? वह हिल-डुल नहीं रही थी। उसे लाश की तरह वहीं पड़े देखकर सिंदबाद चिंतित हो गया।
‘खसखस की चाय का असर कुछ घंटों में खत्म हो जाएगा।’ पगड़ीधारी व्यक्ति
ने कहा, ‘मुझे फिर से इस बात पर जोर देना होगा कि उसे खलीफा के सुरक्षित ठिकाने पर ले जाया जाए।’
मास्टर रीस ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'नहीं।' उनकी आवाज़ ठंडी थी, लेकिन अजीब तरह से सुकून देने वाली थी। 'यह लड़की मेरी देखरेख में पली-बढ़ी है। उन्हें अलग करना गलत होगा।'
सिन्बाद ने मन ही मन मुस्कुराते हुए मास्टर रीस के समर्थन और उनकी मित्रता की सराहना की।
‘ठीक है,’ उस आदमी ने कहा, ‘उसे किसी लॉज में ले जाओ और उसे कुछ घंटों के लिए सोने दो। वह कल सुबह उठकर चलने-फिरने लगेगी।’
वे सभी दरवाजे की ओर बढ़ने लगे और सिंदबाद घबराकर पीछे हट गया और अंधेरे में एक दीवार के पीछे छिप गया। मास्टर रीस और ग्रैंड मास्टर पगड़ीधारी व्यक्ति को विदाई देने के लिए बाहर आए। उसके जाने के बाद, ग्रैंड मास्टर ने रीस की ओर रुख किया।
‘मुझे चिंता होती है, रीस,’ ग्रैंड मास्टर ने कहा। ‘मुझे बहुत चिंता होती है।’ उनकी आवाज़ बहुत ही परिपक्व और ज्ञानवर्धक लग रही थी।
‘मुझे यकीन है कि आपको इसकी जरूरत नहीं है,’ मास्टर रीस ने जवाब दिया।
‘वह अच्छी लड़की है। वह अच्छा व्यवहार करेगी।’
‘अगर वह ऐसा नहीं करती तो क्या होगा? अगर वह हमारे लिए मुसीबत बन जाती
है तो क्या होगा? आखिर वह इब्लिस का हथियार है। उसने उसे खुद से ही बनाया है,’ बूढ़े आदमी ने कहा।
'शायद अभी वह निर्दोष है, और इसीलिए हम उसे नियंत्रित कर सकते हैं। लेकिन जब वह बड़ी हो जाएगी, तो वह हमारे तौर-तरीकों पर सवाल उठाना शुरू कर देगी और जल्द ही वह हमसे लड़ेगी।'
'जैसा कि आपने कहा, वह निर्दोष है। वह मिट्टी की तरह है। और हम उसे जैसे चाहें वैसे आकार दे सकते हैं,' मास्टर रीस ने आगे कहा।

'उम्मीद है कि आप उसके बारे में सही हों,' बूढ़े आदमी ने आह भरी और वापस अपनी झोपड़ी के अंदर चला गया।
मास्टर रीस भी वहां से चले गए, उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था कि उनका शिष्य अंधेरे में छिपा हुआ है।
सिंदबाद खुश था।
अब उसे पता चल गया था कि जब तक मास्टर रीस वहाँ हैं, सफीना सुरक्षित रहेगी।

बयालीस

आज
ओग्गी को नफरत है! ओग्गी को नए लोग बिल्कुल पसंद नहीं हैं!’ वह दैत्य बेतहाशा दौड़ते हुए चिल्लाया।
गिरे हुए पत्ते, छाल और टहनियाँ उनके भागते कदमों के नीचे चरमराती हुई आवाज़ कर रही थीं, तभी सिंदबाद और उसके साथी जंगल की गहरी खाइयों में घुस गए। वे झाड़ियों में कूदकर छिप गए।
वह दैत्य उसके पीछे-पीछे चल रहा था। उसकी लंबाई लगभग 25 फीट थी और उसने अपने आस-पास मिली चीजों से अपना हथियार खुद बनाया था। उसने ढीले-ढाले कपड़े पहने हुए थे और उसका शरीर घावों से भरा हुआ था। उसके बाल चिपचिपे और पतले थे जो उसके मोटे कंधों तक लटके हुए थे और उसकी आँखें बड़ी और तीखी थीं।
‘ओग्गी को तुम्हारी उपस्थिति की आवश्यकता है! ओग्गी पूछ रहा है कि
तुम कहाँ हो!’ दैत्य ने गुस्से से अपने पैर पटके।
जब सिंदबाद ने देखा कि हुसैन उनकी हास्यास्पद स्थिति के बारे में कुछ कहने ही वाला है, तो उसने उसे चुप रहने का इशारा किया। हुसैन चुपचाप घबरा गया। सिंदबाद जानता था कि दानव कितने शक्तिशाली हो सकते हैं। उन्हें हराने के लिए, उन्हें उकसाना पड़ता है और फिर उन्हें चोट पहुँचाना या यातना देना पड़ता है।
उनकी त्वचा लोहे से भी अधिक कठोर थी, और उन्हें मारने के लिए उनके शरीर के नरम हिस्सों को ढूंढना पड़ता था।
‘ओग्गी क्रोधित है!’ उस दैत्य ने अपने नथुने फुला लिए। ‘ओग्गी को जानकारी के लिए मलक से बात करनी होगी।’
और फिर वह चला गया।
सिन्बाद ने इदरीस और मार्कस की ओर देखा, जो अपने आदमियों के साथ छिपकर बैठे थे। 'हमें उसका पीछा करना होगा।'

‘क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? हमें पहले एक योजना की जरूरत है,’ इदरीस ने धीमी और कर्कश आवाज में कहा।
“अच्छा, पहली बात तो मुझे इसके बारे में पता नहीं है। दूसरी बात, हमारे पास योजना बनाने का समय नहीं है। और तीसरी बात, उसने एक मलाक को खोजने की बात कही। हमें यह देखना होगा कि वह अज़राएल है या नहीं। अभी! इससे पहले कि हम उसे खो दें।”
इदरीस ने धीमी आवाज़ में कहा, 'मार्कुस, तुम किनारे पर वापस जाओ और हमारा इंतज़ार करो, क्योंकि इस स्थिति में कम संख्या में रहना बेहतर है। हुसैन, तुम जाओ—'
‘कहीं नहीं। मैं सिन्बाद के साथ रह रहा हूँ,’ हुसैन ने झल्लाकर कहा।
‘ठीक है।’ इदरीस ने दांत पीसते हुए कहा। ‘हमारे पास बहस करने का समय नहीं है। चलो चलते हैं।’

उन्होंने उस दैत्य के पदचिह्नों का पीछा किया। वे पदचिह्न विशाल थे
और कीचड़ भरी ज़मीन में गहरे धंसे हुए थे। जब वे आखिरी पदचिह्न तक पहुँचे, तो सिंदबाद ने नारियल के पेड़ों के झुरमुटों के बीच झाड़ियों से झाँककर देखा और उसे एक छोटा सा शिविर दिखाई दिया। उसने लंबे कानों वाले कुछ अजीब से रोएँदार जीव देखे। वे लकड़बग्घे थे, लेकिन दो पैरों पर खड़े थे। जंगली और गंदे, उनकी मांसपेशियाँ मजबूत थीं और थूथन बड़े थे। वे दिखने में जितने लगते थे, उससे कहीं अधिक बुद्धिमान प्रतीत होते थे। कुछ खाना पका रहे थे, कुछ अपनी तलवारें तेज कर रहे थे और बाकी ज़ोर-ज़ोर से हंस रहे थे। वेयर-हाइना।
‘ये कौन से जीव हैं? बिस्मिल्लाह,’ हुसैन ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाया।
‘शापित पुरुष जो मरने के बाद आधे लकड़बग्घे और आधे इंसान जैसे प्राणियों में बदल गए। वे भोर के देवता की सेवा करते हैं, क्योंकि वह

उन्हें उनके शरीर वापस लौटाने का वादा करता है जब वह प्रसिद्धि प्राप्त कर लेगा,’ सिंदबाद ने समझाया।
इदरीस ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे उनसे नफरत है। वे चालाक और बेहद लालची हैं, और हम तीनों मिलकर उनका मुकाबला नहीं कर सकते। साथ ही, इन संकरों को हराने के लिए हमें वुल्फ्सबेन तेल की ज़रूरत है। लेकिन क्या तुम्हें वह विशालकाय और देवदूत दिख रहे हैं? रुको, क्या यह उतना ही हास्यास्पद लग रहा है जितना मुझे लगा? एक विशालकाय और एक देवदूत?' ‘अच्छा...’ सिंदबाद कुछ पल चुप रहा, सोच-विचार करता रहा। उसने आगे कहा,
‘वह एक पतित देवदूत है। तो आप कह सकते हैं “एक दानव और एक पतित देवदूत”। अब यह सुनने में अच्छा नहीं लगता...’
‘दोस्तों!’ हुसैन ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा। ‘क्या हम सच में यह बातचीत कर रहे हैं? हम जीवन-मरण की स्थिति में हैं। चलो काम पर वापस लौटें और ध्यान केंद्रित करें!’
‘ठीक है, ठीक है। मुझे शिविर के दूसरी तरफ एक विशालकाय व्यक्ति बैठा
दिख रहा है,’ सिंदबाद ने कुछ गज दूर खड़ी उस बड़ी आकृति को देखते हुए कहा। ‘हमें शिविर के चारों ओर से जाना होगा।’
“तो सावधान रहना। पत्तों पर पैर मत रखना,” इदरीस ने हुसैन और सिंदबाद
से कहा। “लकड़बग्घे के कान बहुत तेज़ होते हैं। अगर उन्हें पत्तों के कुचलने की आवाज़ सुनाई दी, तो वे हमला कर देंगे।”
दोनों ने सिर हिलाया। वे झाड़ियों के पीछे छिपते हुए और कीचड़ भरी ज़मीन पर दबे पांव चलते हुए, गिरी हुई टहनियों और पत्तियों से बचते हुए, पेड़ों के झुरमुटों से सावधानीपूर्वक आगे बढ़े।
सिंदबाद अंतिम बाधा के करीब था और उसने हुसैन की स्थिति जानने के लिए पीछे मुड़कर देखा क्योंकि उससे गलती होने की संभावना थी, खासकर इस स्थिति में।
उम्मीद है कि वह ऐसा नहीं करेगा।
सिंदबाद ने देखा कि एक विशालकाय व्यक्ति एक बड़े लट्ठे पर उदास और निराश बैठा है। वे चुपचाप चलते रहे और लगभग पहुँच ही गए थे कि... सिंदबाद का पैर एक पत्ते पर पड़ गया।
उसका दिल बैठ गया।
हुसैन एकदम रुक गया।

और इदरीस ने उन्हें बड़ी-बड़ी आँखों से देखा।
सिंदबाद ने नीचे देखा और फिर उस शिविर की ओर देखा जहाँ वेयर-हाइना थे। बहुत कम लोगों ने इसे सुना था, सिवाय एक के जो सिंदबाद की दिशा में चल पड़ा।
अरे बाप रे!
हुसैन ने सिंदबाद को कॉलर से पकड़कर एक बड़ी झाड़ी की ओर खींचा, जहां
वे इदरीस के साथ छिप गए।
वह वेयर-हाइना झाड़ी के पास खड़ा होकर हवा को सूंघने लगा और अपनी घनी भौंहें ऊपर उठा लीं। उसने धीमी सी गुर्राहट की मानो हवा उसे पसंद न आई हो, और फिर वापस चला गया।
इदरीस ने कहा, 'उसे हमारी मौजूदगी का एहसास जरूर हुआ होगा। लेकिन शायद उसने सोचा होगा कि वह ज्यादा सोच रहा है। आखिर यह एक द्वीप है...'
जैसे ही वेयर-हाइना आसपास से ओझल हो गया, वे कंधे झुकाकर खड़े हो गए
और उस विशालकाय जीव को बेहतर ढंग से देखने के लिए ऊंचे पेड़ों की आड़ में तेजी से आगे बढ़े।
वह अकेला था।
‘ओग्गी ने अज़राएल की उपस्थिति की मांग की!’ उसने अपने पैर पटके और धरती कांप उठी।
‘मैं यहीं हूँ, राजा ओग,’ कहीं से एक आवाज़ आई और एक छवि चमक उठी जिसमें काले घने बालों वाला एक आदमी दिखाई दिया। उसकी आँखों से धुआँ निकल रहा था और उसके चेहरे पर एक चालाक मुस्कान थी। हालाँकि, वह उस विशालकाय के सामने एक छोटी गुड़िया जैसा लग रहा था।
‘ओग्गी पूछता है कि तुम कहाँ थे?’
‘हमारे नए मेहमानों को देखने के लिए,’ अज़राएल ने कहा। ‘मुझे उम्मीद
है कि उन्होंने भी तुम्हें देखा होगा।’
‘ओग्गी ने उन्हें देख लिया है। वे ओग्गी से छिप गए।’
‘राजा और...’
‘यह ओग्गी है! ओग्गी काफी समय से राजा नहीं रहा। बहुत समय से।’ उसने शर्म से अपना सिर नीचे कर लिया। ‘जब से ओग्गी ने खुद को अलग-थलग कर लिया है, जब से उसे श्राप मिला है।’

अरे, अब बस करो। तुम कमाल करते हो। तुम इस द्वीप पर लंगर डाले जहाजों
को तोड़फोड़ करते हो और गैर-नर्तकों को भी नचा देते हो।
‘ओग्गी को बस दोस्त चाहिए।’ वह रुका। ‘ओग्गी को मारना पसंद नहीं है। लेकिन इंसान बहुत छोटे हैं। बहुत छोटे। उन्हें चोट पहुँचाना तब भी ठीक नहीं है जब ओग्गी ऐसा करना भी नहीं चाहता।’
‘खैर, तुम्हें ऐसा करना चाहिए। वे इसके हकदार हैं। उन्हीं की वजह से तुमने अपनी किताब खो दी है,’ अजराइल ने कहा।
ओग्गी ने कप्तान से बात की जो अपनी गुफा में है। ओग्गी को बताया गया
कि कप्तान को इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।
‘वह झूठ बोलता है। मुझे यकीन है कि उसने इसे छिपाया है। उसे बस तुम्हें परेशान करना अच्छा लगता है, ओग।’
‘आह!’ ओग्गी छाती पीटते हुए खड़ा हो गया। ‘अगर ओग्गी को उसकी किताब नहीं मिली तो वो सबको मार डालेगा। किताब बहुत ज़रूरी है। बहुत ज़्यादा।’ बहुत महत्व रखता है।
‘मुझे पता है। और जैसा मैंने वादा किया था, मैं इसे तुम तक पहुंचा दूंगा।’ अजराइल ने उस दैत्य को शांत करने की कोशिश की। ‘लेकिन बदले में, मैं चाहता हूं कि तुम हमारे नए दोस्तों को मार डालो।’
‘ओग्गी पूछता है क्यों?’
वे एक बाधा हैं।
‘तुम्हें पता है किताब कहाँ है?’ ओग्गी ने बड़ी-बड़ी आँखों से पूछा।
'जब तुम मेरे लिए काम करोगे तो यह जरूर मिल जाएगा।'
‘ओग्गी को तुम पर शक है।’ उस दैत्य ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें सिकोड़ लीं। ‘ओग्गी को पहले भी यही बात बताई गई थी जब वह बिल्ली जैसी आँखों वाली लड़की नाचने वाले कप्तान से कुछ पूछने आई थी। ओग्गी ने इजाज़त इसलिए दी क्योंकि तुमने ओग्गी से कहा था कि तुम किताब ढूंढ लोगे।’
‘इस बार मैं वादा करता हूँ, ओग्गी। मैं सच में वादा करता हूँ,’ अज़राएल
ने कहा। ‘हालाँकि, मैंने तकनीकी रूप से कहा था कि अगर तुम उसे द्वीप पर आने दोगे, तो मैं तुम्हें किताब ढूंढने में मदद करूँगा। और मैं यहाँ अपने पहरेदारों को तैनात करके अपना वादा निभा रहा हूँ। अब, अगर तुम हमारे नए दोस्तों को मार दोगे, तो मैं तुम्हें किताब ज़रूर दे दूँगा। कसम से।’

ओग्गी ने अपने नथुने फुला लिए। 'तो फिर उसे मारना ही पड़ेगा। ओग्गी समुद्र में जाएगा और उनके जहाज पर हमला करेगा। उनके शव ले आएगा। तुम भी किताब ढूंढने में जुट जाओ।'
'ठीक है, मेरे दोस्त। अब तुम जाओ।'
वह विशालकाय व्यक्ति चला गया।
सिंदबाद, इदरीस और हुसैन ने चिंता से एक-दूसरे की ओर देखा।
उन्हें एक बात तो पक्के तौर पर पता थी—उन्हें उस विशालकाय जीव के पहुँचने से पहले ही जहाज की ओर दौड़ लगानी होगी।

जब वे दौड़ रहे थे, सिंदबाद ने कहा, 'हमें उस कप्तान को ढूंढना होगा जो गुफा में है और ऐसा करने का एकमात्र तरीका उस दैत्य का सामना करना है।'
‘तो हमें उस दैत्य को हराना होगा?’ हुसैन ने हांफते हुए पूछा।
'मुझे डर है कि ऐसा ही है, और फिर उससे जगह का पता लगाने के लिए कहें।
जब तक कि हम उसकी किताब न ढूंढ लें और कोई समझौता न कर लें,' सिन्बाद ने कहा।
वे तट पर थे।
‘और हम ऐसा करने की योजना कैसे बना रहे हैं?’ हुसैन ने पूछा। ‘क्या हम
कह दें कि खुल जा सिमस, और यह हमारे पास आ जाएगा?’
सिन्बाद ने आह भरी। उसके पास कोई योजना नहीं थी। और आमतौर पर उसके पास कुछ न कुछ योजना ज़रूर होती थी। इतने लंबे समय बाद अज़राएल को देखकर उसे अपने अतीत की बुरी यादें ताज़ा हो गईं।
उसने मुझसे भयानक काम करवाए।
‘अगर हमें उसकी किताब मिल जाए तो क्या होगा? मुझे यकीन है कि वह खुश होगा,’ इदरीस ने कहा। ‘वह पूरी तरह से बुरा इंसान नहीं लगता।’
‘हमेशा लोगों में अच्छाई देखना।’ सिंदबाद हँस पड़ा। ‘नहीं, लेकिन यह
एक अच्छी योजना है। चलो उसकी किताब ढूंढते हैं।’

उन्होंने देखा कि मार्कस और उसके सैनिक सहायक नौकाओं के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। वे तुरंत एक नौका में बैठ गए और अपने जहाज की ओर चप्पू चलाने लगे।
हुसैन ने पूछा, 'आप किताब कैसे ढूंढने की योजना बना रहे हैं?'
‘खैर,’ सिंदबाद ने अपने साथियों की ओर देखते हुए कहा, ‘एक ही विकल्प है
— प्रेसा।’

तैंतालीस

चार वर्ष पहले
सिंदबाद ने उसे कुछ दिनों से नहीं देखा था।
मास्टर रीस और सिन्बाद भी किसी शिकार पर नहीं गए थे। वे गिल्ड में ही ठहरे हुए थे क्योंकि उनके गुरु ने शहर में कई काम तय कर रखे थे—घर के काम, कुछ सौदे निपटाना और परिषद की बैठक में जाकर मौजूदा खतरों पर चर्चा करना। लेकिन इसका मतलब यह था कि सिन्बाद के पास तलवारबाजी का अभ्यास करने और किताबें पढ़ने के अलावा ज़्यादातर समय कुछ करने को नहीं था।
और हां, मिस सफीना भी।
शुरुआती दिनों में वह उसके साथ थी, लेकिन कुछ समय बाद उनका मिलना बंद
हो गया। उसे इसका कारण नहीं पता था। और जब भी उसे मास्टर रीस से इस बारे में पूछने का मौका मिलता, तो वह कहते, 'वह अभ्यास कर रही है और फिर आराम करेगी।'
किस बात का अभ्यास कर रहे हो? मेरे जैसा बनने का?
उसे यह नहीं पता था कि सफीना के उसके जैसी होने का विचार उसे स्वीकार्य है या नहीं।
एक सेइड का जीवन कठिन होता है। और सफीना सर्वश्रेष्ठ की हकदार है, सबसे कठिन की नहीं। उसने एक जीवन में पहले ही बहुत कष्ट झेल लिए हैं। लेकिन अगर उसने इसके लिए सहमति दी थी, तो क्यों नहीं? क्या उसने इस जीवन को अपनी मर्ज़ी से चुना था? या फिर उन्होंने...
दिन-ब-दिन उसकी बेचैनी बढ़ती गई, यहाँ तक कि एक दिन मास्टर रीस ने उसका दरवाजा खोलकर कहा: 'कोई आपसे मिलने आया है।'
सिन्बाद जलती हुई अंगीठी के पास बैठकर पढ़ रहा था, तभी वह अचानक अपनी चारपाई से उछल पड़ा और दरवाजे की ओर मुड़ा। मास्टर रीस ने दरवाजा थोड़ा और खोला और सफीना को अंदर आने दिया।

उसने सिंदबाद की ओर देखा और उसे एक प्यारी सी मुस्कान दी।
'मैं तुम दोनों को अकेला छोड़ देता हूँ,' मास्टर रीस ने दरवाजा बंद करने से पहले कहा।
सिंदबाद एक कदम आगे बढ़ा, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, सफीना
ने खुद को आगे की ओर झपटा और उसे कसकर गले लगा लिया।
‘बहुत समय हो गया,’ उसने कहा।
उसने भी उसे गले लगा लिया। 'कैसी हो?'
उसने अपना पीला चेहरा और थकी हुई आँखें दिखाने के लिए पीछे हटकर देखा। वह पहले से भी दुबली और कमजोर लग रही थी। उसकी आँखें धँसी हुई थीं।
उसने अपना सिर हिलाया।
‘क्या हुआ?’ सिंदबाद चिंतित हो गया और उसे कुर्सी पर बैठा दिया।
‘कमजोर। बहुत कमजोर।’ उसने अपनी निगाहें नीचे कर लीं।
सिंदबाद ने उसकी उंगलियों के सिरे देखे। वे जले हुए थे।
‘जादू। जादू का अभ्यास। मुझसे वो सब काम करवा रहे हैं जो मैंने कभी सोचे भी नहीं थे कि मैं कर सकती हूँ,’ सफीना ने सिसकते हुए कहा। ‘मुझे ये पसंद नहीं। अंदर से बहुत तकलीफ होती है।’
‘क्या तुमने मास्टर रीस को इसके बारे में बताया?’
‘कहते हैं कि सब ठीक हो जाएगा। आदत पड़ जाएगी। दो हफ्ते से ज़्यादा हो
गए, आदत नहीं पड़ी,’ उसने आह भरी, उसकी साँसें रुक-रुक कर और भारी हो रही थीं। ‘बाहर नहीं निकली। शहर नहीं देखा। सोने और अभ्यास करने के अलावा कुछ नहीं किया।’
सिंदबाद को उस पर दया आई।
और जब उसने कहा, 'सिंदबाद?' तो उसे और भी बुरा लगा।
'हां, कैलिप्सो।'
उसे उस नाम से पुकारे जाने पर वह मुस्कुरा उठी। 'बकरी दानव और इंसान में क्या फर्क है? क्या दोनों एक ही हैं?'
और उसे यह बात समझ में आ गई।
गिल्ड उससे वही सब काम करवा रहा था और उसकी शक्तियों का परीक्षण उसी तरह कर रहा था जैसे लियोनार्ड किया करता था।
‘क्या उन्होंने आपको बताया कि वे आपसे यह सब क्यों करवा रहे हैं?’
उसने सिर हिलाया। 'कहते हैं, मेरी ताकत परखने के लिए।'

सिंदबाद ने आह भरी। 'तुम जाना चाहते हो?'
‘क्या मैं कर सकती हूँ?’ उसकी आँखों में आशा भर उठी। ‘लेकिन कहाँ?’
सिंदबाद के पास इसका कोई जवाब नहीं था। 'मुझे कुछ सोचने दो।'
मैंने उनसे आपसे मिलने की विनती की। उन्होंने कई दिनों तक अनुमति नहीं दी।
उन्होंने कहा, 'समय की बर्बादी है।' उन्होंने कहा कि आप व्यस्त थे। सिन्बाद ने अपने जबड़े भींच लिए। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि सफ़ीना से उसके बारे में झूठ बोला जा रहा है। उसे बेहद दुख और तकलीफ महसूस हुई।
शायद मास्टर रीस को इस बात की जानकारी नहीं थी। शायद सफीना का शिक्षक रीस से भी ज़्यादा क्रूर था। अगर उसे और समय दिया जाता, तो सफीना ठीक हो जाती। वह खुश रहती।
‘क्या तुम बाहर जाना चाहते हो?’ सिंदबाद ने पूछा। ‘शहर देखने। बाज़ार।’
‘हां।’ वह मुस्कुराई। ‘चूड़ियां। मुझे चूड़ियां चाहिए। मैंने यहां लड़कियों को चूड़ियां पहने देखा है।’
सिन्बाद मुस्कुराया। 'ज़रूर, चलो चलते हैं। मुझे पीछे की तरफ एक रास्ता पता है जो शहर के केंद्र तक जाता है। मैंने इसे कुछ साल पहले खोजा था।'

वे हाथ पकड़कर चल रहे थे।
सिन्बाद और सफीना को बाज़ार में सुकून मिला। उस पल वे बस दो उत्साहित
और जिज्ञासु बच्चे थे जो एक दुकान से दूसरी दुकान दौड़ रहे थे और चमड़े की चीज़ें, गहने, यहाँ तक कि आसपास घूमते ऊँटों को देखकर आनंदित हो रहे थे। वहाँ शोरगुल और रंग-बिरंगी चहल-पहल थी। दालचीनी, लैवेंडर और फलों की मनमोहक खुशबू हवा में फैली हुई थी।

उन्होंने बाज़ार का भ्रमण किया, लेकिन गिल्ड से दूर हर कदम सिन्बाद
को चिंतित कर रहा था। आख़िरकार, वह उसे चुपके से बाहर ले आया था और अगर मास्टर रीस को पता चल गया, तो वह उसे और सफ़ीना दोनों को हिरासत में ले लेंगे।
‘बड़े होकर तुम क्या बनना चाहते हो?’ सिंदबाद ने पूछा।
कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा, 'मैं एक दर्जी हूँ। मैंने किताबों में पढ़ा है कि रानियाँ खूबसूरत पोशाकें पहनती हैं और खुश रहती हैं।'
मैं उनके लिए ये सब बनाती हूँ। ताकि उनके चेहरे पर मुस्कान आ जाए।'
‘आह।’
‘तुम?’ उसने पूछा।
'उम, मुझे नहीं पता। मैंने हमेशा सोचा था कि मैं हेराक्लेस जैसा बनना चाहता हूँ। मतलब, एक हीरो।'
‘एक हीरो?’ वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।
सिंदबाद को उसके गालों पर फिर से रौनक लौटती हुई दिखाई दी। 'हाँ, ठीक
है, मैंने इसके बारे में सोचा नहीं था, और मैं एक शिकारी हूँ, इसलिए मुझे लगता है कि मैं वही बन जाऊँगी।'
‘क्या आपको कुछ और सूझा?’
‘खैर, अगर मुझे चुनने का मौका मिले, तो... मैं एक नाविक बनना चाहूंगा।’ सिंदबाद ने कभी नहीं सोचा था कि वह यह बात किसी को बताएगा। असल में, उसे यह भी नहीं लगा था कि कोई उससे इस बारे में पूछेगा। ‘मुझे समुद्र बहुत पसंद है, भले ही कभी-कभी मुझे समुद्री बीमारी हो जाती है। लेकिन मुझे यह बहुत पसंद है। मुझे इसकी हवा बहुत अच्छी लगती है। मुझे इसकी खुशबू बहुत अच्छी लगती है। मुझे अच्छा लगता है कि रात में मैं डेक पर खड़ा होकर नमकीन हवा का स्वाद ले सकता हूं और अपने पैरों के नीचे जीवन को महसूस कर सकता हूं।’ सफीना ने एक पल के लिए उसकी ओर देखा। 'तो फिर तुम क्यों नहीं करते?' 'क्या?'
‘नाविक बनो।’
‘यह इतना आसान नहीं है। मेरा भाग्य पहले से ही तय है। मैं एक शिकारी हूँ।’
‘ओह,’ उसने कहा। ‘क्या हम अपनी नियति खुद नहीं चुनते? किसी और को शक्ति क्यों दें?’

सिन्बाद के पास कोई जवाब नहीं था। वह अपने तरीके से सही थी। 'मैं, उह...' उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। सफीना ने इस पर ज्यादा सोचा नहीं और उसे फलों की गाड़ी की ओर खींच लिया।
‘पसंदीदा फल?’
उन्होंने कहा, 'मुझे सेब पसंद हैं।' 'आपको?'
‘स्ट्रॉबेरी। इस द्वीप पर बेहतरीन स्ट्रॉबेरी मिलती थी।’
फल बेचने वाला—सफेद दाढ़ी, कुबड़ापन और एक आंख वाला आदमी—उनकी तरफ देखकर पास आया और बोला, ‘बच्चे, इस तरह की स्ट्रॉबेरी तुम्हें कहीं और नहीं मिलेगी।’ उसकी आवाज थोड़ी कर्कश थी। ‘लो, थोड़ी खा लो।’ उसने उन्हें सबसे शुद्ध और लाल स्ट्रॉबेरी दिखाईं जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थीं। उसने कहा, 'मेरे पास पैसे नहीं हैं।'
‘अरे, चिंता मत करो। ये मेरी तरफ से दो प्यारे बच्चों के लिए तोहफा है।’ फल विक्रेता मुस्कुराया।
सफीना अचरज से हांफ उठी। उसने उससे फल लिया और जैसे ही वह उसे खाने वाली थी, सिंदबाद ने उसे रोक दिया।
‘हम इसे बाद में ले लेंगे, कैलिप्सो,’ उसने शांत भाव से कहा। उसे विक्रेता पसंद नहीं था; उसे उसमें कुछ अजीब सा लगा। कुछ तो गड़बड़ थी।
‘क्यों?’ सफीना ने पूछा।
यहां तक कि फल विक्रेता ने भी तेवर चढ़ा लिए।
‘कुछ नहीं। बस थोड़ी देर में। आओ,’ सिंदबाद ने उसका हाथ कसकर पकड़ते हुए कहा और चारों ओर लंबे, काले आदमियों को देखकर वहाँ से चला गया। इन आदमियों ने बनियान और बड़ी-बड़ी पगड़ियाँ पहन रखी थीं। वे गठीले और ताकतवर शरीर वाले थे—साफ़ तौर पर वे भाड़े के सैनिक थे।
फल बेचने वाले ने कहा, 'आओ, लड़की। मनुष्यों के साथ तुम्हारा समय समाप्त हो गया है।'
सफीना असमंजस में थी। उसने जवाब के लिए सिंदबाद की ओर देखा, जिसने फल विक्रेता पर अपनी निगाहें गड़ाए रखीं और कहा, 'अज़राएल।'
‘मुझे तो समझ ही गया।’ फल विक्रेता मुस्कुराया। ‘बच्ची को वहाँ नहीं होना चाहिए। उसे हमारे साथ रहना चाहिए। वह हमारी है।’
'वह किसी की नहीं है,' सिन्बाद ने कहा।
सफीना ने उसे कसकर पकड़ लिया।

भाड़े के सैनिक करीब आने लगे।
‘अच्छा तो फिर, मुझे खुशी है कि मैंने तुम्हारी सुरक्षा के लिए इन गार्डों को काम पर रखा है।’ फल विक्रेता मुस्कुराया।
सिंदबाद और सफीना भागने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन पहरेदारों ने उन्हें घेर लिया। उन्होंने उन्हें जबरदस्ती अलग करने की कोशिश की, लेकिन सिंदबाद ने सफीना का हाथ नहीं छोड़ा।
जनता इस तमाशे को देखती रही, लेकिन किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया।
जब तक...
अचानक कहीं से काटने जैसी आवाज आई।
सिन्बाद ने मुड़कर देखा तो सामने मास्टर रीस खड़ा था, जिसने पलक झपकते ही एक भाड़े के सैनिक की जांघ पर वार कर दिया। बाकी तीनों डरकर भाग गए और खून से लथपथ गार्ड को वहीं छोड़ दिया। स्तब्ध भीड़ चीख-पुकार मचाते हुए इधर-उधर भागने लगी।
मास्टर रीस ने फल विक्रेता की ओर मुड़कर देखा, लेकिन वह पहले ही गायब
हो चुका था। फिर उन्होंने सफीना और सिंदबाद की ओर देखा।
और उसकी आँखों में क्रोध की चमक थी।

चौवालीस

आज
'वह आ रहा है,' सिन्बाद ने घोषणा की।
दूर से वे उसे देख सकते थे। वह विशालकाय व्यक्ति। वह समुद्र में प्रवेश करने और उन पर हमला करने का रास्ता खोजने के लिए किनारे पर घूम रहा था। वह भ्रमित था और लगातार खुद से कुछ बुदबुदा रहा था, अपनी छाती पीट रहा था।
‘हमारे पास ज्यादा समय नहीं है,’ इदरीस चिल्लाया। ‘प्रेसा! उस कुर्सी
पर बैठ जाओ।’
हुसैन ने चीनी संत के लिए एक कुर्सी मंगवाई और उसे ऊपरी डेक के बीच में रख दिया, जहां सभी चालक दल के सदस्य सांस रोककर इंतजार कर रहे थे। प्रेसा के हाथ गंदे थे, उसके चिथड़ों से खाने की गंध आ रही थी और उसके हाथ तेल से सने हुए थे क्योंकि उसे रसोई से बाहर निकालकर मोर्चे पर लाया गया था।
‘ये क्या है?’ चलते हुए और बैठते हुए वह असमंजस में थी।
पृष्ठभूमि में दैत्य की दहाड़ें सुनाई दे रही थीं।
प्रेसा के बगल में बैठते हुए सिंदबाद ने मन ही मन बड़बड़ाते हुए कहा, 'मैं चाहता हूं कि तुम इस विशालकाय व्यक्ति की कोई किताब ढूंढो। क्या तुम ऐसा कर सकते हो? क्या तुम हमें उसका पता बता सकते हो?'
प्रेसा ने विनम्रता से सिर हिलाया। 'एक किताब, उम्म, ठीक है... चलो शुरू करते हैं।' उसने अपने तेल लगे हाथों को आपस में ताली बजाकर खुद को उत्साहित करने की कोशिश की। 'चलो शुरू करते हैं, दोस्तों।' और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, मुट्ठियाँ कस लीं और ध्यान केंद्रित करने लगी।
सिंदबाद उस दैत्य को पानी में उतरते और लहरों का सामना करते हुए उनकी
ओर दौड़ते देख खड़ा हुआ। वह इतना लंबा था कि अगर वह समुद्र की गहराई में भी

होता, तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वह जहाज पर प्रहार करके सबको पानी में फेंक देता और सबको डुबो देता।
हुसैन चिल्लाया, ‘हमें क्या करना चाहिए?’
इदरीस और सिंदबाद ने एक-दूसरे की ओर देखा।
उनके पास समय कम होता जा रहा था।
प्रेसा अभी भी किताब ढूंढने की कोशिश कर रही थी और उसकी आंखें बंद थीं। उसकी नाक से खून बहना शुरू हो गया था।
मार्कस चिल्लाया, 'हमला करो!'
‘नहीं!’ सिंदबाद चिल्लाया। ‘हम उसे और भी क्रोधित कर देंगे।’
‘इससे भी ज्यादा गुस्से में?’ इदरीस ने पूछा।
‘हाँ। हम उसे अपने लिए खतरा नहीं बनने दे सकते। हमें समय चाहिए।’ तभी उनके मन में एक विचार आया और वे हुसैन की ओर मुड़े। ‘क्या तुम अपना वाद्य यंत्र लाए हो?’ उन्होंने ऊद की ओर इशारा करते हुए पूछा।
‘जी हां।’ हुसैन असमंजस में पड़ गया। ‘एफ़्रोडाइट मेरी कुटिया में है।’
अब इसे पाने का समय आ गया है।
‘क्यों? तो क्या मैं डूबते समय गाऊँ?’
‘बस वो वाद्य यंत्र ले आओ यार!’
हुसैन ने अपने मित्र पर भरोसा करते हुए सिर हिलाया। जैसे-जैसे दैत्य पानी में आगे बढ़ रहा था, लहरें तेज़ होती जा रही थीं, उसका विशाल गदा वहाँ मौजूद किसी को भी कुचलने के लिए तैयार था। हुसैन ने तुरंत अपना ऊद निकाल लिया।
'अब मैं क्या करूं?'
‘खेलें,’ सिंदबाद ने निर्देश दिया।
‘क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?’ इदरीस ने पीछे से पूछा।
‘हां,’ सिंदबाद ने झूठ बोला।
हुसैन ने सिर हिलाया और गिटार बजाते हुए एक गीत गाने लगा। उसकी आवाज़ में एक सुकून देने वाला प्रभाव था, क्योंकि जैसे ही दानव गदा घुमाते हुए पास आया, उसने गीत सुना और रुक गया। उसने हुसैन को हैरानी भरी नज़रों से देखा। फिर उसने गदा नीचे रख दी और उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। 'संगीत।

अच्छा संगीत।' हुसैन ने भी मुस्कुराते हुए जवाब दिया, मानो वह किसी छोटे बच्चे को लोरी सुना रहा हो।
सिंदबाद के बगल में इदरीस प्रकट हुआ। 'अभी क्या हुआ?'
‘याद है उस पागल ने कहा था कि दानव जिन लोगों को पकड़ता है, वे उसका मनोरंजन करते हैं? हुसैन एकदम सही उम्मीदवार है! दानव का ध्यान अभी भटक गया है, लेकिन वह हमें मारने की अपनी योजना पर वापस आएगा,’ सिंदबाद ने समझाया। फिर वह प्रेसा की ओर मुड़ा। ‘चलो, लड़की। अपना जादू दिखाओ।’
फिर उसने हांफते हुए अपनी आंखें खोलीं। ‘किताब... वो किसी ऐसे व्यक्ति
के पास है जिसके पंख कटे हुए हैं, मानो किसी शक्तिशाली ताकत ने उन्हें चीर-फाड़ दिया हो। मैंने उसकी पीठ देखी। उसके शरीर पर बड़े-बड़े निशान थे और वह किताब पकड़े हुए था।’
सिन्बाद तुरंत समझ गया। उसने हुसैन को संगीत बंद करने का निर्देश दिया, और जब हुसैन ने संगीत बंद किया, तो वह दानव समाधि से बाहर आ गया—पहले से कहीं अधिक क्रोधित दिख रहा था।
‘ओग्गी ने मज़ेदार संगीतकार को छोड़कर बाकी सबको मार डाला!’
‘खैर, मुझे तो कुछ ऐसा सुनने की उम्मीद थी जैसे “असाधारण रूप से प्रतिभाशाली, विलक्षण व्यक्ति”, लेकिन यही ठीक रहेगा,’ हुसैन ने बड़बड़ाते हुए कहा।
सिन्बाद डेक के बिल्कुल आखिरी छोर तक गया, जबकि पूरा दल उत्सुकता से उसे देख रहा था। 'ओग्गी, हमें पता है किताब कहाँ है। ओग्गी, मेरे प्यारे।' उसने मुस्कुराते हुए, खुशमिजाज दिखने की कोशिश की, जबकि वह जानता था कि वह दानव उसे उंगली के एक इशारे से समुद्र में फेंक सकता है।
वह विशालकाय व्यक्ति जहाज के ऊपर खड़ा था और नीचे झाँक रहा था, जबकि सभी उसे विस्मय और भय से देख रहे थे। 'किताब? तुम्हारे पास है? "डार्लिंग"?'
'हां, प्रिय। हमें पता है कि यह कहां है।'
'कहाँ?'
‘अज़राइल के साथ। वह पतित देवदूत जिसकी तुम मदद कर रहे हो।’
‘मलाक,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।
‘वह एक पतित मलाक की तरह है।’
‘ओग्गी को परवाह नहीं है। ओग्गी पूछता है—क्या तुम पक्का हो?’

'सौ प्रतिशत।'
‘विश्वास मत करो। ओग्गी को मलाक लोगों ने पहले ही बहुत झूठ बोला है,’ उसने उन पर गुर्राते हुए कहा।
‘मैं आपको भरोसा दिला सकता हूँ कि मैं किताब ले आऊँगा।’ सिंदबाद मुस्कुराया।
ओग्गी ने पलकें झपकाते हुए उसकी ओर देखा। 'अगर नहीं तो?'
‘तुम हम सबको मार सकते हो।’
‘हम्फ।’
लेकिन अगर मुझे यह पद मिल जाता है, तो मैं कप्तान से बात करना चाहता हूं।
‘क्या तुम्हें वो बिल्ली जैसी आंखों वाली लड़की पसंद है?’
‘हां,’ सिन्बाद ने कहा।
‘हम्म। उसके पास एक अजीब तुरही थी।’
सिंदबाद की मुस्कान फीकी पड़ गई। इस सारी अफरा-तफरी में वह भूल गया
था कि यह सब तुरही के बारे में था। उसे तुरही उससे वापस लाकर खिलाफत को सौंपनी थी। 'चलिए, ऐसा करते हैं, ठीक है?'
‘किताब बहुत ज़रूरी है। ओग्गी को किताब चाहिए। सिर्फ़ वही किताब जिसमें उसके महान कारनामों का ज़िक्र है। ओग्गी कभी बाशान का राजा ओगियास था, लेकिन एड्रेई की लड़ाई में हार गया। सत्ता हथियाने वाले ने उसे श्राप दिया कि वह एक विशालकाय बन जाए और सभ्यता से दूर रहे। ओग्गी बुरा आदमी था। और उसे उसके गुनाह के हिसाब से सज़ा मिली। ओग्गी ने इंसान रहते हुए एक किताब लिखी थी। उसका नाम था 'ओगियास की वीरों की किताब' और उसमें ओग्गी ने श्राप मिलने से पहले अजगर को कैसे मारा था, यह लिखा था। सामान्य जीवन में ओग्गी की यही एक याद है। किताब उसकी दोस्त थी। अब...’ उसकी आवाज़ भारी हो गई, ‘ओग्गी के पास उसकी किताब नहीं है और वह दिलचस्प इंसानों को दोस्त बनाता है। अगर किताब मिल जाए, तो ओग्गी एक शांतिप्रिय विशालकाय बन जाएगा। ओग्गी का वादा।’
‘धन्यवाद, ओग्गी। मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हें वह किताब मिल जाए। इतना कष्ट सहने के बाद तुम इसके हकदार हो।’ सिंदबाद मुस्कुराया। 'अगर उस मलाक के पास ओग्गी की किताब है और तुम उसे ओग्गी के पास लाकर साबित कर देते हो, तो वह उन सभी को मार डालेगा, यहां तक कि मलाक को भी।'

'मुझे यह अच्छा लगा, ओग्गी।'
उस दैत्य ने सिर हिलाया। उसे खुशी थी कि उसने मनुष्यों के साथ समझौता
कर लिया था। इदरीस और हुसैन ने सिंदबाद की पीठ थपथपाई, बाकी दल ने ताली बजाई और इतनी शांति से बातचीत करने के लिए उसकी सराहना की। ओग्गी जाने लगा, लेकिन मुड़कर बोला, 'अरे हाँ, आपके पास सूर्यास्त तक का ही समय है।' सिंदबाद की मुस्कान गायब हो गई। यह एक समस्या है।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

‘अब यही उसका काम है, सिंदबाद। उसे एक शक्तिशाली सत्ता के रूप में बनाया गया है और हमें उसकी शक्ति का उपयोग लोगों की भलाई के लिए करना होगा,’ रीस ने समझाया।
लेकिन क्या उसकी कोई सुरक्षा है? क्या वह सुरक्षित है?
‘तुम बच्चों पर अव्यावहारिकता का अभिशाप है।’ उसने गुस्से से आँखें चौड़ी करते हुए अपनी कुर्सी पीछे धकेली। ‘उसके पास सौ सैनिकों की शक्ति है, अगर हम उसका उपयोग करें तो हम भोर के देवता और इस दुनिया के हर प्राणी को हरा सकते हैं। हम बुराई से छुटकारा पा लेंगे। यह अनादि काल से हमारा काम रहा है। यह हमारा कर्तव्य है।’
'हमारी जिम्मेदारी देखभाल करना भी थी।'
‘निर्दोषों के लिए। वह शैतान का हथियार है और अब वह हमारी है।’ और जब उसने ये शब्द कहे, तो उसकी आवाज़ शांत हो गई, मानो उसे खुद ये शब्द सुनकर अच्छा लग रहा हो, मानो इनसे उसे संतुष्टि मिल रही हो।
‘हथियार? हमारा? वह एक लड़की है, मालिक। बस एक लड़की...’
मास्टर रीस मुड़े, उनके चेहरे पर व्याप्त तनाव उनकी झुंझलाहट को दर्शा रहा था। 'तुम दोनों को इतना करीब आने देना एक गलती थी। यह मेरी गलती है।'
सिंदबाद विरोध करना चाहता था, लेकिन वह चुप रहा और अपनी मुट्ठियाँ कस लीं। उसे अपने स्वामी की आवाज़ में निराशा से घृणा थी, लेकिन साथ ही सफीना के साथ जो हो रहा था वह भी उसे पसंद नहीं था। तभी अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई।
‘अंदर आओ,’ मास्टर रीस ने कहा।
घनी दाढ़ी वाला, लेकिन बिना मूंछों वाला और सिर पर पगड़ी बांधे एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ। उसने अपनी पतली उंगलियों में एक जादुई दर्पण पकड़ रखा था। यह वही आदमी था... कमरे में तीसरा व्यक्ति जिसे सिंदबाद ने पहले देखा था।
‘रीस, हमें बात करनी है,’ उसने कर्कश आवाज में कहा।
‘चिकित्सक इब्न-अल-अमीर।’ मास्टर रीस सीधे खड़े हो गए। ‘मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?’
वैद्य ने सिंदबाद की ओर देखा। उसकी आँखों में घृणा भरी थी, लेकिन उसने अपने चेहरे पर दृढ़ता बनाए रखी। ‘खलीफा को गली में हुई उस छोटी सी दुर्घटना

के बारे में पता चल गया है। वह दोबारा ऐसा होने का जोखिम नहीं उठा सकते। और मुख्य वैद्य होने के नाते, उनकी इच्छा का पालन करना मेरा कर्तव्य है।’ ‘नहीं, रुको।’ रीस आगे आया। ‘क्या होगा? वह यहाँ सुरक्षित है।’
‘रीस, वह शायद दूसरे लोकों के राक्षसों से सुरक्षित हो।’ फिर उसकी नज़र सिंदबाद पर पड़ी। ‘लेकिन वह इस लड़के से सुरक्षित नहीं है।’ वह रुका। ‘हम उसे बगदाद के बाहरी इलाके में स्थित खलीफा के नए महल, रक्का-रफीका ले जा रहे हैं, जहाँ वह अपना अभ्यास जारी रखेगी। आप दोनों को शुभ दिन!’
और वह गुस्से में वहां से चला गया।

छियालीस

आज
उनके पास ज्यादा समय नहीं बचा था, कुछ घंटे कम या ज्यादा हो सकते थे। कप्तान के कमरे में फिर से वही लोग दिखाई दिए: सिन्बाद दीवार से टिका हुआ, प्रेसा एक स्टूल पर बैठी हुई, हुसैन घबराकर सिक्का उछाल रहा था, अशरफियाह बाहें मोड़े दरवाजे से आराम से टिकी हुई थी, गंभीर चेहरे वाला मार्कस अपनी बाहें पीठ के पीछे रखे हुए था और इदरीस कप्तान की मेज के पीछे खड़ी अपने होंठ सिकोड़ रही थी।
‘हमें क्या करना चाहिए?’ कप्तान ने चर्चा की शुरुआत की।
'मेरा सुझाव है कि हम एक बड़ी सेना लेकर जाएं और लकड़बग्घे के संकरों
को नष्ट कर दें,' मार्कस ने सुझाव दिया। 'हमारे पास पचास से अधिक सैनिक उपलब्ध हैं।'
‘और जब सचमुच जरूरत पड़ेगी, तो हमें इनका इस्तेमाल करना पड़ सकता है,’ इदरीस ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘हाइना से लड़ना थकाऊ और मूर्खतापूर्ण है।’ ‘क्या हम चुपके से उनके पास जा सकते हैं?’ हुसैन ने पूछा।
‘नहीं,’ सिन्बाद ने कहा। ‘उनकी सुनने की क्षमता बहुत अधिक है—इस बात
को चुनौती नहीं दी जा सकती।’
इदरीस ने अशरफिया की ओर देखा। 'मेरे पास एक विचार है। क्या तुम मदद करना चाहोगे, स्ट्रिगोई?'
'आप मुझसे क्या चाहते हैं?'
‘कुछ हटके।’ होठों पर हल्की सी मुस्कान लिए इदरीस ने आगे कहा, ‘तुम एक स्ट्रिगोई विउ हो, जिसका मतलब है कि तुम एक वैम्पायर जादूगरनी हो। अगर हम भेस बदलकर एज़्रेल के शिविर में चुपके से घुस जाएं तो कैसा रहेगा?’
‘मैं जादूगरनी हूँ, दर्जी नहीं,’ उसने इस सुझाव को खारिज करते हुए कहा। ‘मैं पंख नहीं बना सकती।’
‘लेकिन आप हमें फिलहाल जानवरों में बदल सकते हैं।’ इदरीस मुस्कुराया।

अशरफिया सीधी खड़ी हो गई, उसकी आँखें बेतहाशा इधर-उधर घूम रही थीं। 'क्या तुम थेरिएंथ्रोपी आज़माना चाहती हो? यह बहुत दर्दनाक प्रक्रिया है।' फिर उसने मुस्कुराते हुए सोच-समझकर कहा, 'मैं कुछ समय के लिए तो कर सकती हूँ। लेकिन सिर्फ़ दो लोगों के लिए। मेरे पास इससे ज़्यादा लोगों के लिए करने की ऊर्जा नहीं है।'
‘हम्म, मैं इसमें शामिल नहीं हो सकता। माफ कीजिए कप्तान,’ मार्कस ने कहा। ‘मैं जादू को अपने ऊपर या अपने खून में नहीं आने दे सकता।’ वह इतनी घबराहट से बोल रहा था मानो जादू-टोना उसके लिए उन राक्षसों से भी ज्यादा डरावना हो जिनका सामना उसने अपने जीवन भर किया था।
जिस क्रू मेंबर के बारे में सिंदबाद के पास सबसे कम जानकारी थी, वह मार्कस था, और वह इस द्वीप से सुरक्षित निकल जाने के बाद उसके बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक था।
‘मैं यह कर सकता हूँ,’ सिन्बाद ने आगे कहा। ‘मैंने पहले भी ऐसा किया है, ताकि मैं जिस राक्षस का शिकार कर रहा था, उसके बारे में कुछ जानकारी जुटा सकूँ।’
प्रेसा ने आह भरी। 'मैं जानवर नहीं बन रही हूँ, दोस्तों। मैं जैसी दिखती हूँ, उससे खुश हूँ।'
इदरीस उठकर यह कहने ही वाला था कि हुसैन आगे आया। 'मैं स्वयंसेवक बनना चाहूंगा।'
‘नहीं,’ इदरीस ने कहा। ‘यह बहुत खतरनाक है। अगर अजराइल को जरा भी भनक
लग गई कि ये जानवर हम हैं, तो हम मुसीबत में पड़ जाएंगे।’
‘वह सही कह रही है,’ सिन्बाद ने आगे कहा। ‘हम पलटवार कर सकते हैं...’
‘और मैं नहीं कर सकता, है ना?’ हुसैन की आँखों में गुस्से की चमक दिखाई
दी और वह कमरे से बाहर निकल गया।
इदरीस ने सिंदबाद को देखा और सिंदबाद ने जवाब में सिर हिलाया। वह हुसैन के पीछे-पीछे ऊपरी डेक की ओर गया, जहाँ हुसैन उस सिक्के को तेज़ी से रगड़ रहा था जिसे वह हमेशा उछालता रहता था।
'सिक्के पर अपना गुस्सा मत निकालो,' सिन्बाद ने कहा।
हुसैन ने कहा, ‘यह सिक्का मेरे पिता ने मुझे दिया था। युद्ध में जाने
से ठीक पहले, और फिर कभी वापस नहीं लौटे। उन्होंने कहा था कि इंसान अपनी किस्मत खुद बनाता है। और इस सिक्के से मुझे अपनी किस्मत बनानी चाहिए।’

हुसैन ने सिंदबाद की ओर देखते हुए आह भरी। ‘वह एक बहादुर इंसान थे, लेकिन उन्होंने कहा था कि युद्ध अहंकारी मूर्खों के लिए होते हैं। वह जानते थे कि मैं वहाँ फिट नहीं बैठूंगा, और इसीलिए वह चाहते थे कि मैं पैसा कमाऊं और एक अच्छा, समृद्ध जीवन जीऊं।’
‘और ऐसा कहने के बाद वह युद्ध में चला गया?’
‘हाँ, वो भी तो मूर्ख ही था,’ हुसैन ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘बेवकूफ आदमी, अपने बेटे को अकेला छोड़कर चला गया।’
‘मुझे पता है। लेकिन कभी-कभी सही काम करने की प्रक्रिया में, हमें सही लोगों को भी खोना पड़ता है,’ सिन्बाद ने कहा। वह चाहता था कि उसे याद आ जाए कि उसके पिता कौन थे, लेकिन उसे याद नहीं था और वह जानता था कि जब भी उसके माता-पिता की याद आएगी, उसे और भी ज़्यादा दुख होगा। ‘और सबके सामने यह सब क्या था? मैंने तुम्हें कभी इस हालत में नहीं देखा।’
मुझे नहीं पता। मुझे बस ऐसा लग रहा है कि मैं यहाँ एक हारा हुआ व्यक्ति हूँ।
'आप नहीं हैं।'
‘अरे यार, मैं तो बस एक फालतू बोझ हूँ। मैं उपयोगी बनना चाहता हूँ। लेकिन मार्कस सही कह रहा है। मैं कमज़ोर हूँ,’ हुसैन ने आह भरी। ‘मैं लड़ना चाहता हूँ, यार।’
सिन्बाद ने कहा, 'मुझे लगा था कि तुम अपने पिता की तरह नहीं बनना चाहते।' हुसैन ने कहा, 'खैर, मैं गलत था। मैं उन्हीं की तरह बनना चाहता हूँ। मुझे अपने पिता पर गर्व है और मैं यह बात अक्सर स्वीकार नहीं करता। उस महान व्यक्ति ने अपने देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी और यह गर्व की बात है।' 'हर कोई उन्हें याद रखता है जबकि उनके बेटे को किसी भी बात के लिए याद नहीं किया जाता।'
सिन्बाद ने अपने दोस्त के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'हुसैन, तुम्हें
यह समझना होगा कि यह मिशन सिर्फ तुम्हारी काबिलियत साबित करने का नहीं है। यहाँ बहुत कुछ हो रहा है। और अगर तुम कुछ सार्थक करना चाहते हो, तो तुम्हें मौका मिलेगा। दुर्भाग्य से, अभी समय नहीं है। मुझे खेद है, भाई।'
हुसैन ने कुछ नहीं कहा और चला गया।
सिंदबाद अपने दोस्त को दिलासा देना चाहता था, लेकिन वह जानता था कि उसके पास समय नहीं है।

उसे जानवर में रूपांतरित होना पड़ा।

सिंदबाद ने उड़ान भरी।
अक्षरशः।
उसके पंख थे और एक अजीब सी चोंच थी। शब्दों के बजाय, वह कुछ कहने के लिए एक तीखी सीटी जैसी आवाज़ निकालता था।
अशरफिया ने इदरीस और सिन्बाद पर जादू कर दिया था, जिससे वे पक्षी बन
गए थे। उनका यह परिवर्तन वाकई कष्टदायक था, क्योंकि इससे उनके शरीर विकृत हो गए और वे गंजे बाज में तब्दील हो गए। उनके मानव रूप में लौटने का एकमात्र तरीका यही था कि कोई उनका नाम पुकारे।
इदरीस सिनबाद के बगल में शान से उड़ रही थी मानो बाज में बदलना उसके रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा हो।
दूसरी ओर, सिंदबाद को अपनी नई मिली भुजाओं के साथ काफी परेशानी हो रही
थी, जिन्हें वह शिविर में पहुंचते ही बेतरतीब ढंग से फड़फड़ाता रहा।
ऊपर से वह वेयर-हाइना को देख सकता था, लेकिन उसे अज़राएल कहीं नहीं मिला।
इदरीस ने सीटी बजाई, जिसे सिंदबाद स्पष्ट रूप से समझ गया: 'चलो डाल पर बैठते हैं और उसका इंतजार करते हैं।'
सिन्बाद ने सिर हिलाया और ठंडी हवा से अपने पंख फड़फड़ाए, जो उसके पंखों को बहुत अच्छी लग रही थी। वे एक-दूसरे के सामने बैठे और शिविर की ओर देखने लगे। वहाँ कुछ भी असामान्य नहीं हो रहा था, सिवाय इसके कि संकर प्राणी अपनी दैनिक दिनचर्या में व्यस्त थे, जिसे सिन्बाद ने आखिरी बार देखा था।
‘अज़राएल जिस भी तम्बू से बाहर निकलेगा, हममें से कोई एक झटपट अंदर जाकर वह किताब ले आएगा। उस पर लेखक का नाम राजा ओगियास लिखा होना चाहिए— इसी से हम उसे पहचानेंगे,’ सिंदबाद ने कहा।

'मैं अंदर जाऊंगा और तुम यहीं रहो, देखो कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं होती,' इदरीस ने जवाब दिया।
‘बहुत बढ़िया। मैं तुम्हारा पहरेदार हूँ,’ सिंदबाद ने घुरघुराते हुए कहा, जो एक घरघराहट जैसी आवाज में निकला।
संकर प्राणियों ने उनकी ओर देखा, पलकें झपकाईं और कुछ सेकंड बाद काम
पर लौट आए।
‘क्या आपको लगता है कि उन्होंने हमारे बारे में कुछ अजीब देखा?’ इदरीस
ने पूछा।
'शायद वे सोच रहे होंगे कि दो चीलें इतनी देर से क्यों बातें कर रही हैं। क्यों न हम भी कुछ देर के लिए पक्षियों की तरह व्यवहार करने का नाटक करें, बजाय इसके कि हम इंसानों की तरह बातें करें?'
इदरीस ने सिर हिलाया।
वे तब तक इंतज़ार करते रहे जब तक अज़राएल अपने तम्बू से बाहर नहीं आ गया। फिर अचानक, जब वह नज़र आया तो वे सतर्क हो गए। वह शांत दिख रहा था और उसकी आँखों से कोई धुआँ नहीं निकल रहा था। इसके बजाय, वह एक सामान्य व्यक्ति जैसा लग रहा था—लंबा कद, चौड़ा शरीर, साफ़ दाढ़ी, पीला चेहरा और काले रेशमी बाल जो पीछे की ओर तेल से संवारे हुए थे। उसकी आँखें गहरी थीं और नाक नुकीली थी।
‘अंदर जाओ,’ सिन्बाद ने कहा।
इदरीस ने सिर हिलाया और चली गई। वह अज़राएल के पीछे-पीछे उड़ती हुई गई ताकि वह उसे देख न सके और तंबू में प्रवेश कर गई, जबकि सिंदबाद पैनी नज़र से देखता रहा कि कहीं अज़राएल कुछ कर न दे। उसने देखा कि अज़राएल कुछ संकर प्राणियों से बात कर रहा था और ऐसे हंस रहा था जैसे उसने कोई मज़ाक किया हो। वेयर-हाइना भी हंस रहे थे। लेकिन फिर वह तंबू की ओर चलने लगा। धिक्कार है! मैं उसे अंदर नहीं जाने दे सकता।
सिन्बाद नीचे उतरा और एक संकर प्राणी के सिर पर गुस्से से चोंच मारी। संकर प्राणी चीखते-चिल्लाते हुए अपने सिर से चील को हटाने की बेताब कोशिश कर रहा था। अज़राएल का ध्यान भटक गया और वह पीछे मुड़ गया। सिन्बाद कुछ देर तक उस पर हमला करता रहा, जब तक कि संकर प्राणी चिढ़कर सिन्बाद पर हमला करने के लिए अपना हथियार नहीं निकाल लिया। इसके बाद सिन्बाद ऊपर उड़ गया... लेकिन अंत में अज़राएल द्वारा पकड़ लिया गया।

पतित देवदूत ने अपने पंजे को कसकर पकड़ रखा था।
सिंदबाद ने तिरछी निगाहों से देखा कि इदरीस अपनी चोंच में किताब लिए खड़ी है। उसने चारों ओर देखा और सिंदबाद को सहानुभूति भरी नज़र से देखते हुए सिर हिलाया, मानो उसे बता रही हो कि वह उसके लिए वापस आएगी, और फिर उड़ गई।
उम्मीद है कि वह वापस आ जाएगी।
अज़राएल ने सिन्बाद को पंखों से पकड़ रखा था।
हालांकि, उसने अन्य पक्षियों की तरह व्यवहार करने की कोशिश की।
‘वाह, क्या अद्भुत प्राणी है! यह चील कितनी सुंदर है!’ अज़राएल ने मुस्कुराते हुए उस संकर प्राणी से कहा जिसे अभी-अभी चोंच मारी गई थी। ‘यह अफसोस की बात है कि यह असली चील नहीं है।’
सिंदबाद का खून जम गया।
‘आखिरकार, इस द्वीप पर तो बहुत लंबे समय से कोई पक्षी नहीं आया है। तो मुझे आश्चर्य है कि यह कौन हो सकता है,’ अज़राएल ने सिंदबाद की भयभीत आँखों में देखते हुए कहा। ‘मैं इन आँखों को जानता हूँ। मैं तुम्हारी आँखों को जानता हूँ, बच्चे।’
वह रुका और बोला, 'हैलो, सिंदबाद।'
और वह बच्चा फिर से इंसान बन गया, उसके गले में गिरे हुए देवदूत का हाथ लिपटा हुआ था।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

सिंदबाद ने सिर हिलाया। वह उस प्रेतग्रस्त महिला से भयभीत नहीं था जो केवल निरर्थक बातें कर रही थी। ऐसा लग रहा था मानो अब किसी बात का कोई महत्व ही नहीं रह गया हो।
‘अगर हम ऐसा कर भी लें,’ सिंदबाद ने लंबी चुप्पी के बाद कहा, ‘तो उसके बचने की क्या संभावना है? वह बूढ़ी है। वह झाड़-फूंक से बच नहीं पाएगी, है ना?’
‘अच्छा...’ मास्टर रीस ने कहा, ‘आप सही कह रहे हैं। वह नहीं कर सकती। लेकिन हमें कम से कम कोशिश तो करनी चाहिए। हम यूं ही नहीं कर सकते...’
और उसी क्षण, सिंदबाद ने तलवार म्यान से निकाली और उसे महिला के शरीर में गहराई तक घोंप दिया।
वह चीखी और उसकी आंखों में एक पल के लिए रोशनी चमकी, फिर पूरी तरह से बुझ गई, और उसके साथ ही वह दानव भी मर गया।
मास्टर रीस स्तब्ध रह गए। उनके हाथ कांप रहे थे जहाँ उन्होंने किताब पकड़ रखी थी। 'क्या... तुम ऐसे ही नहीं कर सकते...'
‘वह तो वैसे भी मर जाती, स्वामी।’ सिंदबाद ने तलवार म्यान में डाली और
उसे रीस को सौंप दिया। ‘मैंने बस काम को जल्दी निपटा दिया।’
हम हत्यारे नहीं हैं।
‘हम हैं। राक्षसों के। मैंने अभी-अभी एक को मारा है,’ सिंदबाद ने बेपरवाही से कहा।
‘बाहर खड़े उसके चिंतित परिवारवालों को हम क्या बताएंगे?’ सिंदबाद से तलवार लेते हुए रीस अभी भी अचंभित था।
सिंदबाद ने आह भरी। उसे यह बात समझ नहीं आई थी। लेकिन फिर, उसके पास मास्टर रीस को देने के लिए एकदम सही जवाब था—क्योंकि उसने सफीना को सुरक्षित रहने का वादा किया था, लेकिन उसे हर दिन यातनाएं दी जा रही थीं। ‘हम सेइड्स हमेशा यही करते हैं। हम झूठ बोलेंगे।’

रात काफी ढल चुकी थी और कई झूठ बोलने के बाद सिंदबाद और मास्टर रीस ने
एक सराय में दो कमरे बुक करवा लिए थे। वे अगले दिन बगदाद के लिए रवाना होंगे।
सिंदबाद अपने कमरे में बैठा सेब खा रहा था और बस खालीपन से छत को घूर
रहा था, तभी उसे एक आवाज सुनाई दी:
‘क्या आप नैतिक संकट से गुजर रहे हैं? हा हा।’
सिन्बाद आवाज की दिशा जानने के लिए बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। तभी उसके सामने, अंधेरे में, दो धुंधली सफेद आंखें उसे घूरती हुई दिखाई दीं। उनकी कोनों से धुएं का एक बादल उठ रहा था। 'अज़राएल!' सिन्बाद लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ और बगल की मेज पर रखे अपने थैले में रखे हथियार को निकालने के लिए हाथ बढ़ाया।
‘मुझे चोट पहुँचाने की ज़रूरत नहीं है, बच्चे। मैं यहाँ एक आत्मा के
रूप में आया हूँ,’ अज़राएल ने कहा। ‘तुमसे संवाद करने के लिए।’
'आप क्या चाहते हैं?'
‘तुम्हें पता है मुझे क्या चाहिए?’ आँखों ने कहा। ‘मुझे सफीना चाहिए।’ सिंदबाद ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'और तुम्हें लगता है कि मैं उसे यूँ
ही तुम्हारे हवाले कर दूँगा?' 'मेरे साथ वह ज़्यादा सुरक्षित रहेगी, बच्चे। उफ़, तुम्हारे लोग उस पर कितना अत्याचार कर रहे हैं! वह कमज़ोर है। अगर तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो जाकर उससे मिलो। तुम खुद देख लोगे।'
सिंदबाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'मुझे तुम्हारी बात पर यकीन नहीं है।'
‘बेशक, तुम नहीं जानते। लेकिन याद रखना कि मैं एक देवदूत हूँ, भले ही पतित हो गई हूँ, पर फिर भी एक देवदूत हूँ। मुझे पता है कि तुम उसे पसंद करते हो, बच्चे। उसे इंसानों से चोट मत पहुँचाने देना। वह बेहतर की हकदार है।’ ‘क्या आपको वो चीज़ पसंद आई जो आपने उसे दी थी? लियोनार्ड?’
‘ओह, वह एक गलती थी,’ कर्कश आवाज ने जवाब दिया। ‘और मैं इसके लिए माफी मांगता हूं, भले ही उसे द्वीप पर घूमने-फिरने की अधिक आजादी थी, बजाय इसके कि वह खलीफा के आदमियों की सुरक्षा में एक किले में फंसी रहे।’
‘तुमने उसके परिवार को मार डाला।’
‘वे एक दत्तक परिवार थे, बच्चे। वह इब्लिस की बेटी है।’

'हथियार।'
उन्होंने कहा, ‘वह उसे अपनी बेटी कहना पसंद करते हैं। चलो, बच्चे। भोर
के देवता अपने बच्चे की खुशी के लिए कुछ भी करेंगे, चाहे इसमें तुम जैसे नश्वर प्राणी ही क्यों न शामिल हो जाओ। जब तुम दोनों एक निश्चित उम्र तक पहुँच जाओगे, तो वह निश्चित रूप से तुम्हारा और सफीना का विवाह करवा देंगे। बेशक, इसके लिए तुम्हें उसे मुझे सौंपना होगा।’
सिंदबाद ने इस बारे में सोचा। उसे यह विचार अच्छा लगा कि वह उस कैदखाने से बाहर आ गई है जिसके लिए वह खुद जिम्मेदार था। उसे इस बात के लिए खुद से नफरत थी। 'लेकिन यहाँ, उसकी शक्तियों का उपयोग सही लोग सही कारणों से कर रहे हैं। उसे एहसास होगा कि वह जनता की भलाई के लिए काम कर रही है।' ‘हम्म, झूठ,’ अज़राएल ने कहा। ‘सिंदबाद, मेरे बच्चे, क्या तुमने कभी नहीं सोचा कि एक फ़रिश्ता, यहाँ तक कि मुझ जैसा पतित फ़रिश्ता भी, इब्लिस के पक्ष में क्यों शामिल हुआ? क्या तुम्हें पता भी है कि वह हमारी पृथ्वी के साथ क्या करने की योजना बना रहा है? वह इसे तुम्हारे लिए बेहतर बनाना चाहता है—एक स्वर्ग, एक आदर्श दुनिया, उन दोषों से मुक्त जिनसे तुम मनुष्यों ने खुद को समृद्ध किया है। तुम सब निकम्मे हो गए हो और तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो तुम पर नज़र रख सके। और इसके लिए, उसे बस एक बलिदान देना है, जो है इस दुनिया के पापियों को मारना और अच्छे लोगों को जीवित रहने देना।’
‘पापी? तो आपको लगता है कि आप इसका समर्थन करके अच्छा काम कर रहे हैं?’ ‘बिल्कुल। रीस जैसे पापी नाश होंगे।’
सिंदबाद ने विरोध करते हुए कहा, 'मास्टर रीस... वह एक अच्छे आदमी हैं।' जिसने अपने इकलौते आश्रित के साथ विश्वासघात किया।
‘क्या? तुम क्या कह रहे हो?’ उसने घबराकर पूछा, उसके पेट में एक अजीब
सी बेचैनी होने लगी।
अज़राएल हँस पड़ा। ‘तुम्हें लगता है कि खिलाफत ने सफ़ीना को तुमसे दूर ले जाने का फैसला किया था... बहुत दूर? नहीं, बच्चे,’ उसने कहा। ‘यह मास्टर रीस का विचार था।’

अड़तालीस

आज
सिंदबाद एक बांस के पिंजरे में फंसा हुआ था, जबकि भूखे वेयर-हाइना और पतित देवदूत बाहर से उसे अत्यंत आनंद के साथ देख रहे थे।
‘मेरे पुराने दोस्त,’ अज़राएल ने अपनी मधुर, गहरी आवाज़ में कहा। ‘तुम थोड़े बड़े हो गए हो। मेरा क्या? क्या मैं मोटा हो गया हूँ?’ उसने खुद को दिखाने की कोशिश की और पूरा चक्कर लगाया, लेकिन सिंदबाद समझ गया कि वह मज़ाक कर रहा है।
सिन्बाद बैठ गया और सीधे गिरे हुए फ़रिश्ते की ओर देखने लगा। उसकी नज़रें सिन्बाद से मिलीं और अज़राएल ने शरारती मुस्कान दी। सिन्बाद को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह व्यक्ति उसे देखकर कितना खुश था।
‘मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि तुम ऐसी योजना बनाओगे। किसलिए? मेरी जासूसी करने के लिए? क्या तुम सोच रहे थे कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? खैर, सबसे पहले तो मैं तुम्हें रोकने की कोशिश कर रहा था, जिसमें मैं साफ़ तौर पर कामयाब रहा।’ वह हँसा। ‘मुझे बहुत खुशी है कि तुम मेरी गोद में आ गिरे... या ज़्यादा सटीक कहूँ तो मेरे चंगुल में,’ अज़राएल ने अपनी उंगलियाँ हिलाते हुए कहा, जिनसे उसने सिंदबाद की गर्दन पकड़ी थी।
सिन्बाद यह नहीं कहना चाहता था कि आखिर में जीत उसी की हुई है क्योंकि इदरीस के पास उस दानव की किताब थी। 'तुम सफीना के साथ क्या कर रहे हो?'
अरे बाप रे! मैं कौन होती हूँ दखल देने वाली? वो जो करना चाहती है, कर रही है, बस मुझे थोड़ा सा मार्गदर्शन देना पड़ता है।
‘वह यहाँ क्यों थी?’
‘किसी चीज के बारे में जानना,’ अजराइल ने मासूमियत से अपनी आँखें झपकाते हुए कहा।
‘कहाँ जाना है?’

‘क्या मैं वाकई ऐसा दिखता हूँ जो अपनी विश्व प्रभुत्व की योजना का खुलासा करेगा?’ अज़राएल हँसा। ‘मुझे बुरा लग रहा है कि तुम मुझे इतना भोला समझते हो।’
सिन्बाद ने क्रोधित होकर कहा, 'वह एक अच्छी लड़की है, अज़राएल। और उसने इस जीवन में बहुत दुख झेले हैं... इस दुनिया ने उसके साथ अन्याय किया है। सफ़ीना इनमें से किसी भी चीज़ की हकदार नहीं है।'
इसीलिए वो जानती है कि इस दुनिया को फिर से बनाने की ज़रूरत है, और उसके पिता से बेहतर इसे कौन कर सकता है? वो सभी पापियों को सज़ा देगा और एक नई दुनिया—एक न्यायपूर्ण दुनिया—का उदय होगा। और सफ़ीना अपना बदला ले लेगी। क्या आपको नहीं लगता कि आपके लोगों ने उसे जो तकलीफ़ दी है, उसके लिए वो न्याय की हकदार है?
सिंदबाद ने आह भरी। 'तुम तुरही बजाकर इब्लिस को रिहा करना चाहते हो?' ‘उसका भाई,’ अज़राएल ने कहा। ‘इब्लिस कमज़ोर है। तुम जानते हो कि वह कमज़ोर है। तुम काफी समय से जानते हो, है ना? इसलिए उसने अपनी बची हुई सारी ऊर्जा सफ़ीना को बनाने में लगा दी। वह जानता है कि केवल उसका भाई ही उसकी मदद कर सकता है।’
जानवर।
‘केवल वही चीज़ उसे जगा सकती है जिसने उसे सुलाया है, उसके अपनों के
खून से,’ अज़राएल ने कहा, मानो वह कोई भविष्यवाणी पढ़ रहा हो, क्योंकि शब्द उसके मुँह से इतनी सहजता से निकले। उसने आगे कहा, ‘सफीना जानती है कि यह दुनिया कितनी टूटी हुई है।’ अज़राएल बेफिक्र होकर कोठरी में इधर-उधर घूमने लगा। ‘वह जानती है कि कुछ बेहद बिगड़े हुए लोग हैं जिन्हें मरना होगा। कोई न कोई न्याय करने वाला तो होना ही चाहिए।’
और क्या वह न्यायाधीश ही वह शैतान होगा?
‘बिल्कुल,’ अजराइल ने कहा।
सिंदबाद को नहीं पता था कि राक्षस को कहाँ दफनाया गया है, वरना वह यहाँ समय बर्बाद करने के बजाय सीधे वहीं चला जाता। लेकिन व्यापारिक जहाज़ के कप्तान को पता था कि वह कहाँ है, इसलिए यह एक रहस्य था जिसे सिंदबाद को सुलझाना था। उसे कप्तान से कौन सी जानकारी चाहिए थी?
‘तो इसे हासिल करने के लिए, आप पूरी मानवता का सफाया कर देंगे?’ सिंदबाद ने कहा।

'इतने बड़े उद्देश्य के लिए एक छोटा सा बलिदान।'
‘तुम इस पर विश्वास नहीं करते। तुम यह सब सिर्फ उसे नीचा दिखाने के
लिए कर रहे हो।’ सिंदबाद मुस्कुराया।
अज़राएल की शरारती मुस्कान गायब हो गई। उसने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए था। मैंने तुमसे यह बात गुप्त रूप से कही थी, सिंदबाद।'
‘खैर, मैं समझता हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो, अज़राएल। मैं समझता हूँ।’ मृत्यु के दूत ने सिंदबाद की ओर देखा और चिल्लाया: ‘तुम नहीं समझते!’ उसकी पुतलियाँ बड़ी हो गईं, जिससे उसकी आँखें भयानक रूप से काली हो गईं। सिंदबाद की धड़कन तेज़ हो गई। बहुत समय बाद, अज़राएल कुछ पलों के लिए धमकी भरा लग रहा था, फिर अचानक उसका शरारती रूप लौट आया। ‘तुम नहीं समझते। कोई नहीं समझता। मैं उसे परेशान कर सकता हूँ। मैं उसे चोट भी पहुँचा सकता हूँ। लेकिन जानते हो क्या? इतने सालों में, मुझे इब्लिस की इच्छा पर विश्वास होने लगा है, और यह बात समझ में आती है। बहुत हद तक समझ में आती है।’
‘तो फिर तुमने मुझे फंसाया क्यों है? मुझे मार डालो।’ सिंदबाद खड़ा हो गया। ‘मैं इन सब से तंग आ चुका हूँ।’
'मैं नहीं कर सकता।'
सिंदबाद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'क्यों?'
‘खैर... मैं नहीं चाहता कि तुम इस पर गर्व महसूस करो, लेकिन...’ अज़राएल
ने कहा, ‘सफीना ने अठारह साल की होने के बावजूद अपनी नियति को पूरा करने के लिए इसलिए सहमति दी क्योंकि उसने एक बेतुकी विनती की थी और वह थी तुम्हें, सिर्फ तुम्हें। तुम दोनों ही इब्लिस की नई दुनिया में आगे बढ़ते रहोगे।’ ‘क्या...’ सिंदबाद को समझ नहीं आ रहा था कि क्या महसूस करे। उसने सोचा
था कि शायद वह उसे भूल गई होगी, लेकिन वह... वह मुस्कुराना चाहता था, पर किसी चीज़ ने उसे रोक दिया। ‘और यह इब्लिस... क्या वह खुद धरती पर आकर ये सब नहीं करना चाहता?’
जैसा कि मैंने तुम्हें बताया, वह बहुत कमजोर है। वह क्लिफोथ में रहता है। और उसके लिए हम जैसे लोग काम करते हैं और सफीना जैसी कोई है जो वही काम करेगी जिसके लिए वह पैदा हुई है: अंधकार युग लाना और नई दुनिया का निर्माण करना।
सिंदबाद ने मुट्ठी भींच ली। 'मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगा।'

‘तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?’ अजराइल उदास चेहरा बनाते हुए जमीन पर बैठ गया। ‘मेरा मतलब है... मुझे तुम्हारा रहस्य पता है, सिंदबाद।’
‘आपका मतलब मेरे माता-पिता के बारे में है?’
अज़राएल मुस्कुराया। 'चलो ना, यह तो तुम्हें पता होना चाहिए। लेकिन
यह सब खत्म होने के बाद मैं तुम्हें बताऊंगा।' वह रुका। 'लेकिन यह रहस्य नहीं, नहीं। यह कुछ और है। तुम समझ रहे हो ना मैं किस बारे में बात कर रहा हूं।'
जब उसे इस बात का एहसास हुआ तो उसका खून जम गया। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? तुमने ऐसा कैसे किया...'
‘उसने मुझे बताया।’ अजराइल ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘उसे इस बात का बुरा लग रहा था और यह एक तरह से कबूलनामा था। मैं उसके लिए एक अच्छा सहारा हूँ।’
सिन्बाद कांप उठा और उसने अपना सिर पकड़ लिया। सफीना, तुमने ऐसा क्यों किया?
‘मैं तुम्हें रोकूंगा, अजराइल।’
‘कैसे?’ उसने चारों ओर किसी खतरे की तलाश की। ‘मुझे यहाँ कोई नहीं दिख रहा। और तुम्हारा दल, तुम्हारी लकड़ी से बनी नाव के साथ? मैं अपने आदमियों को उन्हें मारने के लिए भेज रहा हूँ। उन्होंने उनका पता लगा लिया है।’ मेरा मतलब है, यह एक द्वीप के पास स्थित एक विशाल जहाज है।
‘अज़राएल।’ सिंदबाद ने ऊपर देखा। ‘अगर तुम या सफ़ीना भी ऐसा सोचते हो
तो मैं कभी नहीं बदलूंगा।’
‘आखिरकार, तुम कर ही लोगे।’ अज़राएल के चेहरे पर विजयी मुस्कान थी। ‘आखिरकार, वह भी मुड़ी और—’
धरती हिलने लगी। सिंदबाद और अजराइल यह पता लगाने के लिए चारों दिशाओं में देखने लगे कि ऐसा क्यों हो रहा है, तभी...
जंगल से एक दैत्य प्रवेश कर गया!
उसने अपने गदा को तंबुओं के चारों ओर घुमाया, उन्हें तोड़ डाला और वेयर-हाइना को बुरी तरह से पीट-पीट कर रख दिया। फिर उसने उनके शरीर को दो हिस्सों में फाड़ दिया - उनके धड़ चारों ओर बिखर गए - और उनके अंगों को ऐसे तोड़ दिया जैसे वे गुड़िया हों।

सिन्बाद पीछे हट गया, उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। यहाँ तक कि अज़राएल भी चौंक गया।
‘ओग्गी तुम सब से नफरत करता है! तुमने ओग्गी की किताब चुराई!’ वह चिल्लाया।
फिर अजराइल झट से ओग्गी के सामने खड़ा हो गया और बोला, 'क्या हुआ, मेरे प्यारे?'
‘तूने इसे चुराया!’ दैत्य ने गुस्से से कहा और अज़राएल को बांह से पकड़कर दो टुकड़ों में तोड़ने ही वाला था कि अज़राएल हवा में गायब हो गया। ‘जादूगर! अर्रर्रर्रघ्ह्ह्ह!’
वह उस जगह को नष्ट करना जारी रखे हुए था, तभी सिंदबाद ने हुसैन को झाड़ियों से बाहर आते देखा। उसके पीछे मार्कस और सैनिक थे।
जब वे अफरा-तफरी के बीच पिंजरा खोलने आए, तो और भी कई वेयर-हाइना अपनी तलवारों के साथ अंदर घुस आए।
मार्कस उनकी ओर मुड़ा और अपनी विशाल कुल्हाड़ी निकाल ली, जबकि उसके सैनिकों ने अपनी तेज तलवारें तैयार कर लीं।
‘हमला करो!’ मार्कस पूरी ताकत से दौड़ते हुए चिल्लाया और वेयर-हाइना
पर झपट पड़ा। इसी बीच, हुसैन पिंजरा खोलने की कोशिश में लगा हुआ था और अपनी तलवार से बांस के दरवाजे की गांठें तोड़ रहा था।
‘तुम बिलकुल सही समय पर आए हो।’ सिंदबाद मुस्कुराया। ‘आने के लिए धन्यवाद।’ ‘खैर, मुझे आना ही पड़ा। इदरीस ने कहा था कि तुम खतरे में हो।’ ‘वह नहीं आई?’ सिंदबाद आश्चर्यचकित रह गया।
‘तुम्हें क्या लगता है कि मैं लड़ाई में नहीं आऊंगी?’ इदरीस अपने दोधारी भाले के साथ पीछे से आई और आगे की ओर उछलते हुए मार्कस के साथ मिलकर वेयर-हाइना पर हमला कर दिया। उसने सिंदबाद को आँख मारी, जिसने जवाब में मुस्कुरा दिया।
चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी, लोहे पर लोहे की खड़खड़ाहट गूंज रही
थी और फिर एक विशालकाय जीव दूसरे हाइब्रिडों को फेंकते हुए खुद से बातें कर रहा था। और बीच में हुसैन था, जो पिंजरा खोलने ही वाला था कि एक हाइब्रिड उस पर झपटा और उसका चेहरा कुतरने लगा। हुसैन ने अपनी तलवार उन दोनों के बीच रख दी और दूसरे हाथ से हाइब्रिड को धक्का देने की कोशिश की। एक ज़ोरदार धक्के से उसने हाइब्रिड को दूर फेंक दिया और खड़ा हो गया।

हाइब्रिड उस पर गुर्राया और फिर आगे बढ़ा। अपने पैरों की फुर्ती से हुसैन मुड़ा और हमले से बच गया।
चलो भाई। इस प्राणी से लड़ते हुए मत मरना। सिंदबाद ने दरवाजा खटखटाया।
वेयर-हाइना ने हुसैन पर हमला करने के लिए अपने पंजे फैलाए और एक राक्षस की तरह आक्रमण करने लगा, लेकिन हुसैन ने बिना समय बर्बाद किए हाइना के चौड़े पैरों के बीच से फिसलते हुए हवा में छलांग लगाई, अपनी तलवार सीधे उसकी पीठ में घुसाई और तुरंत बाहर निकाल ली। हाइब्रिड ने घाव को हैरानी से देखा और फिर गिर पड़ा।
हुसैन पिंजरे के पास वापस आया और दरवाजा खोला। सिंदबाद ने उसे गले लगाया और उसके गालों को सहलाया। 'तुमने कर दिखाया!'
‘मैंने अपना पहला शिकार किया।’ उसकी आँखें लाल थीं और वह घबराया हुआ
था।
'आप इस समय बिल्कुल पागल जैसा महसूस कर रहे हैं, है ना?'
आपको अंदाजा भी नहीं है। सब कुछ इतनी जल्दी हो गया।
मुझे पूरा यकीन है कि आपके पिता को आप पर गर्व होगा।
‘क्यों? क्योंकि मैंने किसी को मार डाला?’
सिंदबाद मुस्कुराया। 'नहीं। क्योंकि तुमने एक दोस्त की जान बचाई।'
हुसैन ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।
उन्होंने मुड़कर देखा तो टूटे हुए तंबू और संकर प्राणियों के शव एक चादर की तरह बिछे हुए थे।
इदरीस और मार्कस अपने हथियारों के साथ खड़े थे। मार्कस के एक आदमी की मौत हो गई थी और सैनिक उसके चारों ओर सिर झुकाए खड़े थे। ओग्गी अभी भी गुस्से में चिल्ला रहा था कि उन्होंने किताब कैसे चुराई।
सिंदबाद और हुसैन इदरीस की ओर चले।
'मुझे लगता है तुमने उसे बता दिया होगा,' सिंदबाद ने उस विशालकाय व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा।
‘ओह, वह खुश नहीं था।’ इदरीस को घबराहट होने लगी। ‘क्या अजराइल मर गया?’
‘वह भाग गया।’ सिंदबाद ने दांत पीसते हुए कहा। ‘वह कमीना... खैर, हमें
सच में जल्दी करनी होगी! वे नरक के द्वार तोड़ने की योजना बना रहे हैं ताकि

राक्षस इस दुनिया का अंत कर सके। एक बार तुरही बज गई तो हमारे पास कोई मौका नहीं बचेगा।’
इदरीस का चेहरा पीला पड़ गया। हुसैन और मार्कस का चेहरा भी पीला पड़ गया।
‘मेरा एक सवाल है। क्या तुरही की आवाज़ से राक्षस सो नहीं जाता?’ हुसैन ने पूछा। ‘मेरा मतलब है, क्या वह अभी भी सो रहा है? मुझे लगा कि यही मूल कथा है।’
‘खैर,’ सिंदबाद ने कहा, ‘ऐसा लगता है कि तुरही ही एकमात्र ऐसी वस्तु है
जो उस दानव को जगा सकती है। और उसे जगाने वाली एकमात्र व्यक्ति सफीना है, जो उस दानव और भोर के स्वामी के वंश से आती है।’
इदरीस ने सिर हिलाया। 'बात समझ में आती है। फिर हमारे पास समय नहीं है।'
वे सभी ओग्गी की ओर मुड़े जो जमीन पर बैठा मलबे से छेड़छाड़ कर रहा था।
‘अरे, ओग्गी! हमें किताब मिल गई; वह जहाज पर सुरक्षित रखी है। अब हमें कप्तान के पास ले चलो।’
ओग्गी ने ऊपर देखा, उसकी आँखें चमक उठीं। 'ओग्गी अपना वादा कभी नहीं भूलता।' वह थोड़ा लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया, जिससे सिंदबाद और उसके दोस्त ज़मीन पर गिर पड़े। 'ओग्गी तुम्हें डांसिंग कैप्टन से मिलवाएगा!'

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

सिंदबाद ज़मीन पर पालथी मारकर बैठा था और उसने उसे खोला। अंदर एक घुमावदार चांदी की तलवार थी। वह जानता था कि इसे क्या कहते हैं—एक स्किमिटर।
‘तो?’ मास्टर रीस ने पूछा।
सिंदबाद मुस्कुराया, तलवार की मूठ को पकड़े हुए और उस पर खुदे हुए अपने नाम को देखकर। 'आपने कहा था कि मैं हथियार चलाने के लिए बहुत छोटा हूँ।'
'तुमने हाल ही में मुझे प्रभावित किया है, लड़के। मुझे विश्वास है कि
तुम इसके हकदार हो।'
सिन्बाद ने सिर हिलाया, खड़ा हुआ और एक अदृश्य शत्रु से तलवारबाजी करने की कोशिश करने लगा। उसने अपने पैरों और हाथों की चाल पर ध्यान दिया कि वह कैसा प्रदर्शन कर रहा है। फिर वह रुका और अपने गुरु को प्रणाम किया। 'धन्यवाद।'
'जब मैंने तुम्हें गिल्ड में शामिल किया था, तब तुम्हारे बारे में कुछ शंकाएँ थीं,' मास्टर रीस ने सिन्बाद के बगल में खड़े होकर, उसके कंधों पर हाथ रखते हुए कहना शुरू किया। 'लेकिन तुमने हमेशा उन शंकाओं को दूर कर दिया।'
सिन्बाद खुश था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जो व्यक्ति अभी उसके साथ इतना कोमल व्यवहार कर रहा था, वही कभी-कभी इतना स्वार्थी भी हो सकता है। वह जटिल था। और सिन्बाद को समझ नहीं आ रहा था कि उसके लिए क्या महसूस करे। मास्टर रीस खाली डिब्बा अपनी मेज पर रखने के लिए मुड़े, तभी सिन्बाद ने कहा:
मुझे आपसे कुछ अनुरोध करना है।
'हाँ?'
मैं सफीना से मिलना चाहता हूँ।
रीस ने अपने जबड़े भींच लिए। 'क्यों?'
‘गुरुजी, कई महीने बीत गए हैं। मुझे लगता है कि अब उससे मिलने का समय आ गया है। मैंने ग्रैंड मास्टर से भी अनुरोध किया था, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। कृपया मुझे उससे मिलने दीजिए। मैं देखना चाहता हूँ कि वह कैसी है।’ 'ठीक है।'
'क्या?'

‘ठीक है। मैंने कहा ठीक है।’
सिन्बाद उत्साह से उछल पड़ा और रीस को धन्यवाद देने के लिए दौड़ते हुए उसके पैर से लिपट गया। रीस ने उसके इस हावभाव पर मुस्कुराते हुए उसके सिर पर थपथपाया।
उनके पीछे, रीस द्वारा उसे उपहार में दी गई तलवार जमीन पर पड़ी थी।

सिंदबाद बेसब्री से सफीना का इंतजार कर रहा था।
उसे देखे हुए कुछ महीने बीत चुके थे और अब उससे मिलने को लेकर वह बेचैन था। वह उससे क्या कहेगा? उसे कुछ पता नहीं था। रक्का-रफीका की यात्रा के बाद उसे एक कमरे में रखा गया। और उसने देखा कि महल की सुरक्षा कितनी कड़ी थी।
कमरा सादा था, बीच में दो कुर्सियाँ और एक मेज थी। वहाँ और कोई नहीं
था। खिड़की से कमरे में हल्की हवा आ रही थी। मौसम ठंडा हो चुका था और उसे ठंडक महसूस हो रही थी।
वह अज़राएल—वह ज़रूर झूठ बोल रहा होगा और मैं अभी सबूत जुटा लूँगा।
सफ़ीना ठीक है। मुझे पूरा यकीन है।
उसने खुद को आश्वस्त किया।
दरवाजा खुला। लंबी स्कर्ट और टाइट ट्यूनिक पहने सफीना कमरे में दाखिल हुई। उसका चेहरा दमक रहा था और खूबसूरत लग रहा था, बाल जूड़े में बंधे थे और वह पहले की तरह थकी हुई या कमजोर नहीं दिख रही थी।
जब उसने सिंदबाद को देखा, तो उसने उसे गले लगा लिया।
और बिना पीछे हटे, उसने उसके हाथ में कुछ थमा दिया। फिर वह कुर्सी की
ओर चली और चेहरे पर चौड़ी मुस्कान लिए बैठ गई।
सिंदबाद उसके द्वारा दिए गए पत्र को पढ़ने ही वाला था, लेकिन इससे पहले ही उसने उससे कहा, 'आओ, बैठ जाओ, सिंदबाद।'

वह असमंजस में पड़ गया। वह नोट पढ़ना चाहता था, लेकिन उसने उसके हाथ पकड़ लिए और उसकी उंगलियों से खेलने लगी। 'मुझे तुम्हारी बहुत याद आई,' उसने कहा।
‘मैं भी, कैलिप्सो।’ सिंदबाद मुस्कुराया। ‘कैसा रहा?’
‘यह बहुत अच्छा रहा! मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है। यहाँ सब लोग बहुत दयालु हैं।’
लेकिन पिछली बार आपने कहा था—
उन्होंने ट्यूटर बदल दिया है। नया वाला बहुत अच्छा है।
मुझे अपने लिए बिल्कुल समय नहीं मिलता।’ उसने अपनी उंगलियों के सिरे दिखाते हुए कहा। ‘देखो, अब मुझे जादू करते हुए अपनी उंगलियां नहीं जलानी पड़तीं। यह वाकई बहुत अच्छा है। तुम पहले क्यों नहीं आए?’
‘मैं...’ गिल्ड द्वारा रोके जाने पर, ‘व्यस्त था,’ उसने कठोर भाव से कहा। उसने एक पल के लिए उसकी ओर देखा, उसके चेहरे पर उदासी की एक झलक थी। 'आते रहना, तुम्हें पता है ना कि तुम ही मेरे इकलौते दोस्त हो?'
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'क्या उन्होंने तुम्हें बताया कि तुम कब रिहा होगे?'
‘अरे नहीं। उन्होंने कहा कि मैं जल्द ही एक मिशन पर जा रही हूँ, तो वाह!’ उसने बनावटी मुस्कान बिखेरी।
सिन्बाद जानता था कि वह अब कभी वैसी बनावटी, मीठी मुस्कान नहीं देती थी। उसे अजीब सा लगा। उसे लगा कि वह किसी ऐसे व्यक्ति से बात नहीं कर रहा है जिसे वह पहले जानता था। 'तुम अलग दिख रही हो।'
‘वे मुझे अच्छे से तैयार करते हैं और... खैर, वे मुझे ठीक से बोलना भी सिखाते हैं।’
‘हाँ, आपकी आवाज़ से ऐसा नहीं लगता...’
‘जानवर की तरह? मुझे पता है!’ वह हंस पड़ी। ‘बिस्मिल्लाह, मैं पहले कितनी हास्यास्पद लगती थी।’
‘तुम सचमुच यहाँ खुश हो, है ना?’ सिंदबाद ने पूछा।
कुछ पल का विराम आया। उसने चारों ओर देखा, उसकी मुस्कान अटल थी, और फिर बोली, 'बेशक मैं हूँ, मूर्ख, हालाँकि अगर तुम आस-पास होते तो बहुत अच्छा होता।'

‘□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□,’ □□□□□□□□ □□□□ ‘□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□’

□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□

‘□□□, □□□□ □□□ □□, □□□□, □□□□ □□□□ □□□□,’ □□□□□ □□ □□□, □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □ □□□□ ‘□□□ □□□□□ □□□□? □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□□□□□!’ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□

□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□, □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□-□□□ □□□□□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□ □□□□ □□ □□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□:

□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□
□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□
□□□□ □□□ □□□□ □□□□
□□□□□□□—
□□□□ □□□□!

पचास

आज
सूरज डूब चुका था और वे सभी वापस किनारे पर चले गए।
सिन्बाद, हुसैन और इदरीस वहाँ खड़े होकर उस विनम्र कप्तान को देख रहे
थे जो जहाज़ के बूढ़े, पागल आदमी को गले लगा रहा था और खुशी मना रहा था। वे आपस में गपशप करने में व्यस्त थे। सिन्बाद और इदरीस ने एक-दूसरे को व्यंग्यात्मक, चिढ़ भरी नज़रों से देखा।
‘क्या हम इसे जल्दी कर सकते हैं?’ सिंदबाद ने पूछा। ‘आपने कहा था कि जब
हम आपको आपके मलबे तक ले जाएंगे, तब आप हमें बिल्ली जैसी आंखों वाली लड़की के बारे में बताएंगे।’
लंबी दाढ़ी वाले कप्तान मुस्कुराए। उन्हें एक लंबी फ्रॉक और टोपी पहने हुए उस गुफा के अंदर बैठे हुए पाया गया था, जहाँ दैत्य उन्हें अपने मनोरंजन के लिए नाचने और गाने के लिए मजबूर करता था।
‘मैं सोच रहा था कि बूढ़ा हिरेन ज़िंदा होगा या नहीं।’ वह मुस्कुराया। ‘सबसे पहले तो मुझे उस पागल बूढ़े दानव से बचाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।’
सिन्बाद ने विनम्रता से सिर हिलाया। 'कोई बात नहीं।'
‘हमने आपके बारे में निकटतम चौकी को भी सूचित कर दिया है। वे जल्द ही आपको लेने आ रहे हैं,’ इदरीस ने आगे कहा।
उस पागल आदमी और कप्तान ने फिर से एक-दूसरे को गले लगाया।
सिंदबाद ने खांसकर और गला साफ करके सबका ध्यान इस मामले की ओर आकर्षित करने की कोशिश की।
‘ओह हाँ,’ कप्तान ने कहा, ‘वो बिल्ली जैसी आँखों वाली लड़की। अजीब लड़की थी। बहुत बदबू आ रही थी...’
‘सल्फरयुक्त?’ हुसैन ने सुझाव दिया।

“कुछ-कुछ, हाँ, चाँदी जैसी। शायद उसके पास मौजूद तुरही की वजह से। हे भगवान, उस वाद्ययंत्र से कितनी भयानक बदबू आ रही थी,” कप्तान ने उल्टी करते हुए कहा। “इतने लंबे समय बाद मैंने उसे ही एकमात्र नश्वर प्राणी के रूप में देखा और मुझे बहुत खुशी हुई। हालाँकि वह बहुत फुर्तीली थी और मुझसे मेरे काम के बारे में पूछना चाहती थी।”
‘काम?’ इदरीस ने पूछा। ‘आपका व्यापार?’
‘खैर, व्यापार तो एक बड़ा शब्द है। मैं तो तस्कर हूँ।’ उसने मुस्कुराते हुए अपना टूटा हुआ सामने का दाँत दिखाया। ‘यह मुझे तब लगा जब मेरी कुछ सैनिकों से हाथापाई हो गई थी। खैर, कहने का मतलब यह है कि उसने मुझसे पूरब में मेरे तस्करी के धंधों के बारे में पूछा।’
सिन्बाद को याद आया कि ज़ारका ने कहा था कि उन्हें पूरब की ओर जाना चाहिए। वहीं वे उसे पाएंगे, लेकिन पूरब बहुत विशाल था।
खैर, मैंने बसरा के बंदरगाहों से कुछ महत्वपूर्ण सामान निकालकर कॉन्स्टेंटाइन और चीनियों जैसे अपने प्रतिद्वंद्वियों को भेजा था। इसलिए वह इस चीनी व्यक्ति के बारे में जानने में विशेष रूप से रुचि रखती थी।’ वह रुका। ‘उसका नाम तियान शेंगोंग है। और मैंने जनरल तियान के साथ काफी व्यापार किया है।’
सिन्बाद ने उस आदमी के बारे में सुना था। वह पूरे बसरा में कुख्यात था। ऐसी अफवाहें थीं कि उसने चीन में तैनात एक लाख से अधिक अरब दूतों का नरसंहार किया था। जाहिर तौर पर, वह चीनी साम्राज्य के खिलाफ विद्रोहियों के गठबंधन का हिस्सा था। इसे अन लुशान विद्रोह कहा जाता था और तियान उस विद्रोह का एक महत्वपूर्ण नौसैनिक कमांडर था।
कप्तान ने कहा, ‘वह छोटा कद का, खतरनाक आदमी है। ज्यादा बोलता नहीं है। उसे अक्सर कुछ कागजात, नमक, वगैरह जैसी आम चीजें चाहिए होती हैं। हम उसे बहुत सारे दीनार लेकर उसकी हर जरूरत पूरी कर देते थे। तो ये बिल्ली जैसी आंखों वाली लड़की उसी के बारे में पूछ रही थी।’
‘क्यों?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘उसने कुछ नहीं कहा। उसने मुझे कारण बताने की परवाह ही नहीं की।’
सिन्बाद ने पूछा, 'क्या तियान अरबों के खिलाफ नहीं था? उसने आपके साथ काम क्यों किया?'

‘खैर, मैं इस समूह में एक धनी तस्कर के रूप में मशहूर हूँ। उसने मेरी पृष्ठभूमि को नज़रअंदाज़ करते हुए माल चोरी करने के मेरे जुनून को अपनाया।’ कप्तान मुस्कुराया।
हुसैन घबरा गया। 'क्या आप जानते हैं कि हम उसे कैसे ढूंढ सकते हैं?'
‘उसके पास एक आलीशान जहाज़ है। यह तो सपनों का जहाज़ है! यह काफ़ी बड़ा है और इसमें तीन मंज़िलें हैं, तो यह किसी इमारत जैसा दिखता है, हालाँकि इमारत जितना ऊँचा नहीं है,’ कप्तान ने विस्मय से जवाब दिया। ‘वह काफ़ी खतरनाक है, इसलिए अगर आप उससे मिलने की योजना बना रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आपके पास उससे कुछ लेन-देन करने के लिए हो। अगर उसे लगा कि आपके पास कुछ भी कीमती नहीं है, तो वह आपको सिर्फ़ अरब होने के कारण ही मार सकता है,’ कप्तान ने चेतावनी दी। ‘वह आपको सिंध नदी के पास मिलेगा। यहाँ से दो दिन का सफ़र है। पूरब की ओर बढ़ते रहिए। वह चलता रहता है, इसलिए आपको दो दिन से ज़्यादा भी लग सकते हैं। पक्का नहीं कह सकते।’
इदरीस ने सिंदबाद को कोहनी मारते हुए कहा, 'अशरफिया जहाज का पता लगाने में तेजी से मदद करेगी क्योंकि सफीना की गंध जलमार्ग से होकर गुजरेगी।' सिंदबाद ने सिर हिलाया।
और वे एक नए मिशन को ध्यान में रखते हुए रवाना हो गए।

जहाज ने चलना शुरू कर दिया था।
सिन्बाद और हुसैन रेलिंग पर झुके हुए थे जबकि अशरफिया जहाज के आगे खड़ी होकर अपनी दूरबीन से देख रही थी।
हुसैन ने कहा, 'मुझे लगता है कि हम लक्ष्य के करीब पहुंच रहे हैं।'
‘मुझे उम्मीद है,’ सिन्बाद ने माथे पर शिकन डालते हुए कहा। ‘मुझे आश्चर्य है कि उसका तियान शेंगोंग जैसे व्यक्ति के साथ क्या काम था। यह समझ में नहीं आता।’
'क्या मै ईमानदार रहूँ?'

'हाँ।'
‘वह आदमी मुझे किसी राक्षस से भी ज़्यादा डराता है। मैंने उसकी यातनाओं के बारे में कहानियाँ सुनी हैं। वह अरबों को सूली पर चढ़ाता है, सिंदबाद। उन्हें सूली पर चढ़ाता है!’ हुसैन काँप उठा। ‘जब तांग राजवंश के खलीफा और सम्राट ने हाथ मिलाया, तो चीन में कुछ लोग खुश नहीं थे और उन्होंने वहाँ मौजूद अरब दूतों को नुकसान पहुँचाना शुरू कर दिया। बिस्मिल्लाह, लाशों का ढेर... वह भयानक था। वास्तव में, कई नेक और सम्मानित चीनी नर्सें घायल अरबों के साथ बगदाद, मोसुल और अब्बासिद खिलाफत के बाकी राज्यों में गईं और उनका इलाज किया।’
सिन्बाद ने कुछ नहीं कहा। वह बस यही सोच रहा था कि सफीना ऐसे द्वेषपूर्ण व्यक्ति से क्या चाहेगी।
और इससे पहले कि वे इस बातचीत को आगे बढ़ा पाते, एक आवाज आई: 'लड़कों!' उन्होंने मुड़कर देखा तो सामने एक छोटी सी चीनी शेफ खड़ी थी, जो खाना बनाते समय अक्सर गंदगी फैलाती थी, लेकिन आज वह एकदम साफ-सुथरी लग रही थी। 'खाना तैयार है। लेकिन पहले, मुझे तियान शेंगोंग के साथ इस मुलाकात के बारे में क्या पता चला है?'
‘खैर, सफीना आखिरी बार वहीं गई थी,’ सिन्बाद ने कहा।
‘वोडे मायावी’ उसने अपना हाथ माथे पर पटका। ‘ऐसा लगता है कि आप किसी चीज से ज्यादा देर तक भाग नहीं सकते।’ उसने अपना सिर हिलाया, उसकी आँखों में खौफ था। ‘आपको समझना होगा कि यह आदमी कितना दुष्ट है।’
‘मुझे पता है,’ सिंदबाद ने कहा। ‘हमें पता है।’ उसने हुसैन की ओर भी इशारा किया, जिसने इशारे पर सिर हिलाया।
‘नहीं, तुम दोनों बेवकूफ लड़कों। वह आदमी दुष्ट है, इतना दुष्ट कि तुम कभी नहीं जान पाओगे। इतना दुष्ट कि अगर तुम शैतान को भी बुलाओगे, तो शैतान भी शर्मिंदा हो जाएगा।’ उसने आह भरी। ‘वह... खैर... वह बस निर्दयी और भयानक है। आह!’ उसने खुद को कोसते हुए ज़मीन पर बैठ गई और हाथ बाँध लिए।
‘क्या तुम ठीक हो?’ हुसैन ने पूछा।
‘मैं नहीं हूँ। मुझे नहीं पता कि अब क्या करना है।’
‘तुम क्या कह रहे हो?’ सिंदबाद ने उलझन भरी नज़रों से देखते हुए पूछा।
‘तुम दोनों को समझ नहीं आ रहा,’ प्रेसा ने उंगली से उनकी ओर इशारा करते हुए कहा। ‘मैं उसी जगह लौट रही हूँ जहाँ से मैं भागकर आई थी।’

सिंदबाद और हुसैन ने एक-दूसरे की ओर देखा।
उसने कहा, ‘तियान शेंगोंग मेरे पिता हैं।’

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

आकाश में चले जाएं,’ सिंदबाद ने फ़रिश्तों के बारे में जो सीखा था उसे याद करते हुए कहा। ‘दूसरी ओर, तुम्हें अच्छे कर्म करने की कोई परवाह नहीं है।’ आँखें सिकुड़ गईं। 'अरे, आप मुझे जानना चाहते हैं। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्यों?'
'अच्छा, साथ काम करते समय आप पर भरोसा करना।'
‘हम्म।’ आँखें झपकीं, अब उनमें कोई दुर्भावना नहीं थी। ‘मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। मैं झूठ नहीं बोलूँगा। तुम गिल्ड में हो और अब तक तुमने खुद को काफी उपयोगी साबित किया है। सुनो, मैं तुम्हें अपने जीवन में थोड़ा सा झाँकने देता हूँ। क्या तुम आगे आना चाहोगे? और उस अँधेरे को छूना चाहोगे जो मुझे घेरे हुए है।’
सिंदबाद हिचकिचाया। 'तुम मुझे चोट पहुँचाओगे।'
‘मैं एक फ़रिश्ता हूँ। मैं तुम्हें शारीरिक रूप से या किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचा सकता। मैं बस लोगों को तुम्हें नुकसान पहुँचाने के लिए भेज सकता हूँ, और क्या तुम्हें अभी अपने आस-पास कोई भाड़े के सैनिक दिखाई दे रहे हैं?’ अज़राएल ने पूछा।
सिंदबाद ने एक पल सोचा। फिर वह आगे बढ़ा, अपने होंठ सिकोड़ते हुए और अंधेरे पर दबाव डालते हुए।
और पल भर में, उसकी दृष्टि बदल गई। वह अब अपने धुंधले कमरे में नहीं
था। इसके बजाय, उसने खुद को सेब के पेड़ों से भरे एक विशाल बगीचे में पाया। बगीचे में चमकदार सफेद संगमरमर से बने ऊंचे-ऊंचे महलनुमा बुर्ज थे। कई मलाइका अपने सफेद, लगभग चकाचौंध कर देने वाले चमकदार पंखों और शरीर पर चांदी के कवच के साथ उसके ऊपर से उड़ रहे थे।
‘इसे ही हम स्वर्ग कहते हैं,’ अज़राएल ने कहा। ‘यहीं पर अधिकांश मलाइका या फ़रिश्ते जन्म लेते हैं और सैनिक बनने के लिए प्रशिक्षित होते हैं। उन सफ़ेद पंखों को देखो। यह एक पहचान है।’ वह एक कोने में नंगे बदन खड़ा था, और सिंदबाद ने उसकी पीठ पर बड़े-बड़े निशान देखे, मानो किसी ने उसमें गहरे तक धारदार हथियार चलाए हों।
अज़राएल ने अपनी उंगलियां चटकाईं और दृश्य बदल गया, और सिंदबाद एक अलग वास्तविकता में प्रवेश कर गया जहां उसने खुद को एक लंबे गलियारे में पाया।

उसके सामने एक जाना-पहचाना चेहरा दिखाई दिया—एक आदमी जिसके लंबे काले पंख थे, काले बाल थे और एक शरारती मुस्कान थी।
वह अज़राइल था। वह अपेक्षाकृत कम उम्र का लग रहा था।
'वो मैं ही हूँ,' वर्तमान अज़राएल ने कोमल स्वर में कहा।
‘काले रंग के पंखों के साथ पैदा होने वाला मैं इकलौता था। उन्होंने मुझे बहिष्कृत कर दिया। इतना ही नहीं, मलाइका जाति में मुझे एक तरह से पतित माना जाता था।’
छोटा अज़राएल गलियारे में इंतज़ार कर रहा था तभी तीन आदमी आए। वे लगभग आठ फीट लंबे थे और उन्होंने सोने का कवच पहन रखा था, साथ ही उनके विशाल सफेद पंख भी थे।
‘और ये तीन महान देवदूत थे—जिब्राइल, मिखाएल और इसराफिल, प्रधान देवदूत। आप जानते हैं, वही इसराफिल जिसने अल-नुहराद की मदद की थी,’ अजराइल ने कहा।
तीनों ने छोटे अज़राएल को देखा और उसे दीवार से धक्का दिया। उन्होंने उसके सिर पर घूंसे मारे और उसे 'पतित' कहकर उसका मज़ाक उड़ाया। छोटा अज़राएल कोने में रोने लगा, जबकि तीनों वहाँ से चले गए।
‘वे लोग मुझे लगातार तंग करते थे, क्योंकि वे काफी लोकप्रिय और ताकतवर थे। वे... एकदम सही थे, आप समझ रहे हैं ना? लेकिन मैं? उतना नहीं।’ अज़राएल की आवाज़ गहरी हो गई थी और उसमें ज़रा भी व्यंग्य नहीं था।
सिंदबाद को पतित देवदूत के शब्दों में सच्चाई का आभास हो गया था।
जैसे ही अजराइल ने अपनी उंगलियां चटकाईं, दृश्य फिर से बदल गया और उसी बगीचे में रात का समय हो गया।
‘मिखाएल ने मुझे यहाँ आने के लिए कहा था क्योंकि मैं मृत्यु के दूत के
रूप में अच्छा काम कर रहा था। हालाँकि यह उपाधि का गलत अर्थ था क्योंकि मैं तो बस मृतकों की आत्माओं को स्वर्ग में जाने और वहाँ रहने में मदद कर रहा था। लेकिन इसके बजाय, वे मुझे मृतकों का नाविक या रथ चालक कहते थे।’ अज़राएल के शब्दों में उसका दर्द झलक रहा था। ‘लेकिन इस पल... यही वह समय था जब मिखाएल ने कहा कि मैं तीन प्रमुखों में शामिल होने के लिए तैयार हूँ और मेरे साथ, यह चार प्रमुखों का समूह बन जाएगा।’ वह रुका। ‘मुझे लगा था कि वे बदल गए होंगे क्योंकि मैंने अपने बड़े मेटैट्रॉन को बताया था कि वे मुझे

कैसे तंग करते थे, गालियाँ देते थे, मारते थे। और उसके बाद, उन्होंने ऐसा करना बंद कर दिया था, जब तक कि यह दिन नहीं आ गया।’
युवा अजराइल उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। मिखाएल, जिब्राइल और इसराफिल के साथ अंदर आया।
‘उन्होंने मुझे बताया…बड़े अजराइल ने कहा, ‘कि वे मुझसे बात करना चाहते हैं।’
सिंदबाद ने यह दृश्य अपनी आंखों के सामने घटते हुए देखा:
युवा अजराइल ने सबसे दृढ़ खड़े मिखाएल की ओर देखा। उनकी त्वचा प्रकाश
की तरह चमकदार थी और उन्होंने कहा, 'नमस्कार, महान अजराइल, मैं बाकी लोगों को ले आया हूँ। वे इस बात पर सहमत हैं कि अब आपको हमारे साथ जुड़ना होगा। समय आ गया है।'
इसराफिल और जिब्राइल ने सिर हिलाया।
‘धन्यवाद।’ अज़राएल ने शरमाते हुए मन ही मन मुस्कुराया। ‘मैं क्या कर सकता हूँ?’
मुझे महादूत बनने के लिए क्या करना होगा?
'अच्छा, पहले तो तुम अपने कपड़े उतार दो,' जिब्राइल ने कहा।
‘क्या?’ अजराइल असमंजस में पड़ गया।
‘चलो, अज़राएल, थोड़ा मज़ा करो। यही तरीका है, यही रस्म है, बिग थ्री में प्रवेश करने की,’ मिखाएल ने कहा। ‘चलो।’
अज़राएल असमंजस में था, लेकिन उसने अपना काला लबादा उतार दिया और नग्न अवस्था में वहीं खड़ा हो गया।
‘शानदार,’ मिखाइल ने रस्सी निकालते हुए कहा।
तब अज़राइल को समझ आया कि क्या हो रहा है और इससे पहले कि वह कुछ प्रतिक्रिया कर पाता, जिब्राइल और इसराफिल ने उसे पकड़ लिया और पेड़ से सटा दिया, जबकि मिखाएल ने उसके चारों ओर रस्सी लपेट दी। उसके काले पंख तने के चारों ओर मुड़ गए और झुक गए, जिससे अज़राइल दर्द से चीख उठा।
“अब, अब, सुबह के समय, स्वर्ग देखेगा कि हमारे बारे में चुगली करने वालों का क्या होता है,” मिखाएल ने कहा। “तुमने सोचा था कि तुम हमारे जैसे हो सकते हो? हमें देखो, तुम बेचारे, छोटे काले नकाबपोश शैतान।” प्रधान देवदूत ने अज़राएल पर थूका। “तुम खुद को क्या समझते हो, तुम पतित? तुम गलत दुनिया में पैदा हुए हो, मूर्ख। तुम नीच हो और जीवन भर नीच ही रहोगे।”

इसराफिल और जिब्राइल हंसने लगे जब मिखाएल पीछे हटकर उनके साथ शामिल
हो गया। अज़राइल से चले जाने के बाद भी उनकी हंसी हवा में गूंजती रही।
यह सब देखकर सिंदबाद का दिल मानो सीने से बाहर निकल आया। बड़े अज़राएल ने अपने युवा रूप को देखा, उसकी आँखों में क्रोध और अपने लिए कोमलता दोनों के भाव उभर आए।
छोटा पतित देवदूत लगातार रोता और सिसकता रहा, रस्सियों से निकलने की कोशिश करता रहा, बगीचे में बिल्कुल अकेला था, लेकिन वह ऐसा करने में असमर्थ था।
फिर सिंदबाद अपनी दृष्टि बदलते हुए अपने कमरे में लौटा और अंधेरे के स्पर्श से खुद को छुड़ाकर देखने लगा।
अज़राएल, जिसकी आँखें हमेशा की तरह धुंधली थीं।
‘तुम बदमाशी का शिकार हुए थे। उन्होंने तुम्हारे साथ अन्याय किया,’ सिंदबाद ने धीमी आवाज़ में कहा।
“जिन लोगों को मैं अपना आदर्श मानता था, उन्हीं की वजह से,” अज़राएल
ने कोमल स्वर में कहा। “उस दिन के बाद, मेरे पंख टूट गए और मैं उड़ने में असमर्थ हो गया। मेटैट्रॉन ने मुझे उन्हें ठीक करने के लिए कहा, लेकिन मैंने स्वर्ग छोड़ने का फैसला किया।”
‘ज़रा रुको। तुम्हें बाहर नहीं निकाला गया?’
‘बिल्कुल नहीं,’ अज़राएल ने ताना मारा। ‘मैंने अपने पंख तोड़ दिए, उन्हें अपने हाथों से नोंचकर अलग कर दिया और बिना पीछे मुड़े चला गया। मुझे एहसास हुआ कि अच्छाई और बुराई व्यक्तिपरक होती हैं। मेरे लिए, मिखाएल वह है जिससे मैं बदला लेना चाहता हूँ, जबकि तुम्हारे लिए मिखाएल अन्याय का योद्धा, निर्दोषों का रक्षक होगा। हा हा। अगर आप जीवन को दूसरे नज़रिए से देखें, तो यह बड़ा अजीब लगता है। अगर आपको पूरी कहानी पता हो।’
सिन्बाद अपने बिस्तर पर वापस बैठ गया, उसे यह सब समझ नहीं आ रहा था। उसे अज़राएल पर दया आ रही थी। 'तुमने अपने साथ जो कुछ हुआ, वह किसी भी उच्च देवदूत को क्यों नहीं बताया?'
“और फिर से नग्न अवस्था में पेड़ से बांध दिया जाए? या इससे भी कुछ बुरा। तीनों देवता अविनाशी हैं, लेकिन उनकी एक कमजोरी है: उन्हें व्यवस्था और शांति पसंद है। पाखंड की बात है ना? खैर, देखो अब उन्हें कौन परेशान कर रहा है, बच्चे।” अजरैल हँस पड़ा।

सिन्बाद सोच में डूबा हुआ था। वह जानता था कि अज़राएल के साथ हाथ मिलाना गलत था, पर उसके पास कोई चारा नहीं था। वह समझता था कि अज़राएल को सताया और अपमानित किया गया था, इसलिए वह सफ़ीना के प्रति सहानुभूति रखता था, लेकिन वह अपने अतीत का गलत इस्तेमाल कर रहा था। वह बदले की भावना से बुरे काम कर रहा था। और यह रास्ता केवल बदतर अंजाम की ओर ले जा रहा था, क्योंकि इसका कोई अंत नहीं था; यह एक लंबा, अंधकारमय रास्ता था। सिन्बाद ने गिरे हुए फ़रिश्ते की आँखों में देखा और अपना मन बना लिया। हालाँकि उसके अतीत को देखने से फैसला करना मुश्किल हो गया था, पर एक चुनाव करना ही था: एक बार जब अज़राएल सफ़ीना को आज़ाद कराने में उसकी मदद कर देगा, तो वह फ़रिश्ते को धोखा देगा। 'कैसे' के बारे में सिन्बाद ने तब नहीं सोचा था, लेकिन वह जानता था कि एक बार जब काम शुरू हो जाएगा तो उसे एक योजना बनानी ही होगी।
‘हम सफीना को कैसे मुक्त कराएँ?’ सिन्बाद ने सीधे मुद्दे पर बात की।
'खैर, बात सीधी सी है,' धुंधली आंखों वाले उस पतित देवदूत ने कहा। 'हमें
उस वैद्य की ज़रूरत है जो उसका इलाज करता है—इब्न-अल-अमीर। और मुझे पता है कि उसे कैसे लाना है।'

बावन

आज
सिंध नदी पार करते समय, अशरफिया ने सफीना की गंध का पता लगाने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हो पाई। वहाँ से गुजरने वाले एकमात्र जहाज व्यापारिक पोत थे।
हुसैन ने मार्कस के साथ अभ्यास जारी रखा और इस बार अफ्रीकी कमांडर ने उसे कमजोर नहीं कहा। उसने महसूस किया कि उसने जिस बहादुरी से एक वेयर-हाइना से लड़ाई लड़ी थी, उसे देखते हुए ऐसा कहना गलत होगा।
सिन्बाद को आखिरकार थोड़ा आराम मिल रहा था, वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ प्रेसा की स्थिति पर विचार कर रहा था। जहाज पर मौजूद सभी लोग अब जानते थे कि प्रेसा सरदार तियान शेंगोंग की बेटी थी। और वे सोचते थे कि वह तियान से बात करने और उससे शर्तों पर बातचीत करने के लिए एक अच्छा चारा साबित हो सकती है।
प्रेसा इन घटनाओं से व्याकुल रही और अपने कमरे में ही सिमटी रही। किसी ने उससे बात नहीं की और इदरीस का मानना था कि उसे कुछ समय देना ज़रूरी है।

सिन्बाद अशरफिया से मिलने के लिए डेक पर गया। दूसरा दिन शुरू हो चुका
था और वे अब भी असफल रहे थे। समय लगभग न के बराबर बचा था, इसलिए सभी बेचैन होने लगे थे।
‘क्या तुम्हें इसकी गंध आ रही है?’ सिंदबाद ने कोहनी मारी। ‘सल्फर की।’

‘वह करीब थी,’ अशरफिया ने कहा। ‘मुझे लगता है कि हम कल सुबह तक पहुँच जाएँगे।’
सिन्बाद ने कहा, 'हम्म। इसके लिए धन्यवाद।'
‘अच्छा, प्रियतम, तुमने मुझे अच्छा भुगतान किया। मेरा मतलब है, जब हम सुरक्षित घर लौट आएंगे तो तुम भुगतान करोगे?’ अशरफिया ने पूछा।
‘तुम तो बहुत ही खराब अभिनेता हो।’ सिंदबाद हँस पड़ा।
'आपका क्या मतलब है?'
‘तुम बार-बार कहते हो कि तुम यह सब पैसों के लिए कर रहे हो, पर ऐसा नहीं है। तुम एक सच्चे इंसान हो, ऐश। मैं जानता हूँ। तुम भी जानते हो। इदरीस सोच रहा है कि तुम हमें गुमराह कर रहे हो क्योंकि अज़राएल ने तुमसे संपर्क किया होगा,’ सिन्बाद ने कहा। ‘मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे विश्वास है कि तुम सचमुच सफ़ीना को वापस लाने के लिए काम कर रहे हो।’
अशरफिया ने आह भरी। 'तो इदरीस यही सोचता है? कि मुझे खरीद लिया गया?'
‘हाँ। इसमें उसकी कोई गलती नहीं है। तुमने ही वो छवि बनाई है,’ सिंदबाद ने जवाब दिया। ‘दुनिया वही मानेगी जो तुम उन्हें दिखाओगे। इसलिए, हमेशा यह सुनिश्चित करो कि तुम्हारी छवि तुम्हारे वास्तविक व्यक्तित्व को दर्शाती हो।’
‘मैं ऐसा नहीं करना चाहती,’ अशरफिया ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘मुझे लगता है कि मैं ऐसे ही बेहतर हूँ, प्रियतम। मैं ऐसा सिर्फ इसलिए करती हूँ ताकि तुम्हारे मरने पर मुझे जो पीड़ा होगी, उससे खुद को बचा सकूँ।’ सिंदबाद ने उसका हाथ थाम लिया और वह शरमा गई। 'मुझे पता है तुमने यह मेरे लिए स्वीकार किया है। है ना?'
उसने कुछ नहीं कहा और अपना हाथ उसके हाथ से हटा लिया। 'बस इतना कह रही हूँ कि मुझे इस बात की थोड़ी परवाह है कि दुनिया जैसी है वैसी ही रहे। लेकिन हाँ, अगर इससे तुम्हें भी खुशी मिलती है, तो ठीक है।'
‘तुम बहुत प्यारी हो।’ सिंदबाद ने उसके गालों को चुटकी से दबाया।
अशरफिया ने धीमी आवाज़ में कहा, 'ज़्यादा उत्साहित मत होइए, ठीक है?'
‘अगर आपको सिक्का न मिले तो क्या होगा?’
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ अशरफिया ने पूछा।

‘हो सकता है कि इसके बाद मैं खिलाफत के साथ काम न करूँ और फिर शायद चीजें योजना के मुताबिक न हों,’ सिन्बाद ने कहा। ‘लेकिन अगर ऐसा होता है, तो क्या आपके भुगतान में थोड़ी देरी हो जाए तो कोई दिक्कत नहीं होगी?’ अशरफिया ने दांत पीसते हुए कहा, 'नहीं, ऐसा नहीं होगा, सिंदबाद। मैं यहाँ मुफ्त में नहीं आई हूँ।'
मुझे पता है। मैं आपको पैसे वापस कर दूंगा। मैं वादा करता हूं।
‘ठीक है, मुझे तुम पर भरोसा है, लेकिन बस ध्यान रखना कि तुम कोई बेवकूफी भरी हरकत न करो,’ अशरफिया ने कहा। ‘जैसे... पिछली बार की तरह, ठीक है? उसके लिए। वह तुम पर अच्छा प्रभाव नहीं डालती।’
सिंदबाद ने आह भरी।
‘और शायद आप सोचते होंगे कि यह दल आपका घर है, यह जहाज आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है—ऐसा नहीं है। न ही मैं। हम सब एक ही उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं और जब यह उद्देश्य पूरा हो जाएगा तो हम सब अलग हो जाएंगे। मैं आपकी दल की सदस्य नहीं हूँ, सिंदबाद। मैं आपकी दोस्त हो सकती हूँ, लेकिन हम साथ-साथ यात्रा करने वाले साथी नहीं हैं।’ अशरफिया ने बेबाकी से कहा। ‘और यह काम पूरा होते ही मैं चली जाऊंगी और अगर आपने मुझे अभी पैसे नहीं दिए तो आपको मुझे बहुत सारे दीनार चुकाने पड़ेंगे।’
सिंदबाद ने उदास भाव से सिर हिलाया। वह उससे कुछ कहना नहीं चाहता था, इसलिए जब इदरीस ने उसे जहाज का स्टीयरिंग संभालने के लिए बुलाया तो वह वहां से चला गया।
‘तो? क्या आपको लगता है कि उसे खरीदा गया था?’ इदरीस ने पूछा।
‘नहीं, वो नहीं थी। ऐसा सोचना भी बेवकूफी है,’ सिन्बाद ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘प्रेसा कैसी है?’
‘संपर्क से बाहर। क्या आप उससे बात कर सकते हैं?’
‘ठीक है, कप्तान।’ सिंदबाद मुस्कुराया।

सिन्बाद प्रेसा के दरवाजे के बाहर निचले डेक पर खड़ा था। वह अशरफिया
की कही बातों के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रहा था। वह चालक दल और जहाज के करीब पहुँच रहा था, लेकिन वह सही थी। यह सब खत्म होते ही वे सब चले जाएँगे।
उसने दरवाजे पर दस्तक दी, लेकिन प्रेसा ने दरवाजा नहीं खोला।
उसने फिर से दरवाजा खटखटाया। 'प्रेसा? आओ ना। मैं हूँ।'
कोई जबाव नहीं।
मुझे पता है यह मुश्किल है।
‘तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि यह कितना मुश्किल है!’ प्रेसा ने हैरानी से कहा। ‘बिल्कुल भी नहीं!’ ‘खैर, कम से कम तुम बोल तो रही हो।’
मौन।
मुझे खेद है, लेकिन आप ही हमारी एकमात्र आशा हैं, तियान के साथ संवाद करने का हमारा एकमात्र माध्यम हैं।
‘मैं उस राक्षस, सिंदबाद से बात नहीं करूंगी!’ उसने फिर से चिल्लाकर कहा।
सिन्बाद ने आह भरी। ‘प्रेसा, दुनिया खत्म होने से पहले हमारे पास बस कुछ ही दिन बचे हैं। क्या तुमने नहीं कहा था कि तुम इसे बचाना चाहती हो? तुमने मुझे यह कभी नहीं बताया कि किसके लिए? कम से कम इतना तो बता दो।’
कोई जवाब नहीं मिला।
सिंदबाद ने अपने गाल खुजाए और जाने का फैसला किया, तभी दूसरी तरफ से जवाब आया: ‘मेरे भाई और मेरी माँ के लिए। हम एक अरब दूत को बचाने के लिए अपने पिता के अत्याचार से भाग निकले। मेरी माँ एक नर्स थी और उसने उस आदमी की देखभाल की। पिता को पता चला और वह बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने हमारे पीछे जहाज भेजे। लेकिन हम बच गए। हम बसरा चले गए। दूत ने मेरी माँ और भाई को बगदाद में जगह दी, लेकिन मैं बसरा में ही रुका रहा ताकि मैं अपनी आजीविका कमा सकूँ और वहाँ से पैसे भेज सकूँ। मुझे अपनी संपत्ति बनाने के लिए काम शुरू करना पड़ा। हमने अपने पिता की बात नहीं मानी। और अब अगर वह मुझे देखेंगे, तो खुश नहीं होंगे।’
‘मुझे पूरा यकीन है कि वह ऐसा करेगा,’ सिंदबाद ने कहा। ‘और मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हें बचा लूँगा।’
'तुम ऐसा नहीं कर सकते, उससे तो बिल्कुल नहीं।'

‘तुम मुझे कम आंक रहे हो।’ सिंदबाद ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा।
जब उसने कोई जवाब नहीं दिया, तो उसने आगे कहा, 'अपनी माँ के लिए करो। अपने भाई के लिए करो। तियान सफीना के बारे में कुछ जानता है और इससे हमें उसे ढूंढने में मदद मिल सकती है।'
उसके जवाब का इंतज़ार करते हुए सिंदबाद दरवाजे के पास बैठ गया। वह बेचैन था, क्योंकि वह जानता था कि हुसैन के अलावा यहाँ मौजूद लोगों में से कोई भी उसका दोस्त नहीं था। हुसैन ही तो उसके लिए यहाँ था।
ये सारे विचार उसके मन में चल रहे थे, तभी उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।

जब वह जागा तो जहाज चल नहीं रहा था। वह धीरे-धीरे रुक गया था।
और उसने ऊपर देखा तो पाया कि प्रेसा उससे काफी लंबा खड़ा है। ‘अच्छा, बेटा? मेरे पिता का जहाज हमारे बगल में है। क्या हम उनका स्वागत करें?’ ‘क्या हमने उसे ढूंढ लिया?’ सिंदबाद ने पूरी तरह से अचंभित होकर पूछा।
वह इस बात से कुछ खास खुश नहीं लग रही थी। 'हां, हमने कर लिया। और हमारे पास ज्यादा समय नहीं बचा है। चलो चलते हैं।'
‘आपने मदद करने के लिए क्यों सहमति दी?’
‘मैं इस दल को खाना खिलाते-खिलाते थक गई हूँ। अब मैं शायद उन्हें बेहतर तरीके से खाना परोसूँगी। आखिर हम सब एक परिवार हैं।’ उसने आँख मारी। सिंदबाद खड़ा हुआ और ऊपरी डेक पर गया जहाँ सभी चालक दल के सदस्य खड़े
थे। और उनके बगल में ही विशाल महलनुमा जहाज खड़ा था।
द्वीप पर मौजूद कप्तान ने इसका सटीक वर्णन किया था। यह कठोर लकड़ी से बना था और इसमें कई स्तरों के डेक थे।
और मस्तूलों के पास सामने की ओर चीनी पुरुष और महिलाएं कवचधारी अवस्था में खड़े थे।

इसके बीच में, उसने एक छोटे कद के, गंजे आदमी को देखा, जिसके हाथ उसकी पीठ के पीछे बंधे हुए थे। और उसकी एक आंख कांच की थी।
‘ये मेरे पिता हैं,’ प्रेसा ने कहा।
सिन्बाद, प्रेसा के साथ इदरीस की ओर बढ़ा, जो उनके दल के सबसे आगे खड़ा था। 'हमने उसे कैसे ढूंढा?'
‘हमने नहीं किया। उसने किया। हमने यह संदेश भेजा कि हम शांति से आए
हैं और हम सिर्फ बात करना चाहते हैं,’ इदरीस ने जवाब दिया।
‘क्या उसने जवाब दिया?’
‘नहीं। मार्कस नीचे गुलेलें तैयार कर रहा है। अगर वो जवाब नहीं देता,
तो हम हमला कर देंगे, ठीक है?’ इदरीस ने सामान्य स्वर में कहा, और मुस्कुराने की कोशिश की ताकि कुछ भी असामान्य न लगे। सिन्बाद ने तियान के किसी और जहाज की तलाश में चारों ओर देखा, लेकिन कोई नहीं था। शायद आपात स्थिति के लिए रखा गया हो।
प्रेसा आगे बढ़ी और रेलिंग के पास खड़ी हो गई, ताकि उसे साफ देखा जा सके।
और उसी क्षण, सिन्बाद ने कसम खाई कि तियान शेंगोंग का भावहीन चेहरा नरम पड़ गया।

तिरपन

तीन साल पहले
सिंदबाद एक गली में अजराइल का इंतजार कर रहा था।
रात का समय था और सिंदबाद अपने द्वारा खोदी गई मांद से चुपके से किले
से बाहर निकल आया था। वह चाँदी जैसी चमकती चाँदनी में नहाए एक सुनसान सड़क के बीचोंबीच खड़ा था। उसकी तलवार म्यान में थी और उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, वह सोच रहा था कि अज़राएल उसके लिए क्या रहस्य उजागर करने वाला है। उन्हें इब्न-अल-अमीर को पकड़ना था, जो सफीना की देखभाल करने वाला वैद्य था। लेकिन सिंदबाद को इस बारे में तब तक कुछ नहीं बताया गया जब तक... उसने कुछ लोगों को पास आते देखा। उसे पता नहीं था कि वे कौन हैं, तभी अज़राएल अंधेरे से प्रकट हुआ। उसके पीछे भाड़े के सैनिक थे, लेकिन नए चेहरे, बाज़ार में देखे हुए नहीं। उनमें से एक ने एक आदमी को उठाया हुआ था, जिसे सिंदबाद ने जाना-पहचाना सा समझा... इब्न-अल-अमीर।
अमीर बुरी तरह पिटा हुआ लग रहा था। उसके चेहरे पर जगह-जगह चोट के निशान थे, उसकी त्वचा पीली पड़ गई थी और उसकी कमीज खून से लथपथ थी।
भाड़े के सैनिक ने अमीर को जमीन पर पटक दिया, सिंदबाद के पैरों के पास।
‘चुने हुए दिन के लिए मैं आपको अपना उपहार प्रस्तुत करता हूँ। देरी के
लिए क्षमा चाहता हूँ।’ अज़राएल ने शरारती मुस्कान के साथ कहा।
‘तुमने अपना काम कर दिया।’ सिंदबाद घुटनों के बल बैठकर आमिर का बुरी
तरह घायल चेहरा देखने लगा। ‘तुमने उसके साथ क्या किया?’
‘सफीना को चोट पहुंचाने के लिए उसे प्रताड़ित किया गया।’ अज़राएल ने मुंह बनाया। ‘लेकिन वह इससे भी बुरी सजा का हकदार था।’
अमीर ने सिंदबाद की ओर देखा और गुस्से से गुर्राया। 'तुम हो... तुम उस राक्षस का साथ दे रहे हो। सबको—हर किसी को पता होना चाहिए।' उसने उठने की

कोशिश की, लेकिन अज़राएल ने अपना पैर उसके कंधे पर रख दिया। 'अब तुम उससे जो चाहो पूछ सकते हो।'
‘वह हमारी शिकायत कर देगा,’ सिंदबाद ने कहा। ‘तुम्हें उसे मेरा चेहरा नहीं दिखाना चाहिए था।’
‘अरे, मान जाइए,’ अज़राएल ने कहा, ‘आप उसे भागने में मदद करेंगे। लोगों
को पता होना चाहिए कि आप कौन हैं। दरअसल, मेरे पास इस वैद्य के लिए योजनाएँ हैं। कुछ बड़ी योजनाएँ। तो जाइए और उससे पूछ लीजिए।’
सिंदबाद डरा हुआ था, लेकिन उसने तुरंत पूछा, 'सफीना कैसी है?'
‘तुम्हें पता नहीं होगा... मुझे भी नहीं पता होगा...’
अज़राएल ने अपना जूता वैद्य के कंधे में और ज़ोर से दबाया, जिससे वह दर्द से चीख उठा। 'लड़के को वही बताओ जो तुमने मुझे बताया है। उसे पता होना चाहिए कि तुम उसके साथ क्या करने की योजना बना रहे हो।'
‘तुम...’ आमिर ने खून की उल्टी की।
‘उफ़।’ अज़राएल ने भौंहें चढ़ाईं और उंगलियां चटकाईं।
एक भाड़े का सैनिक आगे आया और तेज़ी से वार करते हुए उसने वैद्य के सिर पर कुल्हाड़ी से वार कर दिया। खून सिंदबाद पर फैल गया, जो भयभीत होकर पीछे की ओर गिर पड़ा। थोड़ा सा खून अज़राएल के चेहरे पर भी लग गया।
‘हे भगवान,’ पतित देवदूत ने खून की बूंदों को पोंछते हुए कहा, ‘वह बिल्कुल बेकार साबित हो रहा था।’
‘मुझे... मुझे लगा था कि तुमने उसके लिए कुछ योजना बनाई थी। तुमने ये क्या कर दिया?’ सिंदबाद ने सदमे में कहा।
‘हां,’ उसने बिल्कुल सहज भाव से कहा, ‘योजना उसे मारने की थी।’
सिन्बाद ने कांपते हाथों से अपने चेहरे से खून पोंछा, और अज़राएल उसके पास आया। 'चिंता मत करो, वह बुरा आदमी था। वह मरने लायक ही था।'
‘मुझे तो यह भी नहीं पता कि तुम पर भरोसा करूं या नहीं,’ सिन्बाद ने कहा। ‘तुम मुझे डराते हो। तुम अप्रत्याशित हो।’
‘तुम्हारे साथ नहीं,’ उसने कहा। ‘क्या तुम यह नहीं जानना चाहते कि उसने मुझे क्या बताया था, इससे पहले कि मैं उसे यहाँ घसीटकर लाया ताकि वह तुम्हें भी वही बात बताए, वरना तुम मेरी बात पर विश्वास नहीं करते?’ सिंदबाद ने खुद को संभालने की कोशिश की। उसने अभी-अभी एक खूनी सिर कलम करने का मंजर देखा था। 'मैं... मैं...'

पतित देवदूत उसके स्तर तक घुटने टेककर बोला, 'जाहिर है, सफीना का प्रशिक्षण ठीक नहीं चल रहा है। चिकित्सक ने कहा कि वह बहुत शक्तिशाली है और अपनी शक्तियों को नियंत्रित करना नहीं जानती, जबकि उसके पास बीस से अधिक प्रशिक्षक हैं जो उसे नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे हैं।'
सिंदबाद ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक अज़राएल ने थोड़ी देर के लिए विराम नहीं लिया। उसकी आँखों में सच्चाई झलक रही थी। उसने आगे कहा, 'उनका मानना है कि सबसे अच्छा उपाय यही है कि... उसे मार डाला जाए।'

चौवन

आज
एक भोज की तैयारी की गई।
सिन्बाद को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि यह सब कैसे हुआ, लेकिन वह खुद को तियान शेंगोंग के जहाज के भोजन कक्ष में पाया, जहाँ चारों ओर सूअर का मांस, चिकन, हैम, तरह-तरह के बेर और कई अन्य लज़ीज़ व्यंजन परोसे जा रहे थे। वह प्रेसा और हुसैन के बीच और इदरीस के सामने बैठा था, जो उसे लगातार घूर रहा था। तियान ने सुरक्षा के तौर पर अपने आदमियों को तलवारों के साथ कमरे के चारों ओर तैनात कर रखा था, हालाँकि यह धमकी जैसा लग रहा था। प्रेसा को जहाज पर देखकर तियान ने युद्धविराम का प्रस्ताव रखा। जब दोनों पक्ष सहमत हो गए, तो उसने प्रेसा को गले लगा लिया, जिसने एक आदर्श बेटी की तरह व्यवहार किया।
‘जो कुछ पहले हुआ उसके लिए मैं माफी मांगता हूं,’ तियान ने कहा। ‘हमें पता था कि आप हमारा पीछा कर रहे हैं, लेकिन अगर हमें पता होता कि आप मेरी बेटी को वापस ला रहे हैं, तो मैं शुरू से ही इतना धमकी भरा व्यवहार नहीं करता।’ उसने अपने हाथ में पकड़े शराब के गिलास से एक घूंट लेते हुए मन ही मन मुस्कुराया।
प्रेसा ने सिन्बाद के साथ घबराहट भरी नजरें मिलाईं, मानो कह रही हो:
वह कुछ ज्यादा ही मीठा व्यवहार कर रहा है। कुछ तो गड़बड़ है।
तियान ने कहना शुरू किया, ‘मेरी बेटी, मेरी पत्नी और मेरा नवजात बेटा तुम्हारी जाति को बचाने के लिए भाग गए थे। पहले तो मुझे गुस्सा आया, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं उन्हें बहुत ज्यादा घुटन दे रहा था। यह बहुत भयानक था। मैं माफी मांगता हूं।’ उसने प्रेसा की ओर मुड़कर उसे उदास मुस्कान दी। ‘क्या तुम मुझे माफ करोगी?’
प्रेसा ने कोई जवाब नहीं दिया।

‘आराम से समय लो,’ तियान ने कहा। ‘और हाँ, मुझे उम्मीद है कि मैं यिन से
मिल पाऊँगा। अपनी पत्नी से मिले हुए काफी समय हो गया है।’ उसने फिर एक घूँट भरा। ‘पेइझी, तुमने मुझे कैसे ढूँढा?’
प्रेसा ने कहा, 'मैं उनके साथ जुड़ गया हूं। वे अपने खोए हुए दोस्त को ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं।'
‘कितना दुखद!’ तियान ने सिंदबाद और इदरीस की ओर सहानुभूति से देखते हुए कहा।
वह बुरा आदमी नहीं लगता।
प्रेसा ने आगे कहा, 'क्या आपने उसे देखा है? उसकी आंखें बिल्ली जैसी हैं।'
उसके चेहरे के भाव बदल गए। तियान ने अपने जबड़े भींच लिए। 'वह बिल्ली जैसी आंखों वाली लड़की, बिल्कुल। उसने तो तबाही मचा दी। मेरे कैदियों का पिंजरा तोड़ दिया, उसे बाहर निकाला और अपने जहाज से मेरे आधे बेड़े को नष्ट कर दिया,' उसने गुस्से से कहा।
‘कैदी?’ सिंदबाद ने खांसते हुए कहा।
‘जी हाँ। एक बहुत महत्वपूर्ण कैदी,’ तियान ने सख्ती से कहा और नीचे देखा। ‘ओह, तो रुको, पेइझी... तुम मेरे लिए नहीं आए हो। तुम उस लड़की के लिए आए हो?’ उसने सिंदबाद और मेज के चारों ओर बैठे सभी लोगों की ओर देखा। ‘तो, तुम उसे छोड़ने नहीं आए हो?’ सन्नाटा छा गया।
प्रेसा एकदम जम गई। 'अरे नहीं, यह सच नहीं है।'
‘अगर ऐसा है भी तो कोई बात नहीं।’ तियान हँस पड़ा। ‘अंत भला तो सब भला। हालाँकि मुझे ये सोचकर हैरानी होती है कि तुम दो सेइड्स के साथ क्या कर रहे हो।’ उसने सिंदबाद और इदरीस दोनों के चिन्हित कुर्ते की ओर इशारा किया। ‘ये दोस्त कोई महत्वपूर्ण और शक्तिशाली व्यक्ति है। मुझे तो ये भी नहीं पता कि ये मेरी दोस्त है भी या नहीं।’ उसने सिंदबाद की ओर देखा, उसकी आवाज़ थोड़ी भारी हो गई। ‘मुझे तो जिज्ञासा हो रही है।’
सिन्बाद ने एक तरफ रखे अपने कांटे को उठाया और तियान पर हमला करने के
लिए तैयार हो गया, अगर उसने कुछ भी किया तो। वह पल-पल और भी ज्यादा खौफनाक होता जा रहा था।
‘यह तो अच्छा है।’ तियान मुस्कुराया। ‘लेकिन पहले...’ उसने सिंदबाद और इदरीस को घूरते हुए कहा, ‘मुझे कैदी वापस लाओ। और मुझे पता है कि उसे केवल

एक सेइड ही पकड़ सकता है। वह इन्हीं पानी में रहती है, लेकिन मुझसे छिपी हुई है।’
हैरान होकर हुसैन ने पूछा, 'इन पानी में जीवन? हम्म... बदले में हमें क्या मिलेगा?'
यह सवाल पूछना गलत था, क्योंकि उनके चारों ओर मौजूद पहरेदार झपट पड़े
और मेज पर बैठे हर व्यक्ति के सिर पर अपनी तलवारें तान दीं, सिवाय तियान के, जो मज़े से अपना सूअर का मांस खा रहा था। 'पेइझी मेरे साथ ही रहेगी, बेशक। भले ही आप सब उसे मेरे पास लाने का इरादा न रखते हों, वह यहीं है और वह मेरी बेटी है।' उसने एक पहरेदार की ओर देखा, जिसने तुरंत प्रेसा को पकड़ा और चीखती हुई उसे घसीटकर ले गया। सिन्बाद ने कांटा कसकर पकड़ लिया, तभी तियान फिर बोला, 'और तुममें से किसी एक को बाहर जाकर उस लड़की से मेरी कैदी को लाना होगा। सिर्फ एक को। बाकी सब काम खत्म होने तक मेरे साथ रहेंगे।'
सिंदबाद के मन में बहुत कुछ कहने को था, लेकिन इदरीस ने बीच में ही कहा, 'यह किस तरह का कैदी है?'
तियान ने कहा, 'एक देवी। उनका नाम एकाजति है। मुझे उन्हें राजनयिक अभियानों के लिए इस्तेमाल करना था, लेकिन उस दखलंदाज़, बिल्ली जैसी आँखों वाली लड़की ने उन्हें आज़ाद कर दिया और मेरे लिए मुसीबत खड़ी कर दी। मुझे नहीं पता उसने उन्हें क्यों आज़ाद किया। ज़ाहिर है, वह उनसे कुछ चाहती थी।' ‘ठीक है, हम उसे पकड़ लेंगे,’ इदरीस ने कहा।
‘अरे नहीं, हम नहीं। सिर्फ़ तुम।’ उसने सिंदबाद की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘मुझे औरतों पर भरोसा नहीं है।’ उसने इदरीस पर ताना मारते हुए कहा। ‘जब तुम्हें उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है, तब वे पीठ में छुरा घोंप देती हैं। और यह नौजवान लड़का,’ उसने हुसैन की ओर देखते हुए कहा, ‘एकदम सही मोहरा साबित होगा क्योंकि वह बिल्कुल सीधा-सादा दिखता है और उसके साथ उसकी अच्छी बनती दिखती है।’ उसने सिंदबाद की ओर मुस्कुराते हुए कहा। ‘तो, मेरे लड़के, क्या तुम जल्दी से काम शुरू करोगे और मेरे लिए वह देवी लाओगे?’ सिन्बाद अपने विकल्पों पर विचार कर रहा था। वह इदरीस और हुसैन की रक्षा करना चाहता था, लेकिन साथ ही सफीना के बारे में जानकारी प्राप्त करना और प्रेसा को बचाना भी चाहता था—और तो और, उसकी गर्दन पर एक तलवार रखी हुई थी।

इस समय बहुत कुछ दांव पर लगा था। वह जानता था कि उसे सबको बचाने और सफीना को वापस लाने का कोई न कोई रास्ता निकालना ही होगा।
और उनके पास ज्यादा समय नहीं था।
‘ठीक है,’ उसने कहा, ‘मैं करूँगा।’

पचपन

तीन साल पहले
सिंदबाद जानता था कि वह अब अजराइल की मदद नहीं ले सकता।
गली में जो कुछ हुआ उसके बाद तो बिल्कुल नहीं। अज़राएल एक हत्यारा था। कटे हुए सिर की छवि पूरी रात सिन्बाद के दिमाग में घूमती रही, जब तक कि अगली सुबह उसने कार्रवाई करने का फैसला नहीं किया और गिल्ड में जिस एकमात्र व्यक्ति पर वह भरोसा कर सकता था, उससे संपर्क किया - मास्टर रीस। सिन्बाद जानता था कि सफीना के उससे अलग होने के पीछे उसका स्वामी ही
था, लेकिन वह यह भी जानता था कि सफीना को बचाने के लिए रीस किसी भी हद तक जा सकता है।
वह अपने गुरु के अध्ययन कक्ष के बाहर खड़ा था, और उसने सावधानीपूर्वक दरवाजे पर दस्तक दी, और उनके दरवाजा खोलने का इंतजार करने लगा।
मास्टर रीस सफेद पायजामे और ढीले काले कुर्ते में बाहर निकले। सुबह
का समय था, और ऐसा लग रहा था मानो वे अपने अध्ययन कक्ष में ही सोए हों। उन्होंने अपनी आँखें मलते हुए पूछा, 'क्या हुआ, बेटा?'
मुझे आपसे किसी विषय पर बात करनी है।
'ज़रूर।'
उसने अपने शिष्य को अंदर आने दिया जबकि सिंदबाद घबराकर अपनी उंगलियां मरोड़ रहा था। दरवाजा उसके पीछे बंद हो गया और उसने कहा, 'मुझे उम्मीद है'
मैंने आपको परेशान नहीं किया, स्वामी जी।
‘बिल्कुल नहीं। दरअसल, मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ।’ मास्टर रीस ने मुस्कुराते हुए अपनी मेज की ओर कदम बढ़ाया और हाथ में एक छोटा सा बहुरंगी डिब्बा पकड़ा। ‘जानते हो यह क्या है? मैं इसे पेंडोरा का डिब्बा कहता हूँ। इस पर मैं कुछ दिनों से काम कर रहा था। तुम्हें याद है कि यात्रा के दौरान

हमें ऐसे जादूगर मिलते हैं जो पत्थरों और मंत्रों से सुरक्षित होते हैं? खैर, यह डिब्बा खुलने के बाद उन पर लगे सभी प्रकार के जादुई सुरक्षा कवच को हटाने में हमारी मदद करेगा क्योंकि मैंने इसमें कुछ ऐसे मंत्र-रोधी सूत्र डाले हैं जो जादू को निष्क्रिय कर देते हैं। लियोना... या लियोनार्ड के साथ उस लड़ाई के बाद मैंने इसे बनाने का सोचा।’ वह कराह उठा। ‘लो, इसे रख लो। हम इसे अपनी किसी यात्रा में इस्तेमाल करेंगे।’
सिंदबाद ने ऐसा ही किया। और एक पल के लिए वह मोज़ेक से बने उस बक्से
की सुंदरता में खो गया।
‘मुझे अभी बताओ,’ रीस ने दीवार की ओर चलते हुए और उस पर झुकते हुए, हाथ बांधकर कहा। ‘इतनी जल्दी क्या है?’
सिन्बाद ने खुद को संभाला, यह सोचते हुए कि वह वास्तव में रीस के पास किसलिए आया था और कहा, 'आप मुझसे यह नहीं पूछ सकते कि मुझे यह कैसे पता है, लेकिन—'
रीस ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं। 'तुम्हारा क्या मतलब है?'
‘तुम मुझसे यह नहीं पूछ सकते कि मुझे यह सब कैसे पता चला जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ।’ रीस चुप रहा और थोड़ी देर रुककर सिर हिलाया। ‘ठीक है, क्या बात है?’ ‘रक्का-रफीका किले में सफीना को मारने वाले हैं। हमें उसे बचाना होगा। शायद ग्रैंड मास्टर ने उम्मीद छोड़ दी है और उससे नाता तोड़ लिया है। वह बहुत खतरनाक साबित हो रही है,’ सिंदबाद ने एक ही सांस में कहा। ‘हम ऐसा नहीं होने दे सकते, मास्टर। हम उसे यहाँ लाए हैं और हम उसे मरने नहीं दे सकते। कोई दूसरा रास्ता होना चाहिए।’
रीस सदमे से सीधा खड़ा हो गया। 'क्या आपको यकीन है कि यह स्रोत विश्वसनीय है?'
'बिल्कुल।' सिंदबाद ने सिर हिलाया। 'हमें क्या करना चाहिए?'
‘अपना सामान पैक कर लो,’ उसने कहा। ‘हम रक्का-रफीका के लिए निकल रहे हैं।’ सिन्बाद मुस्कुराया।
मुझे पता था कि वह मेरी मदद करेगा।

छप्पन

आज
'क्या आप वाकई ऐसा करना चाहती हैं?' अशरफिया ने पूछा।
वे अपने जहाज के मालवाहक डिब्बे में खड़े थे। यहाँ बहुत सारा माल रखा हुआ था, लेकिन उनके अगले प्लान को अंजाम देने के लिए पर्याप्त जगह थी। ‘मुझे यकीन है,’ सिंदबाद ने उत्तर दिया। ‘देवी का आह्वान करो।’
वह नमक के घेरे के अंदर खड़ा था। देवी-देवता बड़े डरावने होते हैं।
वे नापसंद लोगों को खा जाते हैं। इसलिए यहाँ नमक ही जादू का काम कर रहा है, घेरे के अंदर खड़े व्यक्ति की रक्षा कर रहा है।
‘उसकी उपस्थिति का स्रोत इन्हीं जल में है। उसे आसानी से बुलाया जा सकता है,’ सिन्बाद ने आगे कहा।
'उसका नाम क्या है?'
‘एकजाति।’
उसने मुंह बनाया। 'वह तिब्बती पौराणिक कथाओं की एक भयंकर देवी है। वह खुश नहीं होगी।'
सिन्बाद ने कोई जवाब नहीं दिया। वह घेरे में इंतज़ार करता रहा। अशरफिया ने ज़ोर-ज़ोर से मंत्रोच्चार करते हुए और हवा में कुछ मसाले उछालते हुए अनुष्ठान शुरू किया। अचानक, उसकी उंगलियों से ज़ोरदार चिंगारी निकली और एक प्रबल ऊर्जा ने उसे घेर लिया। उसकी आँखें बड़ी और शक्ति से भर गईं, और उसने ज़ोर से कहा: 'एकजाति!' और फिर...
कुछ नहीँ हुआ।
खुद असमंजस में पड़ी अशरफिया ने कहा, 'थोड़ी देर इंतजार करो। वह आ जाएगी।'
‘ठीक है,’ सिंदबाद ने असहजता से इधर-उधर देखते हुए कहा। फिर उसने कहा, ‘मुझे यह कहना ही होगा क्योंकि मुझे काफी समय से ऐसा महसूस हो रहा है। आप गलत हैं।’

'क्या?'
‘हमारे परिवार न होने के बारे में,’ उसने कहा। ‘हो सकता है कि तुम न हो।
मैं देख सकता हूँ कि तुम हमेशा हमसे दूरी बनाए रखती हो, हमारे मिशनों का हिस्सा नहीं बनती। तुम हमारे साथ नहीं रहना चाहती और मैं यह समझता हूँ। लेकिन हम परिवार हैं, तुम्हारे साथ हों या न हों। प्रेसा इस पर विश्वास करती है। मुझे यकीन है कि बाकी लोग भी करते हैं।’ उसने अशरफिया की ओर घूरकर देखा, जो बस धीरे से गुर्राई। ‘मुझे पता है कि तुम मेरी मदद इसलिए करती हो क्योंकि तुम मुझे पसंद करती हो और तुम्हें पैसे भी मिल रहे हैं, लेकिन... किसी बड़े उद्देश्य के लिए लड़ो, जैसे कि वास्तव में दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालना।’
‘ओह, जैसे कि तुम ऐसा करती हो,’ अशरफिया ने कहा।
'आपका क्या मतलब है?'
‘इदरीस ने मुझे बताया कि तुमने पिशाचों को कैसे मरने दिया। वे निर्दोष थे और तुम मेरे और केन के लिए आए थे।’
मैंने तुम दोनों को बचा लिया!
‘सिनबाद, तुम हमेशा हीरो बनना चाहते थे,’ अशरफिया ने कहा। ‘तुम अब पहले जैसे बिल्कुल नहीं दिखते। तुम अपने उस उस्ताद जैसे बन गए हो; उसका नाम क्या था? रीस। वो सिर्फ अपने लक्ष्य को हासिल करने के बारे में सोचता था, चाहे जैसे भी हो।’
और आपको प्रतिबद्धता संबंधी समस्याएं हैं।
'बेशक मैं!'
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'और तुम खुद को यह यकीन दिलाती हो कि यह तुम्हारे सौतेले पिता के साथ तुम्हारे रिश्ते की समस्याओं की वजह से है। तुम्हें लगता है कि उन्हीं की तरह लोग तुम्हें छोड़ देंगे। कि उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता...'
उसकी आँखों में आंसू आ गए। 'तुम जैसे इंसान को तो ये बात नहीं कहनी चाहिए, सिंदबाद। तुमने मुझे छोड़ दिया था।'
'आपका क्या मतलब है?'
‘जब हम बातें कर रहे थे... लिख रहे थे... मैं चाहती थी...’ उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। ‘मैं तुमसे बातें करती रहना चाहती थी, लेकिन तुमने मुझे

चिट्ठियाँ भेजना बंद कर दिया। और फिर बाद में तुमने मुझे बताया कि तुम उस लड़की से मिले।’
सिंदबाद असमंजस में था। 'क्या तुम मुझे पसंद करते हो?'
‘नहीं, तुम स्वार्थी मूर्ख हो। मुझे लड़कियाँ पसंद हैं।’ अशरफिया ने आँसू पोंछते हुए कहा, ‘मेरा मतलब हमारी दोस्ती से था। हमारी दोस्ती बहुत अच्छी चल रही थी और अचानक ही सब कुछ बिगड़ गया। इसलिए जो तुम खुद नहीं कर सकते, उसका उपदेश मत दो।’
‘अरे, रुकिए, मुझे तो पता ही नहीं था,’ सिंदबाद ने अपनी निगाहें झुकाते हुए, अपराधबोध महसूस करते हुए कहा। ‘मुझे खेद है। मुझे लगता है कि हम दोनों ने अनजाने में एक-दूसरे को बहुत दुख पहुँचाया है।’
‘अच्छा...’ अशरफिया ने कंधे उचका दिए।
तभी उनके सामने भाप का एक बादल प्रकट हुआ और उनका ध्यान हवा में तैरती हुई टांगोंविहीन हरी आत्मा की ओर गया। उसकी हरी आँखें, हरे बाल और उसके चारों ओर एक हरी आभा थी। उसने सिंदबाद और अशरफिया की ओर देखा और अपने नुकीले दांत उन पर गड़ाने के लिए आगे बढ़ी, लेकिन नमक के सुरक्षा घेरे ने उसे रोक दिया।
‘नमस्ते, एकाजती,’ सिन्बाद ने अपने दोस्त अशरफिया के साथ चल रही तीखी
बहस को रोकते हुए कहा। ‘मैं सिन्बाद हूँ और ये अशरफिया है, एक स्ट्रिगोई विउ।’
आत्मा गुर्राई। 'तुम क्या चाहते हो, नश्वर? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे बुलाने की?'
'खैर, हमें पता है कि तुम उस चीनी आदमी के जाल में फंस गए थे।'
‘उफ़,’ आत्मा कराह उठी, ‘वह घिनौना डरावना तमाशा। क्या तुम उसके लिए काम करते हो?’
‘अरे, बिलकुल नहीं।’ सिंदबाद हँस पड़ा। ‘दरअसल, हम उसके खिलाफ हैं।’ ‘अच्छा। मेरे लिए उसे मार डालो!’
‘तुम खुद क्यों नहीं कर सकते?’ अशरफिया ने पूछा। ‘तुम काफी समय से समुद्रों में भटक रहे हो।’
‘क्योंकि उसके और उसके आदमियों के पास ऐसे ताबीज़ हैं जो उनकी रक्षा करते हैं। मैं यह नहीं कर सकती। मैं फँस गई हूँ।’ वह गुर्राई। ‘मैं इसके लिए रास्ते ढूंढती हूँ, लेकिन यह कभी हो नहीं पाता। मेरे लिए यह करो और मैं

तुम्हें वह सब बता दूँगी जो तुम जानना चाहते हो। मैं तुम्हें वहाँ जाने में भी मदद करूँगी।’
सिंदबाद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'इसका क्या मतलब है?'
“हम देवियाँ इंसानी इरादों की हर छोटी-बड़ी बात जानती हैं। मैं जानती
हूँ कि तुम दोनों को क्या चीज़ प्रेरित करती है,” एकाजती ने हरी धुएँ से भरी आँखों से कहा। “मुझे तियान शेंगोंग का सिर लाकर दो और मैं तुम्हें सफीना उमैर के बारे में जानकारी दूँगी। तुम्हारे पास ज़्यादा समय नहीं है। आधी रात हो चुकी है, अब सिर्फ़ दो दिन बचे हैं।”
‘और जैसा कि उम्मीद थी, तुम्हें दुनिया के तबाह होने की कोई परवाह नहीं है?’ सिंदबाद ने पूछा।
'मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, और इंसान पहले से ज्यादा क्रूर हो
गए हैं, इसलिए मुझे उनके मरने से कोई आपत्ति नहीं होगी।'
और इसी के साथ वह हवा में गायब हो गई।
सिन्बाद कुछ देर चुप रहा, फिर अशरफिया ने कहा, 'तो यही तुम्हारी योजना
थी? उसे बुलाना?'
‘नहीं, ऐसा नहीं है। मुझे लगा था कि हम उससे कुछ जानकारी निकाल लेंगे
या उसे फंसा लेंगे,’ सिन्बाद ने कहा। ‘लेकिन मैंने यह विचार छोड़ दिया। वह हमारी दुश्मन नहीं है। तियान है। हमें इसे करने का कोई तरीका ढूंढना होगा।’
मुझे लगता है उसने जो बताया वह उपयोगी है। मेरे पास एक योजना है।'
अशरफिया ने सिर हिलाया। 'हम नहीं। सिर्फ तुम, सिंदबाद। मैं जा रही हूँ।'
'क्यों?'
वह अपने घेरे से बाहर निकली और सीढ़ियों पर चढ़ने लगी। सिंदबाद उसके पीछे-पीछे गया। 'मुझे इस काम के लिए तुम्हारी ज़रूरत है, ऐश।'
‘मुझे परवाह नहीं, सिंदबाद। बात खत्म,’ अशरफिया ने मुट्ठी भींचते हुए कहा। ‘मैं हमेशा के लिए जा रही हूँ। मैं यहाँ की नहीं हूँ। मैं कभी भी यहाँ की नहीं थी। मुझे पैसे नहीं चाहिए। तुम पर मेरा कोई एहसान नहीं है।’ मैंने अपना काम कर दिया है। मैं तुम्हें एकजाति तक ले आई हूँ, जो तुम्हें सफीना के पास ले जाएगी। बस... हमारे बीच बहुत पुराना रिश्ता है। और तुम सही कह रही हो। प्रतिबद्धता का मुद्दा मेरे पिता की वजह से है और मुझे

यह पसंद नहीं है। मैं इन झगड़ों से भाग जाती हूँ, अपना दर्द भुलाने के लिए शराब पीती हूँ। अब तक मैंने किसी की परवाह नहीं की। जब तक तुम नहीं आई... तुम्हें मेरा दोस्त होना चाहिए था। लेकिन जो हो गया सो हो गया। तो हाँ, मैं इससे भी भाग रही हूँ।
और वह ऊर्जा में परिवर्तित हो गई और उसकी आंखों के सामने ही टेलीपोर्ट हो गई।
वह अकेला रह गया।
उसे तात्कालिक उपाय अपनाना पड़ा।
उसे किस्मत पर भरोसा करना ही था। उसके पास इस योजना पर चलने के अलावा
कोई विकल्प नहीं था।
यही एक रास्ता है।
हालांकि अब वह इदरीस से सहमत था।
अशरफिया पर भरोसा नहीं किया जा सकता था।
लेकिन उसने उनके साथ विश्वासघात नहीं किया।
उसने मुझे धोखा दिया।

[redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

अट्ठावन

आज
अगर वह यह कहता कि उसे डर नहीं लग रहा था, तो वह झूठ बोल रहा होता।
उन्हें अशरफिया की मदद के बिना एकाजती को बुलाना पड़ा, लेकिन सिंदबाद फिर भी अपनी मूल योजना पर आगे बढ़ा - इस बार उसने मार्कस से अनुष्ठान करवाया और मंत्रों का जाप करवाया, जिसके लिए उसे काफी मनाना पड़ा।
सभी चालक दल के सदस्य उनके पीछे खड़े थे, मौसम उनके अनुकूल न होने के कारण वे असंतुष्ट थे। एक चौड़ा तख्ता उनके जहाज को तियान के जहाज से जोड़ रहा था, जो दूसरी तरफ खड़ा था। तियान के साथ हुसैन और इदरीस थे, जिनके हाथ रस्सियों से बंधे थे। यह अदला-बदली खुले आसमान के नीचे, तूफान के बीच हो रही थी। भारी बारिश हो रही थी और तूफान के साथ तेज हवाएं और लगातार गरज भी हो रही थी। अशांत जलधाराओं ने दोनों जहाजों को स्थिर होने से रोक रखा था। ‘तो तुम्हें मिल गया?’ तियान ने अपने जहाज से कहा।
‘हां,’ सिंदबाद ने कहा। ‘मैंने इसे फंसा लिया है।’
'मुझे दिखाओ।'
सिंदबाद ने अपने हाथ में मौजूद डिब्बा दिखाया। 'मैंने इसे इसमें फंसा रखा है।'
तियान ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'शानदार। मुझे दे दो।'
‘नहीं,’ सिंदबाद ने गरज और बिजली के बीच चिल्लाकर कहा। ‘मैं इसे तुम्हें तभी दूंगा जब तुम मेरे दोस्तों को मेरे हवाले कर दोगे।’
फिर पुल के बीचोंबीच।
सिंदबाद ने सिर हिलाया।
तियान ने अपने आदमी को हुसैन और इदरीस को पुल पर लाने का आदेश दिया, जबकि सिन्बाद अकेले ही चला गया। जब वे पुल के मध्य बिंदु पर पहुँचे, तो दोनों सिन्बाद के बगल में खड़े हो गए और उसने संदूक तियान के आदमी को सौंप दिया, जो तुरंत वहाँ से चला गया।

तियान ने डिब्बे की ओर देखा। 'बहुत बढ़िया काम।'
सिन्बाद ने आह भरी और हुसैन और इदरीस को गले लगा लिया। उसके दल के एक सदस्य ने उनकी बेड़ियाँ तोड़ दीं और सिन्बाद ने अपना ध्यान वापस तियान की ओर मोड़ा। 'प्रेसा का क्या हुआ?'
‘प्रेसा कौन?’
'पेझी।'
‘वो नहीं आ रही, बेटा।’ तियान मुस्कुराया। ‘वो मेरी संपत्ति है, मेरा खून है।’
‘वह तुम्हारी नहीं है... तुमने उसे कहाँ रखा है?’ सिंदबाद ने दांत पीसते हुए कहा।
‘नीचे, कहीं भी, इससे क्या फर्क पड़ता है? तुम्हारे साथ सौदा करके अच्छा लगा।’ तियान ने अपने आदमियों को पुल को खींचने और जहाज को आगे बढ़ाने का इशारा किया।
सिंदबाद वापस गया, अपने डेक पर खड़ा हुआ और फिर अचानक बोला, 'कम से कम बक्सा तो खोलो। सबूत के लिए। चिंता मत करो, वह तुम पर हमला नहीं करेगी, वह अंदर काफी सिकुड़ी हुई है।'
चीनी सरदार ने अपनी आँखें सिकोड़ीं, फिर उन्हें खोलकर देखा तो उसमें
से हरा धुआँ निकल रहा था। 'लगता तो उसी के रंग का है। क्यों?'
‘कुछ नहीं।’ सिंदबाद मुस्कुराया और दो बार उंगलियां चटकाईं, जिस पर मार्कस ने मंत्रोच्चार शुरू कर दिया।
जैसे ही उसने मंत्रोच्चार समाप्त किया, पुल ऊपर उठने लगा, लेकिन और कुछ नहीं हुआ। देवी प्रकट नहीं हुईं।
अरे यार। वो देर क्यों कर रही है?
आओ आओ...
सिन्बाद ने अपने गुरु की रचना—पेंडोरा का बक्सा—तियान को दे दिया
था ताकि वह जहाज पर लगे ताबीजों को निष्क्रिय कर दे और देवी को उन पर हमला करने के लिए उकसाए। लेकिन मार्कस सही समय पर उसे बुलाने में असमर्थ रहा।
शायद इसलिए कि उसका उच्चारण गलत था या शायद इसलिए कि वह जादूगर नहीं था।
सिन्बाद ने घबराकर मन ही मन बड़बड़ाया। सब व्यर्थ हो गया।
‘तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो, सिंदबाद?’ इदरीस ने पूछा।

‘प्रेसा को बचाने की कोशिश कर रहा हूँ।’ जैसे ही तियान का जहाज आगे बढ़ने लगा, सिंदबाद की उम्मीदें कम होने लगीं।
हुसैन ने कहा, 'हम बच गए, यही अपने आप में बहुत बड़ी बात है। वरना वह हमें मार डालता।'
‘नहीं,’ सिन्बाद ने दृढ़ता से कहा। ‘मैं प्रेसा को इस राक्षस के साथ नहीं रहने दे सकता।’
और उसी क्षण, उनके चारों ओर हवा में हल्का हरा धुआं उठने लगा और बारिश खून में बदलने लगी।
यहां तक कि तियान का जहाज भी रुक गया।
फिर पानी से कई भयानक जीव निकले जो विकृत और जले हुए प्रतीत हो रहे थे
और देखने में... मरे हुए लोगों जैसे लग रहे थे।
वे सभी तियान के जहाज से चिपक कर, उसकी और उसके दल की ओर तेजी से बढ़ रहे थे।
आकाश से एक आत्मा प्रकट हुई, साक्षात देवी। उसने तियान और उसके दल से इतनी ऊँची आवाज़ में कहा कि सिंदबाद और उसके दल भी सुन सकें: 'तुमने मुझे बहुत सताया है। अब तुम्हें इसका दंड मिलेगा।'
उसे तलब किया गया! उसे तलब किया गया!
सिंदबाद मन ही मन हँस पड़ा।
लेकिन कैसे? मार्कस ऐसा नहीं कर सकता था...
‘हे मेरे प्रिय,’ एक आवाज आई।
सिन्बाद ने मुड़कर देखा तो अशरफिया अपने होठों पर एक मनमोहक मुस्कान लिए भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी।
‘तुम वापस आ गए?’
इदरीस, हुसैन और मार्कस सभी इस बात को लेकर असमंजस में थे कि आखिर हो क्या रहा है, लेकिन सिंदबाद अपने दिल में जानता था कि भले ही अशरफिया का उससे बड़ा झगड़ा हुआ हो, वह इतनी आसानी से अपनी दोस्ती नहीं छोड़ेगी। ‘हाँ, हमारे यहाँ बहुत सारी समस्याएँ हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हर परिवार में होती हैं। मुझे लगता है कि अगर किसी परिवार में समस्याएँ नहीं हैं, तो वो परिवार नहीं है।’ अशरफिया ने सिन्बाद की तरफ मुस्कुराते हुए कहा, ‘अब ज़ॉम्बीज़ के आने से पहले प्रेसा को बचा लेते हैं।’
इदरीस और हुसैन मुस्कुराए और खुद को तैयार कर लिया।

सिन्बाद ने अपनी तलवार निकाली। उसने तियान के जहाज की ओर देखा, जो मरे हुए सैनिकों की सेना से छलनी हो चुका था। तियान अपने सैनिकों के साथ बहादुरी से लड़ रहा था।
इदरीस ने अपने दल से चिल्लाकर कहा: 'हमला करो! गुलेल चलाओ!'
चीन ने इस दोहरे हमले की आशंका नहीं जताई थी, लेकिन एक जहाज से दूसरे जहाज पर आग के गोले फेंके गए, जिससे किलेनुमा जहाज को नुकसान पहुंचा।
‘चलो इसे यहीं खत्म करते हैं।’ सिंदबाद मुस्कुराया।

जब वे युद्धक्षेत्र में दाखिल हुए तो सब कुछ धुंधला था।
जब ज़ॉम्बी आधे चीनी सैनिकों का सफाया कर रहे थे, तब सिंदबाद और उसके साथियों को बाकी आधे सैनिकों से लड़ना पड़ा। मार्कस कुल्हाड़ी से लड़ रहा था, हुसैन तलवार चला रहा था और इदरीस भाले का इस्तेमाल कर रहा था। अशरफिया हवा में कलाबाज़ी करते हुए, अपने पास आने वाले हर दुश्मन पर हमला कर रही थी और उनकी आत्माओं को पानी की तरह पी रही थी। इस लड़ाई के अंत तक वह बुरी तरह से भूखी हो जाएगी।
सिंदबाद एक साथ कई सैनिकों से लड़ रहा था। अचानक, उनमें से एक उसके सामने आ गया, लेकिन वह उसे चकमा देने में कामयाब रहा, उसने अपनी तलवार घुसाई और तेज़ी से उसे उससे बाहर निकाल लिया। फिर दूसरा प्रकट हुआ, लेकिन वह ज़मीन पर लुढ़क गया, खड़ा हुआ और तलवार की मूठ उसके सिर पर दे मारी। ‘प्रेसा!’ उसने पुकारा।
जैसे ही और सैनिक दिखाई दिए, वह तेजी से निचले डेक की ओर दौड़ा। उसने तुरंत एक मंत्र का प्रयोग किया, हवा को नियंत्रित करने की शक्ति से उन्हें दोनों ओर धकेल दिया।
वह तेजी से आगे बढ़ा, अपने पीछे सैनिकों को अचंभित छोड़ते हुए, इस उम्मीद में कि उसका कोई आदमी या ज़ोंबी उनका ख्याल रख लेंगे।

जहाज में छेद हो जाने के कारण नीचे की संरचना में भी पानी भर रहा था। उनके द्वारा दागी गई ग्रीक आग की मारक क्षमता बहुत अधिक थी और वह तियान के जहाज में घुस गई, जिससे उसकी नींव में दरार आ गई।
सिंदबाद ने एक सैनिक को अपनी ओर आते देखा। उसने तुरंत तलवार के हमले
से खुद को बचाया, उसके पेट में घुटने से जोरदार प्रहार किया और अपने दाहिने हाथ से उसके चेहरे पर वार करके उसे पीछे की ओर गिरा दिया।
सिन्बाद दर्द से कराह उठा; कैन के साथ लड़ाई में उसका दाहिना हाथ अभी
भी घायल था। वह प्रेसा का नाम चिल्लाते हुए आगे बढ़ा, जब तक कि...
सुना:
मैं यहाँ हूँ, हाँ! मैं यहाँ हूँ!
सिन्बाद उस दरवाजे तक गया जहाँ से आवाज़ आ रही थी और उसने अपनी तलवार
की मूठ से ताले पर ज़ोर से प्रहार किया। दरवाजा खुल गया और उसने अंदर प्रेसा को घुटनों तक पानी में भीगे, आँसुओं से भीगे चेहरे के साथ पाया। वह दौड़ी और उसे गले लगा लिया।
'आप ठीक हैं?'
'जी हां, बेटा। मैं ठीक हूं। मेरे लिए आने के लिए धन्यवाद।'
'बिल्कुल।'
वे आगे बढ़ने ही वाले थे कि तभी उन्हें संकरे गलियारे के अंत से एक गहरी और कर्कश आवाज सुनाई दी:
तुम भाग नहीं सकते।
सिन्बाद ने मुड़कर देखा तो तियान गुस्से से उनकी ओर देख रहा था, उसकी कांच की आंख पलकें नहीं झपका रही थी। उसके हाथ में एक लंबी तलवार थी। ‘तुम भाग नहीं सकते। बिलकुल नहीं। मैं इतने लंबे समय से इन जलक्षेत्रों पर राज कर रहा हूं। मैं किसी किशोर के हाथों नहीं मर सकता।’ और वह पानी और तैरते मलबे को चीरते हुए आगे बढ़ा, सिन्बाद से लड़ने के लिए। सिन्बाद ने तुरंत तलवार को रोक दिया और उसके पेट में लात मारी।
‘भागो,’ उसने प्रेसा से कहा। ‘खुद को ढूंढो—’
‘मैं करूँगी,’ उसने झट से कहा। ‘मेरी एक मदद करो।’
'क्या?'
'उस आदमी को मार डालो,' प्रेसा गुस्से से हांफते हुए फुफकारा और ऊपर की
ओर भागा।

अब मुकाबला सिर्फ उसके और तियान के बीच था। तियान ने खुद को तैयार किया और उस तरफ बढ़ गया जहाँ सिन्बाद ने उसके हमले को रोका था।
फिर वह बौना आदमी बेकाबू हो गया, तेजी से हल्के-हल्के वार करते हुए उसने सिन्बाद को जमीन पर गिरा दिया, जो पानी में गिर पड़ा और हांफने लगा। जब उसने अपनी तलवार सिन्बाद के पेट पर तानकर जोरदार हमला किया, तो सेइड लुढ़क गया और तियान की तलवार जमीन पर जा लगी।
तियान गुर्राया और सिन्बाद को पकड़ने के लिए उसका पीछा करने लगा, उसका हाथ उसकी गर्दन की ओर बढ़ा। सिन्बाद खड़ा हुआ, उसे कोहनी मारी और दीवार से सटाकर अपनी तलवार से तियान की गर्दन पर वार किया।
‘तुमने पुरुषों को जलाया, महिलाओं को सूली पर चढ़ाया और बच्चों को ऐसे मार डाला जैसे वे कुछ भी नहीं थे। तुम जैसे लोग जीने के लायक नहीं हो,’ सिन्बाद ने कहा।
तियान ने संघर्ष किया लेकिन अपनी पूरी ताकत से सिन्बाद को धक्का दिया
और उसे दूसरी दीवार की ओर फेंक दिया। उसकी आकाश-लोहे की तलवार जमीन पर गिरी और रिसते पानी में गायब हो गई।
तियान ने गुस्से से भौंहें चढ़ाईं और अपनी तलवार से उस पर हमला करने
के लिए आगे बढ़ा, तभी लहरों से एक हरी आत्मा उठी और तियान की ओर झपटी, और उसकी गर्दन पकड़ ली।
सिंदबाद यह देखकर पीछे हट गया कि एकाजति उस आदमी का गला घोंट रही थी,
जो अपनी तलवार से उस पर वार करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन देवी पर कोई असर नहीं हो रहा था। उसका शरीर धीरे-धीरे विलीन हो गया।
एकजाति के दिव्य चेहरे पर शांति का भाव था।
चीनी सैनिकों की अफरा-तफरी और चीख-पुकार के बीच, दीवार से पीठ टिकाकर खड़ा सिंदबाद हांफ रहा था, जब उसे एहसास हुआ कि उसने जीत हासिल कर ली है।

वे अपने जहाज को उस मलबे से काफी आगे ले आए थे जिसे वे पीछे छोड़ आए
थे।
सिंदबाद के दल के अधिकांश सदस्यों के शरीर पर घाव और चोटें थीं, जबकि कुछ की मृत्यु हो गई। लेकिन कई लोग बच गए। इसके लिए सिंदबाद आभारी था। सिंदबाद कप्तान के केबिन में हुसैन, प्रेसा, इदरीस, मार्कस और अशरफिया के साथ था और उनके सामने कृतज्ञ तिब्बती देवी, एकाजति बैठी थीं। ‘आप सभी का धन्यवाद।’ उनके चेहरे पर संतुष्टि भरी मुस्कान थी—अब तो
नमक के घेरे बनाने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी। ‘आपने मेरे जीवन में आए खतरे को खत्म करने में मेरा साथ दिया और इसके लिए, जैसा कि मैंने वादा किया था, मैं आपको वह जानकारी दूंगी जो आप चाहते हैं। सफीना उमैर ने मुझे इसलिए आज़ाद किया क्योंकि वह मेरी दुनिया में प्रवेश करना चाहती थी।’
‘यानी?’ सिंदबाद ने पूछा।
'शांगरी ला।'
सिंदबाद ने अपनी भौंहें उठाईं। वह उस जगह के बारे में जानता था। वह नेक आत्माओं के लिए स्वर्ग था।
एकाजती ने कहा, ‘शांग्री-ला दो हिस्सों में बंटा हुआ है। एक हिस्सा मृतकों का है, जबकि दूसरा मृतकों के खतरों का—यह एक बंजर, जमी हुई बंजर भूमि है जिसमें कई मंदिर हैं। बहुत समय पहले, अल-नुहराद ने उस राक्षस को फंसाकर वहीं दफना दिया था और यह जानकारी कभी किसी को नहीं बताई। यह बात आखिरी बार बिल्ली जैसी आंखों वाली लड़की सफीना को पता थी। मुझे नहीं पता कि उसे यह जानकारी कैसे मिली, लेकिन उसने मुझे बचाया और मैंने उसे अपनी दुनिया में जाने में मदद की।’
‘किसलिए?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘उस राक्षस को जगाने के लिए। उसके पास तुरही है, जिसे वह बजाएगी, जिससे राक्षस अपने दफन स्थल से जाग उठेगा और हमारी दुनिया में आ जाएगा,’ एकजाति ने कहा।
सिंदबाद और इदरीस ने एक-दूसरे को चिंता भरी नजरों से देखा।
इदरीस ने कहा, 'हमें वहां ले चलो।'
एकजाति ने सिर हिलाया। 'तुम करोगे।'
और वह गायब हो गई।

आधी रात हो चुकी थी और आज तुरही बजने का दिन था। उनके पास समय नहीं
था। वे सब कुछ देर के लिए स्तब्ध रह गए, लेकिन फिर जल्दी ही उन्होंने अपनी अगली योजनाओं के बारे में सोचना शुरू कर दिया।
अचानक ही उनके नीचे का पानी उथल-पुथल मचाने लगा। वह दौड़कर ऊपरी डेक
पर गया। बाकी सब भी उसके पीछे-पीछे गए और उन्होंने जो नजारा देखा वह किसी चमत्कार से कम नहीं था।
उनके सामने एक विशाल ब्रह्मांडीय पोर्टल था - हरे, बैंगनी और लाल गोलों से भरा एक धुंध से घिरा छेद - जो एक जहाज जितना बड़ा था और जादू से जगमगा रहा था।
तेज हवाएं चल रही थीं। नाविक सिंदबाद के पास गया, उसकी पगड़ी पकड़े हुए, और उससे पूछा, 'क्या ऐसा ही होना चाहिए?'
'अच्छा। हाँ। इस पर काम शुरू करो।'
उसने सिर हिलाया। इंजन पूरी शक्ति से चालू था और सभी पालें कस दी गई थीं। भयभीत होकर, सभी चालक दल के सदस्यों ने खुद को संभाला क्योंकि जहाज पोर्टल से होकर गुजर रहा था।
और सिंदबाद को प्रकाश दिखाई दिया।
इससे पहले कि सब कुछ अंधेरे में डूब जाए।

उनसठ

तीन साल पहले
सिंदबाद को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसके साथ विश्वासघात हुआ है।
उसके अपने ही गुरु द्वारा।
उसे खुद पर घिन आ रही थी कि उसने उस पर विश्वास क्यों किया। वह चीखना- चिल्लाना चाहता था और दर्द कम करने का कोई रास्ता ढूंढना चाहता था। अचानक, उसे एक आवाज़ सुनाई दी:
‘क्या तुम खुद पर तरस खा रहे हो?’
कमरे के अंधेरे कोने में, दो धुंधली आँखें उभर आईं।
‘अज़राएल, यह व्यंग्य करने का समय नहीं है।’
‘मैं आपसे असहमत हूँ, बच्चे। यही सही समय है, क्योंकि तुम आत्मदया में डूबे हुए हो जबकि तुम्हारा दोस्त वहाँ तुम्हारे प्यारे स्वामी और उसके आदमियों द्वारा मार डाला जाने वाला है,’ अजराइल ने कहा। ‘चलो यहाँ से निकलो।’
‘कैसे? मैं तो एक कोठरी में हूँ। गिरोह में,’ सिंदबाद ने कहा।
‘ओह! मुझे लगा था कि तुम कैन की जेल में जो कर रहे थे उससे कहीं ज़्यादा समझदार हो।’ अज़राएल हँसा। ‘मैं घोड़ों के साथ बाहर इंतज़ार कर रहा हूँ। मेरे आदमी पहले ही रक्का-रफीका के किले के लिए निकल चुके हैं और वे सुरक्षा मंत्रों के लिए ज़िम्मेदार जादूगरों को खत्म कर देंगे।’ सिंदबाद ने सिर हिलाया। ‘तुम्हें मेरी ज़रूरत क्यों है?’
क्योंकि आपको ही सफीना से कहना चाहिए कि वह हमारे साथ चले। वरना वह नहीं जाएगी।
'तुम भी उस गिरोह जितने ही दुष्ट हो,' सिंदबाद ने पलटवार किया।
‘कम से कम हम उस लड़की को तो नहीं मारेंगे, बच्चे।’
सिंदबाद विचार करने लगा।

मुझे कैसे भागना चाहिए?
अरे, चलो कोई बात नहीं, तुम गला घोंटने का नाटक तो कर ही सकते हो। फिर मिलेंगे!
सिंदबाद को पूरी तरह समझ नहीं आया कि वह क्या कह रहा है, लेकिन वह जल्दी से दरवाजे पर गया और उसे खटखटाते हुए चिल्लाया, 'मेरी मदद करो! मेरी मदद करो! मुझे एक चिकित्सक चाहिए! मुझे एक डॉक्टर चाहिए!' वह जोर से खांसने लगा और धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।
गार्डों ने दरवाजा खोला। 'तुम ठीक हो ना, बच्चे?'
सिन्बाद को खांसी आई और उसका चेहरा लाल हो गया। 'मेरी मदद करो... पानी दो।'
एक पहरेदार पानी का घड़ा लेकर आया, तभी सिंदबाद ने तुरंत उसके पैरों
के बीच लात मार दी। पहरेदार एक तरफ गिर पड़ा। सिंदबाद ने अपनी तलवार निकाली और उछलकर दूसरे पहरेदार की ओर तान दी, जिसका हाथ अभी भी म्यान में रखी तलवार की मूठ पर था।
‘उस तरफ जाओ,’ सिंदबाद ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए आदेश दिया, उसकी तलवार पहरेदार की ओर तनी हुई थी। उसने अपने थैले उठाए और दरवाजा बंद कर लिया।
वह दौड़ते हुए गलियारे में भागा और ब्लेड से अपनी कलाई की पट्टियाँ खोलने लगा, रास्ते में वह प्रोफेसरों और शिक्षकों से टकराता चला गया। वहाँ अन्य प्रशिक्षु भी थे, जो उसकी हरकत देखकर अचंभित रह गए। कुछ सैनिकों ने उसे देख लिया और सतर्क हो गए।
आओ आओ।
वह सीढ़ियों से तेजी से नीचे उतरा, गलियारे से होते हुए मुख्य द्वार
तक पहुंचा, गिल्ड की सुरक्षा से बाहर निकलकर अजराइल की तलाश करने लगा।
तभी उसने देखा कि फूलों वाली कमीज पहने एक सफेद दाढ़ी वाला व्यापारी
एक कोने से मुड़कर घोड़े पर सवार होकर उसकी ओर आ रहा है और उसके साथ एक और व्यापारी भी है।
यह अजराइल का नया रूप था। सिंदबाद घोड़ी पर सवार हो गया।
‘ओह, तुमने कर दिखाया, है ना?’ अजराइल ने शरारती मुस्कान के साथ कहा।
'हां। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। इसलिए हमें अब निकलना होगा।'

‘जो आप कहें, कप्तान। जल्दी करो!’ उसने अपनी घोड़ी को आगे बढ़ने का निर्देश दिया और सिंदबाद उसके पीछे-पीछे चलने लगा।
और सिंदबाद ने गिल्ड पर आखिरी नजर डालने के लिए पीछे मुड़कर देखा - तभी उसे एक परिचित चेहरा खिड़कियों में से एक से देखता हुआ दिखाई दिया।
वह मास्टर रीस थे।

साठ

आज
वे शांग्री-ला में प्रवेश कर गए।
और यह स्वर्ग तो बिलकुल भी नहीं था।
वह एक बंजर इलाका था जहाँ ठंडी हवाएँ चल रही थीं, जिससे सिंदबाद की हड्डियाँ तक जम रही थीं। इतनी ठंड थी कि उसे अपने बाकी साथियों की तरह जहाज़ के गोदाम में रखे सर्दियों के कपड़ों के लिए दौड़ना पड़ा। उसने एक फर का कोट पहना और चारों ओर देखा। इदरीस ने लंबा ओवरकोट पहना था, हुसैन ने स्वेटर और प्रेसा ने अपने चारों ओर मोटा कार्डिगन लपेटा हुआ था। अशरफिया को ठंड नहीं लग रही थी क्योंकि वह निर्मल स्वभाव की थी, जबकि मार्कस ने कहा कि उसका शरीर इतना मजबूत है कि वह इस मौसम को झेल सकता है और वह ठंड लगने से इनकार करता रहा, हालाँकि सिंदबाद ने उसे कई बार काँपते और दाँत किटकिटाते देखा था।
वे एक जमी हुई नदी के बीचोंबीच थे। और जहाज वहीं अटक गया था जहाँ वह उतरा था। उनके पीछे, द्वार अभी भी खुला था और शायद तब तक खुला रहेगा जब तक वे तुरही ढूंढकर वापस नहीं लौट आते।
‘हमें पैदल ही आगे बढ़ना होगा। समय कम होता जा रहा है,’ सिंदबाद ने जहाज से उतरते ही घोषणा की। इदरीस ने मार्कस की टीम के एक हिस्से को बर्फ तोड़ने का आदेश दिया ताकि जहाज पोर्टल की ओर वापस जा सके, जो अभी भी कुछ गज की दूरी पर था, अन्यथा वे जमे हुए नदी तल में हमेशा के लिए फंस जाएंगे। प्रेसा जहाज पर ही रुका रहा। सिंदबाद, हुसैन, इदरीस, अशरफिया और मार्कस अपने बारह साथियों के साथ बर्फीली भूमि में प्रवेश कर जमी हुई नदी को पार करने के बाद ढलानों पर चढ़ गए। दूर क्षितिज पर उन्हें एक रहस्यमय मंदिर दिखाई दिया जो ऊँचाई पर स्थित था और उनके ऊपर एक विशाल स्तंभ की तरह खड़ा था।

वे बर्फ से ढके जंगलों से गुज़रते हुए खतरनाक इलाके में प्रवेश कर गए। मंदिर के प्रवेश द्वार पर उन्होंने सुनहरे बालों और नुकीले कानों वाले सैनिकों को काले लबादे पहने देखा।
नेफिलिम।
सिंदबाद ने अपने पीछे खड़े सैनिकों की ओर मुड़कर धीमी आवाज़ में कहा, 'सुनो, सब लोग... इन्हें दिल में छुरा घोंप दो। वरना ये मरेंगे नहीं।'
इदरीस ने कहा, 'तुम ऐसे बात करते हो जैसे तुम कप्तान हो।'
‘खैर, अगर आप चाहें तो मुझे खेद है...’
नहीं, बिल्कुल नहीं। आप इसमें माहिर हैं।’ उसने आँख मारी।
और फिर वे युद्धक्षेत्र की ओर बढ़ गए।

कवच से कवच टकराने और तलवारों के झनझनाने की चीखों के बीच, सिंदबाद ने अपने पीछे स्थित विशाल और अलंकृत मंदिर पर एक नज़र डाली, जिसके अग्रभाग पर एक नुकीले दांतों वाले राक्षस का चेहरा बना हुआ था। इस पहाड़ी की चोटी पर खड़े होकर, वे इतनी ऊँचाई पर थे कि सिंदबाद यहाँ से अन्य पहाड़ियों को देख सकता था, और जहाँ तक वह समझ सका, वहाँ ऐसे कई मंदिर थे जो अन्य खतरनाक प्राणियों को समर्पित थे जो कभी पृथ्वी पर आए थे।
वह उनका पता लगाना चाहता था। लेकिन इस समय, लंबे सफेद भाले लिए नेफिलिमों ने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया था। वे लगातार उस पर हमला कर रहे थे और वह इधर-उधर हटते हुए उनके हमलों को रोक रहा था।
उसकी निगाहें अपने लक्ष्य पर टिकी थीं, जो कि मंदिर में प्रवेश करना था—जहां सफीना मौजूद होगी।
उसने अपनी थोकचा तलवार का इस्तेमाल करके सामने से आ रहे हमले को रोका
और तुरंत एक कदम पीछे हट गया। फिर आगे बढ़कर उसने तलवार को नेफिलिम की छाती में गहराई तक घुसा दिया, जिससे तलवार पूरी तरह से दूसरी तरफ निकल गई।

उसने चारों ओर देखा और अशरफिया को युद्ध में लड़ते हुए पाया, वह एक नेफिलिम पर कूद पड़ी थी और अपने नाखूनों से उसकी खाल को भेद रही थी। हुसैन भले ही सबसे शानदार ढंग से नहीं लड़ रहा था, लेकिन वह डटा हुआ था, और मार्कस उसका मार्गदर्शन कर रहा था जो उसे आक्रमण से लड़ने में मदद कर रहा था। मार्कस अपनी कुल्हाड़ी का इस्तेमाल कर रहा था, उसे घुमाते हुए आधे फरिश्तों को टुकड़ों में काट रहा था।
इस बीच, इदरीस अपनी दोधारी भाले को अत्यंत तेज़ी से घुमा रही थी और नेफिलिमों को दाएं, दाएं और बीच में से मार गिरा रही थी। वह इतनी फुर्तीली थी कि उसे युद्ध के मैदान में नाचते हुए देखना वाकई मनोरंजक था।
तभी उसे एक धक्का महसूस हुआ...
ठीक उसके चेहरे के ऊपर।
सिन्बाद ने अपनी ओर दौड़ते हुए एक नेफिलिम का सामना किया। उसने अपने निःसंक्षिप्त बाएं हाथ से तलवार पकड़ी हुई थी और हवा में तेजी से भाला घुमाते हुए नेफिलिम से द्वंद्वयुद्ध कर रहा था। तभी उसने पलक झपकते ही तलवार फेंक दी, जिसने सिन्बाद की जैकेट और कुर्ते को चीर दिया। सिन्बाद ने अपने हाथ पर खून की गर्म धारा बहती हुई महसूस की, लेकिन उसने दर्द को सहन किया और तुरंत नेफिलिम पर छलांग लगाई और तलवार को उसके हृदय में गहराई तक घुसा दिया।
वह आगे की ओर लुढ़का और एक अन्य नेफिलिम को चाकू से घायल कर दिया, फिर उसने अपनी तलवार निकाल ली...
एक और लेने जा रहा हूँ!
उसने यह सब तेजी से किया और उसकी निगाहें द्वार पर टिकी हुई थीं।
वह तेजी से उसकी ओर बढ़ा, तभी उसके सामने एक नेफिलिम प्रकट हो गया। सिन्बाद मुस्कुराया और बोला, 'अरे यार, मुझे अंदर आने दो।' 'आर्गवार्ग,' नेफिलिम ने अटपटी भाषा में जवाब दिया।
‘ठीक है, मैं समझता हूँ कि आपको अपने परिवार का पेट पालना है,’ सिन्बाद
ने कहा। ‘और आपको शाम तक घर वापस आना होगा, लेकिन अभी ऐसा मत करो।’
नेफिलिम इस बात को लेकर असमंजस में थे कि सिंदबाद मजाक कर रहा था या नहीं।
सिन्बाद ने इसका फायदा उठाया और उसके पैरों के बीच से फिसलते हुए निकला, उठा और नेफिलिम के कंधे पर थपथपाया। भ्रमित होकर, आधा देवदूत मुड़ा

और सिन्बाद ने अपनी तलवार उसकी छाती में घुसा दी, उसे दिल के अंदर तक घुमाते हुए बाहर निकाल लिया।
फिर उसने मंदिर के द्वार पर नजर डाली और उसकी ओर दौड़ पड़ा।

वह सोने से मढ़े एक विशाल कमरे में दाखिल हुआ, जो एक लंबे गलियारे की
ओर जाता था। यह गलियारा दोनों ओर लगी कई मशालों से रोशन था। वह आगे बढ़ा और उसके सामने एक बड़ा कब्रिस्तान था, जहाँ एक लड़की उसकी ओर पीठ करके घुटनों के बल बैठी थी और उसकी भुजाएँ किसी गोले से जुड़ी हुई थीं। कब्रिस्तान के पीछे राक्षस की एक मूर्ति थी। यह पैंथर के आकार की थी, लेकिन बहुत ही विचित्र रूप से विकृत थी, जिसके तीन सिर थे।
सिंदबाद धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसने देखा कि लड़की ध्यान में लीन थी, उसकी आँखें बंद थीं। उसके पास एक तुरही थी। फिर उसने तुरही उठाई और बजाने ही वाली थी...
‘नहीं!’ सिंदबाद चिल्लाया। ‘कैलिप्सो!’
उनकी आवाज मंदिर में गूंज उठी।
लड़की मुड़ी और उसके आसपास की ऊर्जा कम हो गई।
उसकी बिल्ली जैसी आंखें सदमे से चौड़ी हो गईं।
‘सिंदबाद?’

इकसठ

तीन साल पहले
उन्हें रक्का-रफीका पहुंचने में दो घंटे लगे।
जब वे किले पर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि लड़ाई जारी थी। सिंदबाद को अपराधबोध होने लगा। उसे लगा कि वह गलत पक्ष में है, क्योंकि जादूगरों की भीड़ उन वेयर-हाइना और नेफिलिम से लड़ रही थी जिन्हें अज़राएल ने अपनी सेना के रूप में भेजा था।
‘वाह, क्या नज़ारा है!’ अज़राएल ने ताली बजाई। ‘चलो पीछे से चलते हैं। नहीं तो हम गोलीबारी में फंस जाएंगे।’
सिन्बाद और अज़राएल किले के पिछले द्वार की ओर सरकते हुए आगे बढ़े।
सिन्बाद ने जलते हुए किले में प्रवेश करते समय किसी भी रक्षक को चोट नहीं पहुँचाई। वह उनसे और चारों ओर फैली आग से बचते हुए आगे बढ़ा। रक्षक अंदर अज़राएल के सैनिकों से लड़ रहे थे।
‘उसे ढूंढो और मेरे पास ले आओ,’ अजराइल ने कहा।
सिंदबाद खुले आंगन से निकलकर किले की गलियों और संकरी रास्तों की ओर बढ़ते हुए घोड़े से उतर गया। वह ऊपर की ओर बढ़ा और कमरों की एक कतार देखी, तभी उसके सामने एक रक्षक प्रकट हो गया। वह डर के मारे रुक गया और उसे समझ नहीं आ रहा था कि उस पर हमला करे या नहीं।
लेकिन वह वहीं जम गया।
तभी एक वेयर-हाइना सैनिक पर झपटा, जिससे वह बेखबर हो गया।
सिंदबाद ने कार्रवाई से परहेज किया। उसे एहसास था कि उसके द्वारा बहाया गया कोई भी खून बुरा होगा, क्योंकि वह किसी भी पक्ष से संबंधित नहीं था। वह तटस्थ था।
‘कैलिप्सो!’ वह जोर से चिल्लाया।
‘सिंदबाद!’

वह एक-एक करके दरवाजे खोलने लगा, जितने वह खोल सकता था, तब तक जब तक वह
उस दरवाजे तक नहीं पहुंच गया जहां से आवाज आ रही थी।
लेकिन एक और बंद दरवाजे के सामने, उसने देखा कि वहाँ एक पगड़ीधारी सिपाही खड़ा था जिसकी दाढ़ी बहुत बड़ी थी और उसके हाथ में तलवार थी।
सिंदबाद ने अपने पीछे देखा कि अजराइल के सभी सैनिक पूरी तरह से व्यस्त थे।
क्या करें?
उसने अपनी तलवार निकाल ली।
चूंकि वह एक तेरह वर्षीय लड़के के साथ द्वंद्वयुद्ध कर रहा था, इसलिए रक्षक विजयी मुस्कान के साथ उसके पास पहुंचा।
उसने सिंदबाद को उठाया और दीवार पर पटक दिया।
सिंदबाद को अचानक अपनी पीठ और पैरों में तेज दर्द का अनुभव हुआ।
सिंदबाद अपने पैरों पर खड़ा हुआ, लेकिन गार्ड ने उसकी ओर एक मुक्का मारा जिसे सिंदबाद ने अपनी तलवार से रोक दिया, लेकिन ऐसा करने की प्रक्रिया में, उसने उस आदमी की बाहों में वार कर दिया, जिससे उसकी नसें कट गईं।
गार्ड के शरीर से खून बहने लगा और सिंदबाद घबराकर आगे बढ़ा, माफी मांगते हुए और अपनी कलाई पकड़ते हुए, लेकिन वह लड़खड़ाकर जमीन पर गिर गया। सिंदबाद ने अपने हाथों पर लगे खून को देखा और उसे अपराधबोध होने लगा, लेकिन उसे सफीना को बचाना ही था।
उसने एक दरवाजा खोला और आखिरकार उसे पा लिया। उसने तुरंत उसे गले लगा लिया।
‘यह क्या हो रहा है?’ वह चिल्लाई।
सिंदबाद उसे निहारता रहा, उसे सुकून महसूस हो रहा था। फिर उसने गले में अटकी बात को निगलते हुए कहा, 'कोई बात नहीं। सब ठीक हो जाएगा। लेकिन अब हमें यहाँ से निकलना होगा।'
'कहाँ?'
सिन्बाद को याद आया कि अज़राएल ने उससे कहा था कि वह उसे वापस उसके पास ले आए।
लेकिन कम से कम वह मेरे साथ जीवित तो रहेगी।

सिन्बाद ने अपना सिर हिलाया। उसने उसका हाथ पकड़ा और हड़बड़ी में अज़राएल से दूर एक कमरे में घुस गया, जहाँ एक खिड़की थी। वह खिड़की के किनारे पर खड़ा हो गया।
‘यह सिर्फ एक मंजिल है। आपको चोट नहीं लगेगी,’ उसने कहा।
सफीना ने सिर हिलाया और खिड़की से बाहर निकल गई।
अब सिंदबाद की बारी थी। उसने नीचे देखा जहाँ सफ़ीना सफलतापूर्वक उतरी थी। उसने ज़मीन देखी। उसे याद आया कि रीस ने उसे एक बार कहा था कि जब वह उतरने वाला हो तो छलांग लगाए और फिर ज़मीन पर लुढ़के, जिससे उसके पैरों पर कम दबाव पड़ेगा।
और उसने वही किया... हालांकि उसके बाएं टखने में मोच आ गई। वह दर्द से कराहते हुए लंगड़ाते हुए खड़ा हुआ।
सिन्बाद ने सफीना का हाथ पकड़ा और कैक्टस से भरी भूमि की ओर बढ़ने लगा, तभी उसे एक आवाज सुनाई दी, एक बहुत ही जानी-पहचानी आवाज:
‘सिंदबाद!’
दोनों ने मुड़कर देखा तो उनके सामने एक लंबा आदमी सफेद कुर्ता और काली पतलून पहने खड़ा था, जिसके साथ एक घोड़ी भी थी।
उसने अपनी तलवार निकाल ली।
सिन्बाद ने सफीना को अपने पीछे धकेल दिया, उसकी रक्षा करते हुए, क्योंकि वह अपने संरक्षक, अपने मित्र और अपने गुरु - मास्टर रीस का सामना कर रहा था।

बासठ

आज
आप यहां पर क्या कर रहे हैं?'
सिन्बाद सफीना के पास गया और सबसे पहले उसे गले लगाया। लेकिन उसके चेहरे पर कुछ घबराहट और उलझन थी। वह इसे उसके हर अंग में महसूस कर सकता था, इसलिए उसने खुद को पीछे खींच लिया। 'तुम्हें देखकर अच्छा लगा, कैलिप्सो।' उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। 'तुम्हें याद है?'
वह बदल गई थी। उसके काले बाल लंबे हो गए थे। वह अब न तो फूलों वाली पोशाक में बिखरी-बिखरी और न ही शर्मीली बच्ची थी। उसने कवच पहन रखा था। उसकी आँखें समझदार लग रही थीं और चेहरा थोड़ा मैला था, लेकिन फिर भी वह एकदम सही दिख रही थी।
‘ऐसा रहा है...’ उसने कहा।
‘मुझे पता है।’ वह रुका। ‘ऐसा मत करो।’
‘सिंदबाद,’ उसने कहा, ‘यही मेरा भाग्य है। मुझे यही करना होगा।’
‘मुझे यकीन है कि तुमने इब्लिस के मार्गदर्शन में तीन साल तक प्रशिक्षण लिया होगा और मुझे नहीं पता...’ सिंदबाद ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘बस एक बात याद रखना... तुमने मुझसे कहा था कि इंसान अपना भाग्य खुद बनाता है। तो?’
उनकी बातचीत याद आते ही उसकी आंखें चौड़ी हो गईं। 'जैसे कि तुम अपने
ही लोगों का पीछा कर रहे हो? तुम्हारे बारे में मुझे आखिरी जानकारी यही मिली थी कि तुम अभी भी बसरा में हो।'
‘तुम मुझसे नहीं मिले। तुम्हें मिलना चाहिए था।’
‘नहीं, ऐसा नहीं है।’ सफीना ने सिर हिलाया। ‘मैं...’
‘गलत पक्ष में जन्म लेने का पछतावा हो रहा है? या फिर वो करने का जो तुम्हें करना चाहिए था? या फिर गिल्ड से नाराज़गी? जो भी हो, मैं बस इतना जानता हूँ... मुझे पता है कि तुम एक अच्छी इंसान हो, कैलिप्सो। किसी को भी

इसे तुमसे छीनने मत देना। दुनिया को कभी भी तुमसे अच्छी चीजें छीनने मत देना,’ उसने धीरे से कहा। ‘मैंने हमेशा तुम पर भरोसा किया है। अपनी किस्मत खुद चुनो और... इसे छोड़ दो।’
उसने अपने हाथों में पकड़ी हुई तुरही को देखा और उसे उदास मुस्कान दी। 'तुम हमेशा मुझे बचाते हो।'
‘यह मेरा काम है।’ सिंदबाद मुस्कुराया।
सफीना ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'मुझे कभी यकीन नहीं था कि मैं क्या कर रही हूँ। मैं... मुझे नहीं पता... मुझे समझ नहीं आ रहा कि दुनिया मुझसे क्या चाहती है।'
और आप क्या चाहते हैं? जो आप करना चाहते हैं, वही करें। हमेशा कोई न कोई रास्ता निकल ही जाता है।
‘किस तरह? क्या उस निनुर्ता गिल्ड की तरह जो मुझे मारने की कोशिश कर
रहा था?’ ‘नहीं।’
अपने आस-पास के लोगों, अपनी यात्रा, पिशाचों को बचाने के लिए इदरीस द्वारा दिखाए गए साहस, हुसैन की बहादुरी, प्रेसा के बलिदान और अशरफिया के प्रेम के बारे में सोचते हुए, सिंदबाद ने कहा, 'एक बेहतर इंसान बनने का रास्ता। एक अच्छा, सभ्य मनुष्य बनने का रास्ता। जो कुछ हुआ उसके बाद, मुझे लगने लगा कि मैं किसी पर भरोसा नहीं कर सकता। मुझे लगा कि यह दुनिया बचाने लायक नहीं है, लेकिन मैं इसे बचाना चाहता हूँ। मैं इस दुनिया को थामे रखना चाहता हूँ, भले ही इसमें खामियाँ हों, यह टूटी हुई हो, फिर भी इसमें उम्मीद बाकी है। और जब तक उम्मीद है, हममें से हर किसी के लिए बेहतर इंसान बनने का मौका है। क्योंकि आप जानते हैं कि वह उम्मीद क्या है? हम। हम ही हैं जो अपनी कमियों को पहचानते हैं और फिर उन्हें सुधारते हैं। हर दिन हम खुद को सुधारते हैं, और मेरा मानना है कि इसीलिए यह दुनिया जीने लायक है।'
सफीना ने पलकें झपकाईं, खुद से सिर हिलाया और मदहोश होकर तुरही सिंदबाद को सौंप दी, जिसने उसे अपनी कमरबंद से लटका लिया। 'धन्यवाद।' सिंदबाद मुस्कुराया।
'बेबी, बेबी, बेबी...' पीछे से एक आवाज आई।
सिन्बाद ने अपना सिर घुमाया और देखा कि अज़राएल गलियारे से गुज़रते हुए धीरे-धीरे ताली बजा रहा है। वह अकेला था। काले सूट में वह बेहद आकर्षक और सुंदर दिख रहा था।

‘तुम हमेशा मेरे लिए मुसीबत खड़ी करने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लेती हो।’ अज़राएल ने सिर हिलाया। ‘भोर का देवता तुमसे नाराज़ है, सफ़ीना। तुमने फिर अपनी भावनाओं के आगे घुटने टेक दिए। चलो! हमने तुमसे वादा किया था कि वह सुरक्षित रहेगा।’ वह रुका और सिंदबाद की ओर देखा।
मैं तुम्हारे माता-पिता को जानता हूँ। मैं तुम्हारा रहस्य जानता हूँ।
‘मेरे और रीस के बीच का रहस्य?’ सिंदबाद ने पूछा।
'हाँ।'
'मुझे परवाह नहीं है।'
'उबाऊ! लेकिन अब भोर के देवता को लगता है—और मुझे भी—कि तुम दोनों को बचाना गलत है, इसलिए तुम्हें मार देना ही बेहतर है।'
‘तुम ऐसा नहीं कर सकते,’ सिंदबाद ने कहा। ‘तुम एक फरिश्ता हो।’
‘सुधार: मैं पृथ्वी पर किसी को नहीं मार सकता। जहाँ तक मुझे पता है, यह पृथ्वी नहीं है।’ अज़राएल के चेहरे पर एक भयावह मुस्कान कौंध गई।
अचानक एक हथियार प्रकट हुआ। यह एक हल्के सफेद रंग का ब्लेड था, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, एक आवाज आई:
'अरु तुम!'
अज़राएल मुड़ा, सिंदबाद और सफ़ीना भी मुड़े। प्रवेश द्वार के पास सिंदबाद के घायल साथी खड़े थे। उनमें हुसैन, मार्कस, अशरफ़िया और इदरीस थे।
‘अरे वाह!’ अजरेल घबराते हुए बोला। ‘पूरा गिरोह। कितना अनुमान था। लगता है अब मुकाबला सिर्फ मेरा है, बाकी सब तुम हो।’
और फिर लड़ाई शुरू हो गई।

त्रेसठ

तीन साल पहले
'चले जाओ,' सिन्बाद ने सफीना से विनती की।
'नहीं।'
'यहां से चले जाओ। कहीं भी चले जाओ, बस यहां मत रहो। वरना वह तुम्हें
मार डालेगा।'
मास्टर रीस की बर्फीली, पीली आँखें उन्हें देख रही थीं।
'कृपया अभी।'
सफीना ने सिर हिलाया और सिंदबाद के गाल पर चुंबन लिया। 'क्या हम फिर मिलेंगे?'
‘मुझे पूरा यकीन है कि तुम ऐसा करोगी।’ सिंदबाद मुस्कुराया, और गालों
पर आंसू बहते हुए सफीना अंधेरे में भाग गई।
भारी साँसें लेते हुए, सिंदबाद और रीस घड़ी की दिशा में एक वृत्त में घूमे, एक दूसरे के सामने इस तरह खड़े थे मानो युद्ध के लिए एक दूसरे का आकलन कर रहे हों।
उन दोनों ने अपने हथियार निकाल लिए थे।
सिन्बाद ने अपनी कृपाण कसकर पकड़ रखी थी, जबकि रीस के पास उसकी थोकचा तलवार थी। सिन्बाद जानता था कि आकाश-लोहे की धातु से एक भी प्रहार हुआ तो उसकी तलवार नष्ट हो जाएगी—वह इतनी मजबूत थी। उसे सावधान रहना था, तुरंत वार से बचने और खुद को बचाने के लिए तैयार रहना था।
सफीना अब कहीं नजर नहीं आ रही थी।
‘तुम्हें उसे जाने देने की ज़रूरत नहीं थी। इब्लिस के गुर्गे उसे पकड़ लेंगे,’ मास्टर रीस ने कहा। ‘वे उसे पल भर में ढूंढ निकालेंगे।’
‘कम से कम वो तुमसे दूर रहकर ज्यादा सुरक्षित तो रहेगी।’

‘मैं तुम्हें बताना नहीं चाहता था,’ मास्टर रीस ने फुर्ती से चलते हुए कहा, ‘वरना तुम्हें बुरा लगता। लेकिन उसे मारने का सुझाव मैंने ही दिया था।’ अब तक उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला था, लेकिन फिर उन्होंने सिंदबाद का मज़ाक उड़ाते हुए एक हल्की सी मुस्कान दी।
रीस अपनी तलवार लेकर आगे बढ़ा और उसे घुमाया, लेकिन सिंदबाद ने अपना सिर झुकाया, घूमकर रीस के पैर पर अपनी तलवार से वार किया।
रीस दर्द से कराह उठा, उसके घुटनों से खून बह रहा था, 'जल्दी करो। होशियार बनो। मैंने तुम्हें अच्छी तरह सिखाया है, लड़के।'
‘मैंने आपका सम्मान किया। मैं आपको अपना आदर्श मानता था। आप वो सब कुछ
थे जो मैं बनना चाहता था,’ सिंदबाद चिल्लाया। ‘लेकिन मैं गलत था। आप झूठे हैं। आपने मुझे धोखा दिया।’
‘मैं दुनिया को बचा रहा था, बेटा।’ वह सीधा खड़ा हो गया।
‘मैं तेरह साल की लड़की के हार्मोन्स को अपने रास्ते में नहीं आने देता।’ सिंदबाद ने अपने जबड़े भींच लिए क्योंकि दोनों एक-दूसरे पर टूट पड़े, लेकिन आखिरी क्षण में...
वह फिसल गया।
रीस की तलवार उसके ऊपर से गुजरी, जिसे उसने बड़ी कुशलता से चकमा दिया।
वह तुरंत अपने स्वामी के पीछे खड़ा हो गया और अपनी तलवार उनकी पीठ में गहराई तक घोंप दी।
मास्टर रीस दर्द से कराह उठा और उसने अपनी तलवार गिरा दी। वह मुड़ा, सिंदबाद की गर्दन पकड़ी और उसे जमीन पर पटक दिया।
सिंदबाद का सिर एक चट्टान से टकराया और खून बहने लगा। धुंधली दृष्टि में उसने देखा कि रीस उसका खून रोकने की कोशिश कर रहा है...
इससे पहले कि रीस जमीन पर गिरकर मर जाता।
और सिंदबाद की दृष्टि अंधकार में डूब गई।

चौंसठ

आज
लड़ाई शुरू हो चुकी थी।
अज़्रेल के पास अनेक हथियार थे। जैसे ही सिन्बाद उससे लड़ने के लिए आगे बढ़ा, अज़्रेल ने ऊर्जा के बल पर उसे धक्का दे दिया।
वह पीछे की ओर गिर पड़ा और उसकी छाती में दर्द हुआ। उसने ऊपर देखा तो इदरीस अज़राएल की ओर बढ़ रही थी, जिसने तुरंत अपनी चमकदार सफेद तलवार से अपना बचाव किया और अपनी मुट्ठियों से निकली प्रबल ऊर्जा से उसे दूर धकेल दिया।
टेलीकिनेसिस की शक्ति का प्रयोग करते हुए, मृत्यु के देवदूत ने मार्कस और हुसैन को रास्ते से हटा दिया। केवल अशरफिया ही खड़ी रह गई, क्योंकि उसने अपने द्वारा बनाए गए जादुई कवच से अपनी भुजाओं को अवरुद्ध कर लिया था।
एज़्रेल ने उसे पीछे धकेलने की कोशिश की, लेकिन ढाल ने उसे ऐसा करने नहीं दिया और वह धीरे-धीरे उसके करीब आती गई।
और अशरफियाह उग्रता से आगे की ओर झपटा और अपने चेहरे को खरोंचने लगा।
वह पीछे गिर गया। उसने अपने चेहरे पर बने निशान की मालिश की... और वह ठीक हो गया।
‘वह ऐसे नहीं मर सकता,’ अशरफिया ने सिंदबाद की ओर देखते हुए कहा।
‘आखिरकार वह एक पतित फरिश्ता है। हमें कुछ करना होगा—’ अचानक, उसे ज़ोर से पीछे धकेल दिया गया।
‘तुम कमीने हो।’ अजराइल खड़ा हुआ, अपनी आँखें बंद कीं और अपना हाथ उठाया।
सिंदबाद को तब तक पता नहीं चला कि वह क्या करने की कोशिश कर रहा है, जब
तक कि उसने खुद को हवा में ऊपर उठते हुए महसूस नहीं किया। और फिर उसे एहसास हुआ कि उसके सभी दोस्त हवा में लटके हुए हैं और भ्रमित हैं।

उसने नीचे सफीना की ओर देखा, जो पूरी तरह से अचंभित थी।
सिंदबाद ने अजराइल की पकड़ से छूटने की कोशिश की, लेकिन उसकी पकड़ बहुत मजबूत थी।
‘हमें… कुछ करना होगा…’ इदरीस ने मुश्किल से बोलते हुए कहा।
‘मुझे पता है।’ सिंदबाद ने नीचे देखते हुए थोड़ा सा गला भर आया। ‘सफीना... अब... यह दिखाने का अच्छा समय है... कि तुम किसका साथ देना चाहती हो।’
‘ओह, मेरे पास उसके लिए कुछ और ही योजनाएँ हैं। वह इतनी उलझन में है कि
कुछ कर ही नहीं सकती। हमेशा ही उलझन में रहती है,’ अज़राएल ने हंसते हुए कहा। ‘तुम सब मेरी मुट्ठी में हो, छोटे बेवकूफों। तुमने मुझे काफी परेशान कर दिया है।’
सफीना ने सिंदबाद की ओर देखा, उसकी पीली आँखें धधक रही थीं। अचानक, उसने अपनी बाहें ऊपर उठाईं, जिससे बिजली का एक झटका लगा और उसने उसे अज़राएल पर मारा, जिससे वह गिर पड़ा।
सिन्बाद और उसके साथी तुरंत ज़मीन पर गिर पड़े। अज़राएल को उठने की कोशिश करते देख सिन्बाद ने अपनी तलवार निकाली और चिल्लाया, 'दोस्तों, उसके हाथ पकड़ो और उसे आँखें बंद न करने दो। चलो शुरू करते हैं!'
सभी ने सिर हिलाया।
हुसैन ने सबसे पहले हरकत की। वह फर्श पर फिसलते हुए अजराइल की पीठ पर
कूद गया।
इदरीस हवा में कलाबाजी करते हुए अपने दाहिने हाथ को पकड़ लिया।
मार्कस आगे की ओर लड़खड़ाया और अपने बाएं पैर को जकड़ लिया, उसने अपनी उंगलियों को हिलाने और संघर्ष करने की कोशिश की, लेकिन वह ऐसा करने में असमर्थ था।
और अशरफिया ने उन सभी के चारों ओर ढाल बना दी ताकि अगर वह अपनी शक्तियों का उपयोग करके उन्हें दूर धकेलने की कोशिश करे तो उन्हें चोट न लगे।
अपने हाथ में थोकचा तलवार लिए, सिंदबाद उस व्यक्ति की ओर तेजी से दौड़ा जिसने उसके खिलाफ बगावत की और उसे बहकाया।
‘नहीं! मैं तुम्हारे परिवार के बारे में जानता हूँ। मैं तुम्हें उनके बारे में बता सकता हूँ।’ अजराइल रोते हुए गिड़गिड़ाया। ‘कृपा करके।’

सिंदबाद को कोई परवाह नहीं थी और वह अज़राएल के करीब चला गया। 'तुम एक बात भूल गए।'
'क्या?'
उसने अपने उन साथियों की ओर देखा जो उसे कसकर पकड़े हुए थे, और वह मुस्कुराया। 'मेरा तो पहले से ही एक परिवार है।'
और फिर उसने निर्दयता से तलवार अज़राएल की छाती में घोंप दी। मृत्यु
का दूत दर्द से कराह उठा और फिर कांच के लाखों टुकड़ों में बिखर गया।
वे सब एक दूसरे की तरफ देखने लगे और राहत भरी मुस्कान बिखेरने लगे।
'मुझे लगता है कि इसके लिए हमें ओग्गी की पीठ पर सवारी करने का मौका मिलना चाहिए,' सिंदबाद ने हंसते हुए कहा और उसकी तलवार नीचे गिर गई।
सिन्बाद ने इदरीस की ओर देखा, जिसकी निगाहें सफीना पर टिकी थीं।
सफीना शैतान के हथियार की ओर बढ़ी, जबकि बाकी लोग वहीं बेखबर, उत्साह से गले मिलते रहे।
उसे पता था कि इदरीस क्या करने वाला है।
नहीं/ वह उसे मार डालेगी।
उसने खुद को छुड़ाने और उनके बीच आने की कोशिश की, लेकिन वह देर हो चुका था, क्योंकि इदरीस ने सफीना से हाथ मिलाया और कहा, 'वहां मदद करने के लिए धन्यवाद।'
क्या? अभी क्या हुआ?
सफीना ने सिंदबाद की ओर सहमति के लिए देखा, यह जानने के लिए कि क्या इदरीस से हाथ मिलाना सुरक्षित है, सिंदबाद ने सिर हिलाकर सहमति दी और सफीना आगे बढ़ गई।
‘जहाज के लिए निकलो,’ सिंदबाद ने इदरीस से नज़रें मिलाते हुए सबसे धीरे से कहा। और इदरीस ने बस कंधे उचका दिए जैसे कि यह कोई बड़ी बात ही न हो।
वह जानना चाहता था कि उसने सफीना को जीवित क्यों रहने दिया।
शायद मुझे बाद में अपना जवाब मिल जाएगा।

पैंसठ

तीन साल पहले
सिंदबाद अपने कमरे में था।
वह अकेला बैठा था और अपने थोकचा तलवार को देख रहा था जो उसे मास्टर रीस से विरासत में मिली थी।
किसी को पता नहीं था कि ये मैंने किया है। सबको लगता है कि ये सफीना
की गलती है। सफीना और अज़राएल की।
सिंदबाद तलवार को अपने पास रखना नहीं चाहता था, लेकिन वह जानता था कि
यह इतनी कीमती चीज है कि इसे पीछे छोड़ना संभव नहीं था। उसने अपना सामान तैयार कर लिया था।
उस मनहूस दिन को एक महीने से ज़्यादा समय बीत चुका था। उसके बाद कुछ
खास नहीं हुआ, सिवाय इसके कि उस पर देशद्रोह का आरोप लगा, क्योंकि उसने राज्य के विरुद्ध जाकर उस लड़की की मदद की थी। लेकिन आखिरी समय में उसे माफ़ी मिल गई, क्योंकि गिल्ड के भविष्यवक्ता ज़ारका ने भविष्यवाणी की थी कि आने वाले वर्षों में वह इब्लिस से दुनिया को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
यह महज संयोग था। वह वास्तव में काफी असमंजस में था। उसे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि इस तरह की स्थिति में उसकी क्या भूमिका होगी।
सिंदबाद को इसके बजाय सजा दी गई, उसे कुछ दिनों के लिए अपनी कोठरी में बंद रखा गया। उसे खूब डांट-फटकार लगाई गई और चेतावनी दी गई कि वह संघ के विरुद्ध न जाए। स्वयं ग्रैंड मास्टर आए और उन्होंने उससे कहा कि यह उसका आखिरी मौका है। अगली बार, उसका सिर थाली में सजाकर उसे दे दिया जाएगा।
लेकिन सबसे बुरी बात यह थी कि सफीना का पता नहीं चल पा रहा था।
उसने उससे दोबारा संपर्क नहीं किया, या शायद उसने कभी संपर्क किया ही नहीं। और शायद... यही आखिरी बार था जब उसने उसे देखा था।

यह एक खूबसूरत याद थी और वह इसे वैसे ही बनाए रखना चाहेंगे।
उसके दरवाजे पर दस्तक हुई।
'हाँ?'
एक लड़के ने अंदर झाँका। 'मैं कुली हूँ, महोदय।'
'हां, हां।'
अपना सामान गाड़ी में ले जाओ।
सिन्बाद ने सिर हिलाया, उसे बैग पकड़ाया और अपने कमरे की ओर देखने लगा। चूंकि सभी की उसके बारे में राय अच्छी नहीं थी और उसका प्रशिक्षण लगभग पूरा हो चुका था, इसलिए उसने स्वतंत्र रूप से सेइड बनने का अभ्यास करने का फैसला किया। और गिल्ड भी सहमत हो गया। वे उसे वैसे भी वहाँ से निकालना चाहते थे, इसलिए उन्होंने इसकी अनुमति दे दी, लेकिन कड़ी निगरानी में।
और उसने एक जगह भी चुन ली थी।
‘कहाँ जाना है, महोदय?’ कुली ने पूछा।
सिंदबाद को नहीं पता था कि यह जगह अच्छी होगी या नहीं, क्या वह वहां दोस्त बना पाएगा और... क्या वह वहां लंबे समय तक रह पाएगा।
‘बसरा,’ सिन्बाद ने कहा।

छियासठ

आज
जहाज रवाना हो गया। वे वापस पृथ्वी पर आ गए थे और उत्तर की ओर बढ़ रहे थे। सिंदबाद ने कप्तान के केबिन के दरवाजे पर दस्तक दी।
'अंदर आएं।'
सिन्बाद ने प्रवेश किया और देखा कि इदरीस एक कुर्सी पर बैठी है, उसकी बैंगनी आँखें उस तुरही को टकटकी लगाए हुए हैं जिसे उन्होंने अभी-अभी हासिल किया है।
‘सफीना कैसी है?’ उसने अपनी निगाहें उससे हटाए बिना पूछा।
‘वह ठीक है। वह सो रही है,’ सिंदबाद ने कहा। ‘मैं आपसे पूछना चाहता था— आपने ऐसा क्यों नहीं किया?’
'क्या करना है?'
‘उसे मार डालो। तुमने कहा था कि तुम ऐसा करोगे।’
इदरीस मन ही मन मुस्कुराई। 'जब उसने हमें बचाया, तो मुझे लगा कि मैं उसकी ऋणी हूँ। और मुझे एहसास हुआ कि उसने मेरे लिए गिल्ड द्वारा किए जा रहे कार्यों से कहीं अधिक किया है।'
'आपका क्या मतलब है?'
'सिंदबाद, ये गिल्ड मेरे साथ बहुत ही बेरहमी से पेश आया है। मैंने इनके लिए सब कुछ किया, फिर भी इन्होंने मेरे पति को मुझसे छीन लिया। बदले में, इन्होंने मुझे और भी मिशन दिए, और भी सजाएँ दीं, सिर्फ इसलिए कि मैं एक ऐसे व्यक्ति से प्यार करने की दोषी थी जिसे उनके मानकों के अनुसार प्यार नहीं किया जाना चाहिए था। लेकिन ये फैसला करने वाले वे कौन होते हैं? मैं उनके साथ रहना चाहती थी, एक सामान्य जीवन जीना चाहती थी।'
उसने निराशा में अपना सिर हिलाया। 'मैंने तो उन्हें दुख पहुँचाने के अपराधबोध के कारण ही इस मिशन के लिए स्वेच्छा से भाग लिया था, लेकिन मुझे एहसास हुआ - क्या वे मुझे दुख नहीं पहुँचा रहे थे?'

सिंदबाद ने अपनी बाहों को अपनी छाती पर बांध लिया और धीरे से कहा, 'मैंने तुमसे कहा था कि सफीना का दिल अच्छा है। वह गुमराह हो गई, गलत राह पर चल पड़ी।'
इदरीस ने सिर हिलाया। 'मुझे उम्मीद है कि आप सही हैं। मैं उस पर नज़र रखूंगा। और आपको यह भी पता होना चाहिए कि सफीना को बचाकर हमने खलीफा और आसपास के सभी लोगों को अपना दुश्मन बना लिया है।'
'क्या आप परवाह करते हैं?'
मुझे जेल में बंद अपने पति की चिंता है।
‘हम उसे बचा लेंगे। हम उसे बाहर निकाल लेंगे,’ सिंदबाद ने उससे वादा किया।
‘धिक्कार है।’ वह घबराकर हंस पड़ी। ‘हम राजशाही के खिलाफ जा रहे हैं।’ सिन्बाद मुस्कुराया। वह उसके पास गया और उसका हाथ थपथपाया। 'हम उनसे बेहतर हैं। हमने अभी-अभी उनकी जान बचाई है।'
‘इब्लिस मरा नहीं है।’
‘जब तक वह ऐसा नहीं कर लेता, हम चैन से नहीं बैठेंगे,’ सिन्बाद ने कहा।
‘और अभी जब हम बात कर रहे हैं, वह अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कोई दूसरा रास्ता तलाश रहा होगा। कप्तान, हमें उसे भी रोकना होगा।’
इदरीस ने उसका हाथ थाम लिया। 'धन्यवाद। लेकिन मुझे लगता है कि मैं कप्तान बनने के लायक नहीं हूँ।' वह खड़ी हो गई। 'मैं चाहती हूँ कि तुम ही कप्तान बनो। इस मिशन का नेतृत्व तो हमेशा से तुम्हें ही करना था। सच कहूँ तो मैं बेवकूफी कर रही थी।'
‘हाँ, तुम थे।’ सिंदबाद हँसते हुए बोला। ‘लेकिन नहीं, मैं नहीं कर सकता।’
‘मैं कोई दान नहीं कर रही। अगर मुझे यकीन नहीं होता कि तुम कप्तान बनने लायक हो, तो मैं तुमसे पूछती ही नहीं। अब बैठ जाओ और मेरे पति को बचाने के लिए तैयार हो जाओ। मैं चाहती हूँ कि वो बाहर आ जाएँ,’ इदरीस ने हंसते हुए कहा और सिंदबाद कुर्सी पर आराम से बैठ गया। ‘अरे बाप रे, अब तो हम सचमुच समुद्री डाकू बन गए हैं।’
सिंदबाद हँस पड़ा। 'कोई बात नहीं। सब ठीक हो जाएगा।'

जहाज आगे बढ़ता गया।
सफीना की नींद खुल गई थी।
सिन्बाद डेक पर आया और उसने सबको वहाँ देखा। अशरफिया अपने पारंपरिक काले कपड़ों और मनमोहक मुस्कान के साथ एक कोने में बैठी थी। हुसैन और मार्कस साथ में हँस रहे थे, जबकि प्रेसा मार्कस की पीठ पर बैठी उसे चीनी भाषा में गुस्से से चिल्ला रही थी। इदरीस अपने भाले पर टेक लगाकर समुद्र की ओर देख रही थी।
सिन्बाद के बगल में खड़ी सफीना ने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'तुमने कर दिखाया।'
'क्या?'
‘तुम नाविक बन गए,’ उसने कहा। ‘जैसा तुम हमेशा से चाहते थे।’
‘खैर, सबसे पारंपरिक तरीके से तो नहीं।’ वह मुस्कुराया। ‘लेकिन हाँ, मैंने किया है। हम बागी नाविक हैं।’
‘हमें बहुत सारी बातें करनी हैं।’ सफीना ने अपने होंठ सिकोड़ लिए।
मुझे अपने पिता के बारे में आपको कुछ बातें बतानी हैं। उनकी कुछ वैकल्पिक योजनाएँ थीं। मुझे उनके बारे में पता है। इससे हमें उन्हें रोकने में मदद मिल सकती है।'
‘और हम ऐसा करेंगे।’ सिंदबाद ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।
फिर उसने अपने दल—अपने लोगों, अपने परिवार—की ओर देखा। ‘ठीक है, मैंने आगे की योजना बना ली है। लेकिन पहले, एक मीठा बदला।’ वह जहाज के पिछले हिस्से की ओर चला और अपनी कमरबंद से तुरही निकाली। ‘जिस चीज़ की हम इतने लंबे समय से तलाश कर रहे थे, जिसे राक्षस भी चाहते हैं और इंसान भी। लेकिन इसे कोई नहीं पा सकेगा क्योंकि यह एक ऐसा हथियार है जिसके लायक कोई नहीं है।’
और इसके साथ ही उसने इसराफिल का बिगुल समुद्र के बीचोंबीच फेंक दिया।

सभी लोग भय से कांप उठे।
‘हाँ, मुझे पता है।’ सिन्बाद हँसते हुए बोला। ‘यह वाकई ज़बरदस्त था।’ ‘तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।’ मार्कस ने frowning करते हुए कहा। ‘हां, वह बेवकूफी थी, प्रिये,’ अशरफिया ने कहा।
‘ठीक है, ठीक है, मेरा मतलब है...’ सिंदबाद ने कहना शुरू किया, लेकिन हुसैन ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘अब तो मुझे ऐसा लग रहा है कि यह पूरी यात्रा व्यर्थ ही गई।’
‘ठीक है, शांत हो जाओ, दोस्तों।’ सिंदबाद घबराकर हँसा।
‘अब जब आप सब कह रहे हैं, तो मुझे एहसास हो रहा है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था... लेकिन खैर, जो हो गया सो हो गया। मुझे लगता है कि हम सागर की एक महान देवी और एक सरल स्वभाव वाले यूनानी देवता पर भरोसा कर सकते हैं कि वे इसकी देखभाल और रक्षा करेंगे।’ ऐसा लगा जैसे सागर हिल उठा हो। सिंदबाद मुस्कुराया। ‘अब मैं कप्तान हूँ। इसलिए, सबसे पहले हमें बगदाद वापस जाना होगा और इदरीस के पति को बचाना होगा और इब्लिस को फिर से कोई घिनौनी हरकत करने से रोकना होगा। और हमें एक योजना बनानी होगी।’
उन सभी ने एकमत होकर सिर हिलाया।
‘तो क्या अब हम समुद्री डाकू बन गए हैं?’ अशरफिया ने पूछा।
सभी लोग उनके जवाब का इंतजार कर रहे थे।
सिंदबाद ने अपने दोस्तों की ओर देखा और कहा, 'नहीं, नाविक।' वह रुका, उसके होंठों के एक कोने पर हल्की सी मुस्कान आ गई। 'हम नाविक हैं।'

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

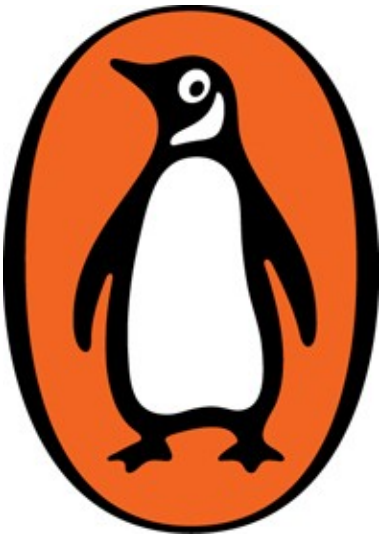

शुरुआत
चलिए बातचीत शुरू करते हैं...
Penguin Books को Twitter.com@penguinbooks पर फॉलो करें। हमारी सभी कहानियों से अपडेट रहने के लिए YouTube.com/penguinbooks पर जाएं। Pinterest पर ‘Penguin Books’ को पिन करें।
Facebook.com/penguinbooks पर ‘Penguin Books’ को लाइक करें
'द रॉडलर' और कैडज़बडी द्वारा ईपब किया गया

लेखक के बारे में और अधिक जानने के लिए और इस तरह की अन्य कहानियों के लिए Penguin.co.in पर जाएं।

पेंगुइन बुक्स
अमेरिका | कनाडा | ब्रिटेन | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया
न्यूजीलैंड | भारत | दक्षिण अफ्रीका | चीन पेंगुइन बुक्स, पेंगुइन रैंडम हाउस समूह की कंपनियों का हिस्सा है, जिनके पते global.penguinrandomhouse.com पर देखे जा सकते हैं।

पेंगुइन
रैंडम हाउस इंडिया
यह संग्रह 2021 में प्रकाशित हुआ।
कॉपीराइट © केविन मिसल 2021
लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है। जैकेट की तस्वीरें © पराग चिटाले
यह डिजिटल संस्करण 2021 में प्रकाशित हुआ था। 'द रॉडलर' और कैडज़बडी द्वारा ईपब किया गया ई-आईएसबीएन: 978-9-353-05217-1
केवल भारतीय उपमहाद्वीप, दुबई और सिंगापुर में बिक्री के लिए
उपलब्ध।
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है, और बाद के खरीदार पर भी इसी तरह की शर्त लागू की जाएगी।